

বিজ্ঞাপন।

হর্ষচরিত কাদম্বরীরচয়িতা মহাকবি বাণভট্টের প্রণীত। উভয় গ্রন্থই এক কবির লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত, এক প্রণালীতে রচিত, এবং উভয়ই অসম্পূর্ণ অবস্থায় অবস্থিত। এ তিন বিষয়ে উভয় গ্রন্থের কোনও বৈলক্ষণ্য নাই, কিন্তু, উৎকর্ষ বিষয়ে, পরস্পর তুলনা করিলে, অনেক বৈলক্ষণ্য লক্ষিত হইবেক। কাদম্বরীর চমৎকারিতা ও মনোহারিতা হর্ষচরিতে ভূরি পরিমাণে উপলব্ধ হয় না। তন্ত্রি, অনারাসে অর্থ বোধ জন্মে না, কাদম্বরীতে এরূপ স্থলের সংখ্যা অতি অল্প; হর্ষচরিতে তাদৃশ স্থলের সংখ্যা অপেক্ষাকৃত অনেক অধিক। ফলকথা এই, হর্ষচরিত কাদম্বরী অপেক্ষা অনেক অংশে নিকৃষ্ট কাব্য। কাদম্বরী অপেক্ষা নিকৃষ্ট বটে, কিন্তু উহা যে এক প্রশংসনীয় গ্রন্থ, সে বিষয়ে সংশয় নাই। প্রথম ও দ্বিতীয় উচ্ছ্বাসে বেরূপ দৃষ্ট হইতেছে, তদনুসারে হর্ষচরিত বাণভট্টের প্রথম কাব্য।

বাণভট্ট হর্ষচরিত নামে গল্প গ্রন্থ লিখিয়াছিলেন, ইহা আমি পূর্বে অবগত ছিলাম না। দ্বাদশ বৎসর অতিক্রান্ত হইল, আমার পরম বন্ধু, প্রসিদ্ধ চিকিৎসক, অধুনা

বিজ্ঞাপন।

হর্ষচরিত কাদম্বরীরচয়িতা, মহাকবি বাণভট্টের প্রণীত। উভয় গ্রন্থই এক কবির লেখনীর মুখ হইতে বিনির্গত, এক প্রণালীতে রচিত, এবং উভয়ই অসম্পূর্ণ অবস্থায় অবস্থিত। এ তিন বিষয়ে উভয় গ্রন্থের কোনও বৈলক্ষণ্য নাই, কিন্তু, উৎকর্ষ বিষয়ে, পরস্পর তুলনা করিলে, অনেক বৈলক্ষণ্য লক্ষিত হইবেক। কাদম্বরীর চমৎকারিতা ও মনোহারিতা হর্ষচরিতে ভূরি পরিমাণে উপলব্ধ হয় না। তন্ত্রিত, অনার্যাসে অর্থ বোধ জন্মে না, কাদম্বরীতে এরূপ স্থলের সংখ্যা অতি অল্প; হর্ষচরিতে তাদৃশ স্থলের সংখ্যা অপেক্ষাকৃত অনেক অধিক। কলকথা এই, হর্ষচরিত কাদম্বরী অপেক্ষা অনেক অংশে নিকৃষ্ট কাব্য। কাদম্বরী অপেক্ষা নিকৃষ্ট বটে, কিন্তু উহা যে এক প্রশংসনীয় গ্রন্থ, সে বিষয়ে সংশয় নাই। প্রথম ও দ্বিতীয় উচ্ছ্বাসে যে রূপ দৃষ্ট হইতেছে, তদনুসারে হর্ষচরিত বাণভট্টের প্রথম কাব্য।

বাণভট্ট হর্ষচরিত নামে গল্প গ্রন্থ লিখিয়াছিলেন, ইহা আমি পূর্বে অবগত ছিলাম না। দ্বাদশ বৎসর অতিক্রান্ত হইল, আমার পরম বন্ধু, প্রসিদ্ধ চিকিৎসক, অধুনা

লোকান্তরবাসী হারাধন বিজ্ঞারত্ন মহাশয়, জম্মু রাজধানীতে কিছু দিন অবস্থিতি করিয়াছিলেন। তথা হইতে প্রত্যাগত হইয়া, তিনি আমাকে, এক খানি পুস্তক দেখাইয়া, কহিলেন, ত্রীযুত শেষ শাস্ত্রী নামে একটি পণ্ডিত, পুরস্কার-লাভের প্রত্যাশায়, আমার নিকট এই পুস্তক খানি দিয়াছেন। ইহার নাম হর্ষচরিত; ইহা বাণভট্টপ্রণীত। বাণভট্টপ্রণীত, এই কথা শুনিয়া, আমি, যার পর নাই, আশ্লাদিত হইলাম, এবং পুরস্কারদানের অঙ্গীকার করিষা, কবিরাজ মহাশয়ের নিকট হইতে, পুস্তক খানি লইলাম। এইরূপে অদৃষ্টচর, অশ্রুতপূর্ব, অপূর্ব এক গজ্জ কাব্য হস্ত-গত হওয়াতে, আমি, কালবিলম্ব না করিষা, নিরতিশয় আশ্লাদিত চিভে, সবিশেষ আগ্রহ সহকারে, উহা মুদ্রিত করিতে আরম্ভ করিলাম।

কিন্তু, অল্প দিনেই বুঝিতে পারিলাম, এক মাত্র পুস্তক অবলম্বন করিয়া, হর্ষচরিত মুদ্রিত করিলে, সম্যক্ শুদ্ধ হইবার সম্ভাবনা নাই। ফলকথা এই, এত স্থল অশুদ্ধ ও অসংলগ্ন প্রতীয়মান হইতে লাগিল, যে পুস্তকান্তরের সাহায্য না পাইলে, হর্ষচরিত মুদ্রিত করা পরামর্শ-সিদ্ধ বলিয়া বোধ হইল না। সুতরাং, হর্ষচরিতের মুদ্রাক্ষন-কার্য স্থগিত রাখিতে হইল। আমার সবিশেষ স্নেহভাজন ত্রীযুত নীলায়র মুখোপাধ্যায়, জম্মু রাজধানীতে, এক প্রধান

রাজপুরুষের পদে প্রতিষ্ঠিত আছেন। প্রসঙ্গক্রমে হর্ষ-
চরিতের কথা উত্থাপিত হইলে, সবিশেষ সমস্ত অবগত
হইয়া, তিনি কাশ্মীর দেশ হইতে দুই খানি পুস্তক পাঠাইয়া
দেন। এইরূপে তিন পুস্তক হস্তগত হইলে, আমি, সাহস
করিয়া, হর্ষচরিতের মুদ্রাক্ষনকার্য্যে পুনরায় প্ররম্ভ হই।

একণে, হর্ষচরিত মুদ্রিত হইল। এ বিষয়ে আমি
বথোচিত যত্ন ও পরিশ্রম করিয়াছি; কিন্তু 'তাদৃশ' যত্নের
ও পরিশ্রমের অনুরূপ, ফললাভ হয় নাই। আমার
স্পষ্ট বোধ হইতেছে, 'পুস্তকের অনেক স্থল অশুদ্ধ ও
অসংলগ্ন রহিয়া গেল। অর্দ্ধ ভাগ পর্য্যন্ত মুদ্রিত হইলে,
আমি, বিরম্ভ হইয়া, পুনরায়, হর্ষচরিতের মুদ্রাক্ষনকার্য্য
হইতে বিরত হইবার সঙ্কল্প করিয়াছিলাম; কিন্তু, অনে-
কের সবিশেষ অনুরোধের বশবর্তী হইয়া, সে সঙ্কল্পের
অনুসরণ করিতে পারিলাম না। অনুরোধকারী মহাশয়েরা
আমায়, নানা কারণ দর্শাইয়া, হর্ষচরিতের মুদ্রাক্ষনকার্য্য
হইতে, কোনও মতে, বিরত হইতে দিলেন না।

শ্রীঈশ্বরচন্দ্রশর্মা

কলিকাতা ।

১লা অগ্রহায়ণ, সংবৎ ১৯৩৯ ।

J. G. Krishnaswamy

B. A. class

Presidency Col

Madras

हर्षचरितम् ।

प्रथम उच्छ्वासः ।

नमस्तुङ्गशिरसुस्त्रिचन्द्रचामरंचारवे ।
तैलोक्यनगरारम्भसूक्तसम्भाय शम्भवे ॥ १ ॥
हरकण्ठग्रहानन्दमीलिताक्षीं नमाम्युमाम् ।
कालकूटविषस्यार्शजातमूर्च्छागमामिव ॥ २ ॥
नमः सर्वविदे तस्यै व्यासाय कविवेधसे ।
चक्रे पुण्यं सरस्वत्या वो वर्धमिव भारतम् ॥ ३ ॥
प्रायः कुक्कवयो लोके रागाधिष्ठितदृष्टयः ।
कोकिला इव जायन्ते वाचालाः कामकारिणः (१) ॥ ४ ॥
सन्ति श्वान इवासंख्या जातिभाजो गृहे गृहे ।
उत्पादका न बहवः कवयः शरभा इव ॥ ५ ॥
अन्यवर्णपरादृष्ट्या बन्धचिह्ननिगूहणैः ।
अनाख्यातः सतां मध्ये कविचौरो विभाष्यते ॥ ६ ॥
शेषप्रायमुद्दीचेषु प्रतीचेष्वर्थमात्रकम् ।
उत्प्रेक्षा दाक्षिणात्येषु गौडेष्वक्षरडम्बरः ॥ ७ ॥
नवोऽर्थो जातिरग्राम्या शेषोऽक्षिप्तः स्फुटो रसः ।
विकटाक्षरबन्धश्च सत्समेकत्र दुष्करम् ॥ ८ ॥

किं कवेस्तस्य काव्येन सर्वदृष्टान्तगामिनी ।
 कथेव भारती यस्य न प्राप्नोति दिगन्तरम् ॥ ९ ॥
 उच्छ्वासान्तेऽप्यस्थिन्नास्ते येषां वक्त्रे सरस्वती ।
 कथमाख्यायिकाकारा न ते बन्धाः कवीश्वराः ॥ १० ॥
 कवीनामगलहर्षो नूनं वासवदत्तया ।
 शक्त्येव पाण्डुपुत्राणां गतया कर्णगोचरम् ॥ ११ ॥
 पद्मबन्धोज्ज्वलो हारी कृतवर्णकमस्थितिः ।
 भट्टारहरिचन्द्रस्य गद्यबन्धो नृपायते ॥ १२ ॥
 अविनाशिनमश्रममकरोत् सातवाहनः ।
 विग्रुज्जजातिभिः कोपं रत्नैरिव सुभाषितैः ॥ १३ ॥
 कीर्त्तिः प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।
 सागरस्य परं पारं कपिसेनेव सेतुना ॥ १४ ॥
 सूत्रधारकृतारम्भैर्नाटकैर्बहुभूमिकैः ।
 सपताकैर्यशो लेभे भासो देवकुलैरिव ॥ १५ ॥
 निर्गतासु न वा कस्यः कालिदासस्य सूक्तिषु ।
 प्रीतिर्मधुरसार्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥ १६ ॥
 समुद्दीपितकन्दर्पो कृतगौरीप्रसाधना ।
 हरलीलेव मो कस्य विख्यायाय दृष्टकथा ॥ १७ ॥
 आढ्यराजकृतोत्साहैर्हृदयस्यैः स्मृतैरपि ।
 जिज्ञान्तः कृष्णमाद्येव न कवित्वे प्रवर्त्तते ॥ १८ ॥
 तथापि नृपतेर्भक्त्या भीतो निर्बह्णाकुलः ।
 करोम्याख्यायिकान्मोघौ जिज्ञासवनचापलम् ॥ १९ ॥
 सुखप्रबोधललिता सुवर्णघटनोज्ज्वलैः ।
 शब्दैराख्यायिका भाति शब्देव प्रतिपादकैः ॥ २० ॥

जयति जलप्रतापजलनप्राकारकृतजगद्गुरुः ।

सकलप्रणविमनोरथसिद्धिर्जीपर्वतो हर्षः ॥ २१ ॥

एवमनुश्रुत्वाते पुरा किल भगवान् स्थलोकमधितिष्ठन् परमेष्ठी विकाशिनि पद्मविष्टरे समुपविष्टः सुनासीरप्रमुखैर्गीर्वाणैः परिवृतो ब्रह्मोद्याः कथाः कुर्वन् अन्याश्च निरवद्या विद्यागोष्ठी-र्भावयन् कदाचिदासाक्षके । तथासीनश्च तं त्रिभुवनप्रतीक्ष्यं मनु-दत्तचाक्षुषप्रभृतयः प्रजापतयः सर्वे च सप्तर्षिपुरःसरा महर्षयः सिधेविरे । केचिद्वचः स्तुतिचतुराः समुदचारयन् । केचिदप-चितिभाञ्चि वक्षूंष्यपठन् । केचित् प्रशंसासामानि जगुः । अपरे विवृतकतुकियातन्तान् मन्त्रान् व्याचक्षिरे । विद्याविसंवाद-कृताश्च तत्र तेषामन्योन्यस्य विद्याविवादाः प्रादुरभवन् ।

अथातिरोषणः प्रकृत्या मञ्जातपा मुनिरत्नेस्तनयस्तारापते-र्भ्राता नाम्ना दुर्वासा द्वितीयेन मन्दपालनाम्ना मुनिना सह कलहायमानः साम गायन् क्रोधान्धो विस्वरमकगात् । सर्वेषु च शापभयप्रतिपन्नमौनेषु मुनिषु अन्यालापलीलया अवधीरयति कमलसम्भवे भगवती कुमारी किञ्चिदुन्मत्तबालभावे भूषितनव-यौवने नवे वयसि वर्त्तमाना गृहीतचामरप्रचलद्भ्रजलता पितामह मुपवीजयन्ती निर्भर्त्सनताडनजातरागाभ्यामिष स्वभाया-रुणाभ्या पादपल्लवाभ्या समुद्भासमाना शिष्यद्वयेनैव पटकममुखरेण नूपुरयुगलेन वाचालितचरणा मदननगरतोरणस्तम्भविभ्रमं विभ्राणां जङ्गाद्वितयं सलीलमुत्ककलहंसकुलकलालापप्रलापिनि मेखलादाग्नि (२) विन्यस्तवामहसकिसलय विद्वन्मानसनिवास-

सम्बन्धेन गुणकलापेनेव अंसावलम्बिना ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकाया,
भास्वन्मध्यमायकम् अनेकमुक्तागुयातम् अपवर्गमार्गमिव हारमुद-
हन्ती, वदनप्रविष्टसर्वविद्या अलङ्ककारसेनेव पाटलेन (३) स्फुरता
दशनच्छदेन विराजमाना, संकान्तकमलासनलक्ष्म्याजिनप्रतिमा
मधुरगीताकर्णनावतीर्णयशसिहरिष्णामिव कपोलस्थलीं दधाना,
तिर्यक् सावक्षमुन्मत्तैकभ्रूलता ओत्तमेकं विस्तरश्रवणकलुषितं
प्रक्षालयन्तीव अपाङ्गनिर्गतेन लोचनाल्लुजलप्रवाहेण दूतरश्रवणेन
च विकसितसितसिन्धुवारमञ्जरीजुषा हसतेव प्रकटितविद्यामदा
श्रुतिप्रणविभिः प्रणवैरिव (४) कर्णावतंसकुसुममधुकरकुलैरुपास्त्र-
माना, सूक्ष्मविमलेन प्रज्ञाप्रतानेनेव अंशुकेनाच्छादितशरीरा
वाक्पयमिव निर्मलं दिक्षु दशनज्योत्स्नालोकं विकिरन्ती देवी
सरस्वती श्रुत्वा जहास ।

दृष्ट्वा च तां तथा हसन्तीं समुनिः आः पापकारिणि दुर्गृहीत-
विद्यालवावलेपदुर्विदग्धे मामुपहससि दूतदुक्ता शिरःकम्पशीर्ष-
माणबन्धविशरारोः उन्मिषत्प्रिङ्गुलिम्बो जटाकलापस्य शोचिषा
सिञ्चन्निव रोषदहनद्रुवेण दय दिशः कृतकालसन्निधानामिव अन्ध-
कारितललाटपट्टापट्टाम् अन्तकान्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिकां
भुङ्कुटिमावध्नन् अतिलोहितेन चक्षुषा अमर्षदेवतायै स्वबधिरोप-
हारमिव प्रयच्छन् निर्दयदृष्टदशनच्छदभवपलायमानामिव वाचं
बन्धन् दन्तांशुच्छलेन अंसावच्छंसिनः शापशासनपटस्येव ग्रथन्
ग्रन्थिम् अन्यथा लक्ष्म्याजिनस्य स्वेदकणप्रतिविम्बितैः शापशङ्का-
शरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतर-

(३) चरणालङ्ककारपाटलेनेव च । १ । २ । चरणालङ्ककारसेनेव पाटलेन । ३ ।

(४) प्रणवैरिव च । १ । २ ।

खिताहुलिना करेण प्रसादनसन्नाम् अक्षरमाक्षामिव अक्षमालाम्
आश्लिष्य कामसूत्रलेन वारिणा समुपलूय्य शायज्जलं जग्राह ।

अत्रान्तरे स्वयम्भुवोऽभ्यासे समुपविष्टा देवी मूर्तिमती पीवूष-
फेनपटलपाण्डुरं कल्पद्रुमदुकूलवत्कलं वसाना विसतन्तुमवेनांशु-
केन उन्नतस्तनमध्यवद्गुणात्रिकाग्रम्बिः तपोवत्तन्निर्वृतत्रिभुवनजय-
पताकाभिरिव तिर्यग्भिर्भस्त्रपुच्छकराजिभिर्विराजितकलाटाजिरा
स्वन्धावस्तम्बिना सुधाफेनधवलैः तपःप्रभावकुण्डलीकृतेन गङ्गा-
स्रोतसेव योगपट्टकेन विरचितवैक्लव्यका सन्धेन ब्रह्मोत्पत्तिपुण्ड-
रीकमुकुलमिव स्फटिककमण्डलुं करेण कक्षयन्ती दक्षिणमक्ष-
मालाकृतपरिक्षेपं कम्बुनिर्मितोन्मिक्तकादन्तुरितं तर्जनतरङ्गिततर्ज-
नीकम् उत्क्षिपन्ती करम् आः पाप कोषोपहत दुरात्मन् अत्र
अनात्मज्ञ ब्रह्मबन्धो मुनिखेट निराकृत कथमात्मस्वलितविलम्बः
सुरासुरमुनिमनुजवृन्दवन्दनीयां त्रिभुवनमातरं भगवतीं सरस्वतीं
शत्रुमभिलषसि इत्यभिदधाना रोषविमुक्तवेत्तासनैः ओङ्कारमुच्च-
रितमुखैः उत्क्षेपदोलायमानजटाभारभरितद्विम्बिः परिकरबन्ध-
भ्रमितलक्ष्णाजिनपटच्छायाश्लाभायमानद्विषैः अमर्षनिष्ठास-
दोलाप्रेङ्खोलितब्रह्मलोकैः सोमरसमिव स्वेदविसरव्याजेन खलद्भिः
अग्निहोत्रपवित्रभस्त्राखोरललाटैः कुशतन्तुचाबचामरचीरचीवरिभिः
आघाटिभिः प्रहरणीकृतकमण्डलुमण्डलैः सूर्तैश्चतुर्भिर्ज्यैः सह
दृष्टीमपहाय सावित्री समुत्तस्थौ ।

ततो मर्षय भगवन् अभूमिरेषा शायस्य इत्यनुनाम्यमानोऽपि
विषयैः उपाध्याय स्वस्वितमेकं क्षमस्वेति बह्वाक्षिपुटैः प्रसाद्य-
मानोऽपि स्वशियैः पुन मा हयास्तपसः प्रत्यूहमिति निवार्य-
माणोऽप्यत्रिणा रोषावेशविवशो दुर्भासा दुर्विनीते अपनयामि ते

सम्बन्धेन गुणकलापेनेव अंसावलम्बिना ब्रह्मसूत्रेण पवित्रीकृतकाया,
भास्वन्मध्यनावकम् अनेकसुक्तामुयातम् अपवर्गमार्गमिव हारमुद-
हन्ती, वदनप्रविष्टसर्वविद्या अलङ्ककरसेनेव पाटलेन (३) स्फुरता
दशनच्छदेन विराजमाना, संक्रान्तकमलासनलङ्घाजिनप्रतिमा
मधुरगीताकर्णनावतीर्थशशिशिरिष्णामिव कपोलस्यलौ दधाना,
तिर्यक् सावच्चसुखमितैकभ्रूलता ओजमेकं विस्तरश्रवणकलुषितं
प्रक्षालयन्तीव अपाङ्गनिर्गतेन लोचनास्तुजलप्रवाहेण दूतरश्रवणेन
च विकसितसितसिन्धुवारमञ्जरीजुषा हसतेव प्रकटितविद्यामदा
श्रुतिप्रणयिभिः प्रणवैरिव (४) कर्णावतंसकुसुममधुकरकुलैरुपास्य-
माना, सूक्ष्मविमलेन प्रक्ष्माप्रतानेनेव अंगुकेनाच्छादितशरीरा
वाक्पयमिव निर्मलं दिक्षु दशनज्योत्स्नालोकं विकिरन्ती देवी
सरस्वती श्रुत्वा जहास ।

तदा च तां तथा हसन्तीं स मुनिः आः पापकारिणि दुर्गृहीत-
विद्यालवावलेपदुर्विदग्धे मामुपहससि इत्युक्त्वा शिरःकम्पशीर्ष-
मायबन्धविशरारोः उन्मिषत्पिङ्गलिम्बो जटाकलापस्य शोचिषा
सिञ्चन्निव रोषदहनद्रवेण दश दिशः कृतकालसन्निधानामिव अन्ध-
कारितललाटपट्टापट्टाम् अन्तकान्तःपुरमण्डनपत्रभङ्गमकरिका
भुङ्कुटिमावध्नन् अतिलोहितेन चक्षुषा अमर्षदेवतावै स्वधरोप-
हारमिव प्रयच्छन् निर्दयदृष्टदशनच्छदभवपलायमानामिव वाघं
बन्धन् दन्तांशुच्छलेन अंसावसंसिनः शापशासनपट्टस्येव ग्रथन्
ग्रन्थिम् अन्यथा लङ्घाजिनस्य स्वेदकणप्रतिविम्बितैः शापशङ्का-
शरणागतैरिव सुरासुरमुनिभिः प्रतिपन्नसर्वावयवः कोपकम्पतर-

(३) चरणालङ्ककरमपाटलेनेव च । १ । २ । चरणालङ्ककरसेनेव पाटलेन । ३ ।

(४) प्रणवैरिव च । १ । २ ।

लिताहुलिना करेण प्रसादनसन्मानं अक्षरमाक्षामिव अक्षमालाम्
आश्लिष्य कामसहस्रवेन वारिणा समुपसृज्य शपथकं जप्ताह ।

अत्रान्तरे स्ववन्धुवोऽभ्यासे समुपविष्टा देवी मूर्तिमती पीवूष-
फेनपटलपाच्छरं कल्पद्रुमदुकूलवल्कलं वसाना, विसृतन्तुमवेनांशु-
केन उच्चतस्तनमध्यवद्गतात्रिकाप्रन्धिः तपोबलनिर्जितत्रिभुवनजय-
पताकामिरिव तिर्यभिर्भस्त्रपुच्छकराजिभिर्बिराजितसल्लाटाजिरा
स्नाम्नावलम्बिना सुधाफेनधवलैः तपःप्रभावकुण्डलीकृतेन गङ्गा-
स्रोतसेव योगपट्टकेन विरचितवैक्यका सख्येन ब्रह्मोत्पत्तिपुण्ड-
रीकमुकुलमिव स्फटिककमण्डलुं करेण कक्षयन्ती दक्षिणमक्ष-
मालाकृतपरिक्षेपं कम्बुनिर्मातोर्निर्मादादन्तुरितं तर्जनतरङ्गिततर्ज-
नीकम् उत्क्षिपन्ती करम् आः पाप कोषोपहत दुरात्मन् अत्र
अनात्मज्ञ ब्रह्मबन्धो मुनिखेट निराकृत कथमाजस्रवक्षितविलस्यः
सुरासुरमुनिमनुजवृन्दवन्दीवां त्रिभुवनमातरं भगवतीं सरस्वतीं
शत्रुमभिलषसि इत्यभिदधाना रोषविमुक्तवेलासनैः ओङ्कारमुच्च-
रितमुखैः उत्क्षेपदोलायमानजटाभारभरितद्विग्भिः परिकरबन्ध-
भ्रमितलक्ष्णाजिनपटच्छायाश्चाभावमानदिवसैः अमर्षनिष्ठास-
दोलाप्रेङ्खोलितब्रह्मलोकैः सोमरसमिव स्वेदविसरव्याजेन क्षयद्विः
अग्निहोत्रपवित्रभस्त्राक्षोरललाटैः कुशतन्तुचावचामरचीरचीवरिभिः
आषाढिभिः प्रहरणीकृतकमण्डलुमण्डलैः मूर्तेर्चतुर्भिर्ज्यैः सह
वृषीमपञ्चाय सावित्री समुत्तस्थौ ।

ततो मर्षय भगवन् अभूमिरेषा शपथस्य इत्यनुनाम्यमानोऽपि
विवर्षैः उपाध्याय स्ववक्षितमेकं क्षमस्वेति बद्धाञ्जलिपुटैः प्रसाद्य-
मानोऽपि स्वशियैः पुत्र मा हृद्याक्षपसः प्रत्यूहमिति निवार्य-
माणोऽप्यत्रिणा रोषावेशविवशो दुर्भासा दुर्विनीते अपनयामि ते

विद्याजनिताम् उन्नतिमिमाम् अधस्ताद्भ्यः मर्त्यलोकम् इत्युक्त्वा
तच्छापोदकं विससर्ज । प्रतिशपदानोद्यता सावित्री सखि संचर
रोषम् (५) असंस्कृतमतयोऽपि आत्यैव द्विजान्नो माननीया
इत्यभिदधाना सरस्वत्यैव व्यवहारयत् ।

अथ तां तथा शप्तां सरस्वतीं दृष्ट्वा पितामहो भगवान्
कमलोत्पत्तिलम्बणालम्बुत्रामिव धवलयज्ञोपवीतिनीं तनुमुद्वहन्
उन्नच्छदच्छात्रुलीयकमरकतमयूखलताकलापेन त्रिभुवनोपलव-
प्रथमकुशापीडधारिणोव दक्षिणेन करेण निवार्य शपकलकलम्
अतिविमलदीर्घैर्भाविभूततनुगारम्भस्तूतपातमिव दिक्षु पातयन् दशन-
किरणैः सरस्वतीप्रस्थानमङ्गलपटहेनेव पूरयन्वाशाः स्वरेण धीर-
मुवाच ब्रह्मन् न खलु साधुसेवितोऽयं पन्थाः येनासि प्रवृत्तः ।
निहन्थेय परस्तात् । उहामप्रवृत्तेन्द्रियाश्चसमुत्थापितं हि रजः
कलुषयति दृष्टिमनश्चजिताम् । कियदूरं वा चक्षुरीक्षते विशुद्धया
हि धिया पश्यन्ति कृतबुद्धयः सर्वानर्थान् असतः सतो वा ।
निसर्गविराधिनी चेयं प्रयःपावकयोरिव धर्माक्रोधयोरेकत्र वृत्तिः ।
आलोकमपहाय कथं तमसि निमज्जसि । क्षमा हि मूलं सर्व-
तपसाम् । परदोषदर्शनदक्षा दृष्टिरिव कुपिता बुद्धिर्न ते आत्म-
रागदोषं पश्यति । क्व मज्जातपोभारवैवधिकाता क्व पुरोभागित्वम् ।
अतिरोषणखलुश्रान् अन्ध एव जनः । नहि कोपकलुषिता विष्ट-
यति मतिः कर्त्तव्यमकर्त्तव्यं वा । कुपितस्य प्रथममन्धकारीभवति
विद्या ततो भ्रुकुटिः । आदाविन्द्रियाणि रागः समास्क्रन्दति चरमं
चक्षुः । आरम्भे तपो गलति पश्चात् स्नेहसलिलम् । पूर्वमयशः
स्फुरति अनन्तरमधरः । कथं लोकविनाशाय ते विषपादपस्येव

जटावल्कलानि जातानि । अनुचिता खलस्य मुनिवेशस्य शार-
यटिरिव दत्तमुक्ता विसदृष्टिः । शैलूष इव दृष्टा बहसि हृत्त्रिमम्
उपशमन्मूढेन चेतसा तापसाकल्पम् । अल्पमपि न ते पश्यामि
कुशलजातम् । अनेनातिबुद्धिना अद्याप्युपम्येव भवसे ज्ञानो-
दम्बतः । न खलु अनेलमूकाः पश्या जडा वा सर्व एते महर्षयः ।
रोषदोषनिषद्ये स्वहृदये निग्राहो किमर्थमसि निम्नहीतवाननागसं
सरस्वतीम् । एतानि तानि आत्मप्रमादस्त्वलितवैलब्धाणि यै-
र्याप्यतां यात्यविदग्धो जन इत्युक्ता पुनराह बन्धे सरस्वति विषादं
मा गाः । एषा त्वामनुयास्यति सावित्री विनोदविष्यति चास्त्र-
हिरण्यदुःखिताम् । आत्मजमुष्णकमलावलोकनावधिष्य ते शापोऽयं
भविष्यतीति । एतावदभिधाय विसर्जितसुरासुरमुनिमनुजमण्डलः
ससम्प्रमोपगतनारदस्कन्धविन्यस्तहस्तः (६) समुचिताङ्गिककरणा-
यादतिष्ठत् । सरस्वत्यपि शप्ता किञ्चिदधोमुखी धवललक्षणाशरां
लक्षणाजिनलेखामिव दृष्टिसुरसि पातयन्ती सुरभिनिष्ठासपरि-
मललग्नेर्मूर्त्तिः शपाक्षरैरिव घट्चरणचकैरालम्बमाणा शपथोक-
शिथिलितहस्ता अधोमुखीभूतेनोपदिष्टमानमर्त्यलोकावतरण-
मार्गेण नखमयूखजालकेन नूपुरव्याहाराहृतैर्भवनकलहंसकुलैर्मन्त्र-
लोकनिवासिहृदयैरिवानुगम्यमाना समं सावित्र्या गृहमगात् ।

अत्रान्तरे सरस्वत्यवतरणवार्त्तामिव कथयितुं मध्यमं लोक-
मवतताराशुमाली । कमेण च मन्दायमाने मुकुलितविसिनी-
विसरंखसनविषमसरसि वासरे मधुमदमुदितकामिनीकोपकुटिल-
कटाक्षक्षिप्रमाण इव क्षेपीयः क्षितिधरशिखरमवतरति तरुणातर-
कपिलपनलोहिते लोकैकचक्षुषि भगवति प्रक्षुतमुखमाहेयीयूथ-

शरत्क्षीरधाराधवलितेषु चासन्नचन्द्रोद्भवोद्दामक्षीरोदलहरी-
 क्षाखितेष्विव दिव्यान्मोपशय्येषु, अपराङ्गप्रचारखलिते, चामरिणि
 चामीकरतटताडनरश्मितरदने रदति सुरस्त्रवन्तीरोषांसि स्वैरम्
 ऐरावते, प्रसृतानेकविद्याधराभिसारिकासहस्रचरणालक्तकरसानु-
 लिप्त इव प्रकटवति च तारापथे पाटलतां तारापथप्रस्थितसिद्ध-
 दत्तदिनकराक्षमवाध्यावर्जिते रञ्जितककुभि कुसुमभासि स्ववति
 पिनाकिप्रभृतिमुदितसम्भास्त्रेदसलिल इव रक्तचन्दनद्रवे वन्दा-
 मुनिदन्दारकदम्बध्वमानसम्भ्यान्मलिवने, ब्रह्मोत्पत्तिकमलसेवागत-
 सकलकमलाकर इव राजति ब्रह्मलोके, समुच्चारितद्वतीयसवन-
 ब्रह्मणि ब्रह्मणि, ज्वलितवैतानज्वलनज्वालाजटालाजिरेषु आरब्ध-
 धर्मसाधनशिबिरनीराजनेष्विव सप्तर्षिमन्दिरेषु अवमर्षणमुषित-
 किल्विषविषगहोद्भाषलसुषु यतिषु सम्बोपासनासीनतपस्विपंक्ति-
 पूतपुलिने सवमाननखिनवोनिवानहंसहासदन्तुरितोर्मिणि मन्दा-
 किनीजले जलदेवतातपत्रे पद्मरयकुलकलत्रान्तःपुरसौधे निजमधु-
 मधुरामोहिनि क्लृप्तमधुमसुहि मुमुक्षिमाणो कुसुदवने दियसाव-
 सानताम्यत्तामररत्नमधुरमधुसपीतिप्रीते सुषुप्सति च्छदुष्णालकाण्ड-
 कण्डूवमकुण्डलितकन्धरे ध्रुतपञ्चराजिबीजितराजीवसरसि राज-
 हंसव्यूहे तटज्जाताकुलमधूखिधूसरितसरिति सिद्धपुरपुरन्धिधम्मिल्ल-
 मङ्गिकानन्धप्राहिणि सावन्तने तनीवसि निशानिष्ठासनिभे
 नभस्सति सङ्कोचोद्भूतदुष्केसरकोटिसङ्कटकुशेयवकोटरकुटी-
 याजिनि षट्चरणचक्रे इत्योद्भूतपूर्वजटिजटाटवीकुटजकुम्भलनिकर-
 निभे नभस्सत्वं स्वकवति तारागण्ये सम्भ्यानुबन्धताम्रे परिचम-
 नाखफलत्वक्त्रिणि काशमेघमेदुरे मेदिनीं मीलयति नववयसि
 तमसि तद्वत्तरतिमिरपटलपाटनपटीवसि समुन्निषति वामिनी-

कामिनीकर्णपूरणपञ्चकलिकाकदम्बके प्रदीपप्रकरे, प्रतनुतुङ्गि-
किरणकिरणलवणालोकपाशुनि आम्बाननीलनीरसुक्तकाशिन्दी-
कूलबाहपुलिनायमाने घातनातवे नश्यति तिमिरमायासुखे चसुचि
मेचकितविकचितकुबलयसरसि शशधरकरनिकरकचप्रहाविले (७)
विलीयमाने मानिनीमनसौव शर्भरीशवरीचिकुरचवे चापपक्ष-
त्विषि तमस्युदिते, भगवत्पदयगिरिशिखरकटककुहरहरिखरनखर-
निबहहेतिनिहतनिजहरिखगलितवधिरनिचवनिचितमिष लो-
हितं वपुर्दयरागधरमधरमिव विभावरीवध्वा धारयति श्वेतभानौ,
अचलच्युतचन्द्रकान्तजलधाराधौत इव ध्वसो ध्वान्ते गोलोकगलित-
दुग्धविसरवाहिनि दन्तमयमकरमुखमहाप्रणाल इवापूरयितुम्
प्रवृत्ते पयोधिभिन्दुमण्डले स्पष्टे प्रदोषसमवे सावित्री शून्यहृदयाम्
इव किमपि ध्यायन्तीं साक्षां (८) सरस्वतीमवादीत् सखि त्रि-
भुवनोपदेशदानदद्यादास्तव(९) पुरो जिह्वा जिह्वेति मे जल्पन्ती ।
जानास्येव यादृश्यो विसंस्थलाः गुणवत्त्वपि जने दुर्जनवन्नि-
र्दाक्षिण्याः क्षणभङ्गिन्यो दुरतिक्रमणीया न रमणीया दैवस्य वामा
वृत्तयः । निष्कारणा च निष्कारकणिक्कापि कलुषयति मनस्विनो
ऽपि मानसमसहजजनादापतन्ती । अनवरतनयनजलसिन्धुमानज
तवरिव विपल्लवोऽपि सहस्रधा प्ररोहति । अतिसुकुमारश्च जनं
सन्तापपरमाण्वो मालतीकुसुममिव ज्ञानिमानयन्ति । महतां
चोपरि निपतन्मणुरपि स्रष्टिरिव करिणां क्रोधः कदर्थनायालम् ।
सहजस्नेहपाशग्रन्थिवन्धनाच्च बान्धवभृता दुस्त्यजा जन्मभूमयः ।
धारयति दांष्ट्यः ककचपात इव हृदयं संस्तुतजनविरहः । सा

(७) शशधरकरनिकरकरलिते च प्रहाविले । २ । ४ ।

(८) साक्षा । २ ।

(९) ते । १ । २ ।

नार्हस्त्वेवं भवितुम् । अभ्रमिः खलसि दुःखच्छेडाङ्कुरप्रसवानाम् ।
 अपिच पुराकृते कर्मणि बलवति शुभेऽशुभे वा फलकृति तिष्ठति
 अपिष्ठातरि प्रष्टे पृष्ठतश्च कोऽवसरो विदुषि शुचाम् । इदञ्च ते
 त्रिभुवनमङ्गलैककमलममङ्गलभृताः कथमिव मुखमपवित्त्वन्ति
 अयुविन्दवः । तदलम् अधुना कथय कतमं भुवो भागमलङ्कर्तुम्
 इच्छसि । कस्मिन्नवतितीर्यति ते पुण्यभाजि प्रदेशे हृदयम् ।
 कानि वा तीर्थान्यनुग्रहीतुमभिलषसि (१०) । केषु वा धर्मेषु तपो-
 वनधामसु तपस्यन्ती स्थातुमिच्छसि (११) । सज्जोऽयमुपचरणा-
 चतुरः सहपांशुकीडापरिचयपेशलः प्रेयान् सखीजनः । क्षिति-
 तलावतरणाद्यानन्यशरणा चाद्यैव प्रभृति प्रतिपद्यस्व मनसा वाचा
 क्रियया च सर्वविद्याविधातारं दातारञ्च श्वःश्वेयसस्य चरणरजः-
 पवित्तित्विदृशासुरं सुधासूतिकलिकाकल्पितकर्णावतंसं देवदेवं
 त्रिभुवनगुरुं त्र्यम्बकम् । अल्पीयसैव कालेन स ते शापशोकविरतिं
 वितरिष्यतीति ।

एवमुक्ता मुक्तमुक्ताफलधवललोचनजललवा सरस्वती प्रत्य-
 वादीत् प्रियसखि त्वया सह विचरन्त्या न मे काञ्चिदपि पीडाम्
 उत्पादयिष्यति ब्रह्मलोकविरहः शापशोको वा केवलं कमलासन-
 सेवासुखमार्द्रवति मे हृदयम् । अपिच त्वमेव वेत्सि मे नुवि
 धर्मधामानि समाधिसाधनानि योगयोग्यानि च स्थानानि स्थातुम्
 इत्येवमभिधाय (१२) विरराम रणरणकोपनीतप्रजागरा च
 अनिमिलितलोचनैव तां निशामन्वत् ।

अन्येद्युः (१३) उदिते जगवति त्रिभुवनशेखरे खण्डखण्डावमान-

(१०) स्पृहवसि । २ ।

(१२) अनिदधाना । २ ।

(११) अभिलषसि । २ ।

(१३) अपरेद्युः । २ ।

स्वस्त्यस्त्रीनक्षत्रनिजतुरगसुखक्षिप्तेन क्षतजेनेव पाटक्षितवपुषि
उदवाचलचूडामणौ जरत्कृकवाकुचूडावशावशपुरःसरे विरोचने
नातिदूरवर्ती पितामहवाहनहंसकुलपालः पर्यटन् अपरवक्त्रम्
उच्चैरगायत्

तरल्यसि हृद्यं किमुत्सुकायकलुपमानसवासलालिते ।

अवतर कलहंसि बापिकां पुनरपि वास्यसि पङ्कजालयम् ॥

तच्छ्रुत्वा सरस्वती पुनरविन्तयत् अहमिवाग्नेन पर्यनुश्रुता । भवतु
मानयामि सुनेर्वचनम् (१४) इत्युक्त्वोत्वाय क्षतमश्नीतश्चावतरण-
सङ्कल्पा परित्यज्य बियोगबिज्ञयं स्वपरिजनं क्षातिवर्गमवगणय्य
अवगच्छा त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य चतुर्मुखं कथमप्यनुनयनिवर्त्तितानु-
यायिव्रतिव्राता ब्रह्मलोकतः सावित्रीद्वितीया निर्जगाम ।

ततः क्रमेण भ्रवप्रवृत्तां धर्मधेनुमिव अधोधावमानधवलपयो-
धराम् उद्धुरध्वनिम् अश्वकमयनमौलिमालतीमालिकाम् आसीय-
मानशालखिल्यरुद्धरोधसम् अरुन्धतीधौततारवत्खचं त्वङ्गुक्त-
तरङ्गततरलतरतारतारकां तापसवितीर्णतरलतिलोदकपुष्प-
कितपुनिनाम् आश्रयनपूतपितामहपातितपितृपिण्डपाण्डुरितपारां
पर्यन्तसुप्तसप्तर्षिकुशशयनसूचितसूर्यग्रहसूतकोपवासाम् आचमन-
शुचिशशीपतिमुख्यमानार्चनकुसुमनिकरशारा शिवपुरपतित-
निर्झाल्यमन्दारदामकाम् अनादरदारितमन्दरदरीदृषदम् अनेक-
नाकनायकनिकायकामिनीकुचकलसविललितविग्रहां ग्राह्याव-
ग्रामखलनमुखरितस्रोतसं सुपुष्पाक्षतशशिसुधाशीकरसावक-
तारकिततीरा धिषण्याग्निकार्यधूमधूसरितसैकतां सिद्धविरचित-
बालकानिङ्गलङ्घनवासविद्रुतविद्याधरा निर्मोकमुक्तिमिव गगनो-

रगस्य लीलाललाटिकामिव त्रिविष्टपविटस्य विक्रयवीचीमिव पुण्य-
 पत्नस्य दत्तार्गलामिव नरकनगरद्वारस्य अंशुकोष्णीषपट्टिकाम् इव
 सुमेरुशृङ्गस्य दुगूलकदलिकामिव कैलासकुञ्जरस्य पङ्क्तिम् इवाप-
 वर्गस्य नेमिमिव कृतद्युगस्य सप्तसागरराजमहिषीं मन्दाकिनी-
 मनुसरन्ती मर्षलोकमवततार अपञ्चञ्चाब्जरतलस्थितैव हारम्
 इव वक्षस्य अञ्जतनिर्भरमिव चन्द्राचलस्य शशिमणिनिखन्दम्
 इव विन्ध्यस्य कर्पूरद्रुमद्रुवप्रवाहमिव दण्डकारण्यस्य लावण्यरस-
 प्रस्रवणमिव दिशां स्नाटिकशिलापट्टशयनमिवाब्जरत्रियाः स्वच्छ-
 शिशिरसुरसवारिपूर्णं भगवतः पितामहस्यापत्यं हिरण्यवाहनामानं
 महानदं यं जनाः शोण इति कथयन्ति । दृष्ट्वा च तं रामणीयक-
 हृतहृदया तस्यैव तीरे वासमरचयत् उवाच च सावित्रीं सखि
 मधुरमयूरविहृतवः कुसुमपांशुपटलसिक्तिलतवतलाः परिमल-
 मत्तमधुपवेणीवीणारणितरमणीया रमयन्ति मां मन्दोलितमन्दा-
 किनीद्युतेरस्य महानदस्योपकण्ठभूमयः पक्षपाति च हृदयम्
 अत्रैव स्थातुं मे इति । अभिनन्दितवचना च तथेति तया तस्य
 पश्चिमे तीरे समवातरत् । एकस्मिंश्च शुचौ शिलातलसनाये तट-
 लतामण्डपे गृह्णन् वबन्ध । विप्रान्ता च नातिचिरादुत्थाय
 सावित्या सार्द्धम् उच्चितार्चनकुसुमा सङ्घौ पुलिनपृष्ठप्रतिष्ठितसैकत-
 शिवलिङ्गा च भक्त्या परमया पञ्चब्रह्मपुरःसरां सम्यङ्मुद्राबन्ध-
 विहितपरिकरां ध्रुवागीतिगर्भाम् अवनिपवनवनगगनदहनतपन-
 तुहिनकिरणयजमानमयीमूर्तीरिष्टावपि ध्यायन्ती सुचिरमष्ट-
 पुष्पिकामदात् अवल्लोपनतेन फलमूलेन अञ्जतरसमप्यतिशिशयिष-
 माणेन च स्वादिन्ना शिशिरेण शोणवारिणा शरीरस्थितिम्
 अकरोत् । अतिवाहितदिवसा च तस्मिन् स्वतामस्तुपशिलातले

कल्पितपद्मवज्रवना सुव्याप । अन्येष्टुरपि अनेनैव क्रमेण नान्दिनम्
अत्यवाचयत् ।

एवमतिक्रामस्तु दिवसेषु गच्छति च काले वाममात्रोद्धते च
रवौ उत्तररक्षां ककुभि प्रतिशब्दपूरितवनगङ्गरं गन्धीरतारतरं
तुरङ्गप्रेषितफ्राहमच्छयोत् । उपजातकुङ्कुमा च निर्गत्य कता-
मण्डपादिलोकवन्ती विकचकेतकीर्णपत्रपाण्डुरं रजःसङ्गातं
नातिह्रीवसि सञ्चुसमापतन्ममपश्यत् । क्रमेण च सामीप्योप-
जायमानाभिध्वजि तस्मिन् मञ्जति शफरोद्गच्छसरे रजसि प्रवसीव
मकरचक्रं स्रवज्ञानं, पुरः प्रधावमानेन प्रखण्डकुटिलकचपद्मवर्णित-
ललाटतटधूटकेन धवलदन्तपत्रिकाद्युतिवर्णितकपोलभित्तिना
पिनङ्गुलङ्घ्यागुदपङ्कजस्कन्धुरण्यलङ्घ्यश्वलकवायकसुकेन उत्तरीय-
लतशिरोवेष्टनेन वामप्रकोष्ठनिविष्टस्यट्टहाटककटकेन द्विगुणमृ-
मट्टिकागाढप्रन्विप्रचितासिधेनुना अग्नवरतथ्यावामलङ्घ्यकर्कशशरी-
रेण वातहरिखयूयेनेव मुहुर्मुहुः असुङ्गीयमानेन लङ्घितसम-
विषमावटविटयेन कोणधारिणा लपाण्यपाणिना सेवाट्टहीत-
विविधवनकुसुमफलखलपथेन चल चल याहि याहि अपसर्पापसर्प
पुरः प्रयच्छ पन्थानम् इत्यनवरतलतकलकलेन सुवप्रायेण सञ्च-
मानेन पश्चातिवलेन सनायमश्चट्टन्दं ददर्श मध्ये च तस्य सार्ध-
चन्द्रेण मुक्ताफलजासमालिना विविधरत्नखण्डलचितेन शङ्खचीर-
फेनपाण्डुरेण चीरोदेनेव स्वयं लङ्घ्यीं हातुमागतं न गगनगतेन
आतपत्रेण लतच्छावम्, अच्छाच्छेनाभरण्यसुतीनां निवहेन दिशामिव
दर्शनानुरागलम्बेन चक्रवालेनांगुगम्यमानम् आनितव्यविलम्बित्या
मालतीशेखरलङ्घ्या सकलभुवनविजयार्जितया रूपपताकयेव विराज-
मानम् उत्सृषिभिः शिखरहगण्डिकापद्मरागमणेरक्ष्यैरंशुजालैः

अदृष्टमानवनदेवताविष्टैर्बालपक्षैरिव प्रसज्यमानमार्गरेणुपक्ष-
 वपुषं वकुलकुङ्कुममण्डलीमुखमालामण्डनमनोहरेण कुटिल-
 कुन्तलस्रवकमालिना मौलिना मौलितातपं पिबन्तमिव दिवसम्
 पशुपतिजटामुकुटङ्गाङ्गद्वितीयकलवटितस्येव सङ्कलसङ्गीसमा-
 लिङ्गितस्य ललाटपट्टस्य मनःशिलापङ्कपिङ्गलेन लावण्येन स्निग्धन्तम्
 ह्रवान्तरिजम् अभिनवयौवनारम्भावष्टम्भप्रगल्भदृष्टिपातदृष्टीकृत-
 त्रिभुवनस्य चक्षुषः प्रयिक्त्वा विकचकुसुदकुवलयकमलसरःसङ्कल-
 सञ्ज्ञादितदृशदिशं शरदमिव प्रवर्त्तयन्तम् आयतनयननदीसीमान्त-
 सेतुबन्धेन ललाटतटशशिमण्डिशिलातलनखितेन कान्तिसलिल-
 स्रोतसेव द्वावीयसा घोषावशेन शोभमानम् अतिसुरभिसङ्कार-
 कर्पूरकङ्कोललवङ्गपारिजातकपरिमलमुखा मसमधुकरकुलकोला-
 हलमुखरेण मुखेन सनन्दनवर्गं वसन्तमिव वसन्तम् आसन्नसङ्कत-
 परिहासभावनोत्तानितमुखसुगन्धसितैः दशनज्योत्स्नास्रपितदिङ्-
 मुखैः पुनःपुनर्नभसि सञ्चारिणं चन्द्रालोकमिव कल्पयन्तं कदम्ब-
 मुकुलस्थूलमुक्ताफलसुगलमध्याध्यासितमरकतस्य विकण्टककर्णा-
 भरणस्य प्रेङ्गतः प्रभया समुत्पन्नया कृतसङ्कसुमहरितकुन्दपङ्कव-
 कर्णवर्तसमिबोपलम्बमाणम् आमोदितगमदपङ्कखिणितपल्लव-
 भास्वरं भुजसुगलमुद्गममकराक्रान्तशिखरमिव मकरकेतुकेतुदङ्क-
 दयं दधानं धवलवङ्गसूत्रसीमन्तितं सागरमयनसामर्षगङ्गास्रोतः-
 सन्दानितमिव मन्दरं देहमुद्वहन्तं कर्पूरजोदमुष्टिचुरणपांशुलेनेव
 कान्तोज्ज्वलचक्रवाकसुगलविपुलपुङ्खिनेनोरःस्थलेन स्थूलभुजायाम-
 पुञ्चितं पुरो विहारयन्तमिव दिक्चक्रं पुरस्तादीषदधोनाभि-
 निहितैककोणकमनीयेन दृष्टतः कस्याधिकक्षिप्रपङ्कवेनोभयतः सम्ब-
 लनप्रकटितोत्थिभागेन हारीतहरिता निविडनिपीडितेन अधर

गाससा विमज्जमानतनुतरमध्वभागम् अनवरतत्रमोषधितमांस-
 कठिनविकटमकरमुखसंलग्नजानुभ्यां विशालवक्षःस्थलोपलवेदिको-
 तन्मनश्चिलासम्भाभ्यां चाहचन्दनस्वाप्तकस्यूलकान्तिभ्याम् अह-
 द्दृष्टाभ्यामुपहसन्तमिव ऐरावतकरावामम् अतिभरितोद्भागः (१५)
 बह्वन्नेदेनेव तनुतरजङ्घाकाण्डे कल्पपादपपल्लवद्वयस्येव पाटकस्य
 उभयपार्श्ववल्ग्विनः पादद्वयस्य दोलायमानैर्नक्षत्रमयूषैरष्टमण्डन-
 चामरमालामिव रचयन्तम् अभिमुखमुच्चैर्ददृशद्विरतिचिरमुपरि
 विश्राम्यद्विरिव बलितविकटं पतङ्गिः खुरैः खण्डितभुवि प्रतिचक्ष-
 दशनविमुक्तखण्डखण्डावितखरखलीने दीर्घप्राणलीनलालिक-
 ललाटलुलितचाक्षामीकरचक्रके शिञ्जानशातकौन्धजयन- (१६)
 शोभिनि मनोरञ्जसि गोलाङ्गूलकपोलकालकायलोम्नि नीलसिन्धु-
 वारवर्णे वाजिनि मङ्गति समाकृष्टम् उभयतः पर्याणपट्टद्विष्ट-
 हस्ताभ्यामासन्नपरिचारकाभ्यां दोधूवमानधवलचामरिकासुगलम्
 अग्रतः पठतो बन्दिनः सुभाषितमुत्कण्ठकितकपोलफलकेन लग्न-
 कर्णोत्पलकेसरपद्मप्रयत्नेनेव मुखशयिना भावयन्तम् अनङ्गबुगा-
 यतारमिव दर्शयन्तं चन्द्रमवीमिव खट्विमुत्पाद्यन्तं विशासप्रायमिव
 जीवलोकां जनयन्तम् अनुरागमयमिव मार्गान्तरमानयन्तं ऋद्धार-
 मयमिव द्विसमापाद्यन्तं रागराज्यमिव प्रवर्तयन्तं आकर्षणा-
 न्नमिव अक्षुब्धोः वशीकरणमन्त्रमिव मनसः स्वस्वावेशचूर्णम्
 इवेन्द्रिबाह्याम् असन्तोषमिव कौतुकस्य सिद्धयोगमिव सौभाग्यस्य
 पुनर्जन्मादिवसमिव मन्त्रव्यस्य रसावनमिव दीवन्तस्य ऐकराज्यमिव
 रामणीयकंस्य कीर्तिसाग्नमिव रूपस्य मूलकोषमिव लावण्यस्य
 पुण्यकर्मपरिणाममिव संसारस्य प्रथमाक्षुरमिव कान्तिलतायाः

सर्गाश्वासफलमिव प्रजापतेः प्रतापमिव विभ्रमस्य यशःप्रवाहमिव
वैदग्ध्यस्य अष्टादशवर्षदेशीयं सुवानमद्राक्षीत् पार्श्वे च तस्य
द्वितीयमपरसंज्ञितं (१७) तुरङ्गं प्राङ्मुमुक्षुस्ततपनीयसन्भाकारं परि-
यातवयसमपि व्यायामकठिनकायं नीचनखश्मश्रुकचं शुक्लिष्वलतिम्
ईषत्तुन्दिलं रोमशोरःस्थलम् अनुत्खणोदारवेशतया जरामपि
विनयमिव शिष्ययन्तं गुणानपि गरिमाणमिवानयन्तं महातु-
भाषतामपि शिष्यतामिवानयन्तम् आचारस्याचार्यकमिव कुर्वाणं
धवलवारवाणधारिणं धौतकुलपट्टिकापरिवेष्टितमौलिं पुरुषम् ।

अथ स सुवा पुरोयायिनां यथादर्शनं प्रतिनिवृत्त्य विस्मित-
मनसां कथयतां पदातीनां सकाशादुपलभ्य दिव्याहति तत् कन्या-
युगलम् उपजातकुलकलः प्रवर्णतुरगो दिदृक्षुः स लतामण्डपोद्देशम्
आजगाम दूरादेव च तुरगाद्वततार निवारितपरिजनश्च तेन
द्वितीयेन साधुना सह चरणाभ्यामेव सविनयमुपससर्प । कृतोप-
संग्रहणौ तौ सावित्री समं सरस्वत्या किसलवासनदानादिना
सकुसुमफलार्घ्यावसानेन वनवासोचितेनातिथ्येन यथाक्रममुप-
जगात् । आसीनयोश्च तदोरासीना (१८) नातिचिरमिव स्थित्वा
तं द्वितीयं प्रववसमुद्दिष्टावाहीत् आर्यं सहजलज्जाघनस्य प्रमदा-
जनस्य प्रथमाभिभावश्चमशासीनता विशेषतो वनचण्डीमुग्धस्य
कुलकुमारीजनस्य । केवलमिवमाख्यजनकतावाव चक्षुषे स्पृह-
यन्ती प्रेरयत्युदन्तत्रयचक्रकृच्छिनी त्रोटहन्तिः । प्रथमदर्शने च
उपावनमिवोपनयन्ति सज्जनाः (१९) प्रववम् । अप्रगल्भमपि जनं
प्रभवता प्रत्यवेष्टार्पितं मनो मञ्जिव वाचास्रयति । अयत्नेनैव च

यतिगन्धे साधौ धनुषीव शुभः परां कोटिमारोपयति विष्णुः ।
जनवन्ति च विष्णुवमतिधीरधिबामहृष्टपूर्णा हृष्टमाना जगति
सृष्टः सृष्टतिशयाः यतस्त्रिभुवनाभिभावि रूपमिदमस्य महाशु-
भावस्य । सौजन्यपरतन्मा चेवं देवानां प्रियस्त्रातिभङ्गता कारयति
कथां नतु सुवतिजने सज्जोत्वा तरलता । तत् कथय आगमनेन
अपुण्यभाक् कृतमो विजृम्भितविरहस्यः न्यूनतां गीतो देयः ।
क वा गन्तव्यम् । कस्य वायमपङ्कतहरज्जङ्गाराजङ्गारोऽपर इव
अनन्यजो सुवा । किञ्चान्नः सज्जुतपसः पितुरयमजतवर्षी कौस्तुभ-
मखिरिव हरेर्हृदयमाह्लादयति । का चास्य त्रिभुवननमस्या
प्रभातसन्ध्येव महतस्तेजसो जननी । कानि वास्य पुण्यभास्त्रि
भङ्गन्यभिख्यामक्षराणि । आर्यपरिज्ञानेऽप्ययमेव क्रमः कौतुका-
नुरोधिनो हृदयस्य ।

इत्युक्तवत्त्वां तस्यां प्रकटितप्रत्ययोऽसौ प्रतिव्याजहार आशुश्रुति
सतां हि प्रियंवदता कुलविद्या । न केवलमाननं हृदयमपि च ते
चन्द्रमयमिव सुधाशीकरशीतलैरामन्दयति वचोभिः । सौजन्य-
जन्मभूमयो भूयसा शुभेन सम्जननिर्वाणशिल्पकला भवाहृष्टो
जायन्ते । दूरे तावदन्योन्यस्यालापनम् अभिजातैः सह दृशोऽपि
मित्रीभूता महतीं भूमिमारोपयन्ति । श्रूयताम् अयं खलु भूषणं
भार्गववंशस्य भगवतो भूर्भुवःस्फुटितवतिलकस्य अदभ्यप्रभाव-
सन्मितामृताभिभुजसन्मस्य सुरासुरसुकुटमण्यिशिष्याश्वनदुर्ल-
लितपादपङ्केजस्य (२०) निजतेजःप्रसरद्भटपुलोत्तमशयनस्य बहिर्हन्ति
जीवितं दधीचो नाम तनवः । जनन्यस्य जितजगतोऽनेकपार्श्व-
सहस्रानुयातस्य शर्मातस्य सुता राजपुत्री त्रिभुवनकन्यारत्नं

सुकन्या नाम । तां खलु देवीमन्तर्वर्त्तीं विदित्वा वैजनेने मासि
प्रसवाय पिता पत्युः पार्श्वीत् स्वगृहमाणावयत् । अन्तुत च सा
तत्र देवी दीर्घायुषमेनम् । अनेहसावर्धत तत्रैवायम् (२१) आन-
न्दितश्चातिवर्गो बालसारकराज इव राजीवलोचनो राजगृहे ।
मर्त्यभवनमागच्छन्त्यामपि दुहितरि नासेचनकदर्शनमिमम् (२२)
अमुष्मन्मातामहो मनोविनोदनं नप्नारम् । अयिञ्चतायं तत्रैव
सर्वा विद्याः सकलाश्च कलाः ।

कालेन चोपाकूटदौर्बनमिममालोक्य अहमिव असावप्यनु-
भवतु मुख्यकमलावलीकनानन्दमस्येति मातामहः कथंकथमप्येनं
पितुरन्तिकमधुना व्यसर्जयत् । मामपि तस्य देवस्य सुगृहीत-
नान्नः शर्वातस्त्राक्षाकारिणं विकृष्टिनामानं भृत्परमाणुमव-
धारयतु भवती । पितुः पादशूलमाधान्तं मया साभिसारमकरोत्
स्वामी । तद्धि नः कुलकमागतं राजकुलम् । उत्तमानाश्च चिर-
न्मनता जनयत्यनुजीविष्यपि जने कियन्मात्रमपि मन्दाक्षम् ।
अक्षीणः खलु दाक्षिण्यकोशो महताम् । इतश्च गव्यूतिमात्रमिव
पारेषोष्णं तस्य भगवतश्चावनस्य स्वनाम्ना निर्मितव्यपदेशं आवनं
नाम शैलरश्मकल्पं काननं निवासः । तदवधिष्येयं नौ वात्सा ।
यदि च गृहीतक्षत्रं दाक्षिण्यम् अनवहेतुं वा हृदयमस्याकमुपरि
भूमिर्वा प्रसादानामवं जनः अवधार्यो वा ततो न विमाननीयोऽयं
नः प्रथमः प्रथयः कुलहलस्य । वयमपि शुश्रूषवो दृप्तान्तमाहु-
ः स्यातोः । नेवमाज्ञातिर्दिष्टतां व्यभिचरति । गोत्रनामनी तु ओतुम्
अभिलषति नौ हृदयम् । तत्त्वय कतमो वंशः (२३) स्पृहणीयतां

(२१) अवर्धतानेहसा च तत्रैवम् । १ । १ ।

(२२) आसेचनकदर्शनमिमम् न । २ ।

(२३) देश । १ ।

जन्मना जीतः । सा चेवमलम्बती भवत्याः समीपे समवाव द्रव
विरोधिनां पदार्थानाम् । तथाचि सञ्चिहितबोधान्धकारा भास्वन्-
धर्त्तिव पुच्छरीकमुष्णी हरिश्चलोचना च वाक्कातपद्मभाधरा कुसुह-
हासिनी च कलहंसस्वना समुन्नतपयोधरा च कमलकोमलकरा
हिमगिरिशिखारुणितया च करभोर्विलम्बितगमना च अमुक्त-
(२४) कुमारभावा स्निग्धतारका चेति ।

सा त्वादीत् आर्य्य ओषसि कालेन । भूयसो दिवसानल(२५)
स्यातुमभिलषति नौ हृदयम् । अल्पीवांसावमध्या । परिचय एव
प्रकटीकरिष्यति । आर्य्येण न विचारणीयोऽयमनुवह्नुदृष्टो जन
इत्यभिधाय दृष्टीमभूत् । दधीचस्तु नवान्नोभरगम्भीरान्नो-
धर(२६)ध्याननिभया भारत्या नर्तयन् वनलतामवनभाजो भुजग-
भुजः सुधीरसुवाच आर्य्य करिष्यति प्रसादमार्ग्या आराध्यमाना
पद्मामस्तावन्तातम् उत्तिष्ठ व्रजाम इति । तथेति च तेनाभ्यनु-
ज्ञातः शनकैवत्याय कृतनमस्कृतिवञ्चचाल । तुरगावदं च तं
प्रदानं सरस्वती सुचिरमुत्तन्त्रितपद्मण्या निचलतारकेण लिखि-
तेनेव चक्षुषा व्यलोकयत् । उत्तीर्य्य शोषम् अचिरेणैव कालेन
दधीचः पितुराश्रमपदं जगाम । गते च तस्मिन् सा तामेव दिशम्
आलोकयन्ती सुचिरमतिष्ठत् हृष्टादिव च सञ्चचार दृश्यम् ।

अथ मुहूर्त्तमिव स्थित्वा श्रुत्वा च तां तस्य रूपसम्पर्दं पुनः
पुनर्व्यलोकयतास्त्रा हृदयम् । भूयोऽपि चक्षुराचकाङ्क्ष तद्दर्शनम् ।
अवश्येव केनाप्यनीयत तामेव दिशं दृष्टिः । अग्रहितमपि मनस्सेनैव
सार्द्धमगात् । अजायत च नवपल्लव इव वाक्चवन्मतायाः कुतोऽपि

अस्या अनुरागचेतसि । सालस्येव मूलेव सनिद्रेव दिवसमनयत् ।
 असमुपयाति च प्रत्यक्षार्थस्तमगृहले लाङ्गलिकास्तवकताम्बुत्वधि
 कमलिनीकासुके कठोरसारसधिरःशोणशोचिधि सावित्ते त्वयीमये
 तेजसि तरुणतरतमालस्थामले च मलिनयति व्योम व्योमव्यापिनि
 तिमिरसञ्चये सञ्चरत्पिङ्गसुन्दरीनूपुररवानुसारिणि च मन्दं मन्दं
 मन्दाकिनीहंस इव समुत्सर्पति शशिनि, (२७) गगनतलं कृत-
 सन्ध्याप्रणामा निशामुख एव निपत्य विमुक्ताङ्गी पल्लवशयने तस्यौ ।
 सावित्यपि कृत्वा यथाक्रियमाणं सायन्तनं क्रियाकलापम् उचिते
 शयनकाले किसलयशयनमभजत जातनिद्रा च सुष्याप ।

इतरा तु मुकुर्मङ्गरङ्गवलनैर्विलुलितकिसलयशयनतला
 निमीलितलोचनापि नाभजत निद्राम् अचिन्तयञ्च मर्त्तलोकः
 खलु सर्वलोकानामुपरि यस्मिन्नेवंविधानि सम्भवन्ति त्रिभुवन-
 भूषणानि सकलगुणग्रामगुरुणि रत्नानि । तथाहि तस्य
 मुखलावण्यप्रवाहस्य निव्यन्दविन्दुरिन्दुः । तस्य च अक्षुषो विक्षेपा
 विकचकुमुदकुवलयकमलाकराः । तस्य चाधरमणेर्दीधितयो विक-
 सितबन्धूकवनराजयः । तस्य चाङ्गस्य 'पूरभा'गोपकरणमनङ्गः ।
 पुण्यभास्त्रि तानि चक्षुर्वि चेतांसि यौवनानि वा स्त्रैणानि वेषाम्
 असौ विषयो (२८) दर्शनस्य । अथ नु दर्शयता च तम् अन्यजन्म-
 जनितेनेव (२९) मे फलितमधर्म्मम् । का प्रतिपत्तिरिदानीम् । इति
 चिन्तयन्त्येव कथंकथमप्युपजातनिद्रा चिरात् क्षणमशेत सुप्ता च
 तं (३०) दीर्घलोचनं ददर्श । स्वप्रासादितद्वितीयदर्शना च आकर्षा-
 कटकार्मुकेण मनसि निर्दयमताश्रित मकरकेतुना । प्रतिबुद्धाया

(२७) समुत्सर्पति शशिनि च । १ । १ ।

(२८) वेषां विषयोऽसौ । १ । २ ।

(२९) अन्यजन्मनि जनितेनेव । २ ।

(३०) तमेव । ३ ।

मदनशरताडितावाच(३१) तस्मा वार्त्तामिवोपलब्धमुरतिराजगाम ।
तथाहि ततःप्रवृत्ति कुसुमधूलिघबलाभिर्वनलताभिरताडितापि
वेदनामघक्त । मन्दमन्दमाहृतविधुतैः कुसुमरजोभिरदूषितलोचना
अपि अश्रुजलं सुमोष । इंसपक्षताकृन्मवातवातविततैः शोष-
शीकरैरसिक्तापि आर्द्रतामगतत् । प्रेङ्गत्कादम्बमियुनैरगूढापि
अधूर्णत वनकमलिनीकल्लोलदोलाभिः । विघटमानचक्रबाक्कुगल-
विघटैरसृष्टापि श्यामतामाससाद् विरहनिश्वासधूमैः । पुष्प-
धूलिधूसरैरदृष्टापि व्यचेष्टत मधुकरकुलैः ।

अथ गणरात्रापगमे निवर्त्तमानसेनैव वर्त्तना(३२) तं देयम्
आगत्य तथैव निवारितपरिजनम्बन्धधारद्वितीयो विकृष्टिर्द्धौके ।
सरस्वती तु तं दूरादेव सम्मुखमागच्छन्तं प्रीत्या सम्यक् समुत्थाव
वनस्यगीवोदूयीवा विलोकयन्ती मार्गोपरि आन्तमस्त्रपयदिव धव-
लितदशदिशा दृशा । कृतासनपरियञ्चन्तु तं प्रीत्या सावित्री पप्रच्छ
आर्य कश्चित् कुशली कुमार इति । सोऽब्रवीत् आसुष्मति
कुशली स्मरति च भवत्योः केवलममीषु दिवसेषु तनीयसीमिव तनुं
विभर्त्ति अविज्ञायमानां आनिमिप्तां शून्यतामियाधक्ते । अपिच
अन्वक् समागमिष्यत्येव मालतीति नाम्ना वाणिनी वार्त्तां वो
विज्ञातुम् उच्छ्वसितं सा कुमारस्येति । तच्छ्रुत्वा पुनरपि सावित्री
समभाषत अतिमहासुभावः खलु कुमारो यदेवम्(३३) अविज्ञाय-
माने क्षणदृष्टेऽपि जने परिचितिमनुबध्नाति । तस्य हि गच्छतो
यदृच्छ्या कथमपि अंशुकमिव मार्गशतासु मानसमस्त्रासु मुहूर्त्तम्
आसक्तमासीत् । अशून्यं हि सौजन्यमाभिजात्येन वः स्वामि-

सूतोः । अलसः खलु लोको यदेवं सुलभसौहार्दानि येन केनचित्
क्रीणाति महतां मनांसि । सोऽयमौदार्यातिशयः कोऽपि महा-
त्मनामितरजनदुर्लभो येनोपकरणीकुर्वन्ति त्रिभुवनमिति (३४) ।
विकुञ्चिः (३५) उज्जावचैरालापैः सुचिरमिव स्थित्वा यथाभिलषितं
देशमयासीत् ।

अपरेद्युबद्धति (३६) भगवति द्युमथाबुद्धामद्युतावभिद्रुततारके
तिरस्कृततमसि तामरस (३७) व्याकोश (३८) व्यसनिनि सहस्ररश्मौ
शोणमुत्तीर्ष्यायन्ती तरलदेहप्रभावितानच्छलेनात्यच्छं सकलं
शोणसलिलमिवानयन्ती स्फुटितातिमुक्तककुसुमस्रवकसमत्विधि
सूटाले महति घनपताविव गौरी तुरङ्गमे स्थिता सलीलम्
उरोवभारोपितस्य तिर्यगुत्कर्णतुरगाकर्ष्यमाननूपुरपटुरणितस्य
अतिवहलेन पिण्डालकृत्केन पल्लवितस्य कुङ्कुमपिञ्जरितपृष्ठस्य चरण-
सुगलस्य प्रसरङ्गिरतिलोहितैः प्रभाप्रवाहैर्बभूवतस्ताडनदोहदलोभा-
गतानि किसलयितानि रक्ताशोकवगानीवाकर्षयन्ती, सकलजीव-
लोकहृदयहृत्हरणघोषणयेव रश्मया शिञ्जानजघनस्थला, धौत-
धवलनेत्रनिर्मितेन निर्मोकलघुतरेणाप्रपदीनेन कक्षुकेन तिरोहित-
तनुलता ज्ञात (३९) कक्षुकान्तरदृष्टमानैराभ्यानचन्दनधवलैरव-
यवैः स्वच्छसलिलाभ्यन्तरविभाव्यमानज्ज्वालकाण्डेव सरसी
कुसुमरागपाटलं पुलकबन्ध (४०) चित्रं चञ्छातकमन्तःस्फुटं
स्फटिकभूमिरिव रत्ननिधानमादधाना हारेणामलकीकलनिल-
मुक्ताफलेन स्फुरितसूक्ष्मप्रहणशारा शारदीय ज्येतिविरलजलधर-

(३४) त्रिभुवनमपीति । २ ।

(३५) विकुञ्चिः । २ । १ ।

(३६) उदिते । २ ।

(३७) तामरसिनी । १ ।

(३८) विकोशः । १ । २ । (३९) तनुः । १ । (४०) पुलकबन्धः । १ ।

पटसाहता सौः कुचपूर्णकलशवोदपरि रत्नमालम्बमालिकाम्
 यद्वयहरितकिरणसलयिनीं कस्यापि पुष्पवतो हृदयप्रवेशवन-
 मालिकामिव (४१) वक्त्रां धारयन्ती, प्रकोष्ठनिविष्टस्य एकैकस्य (४२)
 शटककटकस्य मरकतमकरपेदिकासनायस्य हरितीक्ष्णतदिग-
 म्नाभिर्मयूषसन्नातिभिः स्थलकमलिनीभिरिव लक्ष्मीशङ्खवानु-
 गम्यमाना वदन्ताम्बूलक्ष्णिकान्धकारितेनाधरसम्पटेन सुषयशि-
 धीतं ससन्धारगं तिमिरमिव वमन्ती विकचनयनकुचलयकुक्ष-
 यलालीनया (४३) अलिकुलसंज्ञया नीलांशुकमालिकयेव निरङ्गा-
 र्द्धवदना नीलीरागनिहितनीलिम्बा शितिगलशितिना वाम-
 त्रयष्टात्रविष्टा दन्तपद्मेण कालमेघपङ्कवेनेव विद्युदिव द्योतमाना
 वक्रलफलानुकारिणीभिसिद्धभिर्मुक्ताभिः कल्पितेन मालिका-
 गुगलेनाधोमुखेनालोकजलवर्षिणा सिद्ध्यन्तीवातिकोमले भुजलते
 दक्षिणकर्णावतंसितया केतकीगर्भपलायलेखया रजनिकरजिह्वा-
 लतयेव लावण्यलोभेन लिख्यमानकपोलतला तमालस्थामलेन
 खगमदामोदनिज्जन्दिना तिलकविन्दुना मुद्रितमिव मनोभवसर्ज्यस्य
 वदनमुद्वहन्ती ललाटलासकस्य सीमन्तपुष्पिनचटुलातिशयमण्येः
 उदङ्गता चटुलेनांशुजालेन रक्तांशुकेनेव हतशिरोऽवगुण्ठना पृष्ठ-
 प्रेङ्गदनादरसंवमनशिथिलजटिकावन्धा नीलचामरावधूहिनीव
 चूडामण्डिमकरिकासनाया, मकरकेतुकेतुपताका कुलदेवतेव
 चन्द्रमसः पुनःसञ्जीवनौषधिरिव पुष्पधनुषः वेलेव रागसागरस्य
 व्योत्क्षेपे यौवनचन्द्रोदयस्य मञ्जानदीव रतिरसाद्यतस्य कुसुमो-
 द्भितिरिव सुरततरोः बालविद्येव वैदग्ध्यस्य कौमुदीव कान्तेः

(४१) वन्दनमालिकामिव । २ ।

(४२) एकैकस्य । १ । २ ।

(४३) कुतूहलनिबोधमानया । २ । १ ।

हृतिरिव धैर्यस्य गुरुशालेव गौरवस्य बीजभूमिरिव विनयस्य
 गोष्ठीव गुणानां मनस्वितेव महानुभावतायाः तृप्तिरिव तारुण्यस्य
 कुवलयदलदामदीर्घलोचनया पाटलाधरया कुन्दकुङ्कुलस्कटदशनया
 शिरीषमालासुकुमारभुजयुगलया कमलकोमलकरया वकुलसुरभि-
 निश्वसितया चम्पकावदातया कुसुममयैव ताम्बूलकरङ्कवाहिन्या
 महाप्रमाणाश्चतराकूटयानुगम्यमाना कतिपयपरिचारकपरिकरा
 मालती समदृश्यत । दूरादेव च दधीचप्रेम्णा सरस्वत्या लुण्ठितेय
 मनोरथैः आकृष्टेव कुद्वहलेन प्रत्युन्नतेवोत्कलिकाभिः आलिङ्गितेव
 उत्कण्ठया अन्तःप्रवेशितेव हृदयेन स्नपितेवानन्दाश्रुभिः विलुप्तेव
 स्थितेन बीजितेवोच्छ्वसितैः आच्छादितेव चक्षुषा अभ्यर्चितेव वदन-
 पुण्डरीकेण सखीकृतेवाशया सविधमुपययौ । अवतीर्थ च तुर-
 गात् दूरादेवावननेन स्रग्ध्रां प्रणाममकरोत् आलिङ्गिता च ताभ्यां
 सविनयमुपाविशत् । सप्रश्रवं (४४) ताभ्यां सम्भाषिता च पुण्यभाजम्
 आत्मानममन्यत अकथयच्च दधीचसन्दिष्टं शिरसि विनिहितेन
 अञ्जलिना नमस्कारम् अगृह्णाच्च आकारतः प्रभृति अग्राभ्यतया
 तैश्चैरतिपेशलैरालापैः सावित्रीसरस्वत्योर्भनसी ।

क्रमेण च अतीते मध्यन्दिनसमये शोणमवतीर्णायां सावित्र्या
 स्नातुम् उत्सारितपरिजना साकृता मालती कुसुमप्रसारशायिनीं
 समुपसृत्य सरस्वतीभावभाषे देवि विज्ञप्यं नः किञ्चिदस्ति रहसि
 अतो (४५) मुहूर्तमवधानदानेन प्रसादं क्रियमाणमिच्छामीति ।
 सरस्वती तु दधीचसन्देशाशङ्किनी (४६) किं वक्ष्यतीति स्नानविनि-
 हितवामकरनखकिरणदन्तुरितम् उद्भिद्यमानकुद्वहलाङ्कुरनिकरम्

इव ब्रह्ममुत्तरीयदुकूलवल्कलैकदेशेन संज्ञादवन्ती गलतावतंस-
पङ्कजेन त्रोटुं अवशेनेव धावमानेन अनवरतश्चासन्नोद्गोष्ठा-
विता जीविताशामिव समासन्नतामवलम्बमाना समुत्पुङ्गव
हृष्यश्रिणो लावस्यप्रवाहेण झङ्गाररसेनेव भावयन्ती जीवलोकां
इव नकुसुमपरिमललम्भैर्मधुकरकदम्बकैः मद्मानलहाङ्ग्यामलैः
अनोरघैरिव निर्गत्य सूर्तैर्बतक्षिप्यमाणा कुसुमशयनीवात् स्फुर-
त्स्फुरन्ञ्जरिणी मन्दं मन्दसुदगात् उपांशु कथयेति कपोलतण्डुप्रति-
विम्बितां लज्जयेव कर्णमूलं मालतीं प्रवेशयन्ती मधुरया गिरा
शुधीरमुवाच सखि मालति किमर्षमेवमभिदधासि । काङ्क्षमव-
धानदानस्य । शरीरस्य प्राणानां वा सर्वस्याप्रार्थितोऽपि प्रभवत्येव
अतिपेशलक्ष्णुजो जनः । सा न काचित् या न भवसि मे स्वसा
सखी प्रणयिनी प्राणसमा च । निवृज्यतां यावतः कार्यस्य क्षमं
लोदीयसो गरीयसो वा शरीरकमिदम् । अनवस्करमाश्रयं मे
त्वयि ब्रह्मम् । प्रीत्या प्रतिसरा विधेयास्मि ते । व्याहृणु वर-
वर्षानि विवक्षितमिति ।

सा त्वादीत् देवि जानास्येव माधुर्यं विषयाणां लोभयताश्च
इन्द्रियग्रामस्य (४७) उन्मादिताश्च नवयौवनस्य पारिलवताश्च
मनसः । प्रख्यातैव मन्मथस्य दुर्निवारता । अतो न मामुपा-
लन्नेनोपस्थातुमर्हसि । न च बालिशता अपलता चारण्यता वा
वाचालतावाः कारणम् । न किञ्चिन् कारयत्यसाधारणा स्वामि-
भक्तिः । सा त्वं देवि यदैव दृष्टासि (४८) देवेन तत एवारब्ध
अस्य कामो गुह्यः चन्द्रमा जीवितेशः मलयमवत् उच्छ्वासहेतुः
पाधवोऽन्तरङ्गस्थानेषु सन्तापः परमसङ्कृत प्रजागर आप्तः मनो-

रथाः सर्व्वगताः निश्वासा विग्रहाग्रेसराः स्रुत्युः पार्श्ववर्त्ती
 रणरणकः सञ्चारकः सङ्कल्पा बुद्धुपदेशद्वयाः । किं वा विज्ञा-
 पयामि अनुरूपो देव्या इत्यात्मसम्भावना शीलवानिति प्रक्रम-
 विरुद्धं धीर इत्यवस्थाविपरीतं सुभग इति त्वदायत्तं स्थिरप्रीतिः
 इति निपुणोपक्षेपः जानाति • सेवितुमित्यस्वामिभावोचितम्
 इच्छति दासभावम् (४८) आभरणत्वात् कर्त्तुमिति धूर्त्तालापः
 भवनस्वामिनी भवसीत्युपप्रलोभनं पुण्यभागिनी भजति भक्तारं
 तादृशमिति (५०) स्वामिपक्षपातः त्वं तस्य स्रुतिरित्यप्रियम्
 अगुणञ्चासीत्यधिक्षेपः, स्वप्नेऽस्य वञ्छयः कृतप्रसादासीत्यसाक्षिकं
 प्राणरक्षार्थमर्थयत इति कातरता तत्तागम्यतामित्याञ्चा वारितो
 ऽपि बलांदागच्छतीति परिभवः तदेवमगोचरे गिरामसि इति
 श्रुत्वा देवी प्रमाणमित्यभिधाय दृष्णीमभूत् ।

अथ सरस्वती प्रीतिविस्तारितेन चक्षुषा (५१) प्रत्यवादीत् अयि
 न शक्नोमि वञ्छ भाषितुम् एषास्मि ते स्मितवादिनि वचसि स्थिता
 गृह्यन्ताममी प्राणा इति । मालती तु यदाज्ञापयसि अतिप्रसादः
 इति व्याकृत्य प्रहर्षपरवशा (५२) प्रणम्य प्रजविना तुरगेण ततार
 शोणम् अगाञ्च दधीचमानेतुं च्यवनाश्रमपदम् । इतरा तु सखी-
 स्नेहेन सावित्रीमपि विदितवृत्तान्तामकरोत् अन्तर्गृहाभारभृता च
 तास्यता चेतसा कल्पायितं कथंकथमपि दिवसशेषमनैषीत् । अस्त-
 मुपगतवति (५३) भगवति गभस्तिमति स्मिततरमवतरति तमसि
 (५४) प्रहसितामिव सिता दिशं पौरन्दरीं दरीमिव केसरिणि

(४८) दासताम् । १ । २ ।

(५०) तादृशं भक्तारमिति । २ ।

(५१) चक्षुषोपलक्षिता । १ । २ ।

(५२) हर्षपरवशा । १ । २ ।

(५३) अस्तमुपगते च । १ ।

(५४) अवतरति च तिमिरे । १ । २ ।

तुष्टति(५५) चन्द्रमसि सरस्वती शुचिनि चीनाशुकसुकुमारि(५६)
तरङ्गिणि दुकूलजोमले शवन इव शोणसैकते समुपविष्टा स्वप्न-
प्रतप्रार्थनापादपतनलम्बां दधीचचरखनखचन्द्रिकाभिव ललाटिका
इषाना गच्छस्वसादृश्यप्रतिबिम्बितेन चारुहासिनि अयमसावाहृतो
हृदयद्वितो(५७) जन इति त्रवणसमीपवर्तिना निवेद्यमानमदन-
चन्द्रेषेवेन्दुना, विकीर्णमाणनखकिरणचक्रबलेन बालव्यजनीकृत-
चन्द्रकलाकलापेनेव करेण बीजयन्ती स्वेदिनं कपोलपट्टम्, अत्र
दधीचाहृते न केनचित् प्रवेष्टव्यमिति तिरस्चीनं चित्तमुवा पातितं
विलासवेत्तलताभिव बालवृणालिकामधिस्रनं स्नयन्ती कथमपि
हृदयेन वहन्ती प्रतिपालयामास । आसीद्वास्या मनसि अहमपि
नाम सरस्वती यत्नानुना मनोजन्मना जघन्येव परवशीकृता तत्र का
गणना इतरासु तपस्विनीष्वतितरलासु तरुणीष्विति ।

आजगाम च मधुमास इव सुरभिगन्धवाहः हंस इव क्षत-
वृणालवृतिः शिष्यवृद्धीय धनप्रीत्युन्मुखः मलयानिल इव आहित-
सरसचन्दनधवलिततनुलतात्कम्पः लघ्यमाण इव क्षतकरकचग्रहेण
ग्रहपतिना, प्रेम्बमाण इव कन्दर्पोद्दीपनदक्षेण दक्षिणानिलेन, उच्च-
मान इवोत्कलिकावहलेन, रतिरसेन, परिमलसम्पातिना मधुप-
पटलेन पटेनेव नीलेनाच्छादिताङ्गयटिः अन्तःस्फुरता मत्तमदन-
करिकर्ण(५८) शङ्कायमानेन प्रतिमेन्दुना प्रथमसमागमविलास-
विलासवृत्तिनेव धवलीक्रियमाणैककपोलोदरो मालतीद्वितीयो
दधीचः । आगत्य च हृदयगतद्वितानूपुररवमित्रयेव हंसगङ्गाद्वया
गिरा क्षतसम्प्रापणो यथा मन्मथः समाप्तापयति यथा दौवनमुप-

(५५) उट्टुति । १ । २ ।

(५६) सुकुमारतरे । १ ।

(५७) अतितटितः । २ । १ ।

(५८) मदनमत्तकरिकर्ण । २ । १ ।

दिशति यथासुरागः शिखरति यथा विदग्धताञ्जापयति तथा
तामभिरामां रामामरमवत् । उपजातविस्मया च आत्मान-
मकण्ठदस्य सरस्वती । तथा तु सार्द्धम् एकं दिवसमिवानवत्
संवत्सरमधिकम् ।

अथ दैवयोगात् सरस्वती बभार गर्भम् अस्तूत चानेहसा
सर्वलक्षणाभिरामं तनयम् । तस्मै च जातमात्रायैव सम्यक्
सरहस्याः सर्वे वेदाः सर्वाणि च शास्त्राणि सकलाश्च कलाः (५९)
मत्प्रसादात् स्वयमाविर्भविव्यन्तीति वरमदात् । सङ्कर्तृञ्चाधया
दर्शयितुमिव हृदयेनादाय दधीचं पितामहादेशात् समं सावित्या
ब्रह्मलोकमाकरोह (६०) । गतायाश्च तस्यां दधीचोऽपि हृदये
प्रादिन्येवाभिहतो भार्गववंशसम्भूतस्य आतुर्ब्राह्मणस्य जायाम्
अक्षमालाभिधानां मुनिकन्यकाम् आत्मसूनोः संवर्धनाय नियुज्य
विरहातुरक्षपसे वनमगात् । यस्मिन्नेवावसरे सरस्वत्यस्तूत तनयं
तस्मिन्नेवाक्षमालापि सुतं प्रस्तूतवती । तौ तु सा निर्भिश्चेष्टं
सामान्यस्तन्या शनैः शनैः शिन्धू समवर्धयत् । एकस्तयोः सार-
स्वताश्च एवाभवत् द्वितीयोऽपि वत्सनामाभवत् । आसीञ्च तयोः
सोदर्ययोरिव स्पृहणीया प्रीतिः ।

अथ सारस्वतो मातुर्महिम्ना द्यौवनारम्भ एवाविर्भूताशेष-
विद्यासम्भारसंस्थिन् सवयसि आतरि प्रेवसि प्राणसमे सुहृदि बन्धे
वाक्पुत्रं समस्तमेव सञ्चारयामास चकार च लतदारपरिग्रहस्थास्य
तस्मिन्नेव प्रदेशे प्रीत्या प्रीतिकूटनामानं निवासम् आत्मनापि
आषाढी लक्ष्माजिनी वत्कली अक्षवलयी मेखली जटी च भ्रुव्या
तपस्वतो जनवितुरेव अगामान्तिकम् ।

✓ अथ तस्मात् प्रवर्धमानादिपुरुषजनितात्मचरणोच्चतिर्निर्गत-
प्रबोधः परमेश्वरशिरोरुतः सकलकलागमगम्भीरः महासुनिभाज्यो
विषयसोमशमः क्षितितललम्बावतिः अस्त्रलितप्रवृत्तो भानीरबी-
प्रवाह इव पावनः प्रावर्त्तत विपुलो बन्धः । यस्मादजायन्त वात्सा-
वना नाम मृदुसुनयः आश्रितत्रौता अपि अनालम्बितालीकवक्त्र-
काकवः कृतकुङ्कुटवता अपि अवैडालहस्तयः विवर्जितजनपङ्क्तयः (६१)
परिहृतकपटकौरकुचीकूर्पाकृताः अमृहीतगङ्गराः न्यङ्कृतनिलतवः
प्रसन्नप्रहृतवः विगत- (६२) विहृतवः परपरिवादपराचीनचेतसो
वर्णत्रयव्यावृत्तिविशुद्धोन्मसो धीरधिषणाबधूताधोषणा असङ्कसक-
स्वभावाः प्रणतप्रणयिनः शमितसमस्तशास्त्रान्तरसंशीतयः उद्घाटित-
समग्र- (६३) ग्रन्थार्थग्रन्थयः कवयो वाग्मिनो विमत्तराः सरस-
भाषित- (६४) व्यसनिनो विदग्धपरिहासवेदिनः परिचयपेयला
दृश्यगीतवादिलेखबाह्या ऐतिहास्यविद्वन्मताः सानुकोशाः सत्त्व-
गुणवः साधुसम्प्रताः सर्वसत्त्वसौहार्दवार्द्धकदयाः तथा सर्व-
गुणोपेता राजखेनानभिभूताः क्षमाभाज आश्रितनन्दना अग्नि-
स्त्रिंशा विद्याधरा अजलाः कलावन्तः अदोषासारका अपरोप-
तापिनो भास्वन्तः अनुष्णाणो ज्ञतमजः अकुक्षतवो भोगिनः
असम्भाः पुष्पाक्षयाः अनुत्तमकृतिकया दद्याः अव्याधाः कामजितः
असाधारणा द्विजातयः ।

तेषु चैवमुत्पद्यमानेषु संसरति संसारे यात्सु दुर्गेषु अवतीर्णो
कसौ बहत्सु बन्धरेषु ब्रजत्सु वासरेषु अतिक्रामति च काले प्रसव-
परम्परान्तरनवरतमापतति विक्वाशिनि वात्स्यायनकुले क्रमेण

(६१) विवर्जितजनहस्तयः । १ ।

(६२) विहृत । २ ।

(६३) समस्त । १ ।

(६४) सरसमुभाषित । २ ।

कुवेरनामा वैनतेय इव गुरुपक्षपाती द्विजो जन्म लेभे । तस्याभवन्
 अच्युत ईशानो हरः पाशुपतश्चेति चत्वारो युगारम्भा इव ब्रह्म-
 तेजोजन्ममानप्रजाविस्तारा नारायणवाहुदण्डा इव सञ्चक-
 नन्दकासनयाः । तत्र पाशुपतस्यैक एवाभवद्भूभार इवाचलकुल-
 स्थितश्चतुर्दधिगम्भीरोऽर्थपतिरिति नाम्ना समग्राग्रजन्मचक-
 चूडामणिर्महात्मा स्रुतः । सोऽजनयत् भृगुं हंसं शुचिं कविं
 महीदत्तं धर्मं जातपेदसं चित्रभानुं त्यक्तम् अहिदत्तं विश्वरूपश्च
 इत्येकादश रुद्रानिव सोमाश्चतरसशीकरश्चुरितमुखान् पवित्वान्
 पुत्रान् । अलभत च चित्रभानुशेषां मध्ये राजदेव्यभिधानायां
 ब्राह्मण्यां बाणमात्मजम् । स बाल एव विधेर्बलवतो वशात् उप-
 सम्पन्नया व्ययुज्यत जनन्या । जातस्नेहस्तु नितरां पितैवास्व
 माहताम् अकरोत् । अवर्धत च तेनाधिकतरमेधीयमानवृत्तिः
 धाम्नि निजे ।

कृतोपनयनादिक्रियाकलापस्य समावृत्तस्य चतुर्दशवर्षदेशी-
 यस्य(६५) पितापि श्रुतिस्मृतिविहितं कृत्वा द्विजजनोचितं निखिलं
 पुण्यजातं कालेनादशमीस्य एवास्तमगात्(६६) । संस्थिते च
 पितरि महता शोकेनाभीलमनुप्राप्तो दिवानिशं दक्ष्यमानहृदयः
 क्लृप्तकथमपि कतिपयान् दिवसानात्मष्टम् एवानैषीत् । गते च
 विरक्ततां शोके शनैः शनैः अविनयनिदानतया स्वातन्त्र्यस्य कुद-
 वल्लवहस्ततया च बालभावस्य धैर्यप्रतिपक्षतया च यौवनारम्भस्य
 शैशवोचितान्यनेकानि चापलान्याचरन्निवरो बभूव । अभवंचास्य
 वयसा समानाः सुहृदः सहायाश्च तथाच भ्रातरौ पारश्रवी चन्द्र-
 सेनमाहपेयौ भाषाकविरीशानः परं मित्रम् प्रणयिनौ रुद्रनारा-

यस्यै विद्वांसौ वारवाणवासवाण्यौ वर्षकविर्वेणीभारतः प्रास्ततस्तत्
कुलपुत्रो वासुविकारः, वन्दिनावनकुवाणसूचीवाण्यौ, कात्यायनिका
चक्रवाकिका जाङ्गलिको मयूरकः, ताम्बूलदायकचण्डकः भिषक्-
पुत्रो मन्दारकः पुस्तकवाचकः सुदृष्टिः कलादशामीकरः, शैरिकः
सिन्धुघेणः लेखको गोविन्दकः चित्रकृत् वीरवर्मा पुस्तकृत् कुमार-
दत्तः मार्दङ्गिको जीमूतः गायनौ सोमिल (६०) ग्रहादित्यौ शैरन्ध्री
कुरङ्गिका वांशिकौ मधुकरपारावतौ गान्धर्वोपाध्यायो दर्दुरकः
संवाहिका केरलिका लासकयुवा ताण्डविकः आश्लिक आण्डलः
कितवो भीमकः शैलालिधुवा शिखण्डकः नर्तकी हरणिका (६८)
पाराशरी सुमतिः, क्षपणको वीरदेवः कथको जयसेनः शैवो
वक्रघोणः मन्त्रसाधकः करालः असुरविवरव्यसनी लोहिताक्षः
धातुवादविद् विहङ्गमः दार्दुरिको दामोदरः ऐन्द्रजालिकचको-
राक्षः मस्करी ताम्बूडः । स एतैश्चान्यैश्चानुगम्यमानो (६९)
बालतया निघ्नतानुपगतो देयान्तरालोकनकौतुकाक्षिप्त (७०) हृदयः
सत्स्वपि पितृपितामहोपात्तेषु ब्राह्मणजनोचितेषु विभवेषु सति
च अविच्छिन्ने विद्याप्रसङ्गे गृहान्निर्गतात् अगाध निरवग्रहो ग्रह-
वानिव नवयौवनेन स्वरिणा मनसा महतामुपहास्यताम् ।

अथ शनैः शनैरत्युदारव्यवहृतिमनोज्ञान्ति वृहन्ति राज-
कुलानि वीक्षमाणा निरवद्यविद्याविद्योतितानि च गुरुकुलानि
सेवमानो महार्हालापगम्भीरगुणवज्रोष्ठीक्षोपतिष्ठमानः स्वभाव-
गम्भीरधीधनानि विदग्धमण्डलानि च गाहमानः पुनरपि तामेव

(६०) सोमिल । १ ।

(६८) हरणिका । १ । १ ।

(६९) एतैश्चान्यैश्चानुगम्यमानः । १ । १ ।

(७०) कौतुहलाक्षिप्त । २ ।

वैपश्चितीमात्मवंशोचितां प्रकृतिमभवत् । महतश्च कालात् तामेव
 भूयो वात्स्यायनवंशाश्रयामात्मनो जन्मभुवं ब्राह्मण्याधिवासमगमत्
 (७१) । तत्र च चिरदर्शनादभिनवीभूतस्त्रेहसङ्गावैः ससम्पन्नमप्रक-
 टितश्चातेयैराप्तैरुत्सवदिवस इवानन्दिताभ्यागमनो (७२) वाक्त्रमित्त-
 मण्डलस्य मध्यगतो मोक्षसुखमिवान्वभवत् ।

इति श्रीवाणभट्टकृतौ हर्षचरिते वात्स्यायनवंशवर्णनं नाम
 प्रथम उच्छ्वासः ।

द्वितीय उच्छ्वासः ।

अतिगम्भीरे भूमे कूप इव जलस्य निरवतारस्य ।

दधति समीहितसिद्धिं गुणवन्तः पार्थिवा घटकाः ॥

रागिणि नलिने लक्ष्मीं दिवसो निदधाति दिनकरप्रभवाम् ।

अनपेक्षितगुणदोषः परोपकारः सतां व्यसमम् ॥

अथ तत्र अनवरताध्ययनध्वनिमुखराणि भस्मपुण्ड्रकपाण्डुर-
ललाटैः कपिलशिखाजालजटिलैः कृशानुभिरिव कतलोभागतैः
वटुभिरध्यास्यमानानि सेकसुकुमारसोमकेदारिकाहरितायमान-
प्रघणानि कृष्णाजिनविकीर्णशुध्यत्परोडाशयश्यामाकतण्डुलानि
बालिकाविकीर्णमाथनीवारबलीनि शुचिशिष्यशतानीयमानहरित-
कृशपुष्पीपलायसमिन्धि इन्धनगोमयपिण्डकटमकुटानि आ-
मिन्नीयक्षीरक्षारिणीनामग्निहोत्रधेनूनां खुरबलयैर्विलिखिताजिर-
वितर्दिकानि कामखललज्जस्त्रिखलमर्दनव्यग्रयतिजगानि वैतान-
वेदीयकृष्यानामौडुम्बरीणां शाखानां राशिभिः पवित्रितपर्जन्यानि
वैश्वदेवपिण्डपङ्क्तिपाण्डुरितप्रदेशानि चविर्धूमधूसरिताङ्गन-
विटपिकिसलयानि बन्दीय बालक लालित ललत्तरल तथ्यकानि
क्रीडतृणशरच्छानशावकप्रकटितपशुबन्धप्रबन्धानि (१) शुक्ल-
शारिकारआध्ययनदीयमानोपाध्यायविश्रान्तिसुखानि साक्षात्प्रवी-
तपोवनानीवं चिरदृष्टानां बान्धवानां प्रीयमाणो भ्रमन् भवनानि
सुखमतिष्ठत् ।

तत्रस्थस्य चास्य कदाचित् कुसुमसमययुगमुपसंहरन्वृक्षत
ग्रीष्माभिधानः संपुष्पमल्लिकाधवलादृहासो महाकालः । प्रत्यग्र-
निर्जितस्त्राक्षमुपगतवतो वसन्तसामन्तस्य बालापद्येष्विव पयः-
पाविषु नवोद्यानेषु दर्शितस्नेहो हृदुरभूत् । अभिनयोदितश्च
सर्वस्यां पृथिव्यां सकलकुसुमबन्धनमोक्षमकरोत् प्रतपन्पुष्पासमयः ।
स्वयम् चतुराजस्याभिषेकाद्रीक्षामरकलापा इवागच्छन्त कामि-
नीनां चिकुरचयाः कुसुमायुधेन । हिमदग्धसकलकमलिनीकोपेन
इव हिमालयाभिमुखीं यात्रामदादंशुमाली ।

अथ ललाटन्तपे तपति तपने लिखितललाटिकापुष्पैरलक-
चीरचीवरसंवीतैः स्नेहोदविन्दुमुक्ताक्षवलयवाक्त्रिभिर्दिनकराराधन-
नियमा इवागच्छन्त ललमाललाटेन्दुभिः । चन्दनधूसराभिरसूक्ष्म-
मृग्याभिः कुमुदिनीभिरिव दिवसमसृज्यत सुन्दरीभिः । निद्रालसा
रत्नालोकमपि नासृजन्त दृशः किमुत जरठमातपम् । अशिशिर-
समयेन चक्रवाकमिथुनाभिनन्दिताः सरित इव तनिमानमानीयन्त
सोडुपाः शर्व्वर्य्यः । अभिनयपटुपाटलामोदसुरभिपरिमलं न
केवलं जलं जनस्य पवनस्य पवनमपि पातुमभूदभिलाषो दिवस-
करसन्तापात् ।

क्रमेण च खरखरमयूखे (२) खण्डितशैशवे (३) शुष्यत्खरसि-
सीदत्स्रोतसि मन्दनिर्भरे भिङ्गीकाष्ठाङ्गारिणि कातरकपोत-
कूजितागुबन्धवधिरितविष्टे विष्टसत्पतत्रिणि करीषकृष्णमवति
विरक्तबीधे धधिरकुलहलिकेसरिकिथोरकलिह्वमानकठोरधातकी-
लावके तास्यत्सखेरमवूषवमभुतिम्यग्न्यामहीधरनितम्बे दूषमाव-
हिरददीनदानाभ्यामभ्यामिकालीनसूकमधुलिङ्गि सोहितावभाव-

मन्दारसिन्दूरितसीम्नि सलिलस्रन्दसन्दोहसन्देहमुत्पन्नमहिष-
विषाणकोटिविलिख्यमानस्तुटस्तुटिकदृष्टिर्घर्म्ममर्म्मरितमर्म्भुति
तप्तपांशुकुक्कुलकातरविकिरे विवरशरणाशायिधि तटार्जुनकुरर-
भूटाञ्जरविवर्त्तमानोत्तानशफरधारपङ्कशेषपल्ललाभसि दावजनित-
जगन्नीराजने रजनीराज्यक्षणि कठोरीभवति निदाघकाले प्रति-
दिशमाटीकमाना दूषोषरेषु प्रपाटाटकुटीपटलप्रकटलुण्ठकाः प्रपक्व-
कपिकच्छूगुच्छच्छटाच्छोटमचापलैरकाण्डकण्डूला दूष कषन्तः
शर्करिलाः कर्करस्यलीः स्थूलदृष्टसूर्यमुषो सुषुक्तुन्दकन्दसदलन-
दन्तुराः समन्ततः पतन्मुखरचीरीगणमुखशीकरशीक्षमानतनवः
तक्षतरतरणितापतरले तरन्त दूष तरङ्गिणि जगद्विणिका-
तद्विन्धीनामलीकवारिणि शुष्कमीमर्म्मरमारवमार्गलङ्कन-
लाववज्रजङ्गलाः रैणवायर्ममण्डलीरेचकरासरसरभसारम्भ-
नर्त्तनारम्भारभटोनटाः दावदग्धस्थलीमपीमलनमलिनाः शिञ्जित-
क्षपलकटन्तय दूष वनमयूरपिच्छचयातुश्चिन्वन्तः सप्रयाणगुच्छा दूष
मिम्बानजरत्करश्ममस्त्रीबीजजालकैः सप्रशोभा दूष आतपातुर-
वनमहिषनासानिकुच्छस्थूलनिष्ठासैः सापत्या दूष उट्टीयमान-
जवनवातहरिणपरिपाटीपेटकैः सम्भुक्तय दूष इक्ष्माभानलक्षधाम-
कुसुमटकुटिलधूमकोटिभिः सावोचिवीचय दूष मशोष्ममुक्तिभिः
लोभशा दूष शीर्ष्माणशास्त्रलिफलद्वलतन्तुभिः दद्रुला दूष शुष्क-
फलप्रकरालाटिभिः शिराला दूष तृणवेणीविकिरणैः उच्छ्मन्नव
दूष धूयमाननवयवभूकशकलशकुभिः दंष्ट्राला दूष चलितशलश-
सूषीयतैः जिह्वाला दूष वैश्वानरशिखाभिः उत्सर्पत्यर्पकशुक-
सूडालाः ब्रह्मलम्भरसाभ्यवहरणाय कवलग्रहमिवोष्णैः कमल-
मधुभिरभ्यस्यन्तः सकलसलिलोच्छ्रोषधर्मधोषशापटैरिव शुष्क-

वेणुवनास्फोटनपटुरवैस्त्रिभुवनविभीषिकासुङ्गावयन्तः स्थितचल-
चापपक्षत्रेणीशारितस्तयः त्विषिमन्मयूखलतालातश्लोषकत्वाप-
वपुष इव स्फुटितगुञ्जाफलस्फुलिङ्गाङ्गाराङ्किताङ्गाः गिरिगुहा-
गम्भीरभङ्गारभीषणभ्रान्तयो भुवनभस्मीकरणाभिचारचरूपचन-
चतुरा दधिराङ्गतिभिरिव पारिभद्रद्रुमस्तवकट्टिभिस्तर्पयन्तः
तारवान् वनविभावस्तून् अशिशिरसिकतातारकितरंजसः तप्त-
शैलविलीयमानशिलाजतुरसलवलिप्रदिशः दावदहनपच्यमान
चटकाखण्डखण्डवर्चिततरुकोटरकीटपटलपुटपाकगन्धकटवः प्रा-
वर्तन्त उन्मत्ता मातरिष्ठानः ।

सर्वतश्च भूरिभस्मासहस्रसन्धल्लग्नक्षुभिता इव जरदजगर-
गम्भीरगलगुहायाद्विवायवः क्वचित् स्वच्छन्दतृणचारिणो हरिणाः
क्वचित्तद्वतलविवरविवर्त्तनो बभ्रवः क्वचिज्जटावलम्बिनः कपिलाः
क्वचिच्छकुनकुलकुलायपातिनः श्वेताः क्वचिद्विलीनलाङ्घारस-
लोहितच्छवयोऽधराः क्वचिदासादितशकुनिपक्षकृतपटुगतयो
विशिखाः क्वचिदग्धनिशेषजन्महेतवो निर्वाणाः क्वचित् कुसुम-
वासिताम्बरसुरभयो रागिणः क्वचित् सधूमोद्गारा मन्दश्चयः
क्वचित् सकलजगद्ग्रासघस्त्राः सभस्त्रकाः क्वचित् वेणुशिखरलग्न-
सूर्तयोऽत्यन्तदृढाः क्वचिदचलोपयुक्तशिलाजतवः क्षयिणः क्वचित्
सर्वरस(४)भुजः पीवानः क्वचित् दग्धगुम्फलवो रौद्राः क्वचित्
ज्वलितनेत्रदहनदग्धसकुसुमशरमदनाः कृतस्त्राणुस्थितयः चटुल-
शिखानर्त्तनारम्भारभटीनटाः शुष्ककासारस्त्रतिभिः स्फुटकीरस-
नीवारवीजलाजवर्षिभिः ज्वालाञ्जलिभिरर्जयन्त इव घर्मावृष्टिम्
अवृष्ट्या इव हठहयमानकठोरस्थलकमठवसाविस्त्रगन्धदध्रवः स्वमपि

धूममग्नीदसम्प्रतिभियेव भक्षयन्तः सतिलाकृतय इव स्फुटद्वन्द्व-
बालकीटपटलाः कक्षेषु श्लिष्टिषु इव श्लोषविचटद्वल्लक्षधवलशम्भूक-
शुक्तयः शुष्केषु सरस्यु स्वेदिन इव विलीयमानमधुपटलगोलगलित-
मधूष्णदृष्टयः काननेषु खलतय इव परिशीर्ष्यमाणशिक्षासंज्ञतयो
महोषरेषु मृहीतशिलाकवला इव ज्वलितसूर्यमणि(५)शकलेषु
शिलोज्ञयेषु प्रखट्टश्चन्त दावणा दावाग्नयः ।

तथाभूते च तस्मिन्मध्यमे ग्रीष्मसमये कदाचिदस्य स्वगृहाव-
स्थितस्य भुक्तवतोऽपराहस्यसमये भ्राता पारशवचन्द्रसेननामा
प्रविश्याकथयत् एष खलु देवदेवस्य चतुःसमुद्राधिपतेः सकलराज-
चक्रचूडामणित्रेणीशायकषणनिर्गलीकृतचरणनखमणोः सर्वचक्र-
वर्तिना धौरेयस्य महाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीर्षदेवस्य भ्राता
कृष्णनाम्ना भवतामन्तिकं प्रज्ञाततमो दीर्घाध्वगः प्रहितो द्वार-
मध्याखे इति । सोऽब्रवीत् आयुष्मन् अविलम्बितं प्रवेशयैनमिति ।

अथ तेनानीयमानमतिदूरगमनगुहजडजडं कार्मुकिकचेल-
चीरिकानिदमितोज्ज्वलदधलातकं पृष्ठप्रेङ्गत्पटञ्चरकर्पटघटित-
गलितग्रन्थिम् अतिनिविडसूत्रबन्धनिम्बितान्तरालकृतध्वजच्छेदया
लेखमालिकया परिकलितमूर्द्धानं प्रविशन्तं लेखहारकमद्राणीत्
अप्राचीञ्च दूरादेव भद्रं भद्रमशेषभुवननिष्कारणबन्धोलावभवत् ।
कृष्णस्येति । स भद्रमित्युक्त्वा प्रणम्यातिदूरे समुपाविशत् विद्वान्त-
श्चाब्रवीत् एष खलु स्वामिनो माननीयस्य लेखः प्रहित इति विमुच्य
चार्पयत् । अथ बाणः सादरं मृहीत्वा स्वयमेवावाचयत् मेखलकात्
सन्दिष्टमवधार्य फलप्रतिबन्धी धीमद्विरपहरणीयः कालातिपात
इति एतावद्वार्थजातम् इतरत् वार्तासंवादनमात्रकम् । अवष्ट-
त-

लेखायं च समुत्थारितपरिजनः सन्देशं पृष्टवान् । मेखलकस्त्ववादीत्
 एवमाह मेधाविनं स्वामी जानात्येव मान्यः यथैकगोत्रता वा
 समानजातिता वा समं संवर्द्धनं वा एकदेशनिवासो वा दर्शना-
 भ्यासो वा परस्परानुरागश्रवणं वा परोक्षोपकारकरणं वा
 समानशीलता वा स्नेहस्य हेतवः त्वयि तु विना कारणेनादृष्टेऽपि
 प्रत्यासन्ने बन्धाविव बद्धपक्षपातं किमपि स्मिन्निति मे हृदयम्
 दूरस्थेऽपीन्दोरिव कुमुदाकरे । भवन्तमन्तरेणान्यथा चक्रवर्त्ती
 दुर्जनैर्ग्राहित आसीत् न च तत्तथा । न सम्येव ते येषां सतामपि
 सतां न विद्यन्ते मित्रोदासीनशत्रवः । शिशुचापलापराचीन-
 चित्त(६)वृत्तितया च भवतः केनचिदसहिष्णुना यत् किञ्चित्
 असदृशमुदीरितम् । इतरो लोकस्यैव तत् गृह्णाति वक्ति च ।
 सलिलानीव गतागतिकानि लोलानि खलु भवन्त्यविवेकिना
 मनांसि । बद्धमुखश्रवणनिश्चलीकृतनिश्चयः किं करोतु पृथिवी-
 पतिः । तत्त्वान्नेविभिन्नास्त्राभिर्दूरस्थितोऽपि प्रत्यक्षीकृतोऽसि ।
 विश्वतश्चक्रवर्त्ती त्वदर्थम् यथा प्रायेण प्रथमे वयसि सर्वस्यैव चापलैः
 शैशवमपराधीति । तथेति प्रतिपन्नं स्वामिना । अतो भवता
 राजकुलमहत्कालक्षोपमागन्तव्यम् । अवकेशीवाहटपरमेश्वरो
 बन्धमध्यमधिवसन् नासि मे बद्धमतः नच सेववैषम्यविषादिना
 वा परमेश्वरोपसर्पणभीक्ष्णा भवता भवितव्यम् अतो यद्यपि

स्वेच्छोपजातविषयोऽपि न याति वक्तुं
 देहीति मार्गणशतैश्च ददाति दुःखम् ।
 मोहात् समाक्षिपति जीवनमप्यकारुण्डे
 कटं मनोभव दूषेश्वरदुर्जिदग्धः ॥

तथापि अन्ये ते भूपतयः अन्य एवायं न्यक्कृतवृगनलनिषधनच्छपा-
 स्मरीषदशरथदिलीपनाभागभरतभगीरथययातिरत्नतमवः स्वामी ।
 नास्त्राहङ्कारकालकूटविषदिग्धदुष्टा दृष्टवः न गर्वगुहगरनक्षत्र-
 गदगद्गदा(७)गिरः नातिस्त्रयोप्रापस्त्रारयिस्त्रुतस्यैर्वायि स्थानकानि
 नोद्दामदर्पदाहञ्जरवेगविक्षुवा विकाराः नाभिमानमहासन्धिपात-
 निर्मिताङ्गभङ्गानि गतानि न मदार्हितवकीलतौष्ठनिष्ठूतनिष्ठुरा-
 क्षराणि जल्पितानि तथाच अस्य विमलेषु साधुषु रत्नबुद्धिः न
 शिलायकलेषु मुक्ताधबलेषु गुणेषु प्रसाधनधीः नाभरणभारेषु
 दानवस्य कर्मसु साधनश्रद्धा न करिकीटेषु सर्वाप्रेसरे यशसि
 महाप्रीतिः न जीवितजरत्नो गृहीतकरास्त्राशासु प्रसाधनताभि-
 योगः न निजकलत्रचर्मपुत्रिकासु गुणवति धनुषि सहायबुद्धिः न
 पिण्डोपजीविनि सेवकजने । अपिच अस्य मित्रोपकरणमात्मा
 भृत्योपकरणं प्रभुत्वम् पण्डितोपकरणं वैदग्ध्यम् बान्धवोपकरणं
 लक्ष्मीः रूपणोपकरणमैश्वर्यं द्विजोपकरणं सर्वस्वं सुहृत्-
 संस्कारणोपकरणं हृदयं धर्मोपकरणमायुः साहसोपकरणं शरीरम्
 असिलतोपकरणं पृथिवी विनोदोपकरणं राजकम् प्रतापोपकरणं
 प्रतिपद्यः । नास्त्रात्मपुष्ट्यैरवाप्यते सर्वातिशायिसुखरसप्रसूतिः
 पादपङ्कजच्छायेति । श्रुत्वा च तमेव चन्द्रसेनं समादिशत् कृत-
 कशिपुं विश्रान्तसुखिनमेनं कारयेति ।

अथ गते च तस्मिन् पर्यङ्गे च वासरे संघट्टमानरत्नपङ्कज-
 सम्पुटपीवमान इव क्षयिषि क्षामतां व्रजति बालवायसास्त्राक्षे
 अपराङ्गातिपि शिबिलितनिजबाजिजवे जपापीठपाटले असाक्षल-
 शिखरसुवर्जिते खञ्जतीव कमलिनीकण्टकजतपादपङ्कजे पतङ्गे पुरः

परापतति प्रेङ्गदन्धकारलेशलज्जालके शशिविरहशोकश्याम इव
 श्यामामुखे कृत्रसन्धोपासनः शयनीयमगात् अचिन्तयञ्चैकाकी
 किं करोमि अन्यथा सम्भावितोऽस्मि राज्ञा निर्निमित्तबन्धुना च
 सन्दिष्टमेवं कृष्णेन कटा च सेवा विषमसु भृत्यत्वम् अतिगम्भीरं
 महद्राजकुलम् न च तत्र मे (८) पूर्वजप्रवर्तिता प्रीतिः न
 कुलकमागता गतिः नोपकारस्मरणानुरोधः न बालसेवास्रेहः न
 गोत्रगौरवम् न पूर्वदर्शनदाक्षिण्यम् न प्रज्ञासंविभागोपप्र-
 लोभनम् न विद्यातिशयकुतूहलम् नाकारसौन्दर्यादरः न सेवा-
 काकुक्षौशलम् न विद्वङ्गोष्ठीबन्धवैदग्ध्यम् न वित्तव्ययवशी-
 करणम् न राजवल्लभपरिचयः । अवश्यं गन्तव्यम् सर्वथा
 भगवान् पुरारातिर्भुवनगुरुर्गतस्य मे सर्वं साम्प्रतमाचरिष्यती-
 त्यवधार्य गमनाय मतिमकरोत् ।

अथान्यस्मिन्नहन्यथाय प्रातरेव स्नात्वा धृतधवलदुकूलवासा
 गृहीताक्षमालः प्रास्थानिकानि सूक्तानि मन्त्रपदानि च बह्वशः
 समावर्त्य देवदेवस्य विरूपाक्षस्य क्षीरस्नपनपुरःसरं सुरभिक्षुसुम-
 धूपगन्धध्वजबलिबिलेपनप्रदीपकबहुलां विधाय पूजां परमया भक्त्या
 प्रथमश्रुततरलतिलत्वम्बिचटनचटलमुखरशिखाशेखरं प्राज्या-
 ज्याञ्जतिप्रवर्द्धितदक्षिणार्घ्यं भगवन्तमाशुशुक्ष्णं कृत्वा दत्त्वा
 दुग्धं यथाविद्यमानं द्विजेभ्यः प्रदक्षिणीकृत्य प्राप्नुष्वीं नैचिक्रीं
 शुक्लाङ्गरागः शुक्लमाल्यः शुक्लवासा रोचनाचित्रदूर्वाग्रपल्लवग्रथित-
 गिरिकर्णिकाकुसुमकृतकर्णपूरः शिखासक्तसिद्धार्यकः पितुः कनी-
 वस्था स्वस्त्रा मातेव स्नेहार्द्रहृदयया श्वेतवाससा साक्षादिव मन-
 वस्था महाश्वेतया मालत्याख्यया कृतसकलगमनमङ्गलो दत्ता-

शीर्षादो^१वान्धवदृष्टाभिः अभिनन्दितः परिजनजरतीभिः बन्धित-
चरयैरभ्यनुज्ञातो गुहभिः अभिवादितैः^(८) चाप्रातः शिरसि कुल-
दृष्टैः वर्द्धितगमनोत्थाहः शकुनैः मौञ्चमृत्तिकमतेन हतनक्षत्रदोहदः
शोभने सुहृन्ते^२ हरितगोमयोपलिप्ताजिरस्यच्छिलस्थापितमसितेतर-
कुसुममालापरिचिप्लकण्ठं पिष्टपञ्चाङ्गलपाण्डुरं मुखनिहित-^(१०)
नवचूतपल्लवं पूर्णकलसमुदीक्षमाणः प्रणम्य कुलदेवताभ्यः कुसुम-
फलपाणिभिरप्रतिरथं जपद्भिर्निजद्विजैरनुगम्यमानः प्रथमचलित-
दक्षिणचरणः प्रीतिकृटाब्जिरगात् ।

प्रथमेऽहनि घर्म्मकालकटं निवृत्तकं निजतपपादपविषमं पथिक-
जननमस्त्रियमाणप्रवेशपादपोत्कीर्णकात्थायनीप्रतिघातनं शुष्कम्
अपि पल्लवितमिव दृषितश्चापदकुललम्बितलोलजिह्वालतासदृष्टैः
पुलकितमिव अञ्जभक्त-^(११)गोलाङ्गुललिङ्गमानमधुगोल चलित-
सरघासङ्घातेः रोमाञ्चितमिव दग्धस्थलीरुदस्यूलाभीरुकन्दलगतैः
शनैश्छिडकाकाननमतिकम्य भक्तकूटनामानं ग्राममगात् । तत्र
च हृदयनिर्विशेषेण भ्राता सुहृदा च जगत्पतिनाम्ना सम्पादित-
सपर्यः सुखमवसत् । अथापरेद्युहनीर्यं भगवतीं भागीरथीं
वटिष्टद्वकान्जि वनग्रामके निशामनयत् । अग्यस्मिन् दिवसे
स्वन्धारसुपमञ्चितारम् अन्वजिरवति हतसन्निवेशमाससाद ।
अतिष्ठच्च नातिदूरे ^(१२)राजभवनस्य ।

निर्वर्णितज्ञानाद्यनव्यतिकरो विश्रान्तश्च मेघलकेन सह
याममात्रावशेने दिवसे भुङ्गवति भूभुजि प्रख्यातानां क्षितिभुजां
वहन् शिबिरसन्निवेशान् वीक्षमाणः जनैः शनैः पट्टमभार्यमुप-

(८) अभिनन्दितैः । १ । १ ।

(१०) मुखनिहित । १ ।

(११) शुष्कम् । १ ।

(१२) अतिष्ठच्च नातिदूरे । १ । २ ।

स्थापितैश्च डिण्डिमाधिरोहणावाहृतैश्च अभिनवबद्धैश्च विक्षेपोपा-
 र्जितैश्च कौशलिकागतैश्च (१३) नामवीथीपालप्रेषितैश्च प्रथमदर्शन-
 कृतहलोपनीतैश्च द्रुतसम्प्रेषणप्रेषितैश्च पक्षीपरिहृदौकितैश्च स्वेच्छा-
 रङ्गकीडाकैः काकारितैश्च दीयमानैश्चाच्छिद्यमानैश्च मुच्यमानैश्च
 यामस्थापितैश्च सर्व्वहीपजिगीषयां गिरिभिरिव सागरसेतुबन्ध-
 नार्थम् (१४) एकीकृतैः ध्वजपटपटपटहृद्यङ्गचामराङ्गरागरमणीयैः
 पुष्पाभिषेकदिवसैरिव कल्पितैर्व्वारिणेन्द्रैः श्यामायमानम् अनवरत-
 चलितखुरपुटप्रहतदृङ्गैर्नर्त्तयङ्गिरिव राजलक्ष्मीम् उपहसङ्गिरिव
 दृङ्गपुटप्रहतफेनाट्टहासेन जवजडजङ्गां हरिणजातिम् आकारय-
 ङ्गिरिव सङ्गृहेतोः हर्षहेषितेनोच्चैः श्रवसम् उत्पतङ्गिरिव दिवस-
 कररथतुरगरुषा पक्षायमाणमण्डनचामरमालैर्गगनतलं तुरङ्गैः
 तरङ्गायमानम् अन्यत्र प्रेषितैश्च प्रेथ्यमाणैश्च प्रेषितप्रतीपनिवृत्तैश्च
 वस्तुयोजनगमनगणन(१५)सङ्ख्याक्षरावलीभिरिव वराटिकावलीभिः
 घटितमुखमण्डनकैः तारकितैरिव सन्ध्यातपच्छेदैरङ्गचामरिका-
 रचितकर्णपूरैः सरक्तोत्पलैरिव रक्तशालिशालेयैरनवरतभण-
 भाणायमानचारुचामीकरधुरधुररुक्मालिकैः जरत्करञ्जवनैरिव
 रणितशुष्कबीजकोशीयैः श्रवणोपान्तप्रेङ्गुत्पञ्चरागवर्णोर्णाचित-
 स्तुतजूटजटाजालैः कपिकपोलकपिलैः कमेलककुलैः कपिलाय-
 मानम् अन्यत्र शरज्जलधरैरिव सद्यःक्षुतपयःपटलधवलतनुभिः
 कल्पपादपैरिव मुक्ताफलजालकजावमानालोकलुप्तच्छायामण्डलैः
 नारायणनाभिपुण्डरीकैरिवास्तिष्टगङ्गपद्मैः क्षीरोदोद्देशैरिव
 द्योतमानविकटविद्रुमदण्डैः शेषफणाफलकैरिवोपरिस्फुरत्स्कीत-

माणिक्कखण्डैः श्वेतगङ्गापुलिनैरिव राजहंसोपसेवितैः अभि-
भवङ्गिरिव निदाघसमयम् उपहसङ्गिरिव विवस्वतः प्रतापम् आ-
पिवङ्गिरिवातपं चन्द्रलोकमयमिव जीवलोकं जनयङ्गिः कुमुदमयम्
इव कालं कुर्वङ्गिः ज्योत्स्नामयमिव वासरं विरचयङ्गिः फेनमयीमिव
दिवं दर्शयङ्गिः अकालकौमुदीसहस्राणीव सृजङ्गिः उपहसङ्गिरिव
शातकतवीं त्रियं श्वेतायमानैरातपस्वपण्डैः श्वेतह्रीपायमानम्
क्षणादृष्टनष्टादृष्टिखण्ड मुष्णङ्गिरिव भुवनम् आक्षेपोत्क्षेपदोलायितं
दिनं गतागतानीव कारयङ्गिः उत्सारयङ्गिरिव कृत्पर्ति (१६) कलङ्क-
कालीं कालेयीं स्थितिम् विकचविषदकाशवनपाण्डुरदिशं शरत्-
समयमिवोपपादयङ्गिः (१७) विसतन्तुमयमिवान्तरिक्षमाविर्भावयङ्गिः
यशिकरशुचीना चलता चामराणा सहस्रेर्दोलायमानम्, अपिच
हंसयूयायमानं करिकर्णशङ्कैः कल्पलतावनायमानं कदलिकाभिः
माणिक्यदृक्कवनायमानं मायूरातपत्नैः मन्दाकिनीप्रवाहायमाणा-
मंशुकैः क्षीरोदावमानं क्षौमैः कदलीवनायमानं मरकतमयूखैः
जम्बमानान्धदिवसमिव पद्मरागबालातपैः उत्पद्यमानापरास्वरम्
इवेन्द्रनीलप्रभापटलैः आरभ्यमाणापूर्वनिशमिव महानील-
मयूखान्धकारैः स्यन्दमानानेककालिन्दीसहस्रमिव गरुडमणिप्रभा-
प्रतानैः अङ्गारकितमिव पुष्परागरश्मिभिः कैश्चित् प्रवेशमलभमानैः
अधोमुखैश्चरणमखपतितवदनप्रतिबिम्बनिर्भेन लज्जया स्वाङ्गानीव
विशङ्गिः कैश्चिदङ्गुलीलिखितायाः क्षितेर्विकीर्णमाणकरनखकिरण-
कदम्बकशाखेन सेवाचामराणीव अर्पयङ्गिः कैश्चिदुरःस्थलदोलाय-
मानेन्द्रनीलान्तरक्षप्रभापटैः स्वामिप्रकोपप्रशमनाय कण्ठबहुलपाण-
पटैरिव कैश्चिदुच्छ्वाससौरभभ्रास्यङ्गमरपटलान्धकारितमुखैरपहृत

लक्ष्मीशोकहतलम्बप्रभुभिरिव अन्यैः (१८) शेखरोद्धीयमानमधुप-
मण्डलैः प्रणामविष्टम्बनाभयपलायमानमौलिभिरिव निर्जितैरपि
सम्मानितैरिव अनन्यशरणैः अन्तरान्तरा निष्पततां प्रविशताश्च
अन्तरप्रतीहाराणामनुमार्गप्रधावितानेकार्थिजनसहस्राणाम् अनु-
यायिनः पुरुषानश्रान्तैः पुनः पुनः पृच्छद्भिः भद्रं अद्य भविष्यति
भुक्त्वा स्थाने दास्यति दर्शनं परमेश्वरः निष्पतिष्यति वा वाच्यां
कक्ष्यामिति दर्शनाशया दिवसं नयद्भिः भुजनिर्जितैः शत्रुमहा-
सामन्तैः समन्ताद्दोषेयमानम् अन्यैश्च प्रतापानुरागागतैः नाना-
देशजैर्महीपालैः (१९) प्रतिपालयद्भिर्नरपतिदर्शनकालमध्यास्य-
माणम् एकान्तोपविष्टैश्च (२०) जनैरार्हणैः पाशुपतैः पाराशरिभिः
वर्णिभिश्च सर्वदेशजम्बभिश्च जनपदैः सर्वाम्बोधिवेलावनवलत्य-
वासिभिश्च श्लेष्मजातिभिः सर्वदेशान्तरागतैश्च (२१) दूतमण्डलैः
उपास्यमानं सर्वप्रजानिर्घाणभूमिमिव प्रजापतीनां लोकत्रयसारो-
च्चयरचितं चतुर्थमिव लोकं महाभारतशतैरप्यकथनीयसहस्रि-
सम्भारं हतयुगसहस्रैरिव कल्पितसम्बिवेशं स्वर्गार्थ्यदैरिव विहित-
रामणीयकं राजलक्ष्मीकोटिभिरिव हतपरिग्रहं राजद्वारमगात् ।

अभवञ्चास्य जातविस्मयस्य (२२) मनसि कथमिवेदमित्यत्प्रमाणं
प्राणिजातं जनयतां प्रजासृजां नासीन्महाभूतानां वा परिक्षयः
परमाणूनां वा परिच्छेदः कालस्य वा अन्तः आयुषो वा व्युपरमः
आहतातीनां वा परिसमाप्तिरिति । मेखलकस्तु दूरादेव द्वारपाल-
लोकेन प्रत्यभिज्ञायमानः तिष्ठतु तावत् क्षणमात्रमत्रैव पुष्प-
भागीति तमभिधावाप्रतिष्ठतः पुरः प्राविशत् ।

(१८) अन्यैश्च । १ ।

(१९) महामहोपादे । १ ।

(२०) एकान्तोपविष्टैः । १ । २ ।

(२१) सर्वदीपान्तरागतैश्च । २ । २ ।

(२२) अस्मिन् जातविस्मयोऽस्य । १ ।

अथ स मुहूर्त्तादिव प्रांशुना कर्षिकारगौरेण वीथककुक्ष्य-
वपुषा समुन्मिषन्माणिष्यपदकबन्धबन्धुरशसबन्धहायावसन्नेन (२३)
हिमयैलशिलाविशालवक्षसा हरदृषककुदभूटविकटांसतटेनोरसा
चपलक्ष्मीकहरिणकुलसंयमनपाशमिव चारं बिभ्रता कबचतं बहि
सोमवंशसम्भवः सूर्यवंशसम्भवो वा भूपतिरभूदेवंविध इति प्रष्टमा-
नीताभ्या सोमसूर्याभ्यामिव (२४) अवणगताभ्यां मणिकुण्डलाभ्यां
समुद्भासमानेन वक्षद्वन्द्वलावण्यविसरवेणिकाक्षिप्यमाणैरधिकार-
गौरवाद्दीवमानमार्गेणैव दिनकृतः किरणैः (२५) प्रसादकम्बुया
विकचपुण्डरीकमुण्डमालिकयेव दीर्घया वृष्टा दूरादेवानन्दयता
नैष्ठुर्याधिष्ठानेऽपि प्रतिष्ठितेन पदे प्रत्ययमिवायनन्नेण मौलिना
प्राग्दुरमुष्णीषमुद्धता वामेन स्थूलमुक्ताफलच्छुरणदन्तुरत्वं कर-
किसलयेन कलयता रुपाण्यम् दूतरेणापनीततरुतां ताडितोमिव
लता शातकौम्भो वेद्यटिमुन्मृष्टां धारयता पुरुषेणातुगम्यमानो
निर्गत्यावोचत् एष खलु महाप्रतीहाराणामनन्तरञ्चक्षुष्यो देवस्य
पारियात्रनामा दौगारिकः सममुत्प्लुत्वात्वेनमनुरूपया प्रतिपत्त्या
कल्याणाभिनिवेशीति । दौगारिकः समुपसृत्य (२६) कृतप्रणामो
मधुरया गिरा सपिनयमभाषत आगच्छत प्रविशत दर्शनाय कृत-
प्रसादो देव इति । वाचस्तु धन्योऽस्मि यदेवमनुग्राह्यं मां देवो
मन्यते इत्युक्त्वा तेनोपदिष्टमानमार्गः प्राविशदभ्यन्तरम् ।

अथ वनामुजैरारुह्यैः काण्ड्यैः (२७) भारद्वाजैः सिन्धु-
देश्यैः पारसीकैश्च शोणैश्च श्यामैश्च श्वेतैश्च पिम्बरैश्च हरिद्रिक्च

(२३) प्रसवन्मलप्रावण्येन । २ । १ । (२४) सूर्यसोमाभ्यामिव । २ । १

(२५) दिवकरकिरणैः । १ । (२६) दौगारिकस्तु तदुपसृत्य । १ । २ ।

(२७) काण्ड्यैरारुह्यैः । १ ।

तित्तिरिक्त्वापैश्च पञ्चभद्रैश्च मल्लिकाक्षैश्च कृत्तिकापिञ्जरैश्चायत-
 निर्मासमुखैरनुत्कटकर्णकोशैः सुवृत्तञ्जल्यासुषटितषण्टिकाबन्धैः
 यूपामुपूर्वोवकायतोदग्रग्रीवैः उपचयप्रत्ययत्स्कन्धसन्धिभिर्निर्भुग्नोरः-
 स्थलैः अस्यूलप्रगुणप्रवर्तैर्लोहपीठकठिनखुरमण्डलैरतिजवत्कुटन-
 भयादनिर्मितान्वाणीवोदराणि वृत्तानि धारयद्भिः उद्यच्छोणी-
 विभज्यमानपृथुजघनैर्जगतीदोलायमानबालपल्लवैः कथमप्युभयतो
 निष्ठातदृढभूरिपाशसंयमननियन्वितैरायतैरपि पञ्चात् पाशबन्ध-
 प्रसारितैर्काङ्क्षिभिरायततरैरिवोपलक्ष्यमाणैः बद्धगुणसूत्रग्रथित-
 ग्रीवागण्डकैराभीललोचनैः दूर्व्वारसञ्चामलफेनलवणवलान् दशन-
 मृहीतमुक्तान् फरफरितत्वचः कण्डूजुषः प्रतीकान् प्रचालयद्भिः
 सालसवलितबालधिभिः एकशफविश्रान्तिस्तृप्तिथिलितजघनार्द्धैः
 निद्रया प्रध्यायद्भिश्च स्खलितञ्जङ्कारमन्दमन्दशब्दायमानैश्च ताडित
 खुरधारणीरणितमुखरशिखरखुरलिखितच्छातलैर्घासमभिलषद्भिश्च
 प्रकीर्त्यमाणयवसग्रासरसमत्परोद्भूतक्षोभैश्च प्रकुपितचण्डचण्डाल-
 ङ्ङङ्कारकातरतरतरलतारकैश्च कुङ्कुमप्रखट्टिपिञ्जराङ्गतया सतत-
 सन्निहितनोराजनानलरक्ष्यमाणैरिव उपरिविततवितानैः पुरः-
 पूजिताभिमतदेयतैः भूपालबलभैस्तुरङ्गैराचितां मन्दुरां विलोकयन्
 कुङ्कुमलाक्ष्मिप्रहृदयः किञ्चिदन्तरमतिक्रान्तो हस्तवामेन अत्युच्चतया
 निरवकाशमिवाकाशं कुर्वाणं महता कदलीवनेन परितृप्तपर्जन्यं
 सर्वतो मधुकरमयीभिर्मदस्रुतिभिर्नदीभिरिवापतन्तीभिरापूर्व्व-
 माणम् आशामुखविसर्पिणा वकुलवनानामिव विकसतामामोदेन
 लिम्पन्तं घ्राणेन्द्रियं दूरादव्यक्तम् इभधिष्णागारमपश्यत्
 अष्टञ्च अत्र देवः किं करोतीति । असावकथयत् एष खलु
 देवस्यौपवासो वास्तुं हृदयं जात्यन्तरित आत्मा वहिश्चराः प्राणाः

विक्रमकीडासङ्घत् दर्पशात इति यथार्थनामा वारणपतिः तस्याव-
स्थानमखण्डोऽयं महान् दृश्यत इति । स तमवादीत् भद्र ! अयते
दर्पशातः वद्येवमदोषो वा पश्यामि तावद्धारणेन्द्रमेव अतोऽर्हसि
मामत्र प्रापयितुम् अतिपरवानस्मि कुतश्चलेनेति । सोऽभाषत
भवत्वेवम् आगच्छतु भवान् को दोषः पश्यतु तावद्धारणेन्द्रमिति ।

गत्वा च तं प्रदेशं दूरादेव गम्भीरगलगर्जितोर्जितैर्वियति
चातककदम्बकैर्भुवि च भवननीलकण्ठकुलैः कलकोकाकलकलमुष्कर-
मुखैः क्रियमाणकलकोलाहलं विकचकदम्बसंवादिमदसुरासौरभ-
भरितभुवनं कायवन्तमिवाकालमेघकालम् अविरलमधुविन्दुपिङ्गल-
पद्मजालकितां सरसीमिवाभ्यवगाढा (२८) दृशां चतुर्थीमुखजन्यम्
अनवरतमवतंसशङ्खैरामन्द्रकर्णतालदुन्दुभिध्वनिभिः पञ्चमोपवेश-
मङ्गलारम्भमिव गायन्तम् (२९) अविरतचलनचित्तातिपदीललित-
लास्यलयैर्दोलायमानदीर्घदेहाभोगतया मेदिनीविडलनभवेन
भारमिव लघवन्तं दिग्भित्तिटपु कायमिव कण्डूयमानम् आहवाय
उदल्लङ्घस्ततया दिग्धारणानिवाहयमानं ब्रह्मसम्भ्रमिव स्थूल
निश्चितदन्तेन करपत्रेण पाटयन्तम् अमान्तं भुवनाभ्यन्तरे बहिः
दूवं निर्गन्तुमीहमानं सर्व्वतः सरसकिशलयलतालासिभिर्लेशिकैः
चिरपरिचयोपचितैर्घनैरिव विक्षिप्तसंयैबलविसयिभरशबलसलिलैः
सरोभिरिव च आधोरणैराधीयमाननिदाघसमयसमुचितोपचारा-
नन्दम् अपिच प्रतिगजदानपवनादानदूरात्क्षिप्तेन अनेकसमर-
विजयगणनालेखाभिरिव बलिवलयराजिभिस्तनीयसीभिक्षारङ्गितो-
दरेणातिस्थवौयसा हस्तार्गलदण्डेन अर्गलयन्तमिव सकलं सकुल-
शैलसमुद्रद्वीपकाननं ककुभां चक्रवालम् एकं करान्तरार्पितेन

उत्पलाशेन कदलीदण्डेन अन्तर्गतशीकरसिन्धुमानमूलं मुक्तपङ्कवम्
 इव अपरं लीलावलम्बिना स्थालजालकेन (३०) समररसोच्च-
 रोमाञ्चकण्टकितमिव दन्तकाण्डं बहन्तम् विसर्पन्था च दन्त-
 काण्डयुगलकस्य (३१) कान्ध्या सरःक्रीडास्वादितानीव कुमुदवनानि
 बहुधा वमन्तं निजयशोराशिभिर्व दिशामर्पयन्तं कुकरिकीटपाटन-
 दुर्लक्षितान् (३२) सिंहानिवोपहसन्तं कल्पद्रुमदुकूलमुखपटमिव
 चात्मनः कलयन्तं (३३) हस्तकाण्डदण्डोद्धरणलीलासु च लक्ष्यभागेन
 रक्तांशुकसुकुमारतलेन (३४) तालुना कवलितानि रक्तपङ्कवनानि
 इव वर्धन्तम् अभिनवकिसलयराशीनिवोद्धिरन्तं कमलकवल-
 पीतं मधुरसमिव स्वभावपिङ्गलेन वमन्तं चक्षुषा चूतचम्पक-
 लवलीलवङ्कककोलवन्ध्रेलालतामिश्रितानि ससहकाराणि कर्पूर-
 पूरपूरितानि पारिजातकवनानीव उपभुक्तानि पुरः करटाभ्यां
 बहलमदामोदव्याजेन विस्फजन्तम् अहर्निशं विश्वमकृतहस्त-
 स्थितिभिरवखण्डितपुण्ड्रेक्षुकाण्डकण्ड्यनलिखितैः अलिकुलवाचा-
 लितैर्दानपट्टकैर्विलभमानमिव सर्वकाननानि करिपतीनाम् (३५)
 अविरलोदविन्दस्सन्दिना हिमशिलाशकलमयेन विश्वमनक्ष-
 मालागुणेन शिशिरीक्रियमाणं सकलवारणेन्द्राधिपत्यपट्टवन्धवन्धुरम्
 इवोच्चैस्तरां शिरो दधानं मुहुर्मुहुः स्यगितापाहतदिक्षुस्त्राभ्यां
 कर्षतालतालहन्ताभ्यां बीजयन्तमिव भर्तृभक्त्या दन्तपर्वङ्गिकास्थितां
 राजलक्ष्मीम् आवृतवन्धकमागतेन गजाधिपत्यचिह्नेन चामरेणैव
 चलता बालधिना विराजमानं (३६) स्वच्छशिशिरशीकरच्छलेन

(३०) अद्यावलाशेन । १ ।

(३१) दन्तकाण्डयुगलक । १ ।

(३२) दुर्विदग्धान् । १ । २ ।

(३३) कल्पयन्तम् । १ ।

(३४) सुकुमारतरेण । २ । २ ।

(३५) सर्वकरिपतीनाम् । १ ।

(३६) राजमानम् । २ । १ ।

दिव्यजयपीताः सरित इव पुनः पुनर्मुखेन मुखानां जलमव-
धानदाननिस्पन्दोत्तसकलावयवानामन्यद्विरदडिखिमाकर्णनाङ्ग-
वलनानामन्ते दीर्घानुत्कारैः (३७) परिभवदुःखमिवावेदयन्तश्च
अलम्बयुद्धमिवात्मानमनुशोचन्तम् आरोग्याधिक्यद्विपरिभवेण लज्ज-
मानमिवाङ्गुलीलिखितमहीतलं भद्रं मुखन्तम् अवघ्राट्हीतमुक्त-
कवलकुपितारोहारटनानुरोधेन मदतन्द्रीनिमीलितनेत्रत्रिभागं
कथं कथमपि मन्दमन्दमनादरादाददानं कवलान् अवजगधतमाल-
पल्लवस्तुभ्यामलरखेन प्रभूततया मदप्रवाहमिव मुखेनाप्युत्सृजन्तं
दलन्तमिव दर्पेण खसन्तमिव शीर्षेण मूर्च्छन्तमिव मदेन तुष्यन्त-
मिव तारुण्येन द्रव्यन्तमिव दानेन बलान्तमिव बलेन माद्यन्तमिव
मानेन उद्यन्तमिवोत्साहेन ताम्यन्तमिव तेजसा लिम्पन्तमिव
लावण्येन सिञ्चन्तमिव सौभाग्येन स्निग्धं नखेषु पदं रोमविषये
गुहं मुखे सच्छिष्यं विनये खट्वं शिरसि हठं परिचयेषु क्रुद्धं
स्कन्धबन्धे दीर्घमाद्युधि दरिद्रसुदरे सततप्रवृत्तं दाने बलभङ्गं भद्र-
लीलासु कुलकलत्रभावत्ततासु जिनं क्षमासु वज्रिर्बपं क्रोधमोलेषु
गहडं नागोद्धृतिषु नारदं कलङ्ककुल्लेखेषु शुक्लाशनिपातमव-
स्कन्देषु मकरं वाहिनीक्षोभेषु आशीर्षिणं दशनकर्णसु वरुणं हस्त-
पाशाक्षटिषु यमबागुरामरातिसंवेष्टनेषु कालं परिणतिषु राक्ष-
तीक्ष्णकरग्रहणेषु खोदितान्द्रं वक्त्रचारेषु अलातचक्रं मण्डलभ्रान्ति-
विज्ञानेषु मनोरथसम्पादकं चिन्तामणिपर्वतं (३८) विक्रमस्य दन्त-
मुक्तायैलक्ष्म्यं निवासप्रासादमभिमानस्य वल्लभाभरमण्डनमनो-
हरमिच्छासंहरणविमानं मनस्वितायाः मदधारादुर्हिनाम्बुकारं
गन्धोदकधारागृहं क्रोधस्य सकाशमप्रतिमं महानिकेतनमङ्गारस्य

सगच्छैलप्रसूतवर्णं क्रीडापर्वतमवलम्बेयस्य सदन्ततोरणं वज्रमन्दिरं
 हर्षस्य उच्चकुम्भकूटाट्टालकविकटं सञ्चारिगिरिरदुर्गं राज्यस्य कृता-
 नेकवाणविवरसहस्रं लोहप्राकारं पृथिव्याः (३८) शिलीमुखशत-
 आकारितं पारिजातपादपं भूतन्दनस्य तथाच सङ्गीतमृदङ्गं कर्ण-
 तासताण्डवानाम् आपानमण्डपं मधुपमण्डलानाम् अन्तःपुरं
 शङ्कराभरणानां मदनोत्पलं मदलीलाशालास्थानाम् अक्षुष्यप्रदोषं
 नक्षत्रमालामण्डलानाम् अकालप्रादुर्भावं मदमहानदीपूर-
 सवानाम् अलीकशरत्पत्रमयं सप्तच्छदवनपरिमलानाम् अपूर्व-
 हिमगमं शीकरनीहाराणाम् मिथ्याजलधरं गर्जिताडम्बराणां
 हर्षसातम् अपश्यत् ।

आसीञ्चास्य चेतसि (४०) नूनमस्य निर्घाणे गिरयो (४१)
 प्राङ्गिताः परमाश्रुतां कुतोऽन्यथा गौरवमिदम् आश्चर्यमेतत्
 विन्ध्यस्य दन्तौ आदिवराहस्य कर इति विख्यातमानमेतं (४२) दौवा-
 रिकोऽब्रवीत् पश्य

मिथ्यैवालिखितां मनोरथशतैर्निःशेषनष्टां त्रियं
 चिन्तासाधनकल्पनाकुलधियां भूयो वने विद्विषाम् ।
 आयातः कथमप्ययं श्रुतिपथं श्रूय्मीभवञ्चेतसां
 नागेन्द्रः सहते न मानसगतानाशागजेन्द्रानपि ॥

तदेहि पुनरप्येनं द्रक्ष्यसि पश्य तावद्देवमित्यभिधीयमानश्च तेन
 मदजलपङ्क्तिः (४३) कपोलपट्टपतितां मक्तामिव मदपरिमलेन
 मुकुलितां कथमपि तस्माद्दृष्टिमाकलय्य तेनैव दौवारिकेणोपदिष्ट-

(३८) पृष्ठा । २ । २ ।

(४०) मनसि । १ ।

(४१) पर्यता । १ ।

(४२) विख्यातमानमेतत् । १ ।

४३ मदजलकज्जलकाम । १ ।

मानवर्मा समतिक्रम्य भूपालसदृश (४४)सकुलानि त्रीणि कल्या-
न्तराशि चतुर्थे भक्तास्थानमण्डपस्य पुरस्तादजिरे स्थितं दूरादूर्ध्व-
स्थितेन प्राशुना कर्णिकारगौरेण श्यायामश्यायतवपुषा शशिणा
मौलेन शरीर (४५)परिचारकलोकेन पङ्क्तिस्थितेन कार्तस्वरक्ष-
मण्डलेनेव परितृतम् आसन्नोपविष्टविशिष्टेष्टलोकं हरिचन्दनरस-
प्रक्षालिते तुषारग्रीकरशीतलतले दन्तपाण्डुरपादे शशिमये पूव
मुक्ताशैलशिलापट्टशयने समुपविष्टं शयनीयपर्यन्तविन्यसे समर्पित-
सकलविग्रहभारं भजे दिक्षुष्वविसर्पिणि देहप्रभाषितानं वितत-
मणिमयूखे घर्षसमयसुभगे सरसीव श्वदुष्यालजालजटिलजले
सराजकं रममाणं तेजसः परमाणुभिरिव केवलैर्निर्मितम्
अनिच्छन्तं बलादारोपयितुमिव सिंहासनं सर्ववयवेषु सर्वलक्षणैः
गृहीतं गृहीतब्रह्मचर्यमालिङ्गितं राजलक्ष्या प्रतिपन्नासिधारा-
धारणव्रतमविसंवादिनं राजर्षिं विषमराजमार्गविनिहितपद-
स्खलनभियेव सुलग्नं धर्मो सकलभूपालपरित्यक्तेन भीतेनेव लब्ध-
वाचा सर्वात्मना सत्येन सेव्यमानम् आसन्नवारविलासिनीप्रति-
यातनाभिश्चरणनखपातिनीभिर्हिम्भिरिव दशभिः प्रशम्यमानं दीर्घैः
दिगन्तपातिभिर्दृष्टिपातैर्लोकपालानां कृतालतमिव प्रत्यवेक्षमाणां
मणिपादपीठपट्टप्रतिष्ठितकरेणोपरिगमनाभ्यनुज्ञा लब्धमाणमिव
दिवसकरेण भूषणप्रभासमुत्सारणवहुपर्यन्तमण्डलेन प्रदक्षिणी-
क्रियमाणमिव दिवसेन अप्रसन्नमङ्गिर्गिरिभिरपि दूयमानं शौर्षो-
क्षणा फेनावमानमिव चन्दनधवलं लावण्यजलधिसुदृढतम्
एकराज्यौर्जित्येन निजप्रतिविम्बान्यपि शृप (४६)चक्रचूडामणि-

दृष्टान्वसहमानमिव दर्पदुःखासिकया चामरानिलनिभेन बद्धधेक
 श्वसन्तीं राजलक्ष्मीं दधानं सकलमिर्वचतुःसमुद्रलावण्यमादाय
 उत्थितया त्रिया समुपस्थितम् आभरणप्रभाजालजायमानानीन्द्र-
 धनुःसहस्राणीन्द्रप्राभृतप्रहितानि विलभमानमिव राज्ञां सम्-
 भाषणेषु परित्यक्तमपि मधु वर्षन्तं काव्यकथासु अपीतमपि (४७)
 अष्टतमुद्गमन्तं विश्रम्भभाषितेष्वनाकृतमपि हृदयं दर्शयन्तं प्रसादेषु
 निखलामपि त्रियं स्थाने स्थाने स्थापयन्तं वीरगोष्ठीषु पुलकितेन
 कपोलस्थलेनानुरागसन्देशमिवोपाशु रणत्रियः शृण्वन्तम् अति-
 क्रान्तसुभटकलहालापेषु स्नेहवृष्टिमिव वृष्टिम् इष्टे कृपाणे पातयन्तं
 परिहासस्मितेषु गुरुप्रतापभीतस्य राजकस्य स्वच्छमाशयमिव
 दशनाशुभिः कथयन्तं सकललोकहृदयस्थितमपि न्याये तिष्ठन्तम्
 अगोचरे गुणानाम् अभ्रमौ सौभाग्यानाम् अविषये वरप्रदाना-
 नाम् अशक्ये आशिषाम् अमार्गे मनोरथानाम् अतिदूरे दैवस्य
 अदिशि उपमानानाम् असाध्ये धर्मस्य अदृष्टपूर्वे लक्ष्या मङ्गत्वे
 स्थितम् अरुणपादपङ्क्तयेन सुगतमन्वरोरुणा बज्रावुधनिष्ठुरप्रकोष्ठ-
 टष्ठेन वृषस्कन्धेन भास्वद्विम्बाधरेण प्रसन्नावलोकितेन चन्द्रमुखेन
 लक्षणकेशेन वपुषा सर्वदेवतावतारमिवैकत्र दर्शयन्तम् अपिच
 मासलमयूखमालामलिनितमङ्गीतले महति महार्हे माणिक्य-
 मालामण्डितमेखले महानीलमये पादपीठे कलिकालशिरसीव
 सलीलं विन्यस्तवामचरणम् आक्रान्तकालियफणाचक्रवालं बालम्
 द्वयपुण्डरीकाक्षं क्षौमपाण्डुरेण चरणनखदीधितिप्रतानेन प्रसरता
 मङ्गीं महादेवीपट्टबन्धेनैव महिम्नानमारोपयन्तम् अप्रपञ्चलोक-
 पालकोपेनैव अतिलोहितौ सकलवृषतिमौलिमालासु अतिपीतं

पद्मरागरत्नातपमिव वसन्तौ सर्वतेजस्विमण्डलासमयसम्भ्रामिव
 धारयन्तौ अशेषराजकशेखरकुसुम(४८)मधुरसखोतांसीव खवन्तौ
 समस्तसामन्तसीमन्तोत्तंसखक्त्सौरभभ्रान्तैर्भ्रमरमण्डलैः अमितो-
 त्तमाङ्गैरिव सुहृत्समप्यविरहितौ संवाहनतत्परायाः त्रियो विकच-
 रक्तपङ्कजवनवासभवनानीव कल्पयन्तौ जलजशङ्खमीनमकर-
 सनायतलतया कथितचतुरश्रोधिभोगचिह्नाविव चरणौ दधानम्
 दिङ्गागदन्तमुसलाभ्यामिव विकटमकरमुखप्रतिबन्धबन्धुराभ्याम्
 उद्वेललावण्यपयोनिधिप्रवाहाभ्यामिव फेनाहितशोभाभ्यां चन्दन-
 द्रुमाभ्यामिव भोगिमण्डलशिरोरत्नरश्मिरज्यमानमूलाभ्यां हृदया-
 रोपितभूभारधारणमाणिक्कसम्भ्राम्याभ्याम् ऊरुदण्डाभ्यां विराज-
 मानम् (४९) अष्टतफेनपिण्डपाण्डुना मेखलामणिमयूष्मज्ज्वलितेन
 नितम्बविम्बध्यासङ्किना विमलपयोधौतेन नेत्रसूत्रनिवेशशोभिना
 अधरवाससा वासुकिनिर्मोकेणैव मन्दरं द्योतमानम् अधनेन
 सतारागणेनोपरिहतेन द्वितीयाधरेण भुवनाभोगमिव भास-
 मानम् इभपतिदशनमुसलसङ्घोल्लेखकठिनमखणोनापर्याप्ताधर-
 प्रचिन्ना विविधवाहिनीसङ्घोभकलकलसम्भ्रांसहिष्णुना कैलासम्
 इव महता स्फटिकतटेन उरुणोरःकवाटेन राजमानं त्रीसर-
 स्वद्योबरोवदनोपभोगविभागसूत्रेणैव घातिनेन शेषेणैव च तङ्गज-
 सन्ध्रविन्ध्यसमस्तभूभारलम्बविश्रान्तिसुखप्रसुप्तेन हारदण्डेन
 परिवेष्टितकम्बरं जीवितावधिगृहीतसर्वस्वमहादानदीप्ताचीरेणैव
 हारमुक्ताफलानां किरणनिकरेण प्राट्टवत्तःस्थलम् अजजिगीषया
 बालैर्भुजैरिवापरैः प्ररोहङ्किर्वाह्यपधानशायिन्याः त्रियाः कर्णो-
 त्पलमधुरसधारासन्तानैरिव मलङ्किः भुजजखनः प्रतापस्य निर्गमन-

मार्गेरिवाविर्भवद्भिरक्षयैः केयूररत्नकिरणदण्डैर्भवतः प्रसारित-
मणिमयपद्मवितानमिव माणिक्यमहीधरं सकललोकालोकमार्गा-
गलेन चतुर्दधिपरिचोपस्थातशिलाप्राकारेण सर्वराजहंसबन्ध-
वज्रपञ्चरेण भुवनलक्ष्मीप्रवेशमङ्गलमहामणितोरणेन अतिदीर्घ-
दोर्दण्डयुगलेन दिशां दिक्पालानाञ्च युगपदायतिमपहरन्तम्
सोदर्यलक्ष्मीचुम्बनलोभेन कौस्तुभमणेरिव सुखावयवतां गतस्य
अधरस्य गलता रागेण पारिजातपञ्चवरसेनेव सिञ्चन्तं दिक्षुखानि
अन्तरान्तरा सुहृत्परिहासस्मितैः प्रकीर्यमाणविमलदशनशिखा-
प्रतानैः प्रकृतिमृदाया राजन्त्रियाः (५०) प्रञ्चालोकमिव दर्शयन्तं सुख-
जनितेन्दुसन्देहागतानि कुसुदिनीवनानीव प्रेषयन्तं स्फुटधवल-
दशनपङ्क्तिगतकुसुदवनशङ्काप्रविष्टां शरज्जोत्स्नामिव विसर्जयन्तं
मदिराष्टतपारिजातगन्धगर्भेण भरितसकलककुभा सुखामोदेन
अष्टतमथनदिवसमिव सृजन्तं विकचमुखकमलकर्णिकाकोशेन
अनवरतमापीयमानश्वाससौरभमिवाधोमुखेन नासावशेन चक्षुषः
क्षीरस्निग्धस्य धवलान्ना दिक्षुखान्यपूर्ववदनचन्द्रोदयोद्देलक्षीरोद-
सावितानीव कुर्वाणं विमलकपोलफलकप्रतिविम्बिता चामर-
ग्राहिणीं विग्रहिणीमिव मुखनिवासिनीं सरस्वतीं दधानम्
अक्षणेन चूडामणिशोचिषा सरस्वतीर्षाकुपितलक्ष्मीप्रसादन-
लग्नेन चरणालङ्ककेनेव लोडितायतललाटतटम् आपाटकाश्रुतन्त्री-
सन्तानबलविनीं कुण्डलमणिकुटिलकोटिबालवीणाम् अनवरत
चलितचरणानां वादयतासुपवीणयतामिव स्वरव्याकरणविवेक-
विशारदं अवगावतंसमधुकरकुलानां कलकण्ठितमाकर्णयन्तम् उत्-
फुल्लमालतीमयेन राजलक्ष्म्याः कचप्रहलीलालम्बेन नखज्योत्स्ना-

वलयेनेव मुखशशिपरिवेशमण्डलेन मुखमालागुणेन परिकलित-
 केशान्तं शिखण्डाभरणभुवा मुक्ताफलालोकेन मरकतमणिकिरण-
 कलापेन चाम्पान्यसंवलनवृजिनेन प्रयागप्रवाहवेणिकावारिणेव
 आगत्य स्वयमभिषिच्यमानं अमज्जलविलीनवहललक्षणागुरुपङ्क-
 तिलककलङ्ककल्पितेन कालिन्दा प्रायनाचाटुचतुरचरणपतनशत-
 श्यामिकाकिणेनेव नीलायमानललाटलेखाभिः क्षुभितमानसोद्गतैः
 उत्कलिकाकलापैरिव हारैरुल्लसद्भिरवष्टभ्यमानाभिः विलासवलान-
 चटुलैः भ्रूलताकल्पैरीर्यया श्रियमिव तर्जयन्तीभिः आयाभिभिः
 श्लसितैरविरलपरिमलैर्मलयमन्त्रितमयैः पाशैरिवाकर्षन्तीभिः
 विकटवकुलावलीवराटकवेदितमुखैर्हृद्भिः स्तनकलसैः स्वदार-
 सन्तोषरसमिवाशेषमुखरन्तीभिः कुचोत्कम्बिकाविकारप्रेङ्खिताना
 हारतरलमणीनां रश्मिभिरालम्ब्य हृदयमिव हठात्प्रवेशयन्तीभिः
 प्रभामुषामाभरणमणीनां मयूषैः प्रसारितैर्बहुभिरिव बाहुभिः
 आलिङ्गन्तीभिः जृम्भागुब्धबन्धुरवदनारविन्दावरणीकृतैरुत्तानैः
 करकिसलयैः सरभसप्रधावितानि मानसानोव निबन्धतीभिः
 मदान्धमधुकरकुलकीर्यमाणा कर्णकुसुमरजःकणकृणितकोणानि
 कुसुमशरशरनिकरप्रहारसूक्ष्मासुकुलितानीव लोचनानि चतुरं
 सञ्चारयन्तीभिः अन्योन्यमत्सरादाविर्भवद्भृङ्गभृङ्गकुटिविभ्रमजिह्वैः
 कटाक्षैः कर्णोन्दीवराणीव ताडयन्तीभिः अनिमेषदर्शनमुखरस-
 राशिं मन्वरितपद्मणा चक्षुषा पीतमिव कोमलकपोलपाक्षीप्रति-
 विम्बितं वक्षन्तीभिः अभिलाषलीलानिर्निमित्तस्थितैः चन्द्रोदयान्
 द्रुवमद्मसांशयकाय सन्पादयन्तीभिः अङ्गमङ्गवलनान्योन्यघटितो-
 ज्जानकरवेणिकाभिः स्फुटनमुखराङ्गुलीकाण्डकुण्डलीमिदमाद्य
 नन्दोदधितिनिबहनिभेन अकिञ्चित्करकामकार्मकाणीय रथा

मञ्जुतीभिः वारविलासिनीभिर्विलुप्यमानसौभाग्यमिव सर्वतः
 स्पर्शस्विन्नवेपमानकरकिसलयगलितचरणारविन्दां चरणग्राहिणीं
 विहस्य कोणेन लीलालसं शिरसि ताडयन्तम् अनवरतकरकलित-
 कोणतया चात्मनः प्रिया वीणामिव श्रियमपि शिक्षयन्तं निःश्लेह
 इति धनैः अनाश्रयणीय इति दोषैः निग्रहरुचिरितीन्द्रियैः दुरूप-
 सर्प इति कलिना नीरस इति व्यसनैः भीरुरित्ययशसा दुर्ग्रह-
 चित्तवृत्तिरिति चित्तभुवा स्त्रीपर इति सरस्वत्या षण्ड इति
 परकलत्रैः काष्ठासुनिरिति यतिभिः धूर्त इति वेश्याभिः नेय इति
 सुहृद्भिः कर्मकर इति विप्रैः सुसहाय इति शत्रुयोधैः एकमपि
 अनेकधा गृह्यमाणं शान्तनोर्महाबाहिनीपतिं भीष्माज्जितकाशिनं
 द्रोणाञ्चापलालसं गुरुपुत्रादमोघमार्गणं कर्णान्मित्रप्रियं युधिष्ठिरात्
 बभ्रुक्षमं भीमादनेकनागायुतबलं धनञ्जयान्महाभारतरणयोयं
 कारणमिव क्षतयुगस्य बीजमिव विबुधसर्गस्य उत्पत्तिद्वीपमिव
 दर्पस्य एकागारमिव करुणायाः प्रातिवेशिकमिव पुरुषोत्तमस्य
 खनिपर्वतमिव पराक्रमस्य सर्वविद्यासङ्गीतगृहमिव सरस्वत्याः
 द्वितीयाश्चतमयनदिवसमिव लक्ष्मीसमुत्थानस्य बलदर्शनमिव
 वैदग्ध्यस्य एकस्थानमिव स्थितीनां सर्वस्वकथनमिव कान्तेः अप-
 वर्गमिव रूपपरमाणुसर्गस्य सकलदुश्चरितप्रादुर्भावमिव राज्यस्य
 सर्वबलसन्दोहावस्कन्दमिव कन्दर्पस्य उपायमिव पुरन्दरदर्शनस्य
 आवर्त्तनमिव धर्मस्य कन्यान्तःपुरमिव कलानां परमप्रमाणमिव
 सौभाग्यस्य राजसर्गसमाप्त्यवधयस्नानदिवसमिव सर्वप्रजापतीनां
 गम्भीरस्य प्रसन्नस्य त्रासजननस्य रमणीयस्य कौतुकजननस्य पुण्यस्य
 चक्रवर्त्तिनं हर्षमद्राक्षीत् ।

इहा आनुगृहीत इव निगृहीत इव साभिलाष इव तप्त इव

रोमांसमुखा मुखेन सुसज्जानन्दवाष्पवारिविन्दून् दूरादेव विस्त्रय-
स्फोरः समचिन्तयत् सोऽयं सुजन्मा सुमृतीतनामा तेजसां राशिः
चतुर्दधिकेदारकुटुम्बी भोक्ता ब्रह्मसम्पत्फलस्य सकलादिराज-
चरितजयज्येष्ठमहो देवः परमेश्वरो र्षः । एतेन च खलु राज-
न्वती पृथ्वी । नास्य हरेरिव दृषविरोधीनि बालचरितानि न
पशुपतेरिव दक्षोद्देगकारीख्यैश्वर्यविलसितानि (५१) न शत-
कतोरिव गोत्रविनाशपिशुनाः प्रवादाः न यमस्येवातिवह्मभानि
दण्डग्रहणानि न वरुणस्येव निस्त्रिंशग्राहसहस्ररक्षिता रत्नालयाः
न धनदस्येव निष्कलाः सन्निधिलाभाः न जिनस्येवार्थवादभूत्यानि
दर्शनानि न चन्द्रमस इव बहुलदोषोपहताः श्रियः । चित्रमिदम्
अत्यमरं राजत्वम् । अपिचास्य त्यागस्य अर्थिनः प्रज्ञायाः
शास्त्राणि कवित्वस्य वाचः सत्त्वस्य साहसस्यानानि उत्साहस्य
व्यापाराः कीर्त्तैर्दिक्पुत्रानि अनुरागस्य लोकहृदयानि गुणगणस्य
सङ्क्रया कौशलस्य कला न पर्याप्तो विषयः । अस्मिंश्च राजनि
यतीना योगपटुकाः पुस्तकर्माणां पार्थिवविग्रहाः घटपदानां दान-
ग्रहणकलहाः दत्ताना पादच्छेदाः अटपदानां चतुरङ्गकल्पना
पञ्चगानां द्विजगुरुहेषाः वाक्यविदाम् अधिकरणविचारः । इति
समुपकृत्य चोपवीती स्वस्तिशब्दमकरोत् ।

अबोत्तरेण नातिदूरे राजधिष्ण्यस्य गजपरिचारको मधुरम्
अपरवह्ममुखैरगायत्

करिकलभ विमुक्त्य लोलतां चर विनयव्रतमानताननः ।

जगपतिर्नखकोटिभङ्गुरो गुरुश्चपरि क्षमते न तेऽङ्कुशः ॥

राजा तु तत् श्रुत्वा दृष्ट्वा च तं गिरिगुहागतसिंहदंष्ट्रितगम्भीरेण
 स्वरेण पूरयन्निव नभोभागमष्टच्छत् एष स वाण इति । यथा
 आश्चापयति देवः सोऽयमिति विश्वापितो दौवारिकेण न तावदेनम्
 अक्षतप्रसादः पश्चामीति तिर्यङ् नीलधवलांशुकशरां तिरस्करणीम्
 द्रुव भ्रमयन्प्रपाङ्गनीयमानतरलतारकस्त्रायामिनीं चक्षुषः प्रभाम्
 परिदृष्ट्य प्रेष्ठस्य पृष्ठतो निषस्त्रस्य मालवराजसूनोरकथयत् महानयं
 भुजङ्ग इति । दूष्णीम्भावेन त्वगमितनरेन्द्रवचसि तस्मिन् मूके च
 राजलोके मुहूर्त्तमिव दूष्णीं स्थित्वा वाणो व्यश्चापयत् देव अवि-
 ज्ञाततत्त्व इव अग्रहधान इव नेय इव अविदितलोकट्टान्त इव
 च कक्षादेवमाश्चापयसि । स्वैरिणो विचित्राश्च लोकस्य स्वभावाः
 प्रवादाश्च । मङ्गलिस्तु यथार्थदर्शिभिर्भवितव्यम् । नार्हसि मामन्यथा
 सम्भावयितुमविशिष्टमिव । ब्राह्मणोऽस्मि जातः सोमपायिनां वंशे
 वात्स्यायनानाम् । यथाकालमुपनयनादयः कृताः संस्काराः ।
 सम्यक् पठितः साङ्गो वेदः । श्रुतानि यथाशक्ति शास्त्राणि । दार-
 परिग्रहादभ्यागारिकोऽस्मि । का मे भुजङ्गता । लोकद्वयाविरोधि-
 भिस्तु चापलैः शैशवमशून्यमासीत् । अतानपलापोऽस्मि । अनेनैव
 च गृहीतविप्रतीसारमिव मे हृदयम् । दूदानीन्तु सुगत इव
 शान्तमनसि मनाविव कर्त्तरि वर्णाश्रमव्यवस्थानां समवर्त्तिनीव च
 साक्षाद्गुणभृति देवे शासति सप्ताम्बुराशिरशनामशेषद्वीपमालिनीं
 मर्हो क इवाविशङ्कः सर्व्वव्यसनबन्धोरविनयस्य मनसाप्यभिनयं
 कल्पयिष्यति । आसतां तावन्मातुष्यकोपेताः त्वत्प्रभावादलयोऽपि
 भीता इव मधु पिबन्ति रवाङ्गनामानोऽपि लप्यन्त इवाभ्यनुवृत्ति-
 व्यसनैः प्रियाणा कपयोऽपि चकिता इव चपलायन्ते शरारवोऽपि
 सानुकोशा इव श्वापदगन्धाः पिशितानि भञ्जते । सर्व्वथा कालेन

मां चास्वति स्वामी स्वमेव । अनेपाचीनचित्तदृष्टिपाणिष्ठो हि
भवन्ति प्रज्ञावतां प्रकृतयः । इत्यभिधाय दृष्टीमभूत् (५२) ।

भूपतिरपि एवमस्याभिः श्रुतम् इत्यभिधाय (५३) दृष्टीमेवा-
भवत् सम्भाषणासनदानादिना तु प्रसादेन नैनमन्वयहीत् (५४)
केवलमस्तदृष्टिभिः स्रपयन्निव स्नेहगर्भेण दृष्टिपातमात्रेणान्तर्गता
प्रीतिमकथयत् अस्माभिलाषिणि च लब्धमाने सवितरि विमर्जित-
राजलोको(५५)ऽभ्यन्तरं प्राविशत् । बाणोऽपि निर्गत्य धीतार-
कृतकोमलातपत्विधिं निर्वति वासरे अस्माचलकुटकिरीटे निष्कुल-
मञ्जरीभांसि तेजांसि मुस्रति वियन्मुचि मरीचिमति रोमन्मन्मन्-
कुरङ्गकुटुम्बकाध्यास्यमानम्बदिष्ठगोष्ठीनष्टष्टास्वरस्यस्यलीषु शोका-
कुलकौककामिनीकूजितकव्यासु तरङ्गिणीतटीषु वासविटपोप-
विटवाचाटचटकचक्रवालेष्वालवालावर्जितसेकजलकुटेषु निष्कुटेषु
दिवसविह्वतिप्रत्यागतं प्रकृतस्तनं स्तनन्धवे धयति धेनुवर्गमुन्नत-
क्षीरं क्षुधित (५६) तर्णकप्राते क्रमेण चाक्षधराधरधातुधुनी-
पूरसावित इव लाङ्गितायमानमहसि मज्जति सन्ध्यासिन्धुपान-
पात्रे पातङ्गे मण्डले कमण्डलजलशुचिशयचरणेषु चैत्यप्रणति-
परेषु पाराशरिषु यज्ञपात्रपवित्रपाणौ प्रकीर्णवर्हिष्युक्तेजांसि जात-
वेदसि हवींषि वषट्कुर्वति यायजूकजं निद्राविक्राणद्रोणकुल-
कलिङ्गकुलायेषु कापेयविकलकपिकुलेष्वाभ्युपगतबहु निर्जिगमिपति
जरत्तबकोटरकुटीकुटुम्बिनि कौशिककुले मुनिकरसहस्रप्रकीर्ण-

(५२) दृष्टीमेवामभूत् । १ ।

(५३) इत्यभिधाय । २ । २ ।

(५४) प्रसादेनैनमन्वयहीत् । १ । २ । २ ।

(५५) उवाच विमर्जितराजलोक । १ ।

५६) क्षुधित । १ ।

सम्भावन्दनोदविन्दुनिकर इव दन्तुरवति तारापङ्कथलीं स्ववी-
 वसि तारकानिकुरखे अम्बरान्नयिणि शर्वरीश्वरीशिखण्डे
 खण्डपरशुकण्डकाले कवलयति बाले ज्योतिःशेषं सान्ध्यमन्धकारा-
 वतारे तिमिरतर्जननिर्गतासु दहनप्रविष्टदिनकरकरशाखास्त्रिव
 स्तुरन्तीषु दीपलेखासु अररसम्पुटसंक्रोडनकथितावृत्तिष्विव गोपु-
 रेषु शयनोपजोषजुषि जरतीकथितकथे शिशयिषमाणे शिशुजने
 जरन्महिषमधीमलीमसतमसि जनितपुण्यजनप्रजागरे विजृम्भ-
 माणे भीषणतमे तमीमुखे मुखरितविततज्यधनुषि वर्षति शर-
 निकरमनवरतमशेषसंसारशेमुषीमुषि मकरध्वजे रताकल्पारम्भ-
 शोभिनि शम्भलीभाषितभाजि भजति भूषां भुजिव्याजने सैरिन्ध्री-
 बध्यमानरशनाजालजल्पाकजघनाषु जनीषु वशिकविशिखाविहा-
 रिणीष्वन्यजानुमवासु प्रचलितास्त्रभिसारिकासु विरलीभवति
 वरटानां वेशन्तशायिनीनां मञ्जुनि मञ्जीरशिञ्जितजङ्गे जल्पिते
 निद्राविद्राणद्राघीयसि द्रावयतीव च विरहिहृदयानि सारस-
 रसिते भाविवासरवीजाङ्कुरनिकर इव च विकीर्त्यमाणे जगति
 प्रदीपप्रकरे निवासस्थानमगात् । अकरोञ्च चेतसि अतिदक्षिणः
 खलु देवो हर्षः यदेवमनेकबालचरितचापलोचितकौलीनकोपितो-
 ऽपि मनसा स्त्रित्यत्येव मयि । यद्यहमक्षिगतः स्या न मे दर्शनेन
 प्रसादं कुर्वीत् । इच्छति तु मा गुणवन्तम् । उपदिशन्ति हि
 विनयमनुरूपप्रतिपत्त्युपपादनेन वाचा (५७) विनापि भर्तृध्यानां
 स्वाभिनः । अपिच धिक् मां स्वदोषान्धमानसमनादरपीडित-
 मेवमतिगुणवति राजन्यन्यथा चान्यथा च चिन्तयन्तम् । सर्वथा
 करोमि तथा (५८) यथा यथावस्थितं जानाति मामयं कालेन ।

इत्येयमवधार्य च अपरेद्युर्निष्क्रम्य कटकात् सुहृदां बान्धवानाञ्च
भवनेषु तावदतिष्ठत् यावदस्य स्वयमेव गृहीतस्यभावः प्रथिवीपतिः
प्रसादवानभूत् । अविशञ्च पुनरपि नरपतिभवनम् । स्वल्पैरेव
चाहोभिः परमप्रीतेन प्रसादजन्यमगो मानस्य प्रेम्णो विश्रम्भस्य
द्रविणस्य नर्माणः प्रभावस्य च परां कोटिमानोयत नरेन्द्रेणेति ।

इति श्रीवाणभट्टकृते कृष्णचरिते राजदर्शनं नाम

द्वितीय उच्छ्वासः ।

तृतीय उच्छ्वासः ।

निजवर्षाहितस्नेहा बद्धभक्तजनान्विताः ।

सुकाला इव जायन्ते प्रजापुण्येन भूभुजः ॥

साधूनामुपकर्तुं लक्ष्मीं द्रष्टुं^(१) विहायसा गन्तुम् ।

न कुतूहलि कस्य मनश्चरितश्च महात्मनां श्रुतम् ॥

अथ कदाचित् विरलितवलाहके चातकातङ्गकारिणि कणत्-
कादम्बे दर्दुरद्विषि मयूरमदमुषि हंसपथिकसार्यसर्वातिथौ
धौतासिनिभनभसि भास्वरभास्वति शुचिशशिनि तरुणतारागणे
गलत्पुनासीरशरासने सीदत्सौदामिनीदान्नि दामोदरनिद्राद्रुहि
द्रुतवैदूर्यवर्णार्णसि घूर्णमानमिहिकालघुमेघमोघमघवति निमील-
न्नीपे निष्कुसुमकुटजे निर्मुकुलकन्दले कोमलकमले मधुस्यन्दी-
न्दीवरे कङ्काराङ्गादिनि शेफालिकाशीतलीकृतनिशे यूथिका-
मोदिनि मोदमानकुसुदावदातदशदिशि सप्तच्छदधूलिधूसरित-(२)
समीरे स्ववकितबन्धुरबन्धूकावध्यमानाकाण्डसन्ध्ये नीराजितवाजिनि
उद्दामदन्तिनि दर्पक्षीवौलके क्षीयमाणपङ्कचकबाले बालपुलिन-
पल्लवितसिन्धुरोधसि परिणामाभ्यानभ्यामाके जनितप्रियङ्गुमञ्जरी-
रजसि कठोरिततपुषत्वचि कुसुमस्योरशरे शूरत्वमयारम्भे राक्षः
समीपात् वाणो बन्धून् द्रष्टुं पुनरपि तं ब्राह्मणाधिवासमगात् ।

समुपलब्धभूपालसम्मानातिशयपरितुष्टास्तस्य ज्ञातव्यः ज्ञाध-
माना निर्वयुः । क्रमेण च कांचिदभिवादवमानः कैचिदभिवाद-

मानः कैश्चिच्छिरसि शुभ्यमानः काश्चिन्मूर्ध्नि समाजिघ्रन् कैश्चि-
दालिङ्गमानः काश्चिदालिङ्गन् अन्यैराशिषानुगृह्यमाणः पराननु-
गृह्यन् बहुबन्धुमध्यवर्ती परं सुसुदे । सम्मानपरिजनोपनीतश्च
आसनमासीनेषु गुरुषु भजे । भजमानश्चाश्चादिसत्कारं नितरां
नमन्द । प्रीयमाणेन च मनसा सर्वाङ्गान् पर्यष्ट्यत् कश्चिदेता-
यतो दिवसान् सुखिनो यूयम् । अप्रत्यूहा वा सम्यक्करणपरि-
तोषितद्विजचक्रा कातवी क्रियते क्रिया(३) । यथावद्विकलमन्त्र-
भास्त्रि भुञ्जते हवींषि कुतभुजः । यथाकाकमधीयते वा बटवः ।
प्रतिदिनमविच्छिन्नो वा वेदाभ्यासः । कश्चित् स एव चिरन्तनो
यज्ञविद्याकर्म्मण्यभियोगः । तान्येव व्याकरणे परस्परस्पर्द्धानुबन्धा-
बन्धदिवसदर्शितादराणि व्याख्यानमण्डलानि । सैव वा पुरातनी
परित्यक्तान्यकर्त्तव्या प्रमाणगोष्ठी । स एव वा मन्दीकृतेतरयास्त्र-
रसो मीमासायामतिरसः । कश्चित् एव बाभिनवसुभाषितसुधा-
वर्षिणः काव्यालापा इति ।

अथ ते तन्मनुः तात सन्तोषजुषा सततसन्निहितविद्याविनो-
दानां वैतानवक्त्रिमात्रसहायानां कियन्मात्रं नः कृत्यं सुखितया
सकलभुवनभुजि भुजङ्गराजदेहदीर्घे रक्षति क्षितिं क्षितिभुजो
भुजे (४) । सर्वथा (५) सुखिन एव वयं विशेषेण तु त्वयि विमुक्त-
कौसीद्ये परमेश्वरपार्श्ववर्त्तिनि वेत्तासनमधितिष्ठति । सर्वे च
यथाशक्ति यथाविभवं यथाकालश्च सम्पाद्यन्ते विप्रजनोचिताः क्रिया-
कलापाः । इत्येवमादिभिराख्यामैः स्वन्धावारवाक्ताभिश्च शैशवाति-
कान्तकीडानुच्छारणैः पूर्वजकथाभिश्च विनोदितमनासैः सह

(३) क्रिया क्रियते । १ ।

(४) क्षितिपभुजे । १ ।

(५) सर्वथा । १ । २ । २ ।

सुचिरमतिष्ठत् उल्हाय च मध्यन्दिने यथाशिवमाणाः स्थिती-
रकरोत् । भुक्तवन्तश्च तं सर्वे ज्ञातयः पर्यवारयन् ।

अत्रान्तरे दुकूलपट्टप्रभवे शिखण्डपाङ्गपाण्डुनी पौण्ड्रे याससी
वसानः स्नानावसानसमये वन्दितया तीर्थच्छदा गोरोचनया च
रचिततिलकः तैलामलकमण्डणितमौलिः अनुञ्जच्च्डाचुम्बिना
निविडेन कुसुमापीडकेन समुद्गासमानः असह्यदुपयुक्तताम्बूल-
विमलाधरकान्तिः एकशलाकाञ्जनजनितलोचनरुचिः अचिरभुक्तो
विनीतमार्त्यश्च वेधं दधानः पुस्तकवाचकः सुदृष्टिराजगाम नाति-
दूरवर्त्तिन्याश्वासन्दां निषसाद । स्थित्वा च मुहूर्त्तमिय तत्कालाप-
नीतसूत्रवेष्टनमपि नखकिरणैर्दृष्टणालसूत्रैरिव वेष्टितं पुस्तकं
पुरोनिहितशरशलाकायन्त्रके निधाय पृष्ठतः सनीडसन्निविष्टाभ्यां
मधुकरपारावताभ्यां दत्ते स्थानके प्राभातिकप्रपाठकच्छेदचिह्नी-
कृतम् अन्तरपत्रमुत्क्षिप्य गृहीत्वा च कतिपयपत्रलघ्वीं कपाटिकां
क्षालयन्निव मघीमलिनान्यक्षराणि दन्तकान्तिभिः अर्जयन्निव
सितकुसुमसुक्तिभिर्ग्रन्थं मुखसन्निहितसरस्वतीनूपुररवैरिव गमकैः
मधुरैराक्षिपन् मनांसि श्रोतृणां गीत्या पवमानप्रोक्तं पुराणं पपाठ ।

तस्मिंश्च तथा श्रुतिस्तुभगगीतिगर्भं पठति सुदृष्टौ नातिदूरवर्त्ती
वन्दौ सूक्ष्माणक्षारमधुरेण गीतिध्वनिमनुवर्त्तमानः स्वरेणेदम्
आर्याबुगलमपठत् (६)

तदपि सुनिगीतमतिष्ठत् तदपि जगद्धापि पावनं तदपि ।

हर्षचरितादभिज्ञं प्रतिभाति हि मे पुराणमिदम् ॥

बंशानुमविवादि स्फुटकरणं भरतमार्गभजनगुह ।

जीकण्ठविनिर्वातं गीतमिदं हर्षराज्यमिव ॥

तत् श्रुत्वा बाणस्य चत्वारः पितामहमुखपद्मा इव वेदाभ्यास-
पवित्रितस्पर्शवः उपाया इव सामप्रयोगखलितमुखाः गणपतिः
अधिपतिः तारापतिः श्यामलः इति पितृव्यपुत्रा भ्रातरः प्रसन्न-
हृत्तयो मृहीतवाक्याः कृतगुरुपदभ्यासा न्याववादिनः (७) सुकृत-
संग्रहाभ्यासगुरवो लब्धसाधुशब्दाः लोक इव व्याकरणोऽपि सकल-
पुराणराजर्षिचरिताभिज्ञाः महाभारतभावितात्मानो विदित-
सकलेतिहासा महाविद्वांसो महाकवयो महापुरुषवृत्तान्तकुक्ष-
हतिनः सुभाषितत्रयणरसरसायना विलम्बिता वयसि वयसि वयसि
तपसि सदसि महसि वपुषि यज्ञसि च प्रथमाः पूर्वमेव कृतसङ्करा
विवक्षवः स्मितमुधाधवलितकपोलोदराः परस्परस्य मुखानि व्यलो-
कयन् ।

अथ तेषां कनीयान् कमलदलदीर्घलोचनः श्यामलो नाम
बाणस्य प्रेयान् प्राणानामपि वशयिता दन्तसंज्ञकैः सप्रणयं दशन-
ज्योत्स्नास्त्रपितककुभा मुखेन्दुना बभाषे तात बाण द्विजानां राजा
गुरुदारग्रहणमकार्षीत् । पुरुरवा ब्राह्मणधनदण्डाया दयितेन
आयुषा व्ययुज्यत । नष्टुवः परकलत्राभिलाषी महाभुजङ्ग आसीत् ।
ययातिः आश्रितब्राह्मणीपाणिग्रहणः पपात । सुद्युम्नः स्त्रीमव
एवाभवत् । सोमकस्य प्रख्याता जन्तुवधनिर्घृणता । माम्बाता
मार्गणव्यसनेन सपुत्रपौत्रो रसातलमगात् । पुरुकुत्सः कुक्षितं
कर्म्म तपस्व्यपि मेकलकन्यकायामकरोत् । कुबलयाश्वो
भजङ्गलोकपरिग्रहात् अश्वतरकन्यकाम् (८) अपि न परिजहार ।
ष्टयुः प्रथमपुरुषकः परिभूतवान् दृविबीम् । दृगस्य लकलासभावे
वर्णसङ्करः समदृश्यत । सौदासेन न रक्षिता पर्याकुलीकृता

क्षितिः (८) । नलमवशाच्चहृदयं कलिरभिभूतवान् । संवरणो
 मितदुहितरि विह्वलतामगात् । दशरथ इष्टरामोन्मादेन खलुम्
 अवाप । कार्त्तवीर्यो गोब्राह्मणातिपीडनेन निधनमयासीत् ।
 मरुत्त इष्टवज्रसुवर्णकोऽपि देवद्विजवज्रमतो न बभूव । यन्तगुरपि
 व्यसनादेकाकी विसृक्तो वाहिन्या विपिने बिललाप (१०) । पाण्डुः
 वनमध्यगतो मत्स्य इव मदनरसाविष्टः प्राणान् मुनोच । बुधष्ठिरो
 गुह्यभयविषसहृदयः समरशिरसि सत्यमुत्पृष्टवान् । इत्थं नास्ति
 राजत्वमपकलङ्कम् ऋते देवदेवादमुतः सर्वद्वीपभुजो हर्षात् । अस्य
 हि बह्वन्याश्चर्याणि श्रूयन्ते तथाहि अत्र बलजिता निशलीकृताः
 चलन्तः कृतपक्षाः क्षितिभृतः । अत्र प्रजापतिना शेषभोगमण्डलस्य
 उपरि क्षमा कृता । अत्र पुरुषोत्तमेन सिन्धुराजं प्रमथ्य लक्ष्मीः
 आत्मीकृता । अत्र बलिना मोक्षितभूभृद्देष्टनो मुक्तो महानागः ।
 अत्र देवेनाभिषिक्तः कुमारः । अत्र स्वामिना एकप्रहारपातितारा-
 रातिना प्रख्यापिता (११) शक्तिः । अत्र नरसिंहेन स्वहस्तविश-
 सितारातिना प्रकटीकृतो विक्रमः । अत्र परमेश्वरेण तुषारशैल-
 भुवो दुर्गाया गृहीतः करः । अत्र लोकनाथेन दिशां मुखेषु
 परिकल्पिता लोकपालाः सकलभुवनकोशचाग्रजन्मनां विभक्तः ।
 इत्येवमादयः प्रथमकृतवृत्तस्यैव (१२) दृश्यन्ते महासमारम्भाः (१३) ।
 अतोऽस्य सुगृहीतमन्त्रः पुण्यराशेः पूर्वपुरुषवंशानुक्रमेणादितः
 प्रभृति चरितमिच्छामः श्रोतुम् । सुमहान् काशो नः श्रुश्रूष-
 मायानाम् । अथस्मान्तमणय इव लोहानि गौरसनिष्ठुराणि

(८) भूमि । १ ।

(१०) बिललाप विषने । १ ।

(११) एकप्रहारमपातितारातिना ख्यापिता । १ ।

(१२) कृतवृत्तस्यैव । २ । १ ।

(१३) महान्तः संरम्भा । २ । १ ।

कुल्लकानामप्याकर्षन्ति मनांसि मज्जतां(१४) गुणाः किमुत स्वभाव-
सरसश्चदूनीतरेशाम् । कस्य न द्वितीयमहाभारते भवेदस्य चरिते
कुल्लहलम् । आचटा भवान् । भवतु भार्गवोऽयं वंशः शुचिनानेन
राजर्षिचरित(१५) अवशेन सुतरां शुचितरः । इत्येवमभिधाय
दृष्टीमभूत् ।

वाणस्तु विहस्यावर्षीत् आर्यं न युक्तगुरुपमभिहितम् ।
अचटमानमनोरथमिव भवतां कुल्लहलमवकल्पयामि । शम्भाशम्भ-
परिसङ्ख्यानमूल्याः प्रायेण स्वार्थलक्षः । परगुणानुरागिणी प्रिय-
जनकथाश्रवणरसरभसमोहिता च मन्ये मज्जतामपि मतिरपहरति
प्रविवेकम् । पश्यत्वार्थः क परमाणुपरिमाणं यदुच्छदयं क समस्त-
ब्रह्मस्तन्मन्यापि देवस्य चरितम् । क परिमितवर्णवृत्तयः कतिपये
शब्दाः क सङ्क्रान्तिगास्तद्वगुणाः । सर्वज्ञस्याप्ययमविषयः वाच-
स्पतेरप्यगोचरः सरस्वत्या अप्यतिभारः किमुताच्छादिवस्य । कः
खलु पुरुषानुपश्यतेनापि(१६) शक्रयादविकलमस्य चरितं वर्णयितुम्
एकदेशे तु यदि कुल्लहलं वः सञ्जा वयम् । इयमधिगतकतिपया-
क्षरलवलघीयसी जिह्वा कोपयागं गमिष्यति । भवन्तः ओतारः
वर्ण्यते हर्षचरितं किमन्यत् । अद्य तु परिणतप्रायो दिवसः ।
पन्नाल्लम्बमानकपिलकिरणजटाभारभास्वरौ भगवान् भार्गवो राम
इव समन्तपञ्चकक्षिरमहाङ्गदे निमज्जति (१७) सन्ध्यारागपटले
पृषा । श्वो निवेदयितास्मीति । सर्वे च (१८) ते तथेति प्रत्न-
पद्यन्त । नातिचिरादुत्थाय सन्ध्यामुपासितुं शोणमयासीत् ।

अथ मधुमदपल्लवितमालवीकपोलकोमलतापे मुकुलिनेऽङ्गि

(१४) मज्जतां मनानि । १ ।

(१५) राजर्षिवंश । २ । २ ।

(१६) पुरुषानुपश्यतेन । १ । (१७) मज्जति । १ । (१८) सर्वे । २ । २ ।

कमलिनीमलनादिव लोहिततमे तमोलिहि रवौ लम्बमानं रवि-
 रथतुरगमार्गानुसारेण यममहिष इव धावति नभसि तमसि
 क्रमेण च गृह्णतापसकुटीरकपटलावलम्बिषु रक्तातपच्छेदैः सह
 संज्ञतेषु वल्कलेषु, कलिकल्पापमुषि पुष्पति गगनमग्निहोत्रधामधूमे
 सनियमे यजमानजने, मौनव्रतिनि विहारवेलाविलोले पर्यटति
 पत्नीजने विकीर्त्यमाणहरितश्चामाकशालिपूलिकासु दुग्धासु होम-
 कपिलासु ह्वयमाने वैतानतनूनपाति पूतविष्टरोपविष्टे क्षणाजिन
 जटिले जटिनि जपति वटुजने, ब्रह्मासनाध्यासिनि ध्यायति योगि-
 गणे तालध्वनिधावमानानन्तान्तेवासिनि चलसदृशोत्रियाशुमतेन
 गलदूषण्यदण्डकोङ्कारिणि सन्ध्या समवधारयति, वठरविटवटु-
 समाजे समुन्मज्जति च ज्योतिषि तारकाख्ये खे प्राप्ते प्रदोषारम्भे
 भवनमागत्योपविष्टः स्निग्धैर्बन्धुभिश्च सार्द्धं तथैव गोद्या तस्थौ ।
 नीतप्रथमयामश्च गणपतेर्भवने (१६) परिकल्पितं शयनीयमसेवत ।
 दूतरेषान्तु सर्वेषां निमीलितदृशामप्यनुपजातनिद्राणां कमल-
 वनानामिव सूर्योदयं प्रतिपालयता कुलहलेन कथमपि सा क्षपा
 क्षयमगच्छत् (२०) ।

अथ यामिन्यास्तुष्ये यामे प्रतिवृद्धः स एव वन्दी शोकद्वयत्
 अगायत्

पञ्चादङ्गिं प्रसार्य त्विकनतिविततं द्राघयित्वाङ्गमुच्चैः
 आसज्याभुग्नकण्ठो मुखमुरसि सटा धूलिध्व्वा विधूय ।
 वासवासाभिलाषादनवरतचलत्प्रोथतुल्यस्तुरङ्गो
 मन्दं शब्दायमानो विलिखति शयनावुत्थितः क्ष्मां खुरेण ॥

कुर्वन्नाभग्नष्टो मुखनिकटकटिः कन्धरामातिरश्चौ
लोलेमाह्वयमानं तुहिनकणमुखा चक्षता केसरेण ।
निद्राकण्डूकषायं कपति निविजितश्रोत्रशुक्तिस्तुरङ्गः
त्वङ्मत्स्याग्रलग्नप्रतनुवसकणां कोणमच्छाः खुरेण ॥

वाणस्तु तत् श्रुत्वा समुत्सृज्य निद्राम् उत्थाय प्रक्षाल्य वदनम्
उपास्य भगवतीं सन्ध्याम् उदिते भगवति सवितरि गृहीतताम्रलः
तत्रैवातिष्ठत् । अत्रान्तरे सर्वेऽस्य ज्ञातयः समाजग्मुः परिवार्य
चासाञ्चक्रुः । असावपि पूर्वोद्घातेन विदिताभिप्रायस्तेषां पुरो हर्ष-
चरितं कथयितुमारेभे ।

श्रूयताम्

. अस्ति पृथ्व्यलतामधिवासो वासवावास इव वसुधामवतीर्णः
सततमसङ्कीर्णवर्णव्यवहारस्थितिः कृतयुगव्यवस्यः स्थूलकमल(११)
बहुलतया पोषोन्मूयमानधृणालैरुद्गीतमेदिनीसारगुणैरिव कृत-
मधुकरकोलाहलैर्दलैर्द्विष्यमानक्षेत्रः क्षीरोदपयःपायिपयोद-
सिक्ताभिरिव पुच्छेक्षुवाटसन्ततिभिर्निरन्तरः प्रतिदिशमूर्ध्वपर्वतकैः
इव खलधानधामभिर्विभज्यमानैः सम्यक्कटैः सङ्कटसीमान्तः
समन्तादुद्घातघटीसन्ध्यमानैर्जोरकजटैर्जटिलितभूमिः उर्वरावरी-
योभिः शालीयैरलङ्कृतः पाकविशराक्षराजमापूनिकरकिष्कीरितैश्च
स्फुटितमुक्कफलकोशीकपिशितैर्गोधूमधामभिः स्थलीष्टैरधिष्ठितः
महिषष्टप्रतिष्ठितगायत्रोपालपालितैश्च कीटपटललम्पटचटकानु-
सृतैरवटुघटितवण्टावटोरटितरमणीयैरटद्विरटवौ हरद्वभपीतम्
चाचवाशङ्कया(१२)बहुविभक्तं क्षीरोदमिव क्षीरं क्षरद्विर्वाष्यच्छेद्य-
तण्डुलैर्गोधूनेर्धवलितविपिनः विविधमग्नहोमभ्रमान्धशतमन्यमुक्तैः

लोचनैरिव सहस्रसङ्घैः कृष्णशरैः शारीकतोद्देशः (२३) धवलधूली-
 मुचा केतकीवनानां रजोभिः पाण्डुरीकृतैः प्रमथोद्धूलनधूसरैः शिव-
 पुरस्येव प्रवेशैः प्रदेशैरुपशोभितः शाककन्दलस्थामलितग्रामोपकण्ठ-
 काश्चपीठः पदे पदे करभपालीभिः पीलुपल्लवप्रस्फोटितैः करपुट-
 पीडितमातुलुङ्गीदलरसोपलितैः स्वेच्छाविचितकुङ्कुमकेसरकृतपुष्प-
 प्रकरैः प्रत्यग्रफलरसपानसुखसुप्तपथिकैः वनदेवतादीयमानास्यत-
 रसप्रपागटहैरिव द्राक्षामण्डपैः स्फुरत्फलानाञ्च वीजलग्नशुकचक्षु-
 रागाणामिव समारूढकपिकूलकपोलसन्दिह्यमानकुसुमानां दाडि-
 मीनां वनैर्विलोभनीयोपनिर्गमः वनपालपीयमाननारिकेलरसा-
 सवैश्च पथिकलोकलुप्यमानपिण्डखर्जूरैर्गोलाङ्गुलिलिह्यमानमधुरा-
 मोदपिण्डोरसैश्चकोरचक्षुजर्जरितारुकैरुपवनैरभिरामः । तुङ्गा-
 र्ज्जुनपालीपरिवृतैश्च गोकुलावतारकलुषितकूलकीलालैरध्वगशत-
 शरणैररण्यधराबन्धैरबन्धवनरन्ध्रः करभीयकुमारकपाल्यमानैः
 औद्रकैरौरभ्रकैश्च कृतसम्बाधः दिशि दिशि रविरथतुरगविलो-
 भनायेव विलोठनस्यदितकुङ्कुमस्थलीरससमालम्ब्यानामुत्प्रोथपुटैः
 उन्मुल्लैरुदरशायिकिशोरकजवजननाय प्रभञ्जनमिव चापिवन्तीना
 वातहरिणीनामिव स्वच्छन्दचारिणीनां वडवानां वृन्दैर्विचरद्भिः
 आचितः अनवरतकृतधूमान्धकारप्रवृत्तैर्हंसयूथैरिव वाणैर्धवलित-
 भुवनः सङ्गीतगतमुरजरवमत्तैर्भयूरैरिव विभवैर्मुखरितजीवलोकः
 शशिकरावदातृत्तैर्मुक्ताफलैरिव गुणिभिः प्रसाधितः पथिकशत-
 विलुप्यमानस्कीतफलैर्महातरुभिरिव सर्वातिथिभिरभिगमनीयः
 स्वगमदपरिमलवाहिष्वगरोमाच्छादितैर्हिमवत्पादैरिव महन्तरैः
 स्थिरीकृतः प्रोद्दण्डसहस्रपत्नोपविष्टद्विजोत्तमैर्नारायणनाभिमण्डलैः

इव तोवाशयैर्मल्लितः मलितपत्रः प्रवाहप्रक्षालितक्षितिभिः क्षीरोद-
मधनारम्भैरिव महाघोषैः पूरिताशः श्रीकण्ठो नाम जनपदः ।

यत्र त्वेतामिधूमाश्रुपातजलक्षालिता इवाक्षीयन्त कुट्टयः ।
पथ्यमानचयनेटकादहनदग्धानीव नाट्यन्त हरितानि । छिद्यमान-
यूपदारुपरशुपाटित इव व्यदीर्यताधर्माः । मल्लशिखिधमजलधर-
धाराधौत इव ननाश वर्णसङ्करः । दीपमानानंकगोसहस्रशृङ्ग-
खण्डमान इवापलायत कलिः । सुरालयशिलाघट्टनटङ्कनिकर-
निकृत्ता इव व्यदीर्यन्त विपदः । महादानविधानकलकलाभिद्रुता
इव प्राद्वक्ष्युपद्रवाः । दीप्यमानसत्त्वमहामससहस्र(२४)सन्तापिता
इव व्यलीयन्त व्याधयः । दृषविवाहप्रहतपुण्यपटङ्गपटुवत्ताप्तिता
इव नोपासर्पण्यपष्टत्यवः । सन्ततब्रह्मघोषयधिरीकृता इवापजग्मः
देतयः । धर्माधिकार(२५) परिभूतमिव न प्राभवद्द्वैवम् (२६) ।

तत्र चैवंविधे नानागामाभिरामकुसुमगन्धपरिमलसुभगो
यौवनारम्भ इव भुवनस्य कुङ्कुममलनपिञ्जरितवज्रमहिषीसहस्र-
शोभितोऽन्तःपुरनिवेश इव धर्मस्य मरुद्दृश्यमानचमरीबालव्यजन-
धवलितप्रान्तः एकदेश इव सुरराज्यस्य ज्वलन्मल्लशिखिसहस्र-
दीप्यमानदशदिगन्तः शिविरसन्निवेश इव कृतबुगस्य पद्मासनस्थित-
ब्रह्मर्षिध्यानाधीयमानसकलाकुशलप्रथमः प्रथमाऽवतार इव ब्रह्म-
लोकस्य कलकलमुखरमहावाहिनीशतसङ्कलो विक्षेप इयोनर-
कुण्डलाम् ईश्वरमार्गस्यसन्तापानभिन्नसकलजनो विजिगीषुरिव
त्रिपुरस्य सुधारससिक्तधवलगटङ्गपङ्क्तिपाण्डुरः प्रतिनिधिरिव चन्द्र-
लोकस्य मधुमत्तमस्तकाशिनीभूषणरवभरितभवनो नामाभिहार
इव कुवेरनगरस्य स्यात्स्वीश्वराख्यो जनपदविशेषः ।

यस्तपोवनमिति मुनिभिः कामायतनमिति वेश्याभिः सङ्गीत-
शालेति लासकैः यमनगरमिति शत्रुभिः चिन्तामणिभूमिरिति
अर्थिभिः वीरक्षेत्रमिति शस्त्रोपजीविभिः गुहकुलमिति विद्या-
र्थिभिः गन्धर्वनगरमिति गायनैः विश्वकर्म्ममन्दिरमिति विश्वा-
निभिः लाभभूमिरिति वैदेहकैः दूतस्थानमिति वन्दिभिः साधु-
समागम इति सङ्घैः वज्रपञ्जरमिति शरणागतैः विटगोष्ठीति
विदग्धैः सुकृतपरिणाम इति पथिकैः असुरविवरमिति वातिकैः
शाक्याश्रम इति शमिभिः अश्वरःपुरमिति कामिभिः महोत्सव-
समाज इति चारणैः वसुधारेति विप्रैरमृतं ।

यत्न च मातङ्गगामिन्यः शीलवत्यश्च गौर्धो विभवरताश्च श्यामाः
पद्मरागिण्यश्च धवलद्विजशुचिवदनाः मदिरामोदिच्छसनाश्च चन्द्र-
कान्तवपुषः शिरीषकोमलाङ्ग्यश्च अभुजङ्गम्याः कस्तुरिकिन्यश्च पृथ-
कलत्वश्रियः दरिद्रमध्यकलिताश्च लावण्यवत्यो मधुरभाषिण्यश्च
अप्रमत्ताः प्रसन्नोज्ज्वलरागाश्च अकौतुकाः प्रौढाश्च प्रमदाः ।

यत्न च प्रमदानां चक्षुरेव सहजं सुण्डमालामण्डनं भारः-
कुबलयदलदामानि । अलकप्रतिविम्बान्येव कपोलतलगतानि
अक्लिष्टाः श्रवणावतंसाः पुनरुक्तानि तमालकिशलयानि । प्रिय-
कथा एव सुभगाः कर्णालङ्काराः आङ्ग्वरः कुण्डलादिः । कपोला
एव सततमालोककारकाः विभवो निशासु मणिप्रदीपाः ।
निष्ठासाल्लटमधुकरकुलान्येव रमणीयं सुखावरणं कुलस्त्रीजना-
चारो जालिका । वाष्पी एव मधुरा वीणा वास्यविज्ञानं तन्त्री-
ताडनम् । हासा एवातिशयसुरभयः पटवासाः निरर्थकाः
कर्पूरपाशवः । अधरकान्तिविसरएवोज्ज्वलतरोऽङ्गरागः निर्गुणो
लावण्यकलङ्कः कुङ्कुमपङ्कः । बाहव एव कोमलतमाः परिहास-

प्रहारवेतलताः निष्प्रयोजनानि वृक्षालानि । यौवनोष्णस्नेहविन्दव
एव विदग्धाः कुचालङ्कृतयः शरास्तु भाराः (२७) । ओष्य एव
विशालस्फाटिकशिलातलचतुरस्त्रा रागिणां विश्रमकारणम् अनि-
मित्तं भवनमणिवेदिकाः । कमललोभनिलीनान्यलिकुलान्येव
मुखराणि पदाभरणकानि (२८) निष्कलानीन्द्रनीलनूपुराणि ।
नूपुररवाहता भवनकलहंसा एव समुचिताः सञ्चरणसहायाः
ऐश्वर्यप्रपञ्चाः परिजनाः ।

तत्र च साक्षात् सहस्राक्ष इव सर्ववर्णधरं धनुर्दधानो मेरुमय
इव कन्यागाप्रकृतित्वे मन्दरमय इव लक्ष्मीसमाकर्षणं जलनिधि-
मय इव सूर्याढायाम् आकाशमय इव शब्दप्रादुर्भावे शशिमय इव
कन्यासंग्रहे वेदमय इव अक्षतिमालापत्वे धरणिमय इव लोक-
वृत्तिकरणे पवनमय इव सर्वपारिवरजोविकारहरणे गुरुवचसि
पृथुरसि विशालो मनसि जनकसपसि सुयात्रसंजसि सुमन्त्रो
रहसि वधः सदसि अर्जुनो यशसि भीष्मो धनुषि निपधो वपुषि
शत्रुघ्नः समरे शूरः शूरसेनाक्रमणे दक्षः प्रजाकर्माणि सर्वादि-
राजतेजःपुञ्जनिर्मित इव राजा पुण्यभृतिरिति नाम्ना बभूव ।

पृथुना गौरियं कृतेति यः स्यद्भुजमान इव महीं महिषीं
चकार । निसर्गस्यैरिणी स्वरुच्यनुरोधिनी (२९) भवति हि महतां
मतिः । यतस्तस्य केनचिदनुपदिष्टा सहजैव शैशवादारभ्य अन्य-
दवताविमुखी (३०) भगवति भक्तिमुलभे भुवनभृति भूतभावेन
भवच्छ्रद्धिं भवे भूयसी भक्तिरभूत् । अक्षतदृपभध्वजप्रजाविधिर्न

(२७) शरास्तु भार । १ ।

(२८) अनन्यदेवताभक्ते । १ ।

(२८) पदाभरणकानि । १ ।

अनन्यदेवताविमुखी । १ ।

(२९) स्वरुच्यनुरोधिनी । १ । १ ।

अनन्यदेवता । १ ।

स्वप्नेऽप्याहारमकरोत् । अजम् अजरम् (३१) अमरगुहम् असुरपुर-
 रिपुम् अपरिमितगणवतिम् अचलदुहितृपतिम् अखिलभुवनकृत-
 चरणानतिं पशुपतिं प्रपन्नोऽन्यदेवताभूत्यममन्यत त्रैलोक्यम् ।
 भर्तृचिन्तामुवर्त्तिन्यन्वानुजीविनां प्रकृतयः । तथाहि गृहे गृहे भग-
 वानपूज्यत खण्डपरशुः । वक्रस्य होमालवालविलीयमानवहल-
 गुग्गुलुगन्धर्भाः स्रपनक्षीरशीकरक्षोदक्षारिणः विल्वपल्लवदाम-
 दलोद्वाहिनः पुण्यविषयेषु बाधवः । शिवसपत्न्यासमुचितैरुपायनैः
 प्राभूतैश्च पौराः पादोपजीविनः सचिवा मुञ्जबलनिर्जिताश्च करदी-
 कृता महासामन्तास्तं सिधेविरे । तथाहि कैलासकूटधवलैः कनक-
 पत्रलतालङ्कृत (३२) विषाणकोटिभिर्महाप्रभासैः सन्ध्याबलितृषैः
 सौवर्णैश्च स्रपनकलमैः अर्घभाजनैश्च धूपपात्रैश्च पुष्पपटैश्च मणि-
 यष्टीप्रदीपैश्च ब्रह्मसूत्रैश्च महार्हमाणिक्यखण्डखचितैश्च मुखकोषैः
 परितोषमस्य मनसि चक्रुः । अन्तःपुराण्यपि स्वयमारब्धबालेव-
 तखण्डलकण्डनानि (३३) देवगृहोपलेपनलोहिततरकरकिसलयानि
 कुसुमग्रथनव्यग्रसमस्तपरिजनानि तस्याभिलषितमन्त्रयन्तन्त ।
 तथाच परममाहेश्वरः स भूपालो लोकतः शुश्राव भुवि भगवन्तम्
 अपरमिव साक्षात् दत्तमन्त्रमयनं दाक्षिणात्यं बहुविधविद्याप्रभाव-
 प्रख्यातैर्गुणैः शिष्यैरिवानेकसहस्रसङ्ख्यैर्गर्वाग्रमर्त्यलोकं भैरवाचार्य-
 नामानं महाशैवम् । उपजयन्ति हि हृदयमदृष्टमपि जनं शील-
 संवादाः । यतः स राजा त्रयणसमकालमेव तस्मिन् भैरवाचार्ये
 भगवति द्वितीय इव कपर्दिनि दूरगतेऽपि (३४) गरीयसीं बबन्ध
 भक्तिम् आचक्राह च मनोरघैरप्यस्य सर्वथा (३५) दर्शनम् ।

(३१) अजम् अजरम् अमरम् । २ ।

(३२) कनकपत्रालङ्कृत । ३ ।

(३३) खण्डनानि । १ । २ । (३४) दूरगतेऽपि । १ । (३५) सर्वथा । २ ।

अथ कदाचित् पर्यस्तोऽसावक्षुब्धिनि वासरे अन्तःपुरवर्तिनं
 राजानमुपसृत्य प्रतीहारी विज्ञापितवती देव हारि परिवाङ्मासे
 कथयति च भैरवाचार्यवचनाद्देवमनुप्राप्तोऽस्मीति । राजा तु तत्
 श्रुत्वा सादरं कासौ आनवात्तैव प्रवेशयैनमिति आग्रहीत् ।
 तथाचाकरोत्प्रतीहारी । नक्षिराञ्च प्रविशन्तं प्राशुमाजानुभजं
 भैक्षज्ञानमपि स्थूलास्थिभिरवयवैः पीवानमिवोपलक्ष्यमाणां पृथू
 त्तमाङ्गम् उत्तुङ्गबलिभङ्गस्यपुटललाटं निर्ध्मांसगच्छकूपकं मधुविन्दु
 पिङ्गलपरिमण्डलाक्षम् ईषदावकघोषम् अतिप्रलम्बैककर्षपाशम्
 अलावुबीजविकटोन्नतदन्तपङ्क्तिं तुरगानूकस्यधाधरलेखं लम्बचिबुका-
 यततरलपनम् अंसावक्षुब्धिना काषायेण योगपट्टकेन विरचित
 वैकल्यकं हृदयमध्यनिबद्धग्रन्थिना च रागेशेव प्लवङ्गः कृतेन धातु
 रसाक्षेपेन कर्पटेन कृतोत्तरासङ्गं पुनश्चक्रवालप्रपञ्चवेष्टननिचल-
 मृतेन बहुवृत्त्यपरिघोधनवंशत्वकृत्तितटना कौपीनसमायग्रिधरेण
 खर्जूरपुटसमुद्भक्तगर्भोत्ततभिक्षाकपालकेन दारकफलकतदवतिर्कोष-
 त्रिवटिनिविष्टकमण्डलुना वक्षिष्यपादितपादुकावस्थानेन स्थूल-
 दशाक्षुर्वनियन्त्रितपुस्तिकापुस्तिकेन वामकरधृतेन योगभारकेण
 अध्यासितस्कन्धम् इतरकरगृहीतवेत्तासनं मस्करिणमद्राणीत् ।
 क्षितिपतिरपि उपगतमुचितेन चैनमादरेणान्वगृहीत् आसीनश्च
 यप्रच्छ क भैरवाचार्य इति । सादरनरपतिवचनमुदितमनास्तु
 परिवाट् तमुपनगरं सरस्वतीतटवनावलम्बिनि श्रुत्यायतने स्थितम्
 आचक्षते । भूयश्चावभाषे अर्हयति हि महाभागं भगवान्
 आशीर्वाचसा । इत्युक्त्वा चोपनिन्ये योगभारकाटालय भैरवा-
 चार्यप्रहितानि रत्नवन्ति बहुशालोकक्षितान्तःपुराणि पञ्च राज-
 तानि पुरुरीकाणि ।

नरपतिस्तु प्रियजनप्रणयभङ्गकातरो दाक्षिण्यमनुरूपमानो
ग्रहणलाघवञ्च लङ्घयितुमसमर्थो दोलायमानेन मनसा स्थित्वा
कथं कथमप्यतिसौजन्यनिघ्नस्तानि जग्राह जगाद च सर्व्वफल-
प्रसवहेतुः शिवभक्तिरियं नो मनोरथदुर्लभानि फलति फलानि
येनैवमस्मासु प्रीयते भगवान् भुक्नगुरुभैरवाचार्य्यः । श्लो द्रष्टास्मि
भगवन्तम् । इत्युक्त्वा च मस्करिणं व्यसर्जयत् अनया च वार्त्तया
परा मुदमवाप ।

अपरेद्युच्च प्रातरेवोत्थाय वाजिनमधिरुह्य समुच्छित्तखेतातपत्रः
समुद्भूयमानधवलचामरयुगलः कतिपयैरेव राजपुत्रैः परिवृतो
भैरवाचार्य्यं सवितारमिव शशी द्रष्टुं प्रतस्थे । गत्वा च किञ्चिदन्तरं
तदीयमेवाभिमुखमापतन्तमन्यतमं शिष्यमद्राक्षीत् अप्राक्षीञ्च क
भगवानास्ते इति । सोऽकथयत् अस्य जीर्णमाट्टमृदस्थोत्तरेण
वित्त्ववाटिकामध्यास्ते इति । गत्वा च तं प्रदेशमवततार प्रविवेश
च वित्त्ववाटिकाम् ।

अथ महतः कार्पाटिकवृन्दस्य मध्ये प्रातरेव स्नातं दत्ताष्ट-
पुष्पिकम् अनुष्ठिताग्निकार्य्यं कृतमस्त्ररेखापरिहारपरिकरे हरित-
गोमयोपलिप्तक्षितितलवितते व्याघ्रचर्मस्थुपविष्टं कृष्णकम्बलप्राव-
रणनिभेन असुरविवरप्रवेशाशङ्कया पातालान्धकारावासमिवाभ्य-
स्यन्तम् उन्मिषता विद्युत्कपिलेनात्मतेजसा महामासविक्रयकीतेन
मनःशिलापङ्केनेव शिष्यलोकं लिम्पन्तं जटीकृतैकदेशलम्बमान-
रुद्राक्षशङ्खगुटिकेनोर्ध्वबद्धेन शिखापाशेन बध्नन्तमिव विद्यावलेप-
दूर्ज्विदग्धान् उपरि सञ्चरतः सिङ्गान् धवलकतिपयशिरोरुहेण
वयसा पञ्चपञ्चाशतं वर्षाख्यतिक्रामन्तं खालित्यक्षीयमाणशङ्खलोम-
लेखम् लोमशकर्णशङ्कलीप्रदेशं पृथललाटतटं तिरश्चा भस्त्र-

ललाटिकया वज्रशः शिरोऽर्द्धतदग्धगुग्गुलुसन्तापस्फुटितकपाला-
स्थिपाण्डुरराजिशङ्कामिव जनयन्तं सहजललाटवर्गलभङ्गसङ्को-
चितकूर्चभागा बभ्रुभासं भ्रूसङ्ख्या निरन्तरामायामिनीम् एका-
मिव भ्रूलेखा बिभ्राणम् ईषत्काचकाचरकनीनिकेन रक्तापाङ्ग-
निर्गताशुप्रतानेन मध्यधवलभासर इन्द्रायुधेनेवातिदीर्घेण लोचन-
युगलेन परितो महामण्डलमिव (३६) अमेकवर्णरागमालिखन्तं
मितपीतलोहितपताकावलीशवलं शिवबलिमिव दिक्षु विलिपन्तं
तार्क्ष्यतुण्डकोटिकुजाग्रघोणं दूरविदीर्णसङ्कसंक्षिप्तकपोलं किञ्चिद्-
दन्तुरतया सदाहृदयमन्विहितहरमौलिचन्द्रातेनैव निर्गच्छता
दन्तालोकेन धवलयन्तं दिशा जालकं जिह्वाग्रस्थितसर्वशेष-
संहितातिभारेणैव मनाक्प्रलम्बितोष्ठं प्रलम्बश्रवणपालीप्रेक्षिताभ्यां
स्फाटिककुण्डलाभ्यां शुकरहस्पतिभ्यामिव सुरासुरविजयविद्या-
सिद्धिअद्वयानुबध्यमानं बहुविविधौषधिमन्त्रसूत्रपङ्क्तिना सलोह-
वलयेनैकप्रकोष्ठेन गङ्गखण्डं प्रणो दन्तमिव भगवता भवेन भग्नं
भक्त्या भूषणीकृतं कलयन्तम् अप्थिलरसकूपोदक्षनघटीयन्त्रमालाम्
इव रुद्राक्षमाला दक्षिणेन पाणिना भ्रमयन्तम् उरसि दोलाय-
मानेनापिङ्गलाग्रं कूर्चकलापेन सम्मार्जयन्तमिवान्तर्गतं निज-
रजोनिकरम् अतिनिविडनीललोममण्डलानिचितश्च ध्यानलब्धेन
ज्योतिषा दग्धमिव हृदयदेशं दधानम् ईषत्प्रशिथिलबलिबलय-
बध्यमानतुन्दम् उपचीयमानस्किङ्गासपिण्डकं पाण्डुरपवित-
जोमारुतकौपीनं सावटम्प्रपञ्चबन्धमण्डलितेनाद्यतफेनश्वेतश्चा
योगपट्टकेन वासुकिनेवाप्रतिहतानेकमन्त्रप्रभावाविर्भूतेन प्रद-
क्षिणीकियमाणम् अरुणतामरसमुकुमारतलस्य पादयुगलस्य

निर्मलैर्नखमयूखजालकैर्जर्जरयन्तमिव महानिधानोद्धरणरसेन
 रसातलं तोयक्षालितशुचिना धौतपादुकायुगलेन हंसमिथुनेनेव
 भागीरथीतीर्थयात्रापरिचयागतेनामुच्यमानचरणान्तिकं शिखर-
 निखातकुञ्जकालायसकण्टकेन वैष्णवेन विशाखिकादण्डेन सर्व्व-
 विद्यासिद्धिविघ्नविनायकाप्रयनाङ्कुशेनेव सततपार्श्ववर्त्तिना विराज-
 मानम् अवज्जभाषिणं मन्दहासिनं सर्व्वोपकारिणं कुमारब्रह्म-
 चारिणम् अतितपस्विनं महामनस्विनं कृशकोधम् अकृशानुरोधं
 महानगरमिवादीनप्रकृतिशोभितं मेरुमिव कल्पतरुपल्लवराशि-
 सुकुमारच्छायं कैलासमिव पद्मपतिचरणरजःपवित्रितशिरसं शिव-
 लोकमिव माहेश्वरगणानुयातं (३७) जलनिधिमिवानेकनदनदी-
 सहस्रप्रक्षालितशरीरं जाङ्गवीप्रवाहमिव वज्रपुण्यतीर्थस्थानशुचिं
 धाम धर्मस्य तीर्थं तथ्यस्य कोशं कुशलस्य पत्तनं पूततायाः शालां
 शीलस्य ज्ञेयं ज्ञमायाः शालेयं शालीनतायाः स्थानं स्थितेः
 आधारं धृतेः आकरं कल्यायाः निकेतनं कौतुकस्य आरामं
 रामणीयकस्य प्रासादं प्रसादस्य आगारं गौरवस्य समाजं
 सौजन्यस्य सम्भवं सङ्गावस्य कालं कलेः भगवन्तं साक्षादिव विरू-
 पाक्षं भैरवाचार्य्यं ददर्श ।

भैरवाचार्य्यस्तु दूरादेव राजानं दृष्ट्वा शशिनमिव जलनिधिश्च
 चचाल प्रथमतरोत्थितशिष्यलोकस्रोत्राय प्रत्युज्जगाम समर्पित-
 श्रीफलोपायनञ्च जङ्गकर्णसमुद्गीर्णमाणगङ्गाप्रवाहक्रादगम्भीरया
 गिरा स्वस्तिशब्दमकरोत् ।

नरपतिरपि प्रीतिविस्तार्यमाणधवलम्बा चक्षुषा प्रत्यर्पयन्निव
 वज्रतराणि पुण्डरीकवनानि (३८) ललाटपट्टपर्य्यन्तेन चोदंशुना

शिखामणिना महेश्वरप्रसादमिव तृतीयनयनोद्गमेन प्रकाशयन्
आवर्जितकर्णपल्लवपलायमानमधुकरः शिवसेवासमुग्धलिता-
शेषपापलवसुच्यमान इव दूरावनतः प्रणाममभिनवं चकार ।
आचार्योऽपि आगच्छ अत्रोपविशेति शार्दूलचर्मालीयमदर्शयत् ।
उपदर्शितप्रश्रयस्तु राजा मन्तहंसफलगद्गदस्वरसुभगा मधुरसमयीं
महानदीमिव प्रवर्त्तयन् वाचं व्याजहार भगवन् नार्हसि माम्
अन्यवृषस्त्वलितैः खलोक्तुम् अशेषराजकापेक्षिताया इतलच्छायाः
खल्वयं शीलापराधः द्रविणदौगाढं वा यदेवमाचरति मयि गुरुः ।
अभूमिरयमुपचागणाम् । अलमर्तियन्त्रणया । दूरस्थितोऽपि
मनोरथशिष्यः अयं जनो भवताम् । माननीयस्य गुरुवन्दोत्सृज्य नम्रं
अर्हति गुरोरासनम् । आसताश्च भवन्त एवात्र । इति व्याहृत्य
परिजनोपनीते वाससि निषसाद । भैरवाचार्योऽपि प्रीत्यानति-
कमणीयं वृषवचनमनुवर्त्तमानः पूर्ववत्तदेव व्याघ्राजिनमभजत ।

आसीने च सराजके परिजने शिष्यजने च समुचितमध्या-
दिकं चक्रे । क्रमेण च वृषमाधुर्यञ्जितान्तःकरणः शशिकरनिकर-
विमला दशनदीधितिः स्फुरन्ती शिवभक्तीरिव साक्षाद्दर्शयन्नुवाच
तात अतिजन्मैव ते कथयति गुणानां गौरयम् । सकलसम्पत्-
पात्रमसि । विभयानुरूपास्तु प्रतिपन्नयः । जगन्मनः प्रभत्वदन्तदृष्टिः
अस्मि स्वापतेयेषु । यतः सकलदोषकलापानलेन्धनैर्धनैरविक्रीतं
क्वचिच्छरीरकमसि । भैरवक्षिताः सन्ति प्राणाः । दुर्मृहीतानि
कर्तृचिद्विद्यन्ते विद्याक्षराणि । भगवच्छिवमद्वारकपादसेवया
समुपार्जितां किवत्यपि सन्निहिता पुण्यकणिका । स्वीक्रियतां
यदत्रोपयोगार्हम् । प्रतनुगुणग्राह्याणि कसुमानोऽ हि भवन्ति
सता मनांसि । अपिच विद्वत्सम्पत्ता अदमाणा अपि साधवः शब्दा

इव सुधीरेऽपि हि मनसि यथांसि कुर्वन्ति । विवरं विशतः
कुतूहलस्य फेनधवलैः खोतोभिरिवापङ्क्तियमाणो गुणगणैरानीतो
ऽस्मि कल्याणिना इति ।

राजा तु तं प्रत्यवादीत् भगवन् अनुरक्तेष्वपि शरीरादिषु
साधूना स्वामिन एव प्रणयिनः । युष्मद्दर्शनादुपार्जितमेव चापरि-
मितं कुशलजातम् । अनेनैवागमनेन स्पृहणीयं पदमारो-
पितोऽस्मि गुरुणा । इति विविधाभिश्च कथाभिश्चिरं स्थित्वा
गृहमगात् ।

अन्यस्मिन् दिवसे भैरवाचार्योऽपि राजानं द्रष्टुं ययौ । तस्मै
च राजा सान्तःपुरं सपरिजनं सकोपमात्मानं निवेदितवान् । स
च विहस्योवाच तात क्व विभवाः क्व च वयं वनवद्धिताः । धनोष्मणा
स्नायत्यलं लतेव मनस्विता । खद्योतानामिवास्माकमियमपरोप-
तापिनी राजते तेजस्विता । भवादृशा एव भाजनं भूतेः ।
इति स्थित्वा च कञ्चित् कालं जगाम ।

परिव्राट् तेनैव क्रमेण पञ्च पञ्च राजतानि पुण्डरीकाक्ष्यपा-
यनीचकार । एकदा तु श्वेतकर्पटावृतं किमप्यादाय प्राविशत् ।
उपविश्य च पूर्ववत् स्थित्वा मुञ्चतमब्रवीत् महाभाग भवन्तमाह
भगवान् यथा अस्मच्छिष्यः पातालस्वामिनामा ब्राह्मणः । तेन
ब्रह्मराक्षसहस्तादपहृतो महासिरदृहासनामा । सोऽयं भवद्भुज-
योय्यो गृह्यताम् । इत्यभिधाय अपहृतकर्पटावच्छादनात् परि-
वारात् आचक्र्ष शरङ्गगनमिव पिण्डता नीतं कालिन्दीप्रवाहमिव
सम्भ्रितजलं नन्दकजिगीषया कृष्णकोपितं कालियमिव कृपाणता
गतं लोकविनाशाय प्रकाशितधारासारं प्रलयकालमेघखण्डमिव
नभसलात् पतितं दृश्यमानविकटदन्तमण्डलं हासमिव हिंसायाः

हरिबाहुदण्डमिव क्षतहृदमुटिप्रहं सकलभुवनजीवितापहरण-
क्षमेण कालकूटेनेव निर्मितं क्षतान्तकोपानक्षतप्रेनेवायसा घटि-
तम् अतितीक्ष्णतया पवनस्पर्शेनापि रुधेव कण्ठानं मणिसभा-
कुट्टिमपतप्रतिबिम्बच्छद्मना आत्मानमपि द्विधेव पाटयन्तम् अरि-
शिरश्चेदलग्नैः कचैरिव किरणैः, करालितधारं मुञ्चन्मुञ्चन्नाडिभू-
उन्नेपतरलैः प्रभाचक्रच्छुरितैर्जर्जरितातपं अखण्डशान्तिन्दन्तमिव
दिवसं कटाक्षमिव कालरात्रेः कर्णोत्पलमिव कालस्य ओङ्कारमिव
कौर्व्यस्य अलङ्कारमहङ्कारस्य कुलमित्रं कोपस्य देहं हर्षस्य सु-
सहायं साहसस्य अपत्यं शत्रुयोः आगमनमार्गं लक्ष्म्याः निर्गमन-
मार्गं कीर्त्तैः क्षपाणम् ।

अवनिपतिस्तु तं गृहीत्वा करेणाबुधप्रीत्या प्रतिमानिभेन
आलिङ्गन्निव मुचिरं ददर्श सन्दिदेश च वक्तव्यो भगवान् परब्रह्म-
ग्रहणावच्छादुर्विदग्धमपि हि मे मनो बुद्धाद्विषये न शक्नोति वचन-
व्यतिक्रमस्यभिचारमाचरितुमिति । परित्राट् तु गृहीते तस्मिन्
परितुष्टः स्वप्ति भवते साधयामः इत्युक्त्वा निरयासीत् । वृषश्च
प्रकृत्या वीररसानुरागी तेन क्षपाणेनामन्यत करतलवर्त्तिनीं
मेदिनीम् ।

अथ व्रजस्थ दिवसेषु एकदा भैरवाचार्यो राजानमुपक्रमे
सोपग्रहमवादीत् तात स्वार्थालसाः परोपकारदृष्ट्याच प्रकृतयो
भवन्ति मथ्यानाम् । भवाद्दृष्ट्याचार्यदर्शनं महोत्सवः प्रणयनमा-
राधनम् अर्थग्रहणमुपकारः । भूमिरसि सर्वलोकमनोरथानाम् ।
येनाभिधीयसे श्रूयताम् भगवतो महाकालहृदयनाम्नो महा-
मन्त्रस्य हस्तस्रगम्बरानुलेपेनाकल्पेन कल्पकथितेन महाधूम्रशाने
जपकोट्या क्षतपूर्वसेवोर्गच्छ । तस्य वेतालसाधनावसाना सिद्धिः ।

असहायैश्च सा दुरवापा । त्वञ्जालमसौ कर्मणे । त्वयि च गृहीत-
भरे भविष्यन्त्यपरे सहायास्त्वयः । एकः स एवास्त्राकं टीटिभ-
नामा बालमितं मस्करी यो भवन्तमुपतिष्ठते । द्वितीयः स
पातालस्वामी । अपरो मच्छिष्य एव कर्णतालनामा द्राविडः ।
यदि साधु मन्यसे ततो नीयतामयं दिङ्मागहस्तदीर्घो गृहीताट्ट-
हासो निशामेकामेकदिङ्मुखार्गलतां बाहुः ।

इति कृतवचसि(३६) च तस्मिन् अन्धकारं प्रविष्ट इव दृष्टप्रकाशः
प्राप्तोपकारावकाशः प्रमुदितेनान्तरात्मना नरेन्द्रः समभाषत
भगवन् परमनुगृहीतोऽस्मि अनेन शिष्यजनसामान्येन निदेशेन
कृतपरिग्रहमिवात्मानमवैमीति । ननन्द च तेन नरेन्द्राद्व्याहृतेन
भैरवाचार्यः चकार च सङ्केतम् अस्यामेवागामिन्यामसितपक्ष-
चतुर्दशीक्षपायाम् इवत्यां वेलायाम् अमुष्मिन् महाप्रमथान-
समीपभाजि शून्यायतने शस्त्रद्वितीयेनायुष्मता द्रष्टव्या वयमिति ।

अथातिकान्तेष्वहःसु प्राप्तायाञ्च तस्यामेव कृष्णचतुर्दश्यां शैवेन
विधिना दीक्षितः क्षितिपो नियमवानभूत् । कृताधिवासश्च सम्पा-
दितगन्धधूपमाल्यादिपूजं खङ्गमट्टहासमकरोत् । ततः परिणते
दिवसे केनापि कर्मसाधनाय कृतवधिरबलिविधानास्त्रिव लोहिता-
यमानासु दिक्षु वधिरबलिलम्पटासु च वेतालजिह्वास्त्रिव
लम्बमानासु च रविदीधितिषु नरेन्द्रानुरागेण गृहीतापरदिशि
स्वयमिव दिक्पालता चिकीर्षति सवितरि वातुधानीष्विव वर्द्ध-
मानासु तद्वच्छायासु पातालवासिषु विघ्नाय दानवेष्विव उत्तिष्ठन्तु
तमोमण्डलेषु नभसि पुञ्जीभवति रौद्रं कर्म दिङ्ममाण इव

मक्षत्रगणे बिगादावां शर्मणा सुप्रजननिःसृष्टस्तिमिते निशीथे
राजा सान्तःपुरं परिजनं वक्ष्यित्वा वामकरस्फुरत्सहः दक्षिण-
करेणोत्थातं खड्गमृदासमादाय विसर्पता च खड्गप्रभापटलेन
नीलांशुकपटेनेव दर्शनभवादवगुब्धितनिखिलगात्रयष्टिः अना-
दिटयाप्यनुगम्यमानो राजसङ्घात् पृष्ठतः परिमललग्नमधुकर-
वेष्टिष्याजेन केशेष्विव कर्मासिद्धिमाकर्षन् एकाकी नगरान्तर-
गात् अगाञ्च तमुद्देशम् ।

अथ प्रत्युज्जम्भसे तवो द्रौणिलपलतवर्णाण इव सौप्तिके
सन्नद्धाः स्नाताः स्तम्बिणो गृहीतविकटवेगाः कमुमशेखर
सञ्चारिभिः कियमाणमन्त्रशिखाबन्धा इव गुम्फाभिः घट्चरणैः
उष्णीषपट्टकान् ललाटमध्यघटितविकटस्वस्तिकाग्रन्यीन् महामुद्रा-
बन्धानिव धारयन्तो मूर्ध्निभिः एकश्रवणविवरविततविमलदन्तपत्र-
प्रभालोकलेपधवलितकपोलैर्मणैरापिबन्त इव निशाचरापचय-
चिकीर्षया शार्ङ्गरमन्धकारम् इतरकर्णावलम्बिना रत्नकुण्डलानाम्
अच्छाच्छया रुचा गाराचनयेन मन्त्रपरिजपया समालम्बाः स्व-
प्रतिविम्बगर्भान् कर्मासिद्धये दत्तपुरुषोपहारानिव उल्लासयन्ताः (४०)
निशितान् निखिङ्गान् निखिङ्गाशुसन्तानसीमन्तिततिमिराम्
आम्नीयाम्नीयदृष्टिभागसंरक्षणाय त्रिधेव त्रियामां पाटयन्तः
मार्द्धचन्द्रैः कलधौतवह्मदावसितरलतारागणैर्निशाया इव पक्ष्वा-
सिधारानिलतैः खल्लैर्गृहीतैश्चर्मफल्कैरकाण्डशर्मगीमपरां घट
यन्तः काष्ठमृदङ्गलाकलापनिर्दमितनिबिलनिष्पवाणयः बहुसि-
धेनवः टीटिभ्रकचताडपाताडस्सामिनो निवेदितवन्तश्चाक्रानम् ।

अवनिपतिस्तु कोऽत्र क इति त्रीनष्टच्छत् । आचचक्षिरे च
स्वं स्वं नाम तवोऽपि ते । तैरेव चानुगम्यमानो जगाम तां बलि-
दीपालोकजर्जरितगुग्गुलुधूपधूमगृह्यमाणदिम्भागतया विक्षिप्य-
माणरक्षासर्पपार्श्वदग्धात्प्रकारपलायमाननिशामिव समुपकल्पित-
सर्वोपकरणां निःशब्दाञ्च गम्भीराञ्च भौषणाञ्च साधनभूमिम् ।

तस्याञ्च कुमुदधूलिधवलेन भस्मना लिखितस्य महतो मण्ड-
लस्य मध्ये स्थितं दीप्ततरतेजःप्रसरं दृष्टुपरिवेशपरिक्षिप्तमिव शरत्-
सवितारं मथ्यमानक्षीरोदावर्त्तवर्त्तिनमिव मन्दरं रक्तचन्दनानु-
लेपिनो रक्तस्रग्म्वराभरणस्योत्तानशयस्य शवस्योरस्युपविश्य जात-
जातवेदसि सुखकुहरे प्रारब्धाग्निकार्यं कृष्णोष्णीषं कृष्णाङ्गरागं
कृष्णप्रतिसरं कृष्णवाससं कृष्णतिलाञ्जतिनिभेन विद्याधरत्वष्टण्या
मानुषनिर्माणकारणकालुष्यपरमाणूनिव क्षयमुपनयन्तम् आञ्जति-
दानपर्यस्ताभिः प्रेतमुखस्पर्शदूषितं प्रक्षालयन्तमिवाशुशुक्ष्णं
करनखदीधितिभिः धूमालोहितेन चक्षुषा क्षतजाञ्जतिमिव क्षत-
भुजि पातयन्तम् ईषद्विद्वताधरपुटप्रकटितसितदशनशिखरेण दृश्य-
मानमूर्त्तमन्त्राक्षरपङ्क्तिनेव मुखेन किमपि जपन्तं होमश्रमस्वेद-
सलिलप्रतिविम्बिताभिरासन्वदीपिकाभिर्दहन्तमिव सिद्धये सर्वा-
वयवान् अंसावलम्बिना बह्मगुणेन विद्याराजेनेव ब्रह्मसूत्रेण
परिगृहीतं भैरवाचार्यमपश्यत् उपसृत्य चाकरोन्मस्कारम्
अभिनन्दितश्च तेन स्वव्यापारमन्वतिष्ठत् ।

अत्रान्तरे पातालस्वामी शातकतवीमाशामङ्गीचकार कर्ण-
तालः कौवेरीम् परिवाट् प्राचेतसीम् । राजा तु तैश्चङ्कवेन
ज्योतिषाङ्कितां ककुभमलङ्कृतवान् ।

एवञ्चावस्थितेषु दिक्पालेषु दिक्पालभुजपद्मरप्रविष्टे विस्त्रब्धं

कर्मा साधयति भैरवं भैरवाचार्ये अतिचिरं क्षतकोलाहलेषु
निष्कलप्रयत्नेषु प्रत्यूहकारिषु शान्तेषु कौण्डिनेषु गलत्पञ्चरात्रसमये
मण्डलस्य नातिद्वीयस्युत्तरेण अकस्मात् प्रलयमहावराहदंष्ट्रा-
विवरमिव दर्शयन्ती क्षितिर्दीर्घत । सहसैव च तस्माद्विवरात्
आशावारणोत्क्षिप्त इवालानलोदस्तम्भः महावराहपीवरस्कन्धपीठो
नरकामुर इव भूवो गर्भादुद्धतः बलिदानव इव भिक्षोत्थितः
पातालम् इन्द्रनीलप्रासाद इवोपरिज्वलितरत्नप्रदीपः स्निग्ध-
नीलघननिविडकुटिलकुण्डलकान्तमौलिरन्ध्रोलम्बालतीमुखदमालः
गङ्गदतया स्वरस्य स्वभावपाटलतया च चक्षुषः क्षीव इव यौवन-
मदेन बलाग्रलदामकः करसम्पुटच्छदितया सदा दिङ्मागकुम्भाभौ
अंसकूटौ पुनः पुनः पङ्क्तयन् सान्द्रचन्दनकर्ममदत्तैरव्यवस्थास्थासकैः
अतिसितजलधरशकलशारित इव शरटाकाशैकदेशः (४१) केतकी-
गर्भपत्रपाण्डुरस्य चण्डातकस्योपरि क्षामतरीकृतकुक्षिः कल्याण-
विधाय विलासविशिष्टेन धवलव्यायामफालीपटान्तेन धरणीतल-
गतेन धार्यमाण इव दृष्टतः श्रेष्ठेण स्थिरस्थूलोददण्डः भूमिभङ्ग-
भयेनैव मन्युरानि स्थापयन् पदानि निर्भरगर्भगुरु कथमपि शैलम्
इव गात्रमुद्वहन् दर्पेण मुकुटमुच्छरसि द्विगुणिते दोषाणि वामे
तिर्यग्गुत्क्षिप्ते च दक्षिणे जङ्घाकाण्डे कुण्डलिते चण्डास्फोटन-
टाङ्कारैः कर्माविघ्ननिर्घातानिव पातयन् एकेन्द्रियविकलमिव जीव-
लोकं कुर्वन् कुबलयस्थामः पुरुष उज्जगाम जगद च विहस्य
नरसिंहनादनिर्घोषधोरवा भारत्या भो विद्याधरीत्रहाकामुक
किमयं विद्यावलेपः सहायमदो वा यदसौ जनाय अविधाय बलिं

बालिश इव सिद्धिमभिलषसि । का ते दुर्बुद्धिरियम् । एतावता
कालेन क्षेत्वाधिपतिरस्य मन्त्रान्नैव लब्धव्यपदेशस्य देशस्य नागतस्ते
आलोपकण्ठं श्रीकण्ठनामा नागोऽहम् । अनिच्छति मयि का
शक्तिर्घृहगणस्यापि गन्तुं गगने । भूनाथोऽप्ययमनाथस्तपस्वी
यस्त्वादृशैः शैवापसदैरुपकरणीक्रियते । सहस्त्रेदानीं सचामुना
दुर्नरेन्द्रेण दुर्नयस्य फलम् । इत्यभिधाय च त्रिष्ठुरैः प्रकोष्ठप्रहारैः
तीनपि टीटिभप्रभृतीन्भिमुखं प्रधावितान् सशरीरावरणकपा-
णानपातयत् ।

अथापूर्वाधिपेऽश्रवणादशस्त्रत्रणैरप्यमर्षस्वेदच्छलेनानेकसमर-
पीतमसिधाराजलमिव वमद्भिः अवयवैरपि रोमाञ्चनिभेन मुक्त-
शरशतशल्यनिकरभरलघुमिवात्मानं रणाय कुर्वद्भिः अट्टहासेनापि
प्रतिबिम्बिततारागणेन स्पष्टदृष्टधवलदन्तमालमवक्ष्या हसतेव
कथ्यमानसत्त्वावष्टम्भः परिकरबन्धविभ्रमभ्रमितकरनखकिरणचक-
वालेन व्यपगमनाशङ्कया नागदमनमन्त्रमण्डलबन्धेनेव रुन्धन् दश
दिशः नरनाथः सावज्ञमवादीत् अरे काकोदर काक मयि स्थिते
राजहंसे न जिह्रेषि बलिं याचितुम् । अमीभिः किं वा परुष-
भाषितैः । भुजे वीर्यं निवसति न वाचि । प्रतिपद्यस्व शस्त्रम् ।
अयं न भवसि । अगृहीतहेतिष्वशिक्षितो मे भुजः प्रहर्तुमिति ।
नागस्तु अनाहततरम् एहि किं शस्त्रेण भुजाभ्यामेव भनडिम
भवतो हर्षम् । इत्यभिधायास्फोटयामास । नरपतिरपि निरा-
बुधमाबुधेन बुधि लज्जमानो जेतुमुत्सृज्य सचर्मफलकमट्टहासम्
असिम् अर्द्धोदकस्योपरि बबन्ध बाहुबुद्धाय कल्याम् । बुधधाते च
निर्हयास्फोटनस्फुटितभुजहृदिरशीकरसिच्यमानौ शिलास्तम्भैरिव
पतद्भिर्बाहुदण्डैः शब्दमयमिव कुर्वाणौ भवनं तौ । नचिराञ्च

पातयामास भूतले भुजङ्गं भूपतिः जग्राह च केशेषु उज्ज्वलान च
शिरश्चेत्तमदृशसम् अपश्यञ्च वैकल्यकमालान्तरेणास्य यच्चोप-
वीतम् । उपसंहृतशङ्खव्यापारचावादीत् दुर्विनीत अस्ति ते दुर्नव-
निर्वाहबीजमिदं यतो विप्रश्चमेवाचरसि चापलानि । इत्युक्त्वा
उत्सर्ज्य तम् । अनन्तरञ्च सहसैवातिवहला ज्योत्स्नां दृश्यं
शरदि विकसतां कमलवनानामिव च घाणायलेपिनमामोदमजि-
वत् झटिति च नूपुरशब्दमश्नोत् व्यापारयामास च शब्दानु-
सारेण दृष्टिम् ।

अथ करतलस्थितस्यादृशसस्य मध्ये तडितमिव नीलजलधरो-
दरे स्फुरन्तीं प्रभया पिबन्तीमिव त्रियामा तामरसज्जलां कोमला-
कलिरागराजिजालकानि च चरणालङ्गानि विलासालयिद्रुमलता-
वनानि दूवाकर्षन्तीं करपङ्कजमङ्कोचाशङ्कया शशाङ्कमण्डलमिव
खण्डयः कृतं निर्मालचरणनयमिवहनिभेन विभ्रतीं गुप्तफाव-
लम्बिनूपुरपुटतया स्थितनिषिद्धकटकावलिबन्धनादिव परिभ्रञ्चा-
गतां बह्विधकुसुमशकुनिशतशोभितात् पवनचलिततनुतरङ्गादति-
स्वच्छात् अंशुकादुदधिसलिलादिवोत्तरन्तीम् उदधिजम्बुमेखा
त्रिबलिच्छलेन त्रिपथगयेव परिष्वक्तमध्याम अत्युन्नतस्तनमण्डलां
दृश्यमानदिङ्मागकुम्भामिव ककुभं मदलग्नैरावतकरशीकरनिकरम्
इव शरत्तारागणतारं चारमुरसा दधाना धवलचामरैरिव
च मन्दमन्दनिश्वासदोलायितैर्हारकिरणैरपवीज्यमानां स्वभाव-
लोहितेन मदान्धगन्धेभकुम्भास्त्रासनसंक्रान्तिसिन्दूरेणैव करद्वयेन
द्योतमानां चरंशिवच्छेन्दुद्वितीयच्छेनेव कुण्डलीकृतेन ज्योत्स्ना-
मुचा दन्तपत्रेण विभ्राजमानां कौस्तुभगभक्षिप्तवकेनेव च त्रयव-
लम्बेन अशोककिसलयेनालङ्कृतां महता मातङ्गमदमयेन तिलकेन

अदृष्टच्छत्रच्छायामण्डलेनेवाविरहितललाटाम्, आपादतलात्
 आसीमन्ताञ्च चन्द्रातपधवलेन चन्दनेनादिराजयशसेव धवलीकृतां
 धरणितालचुम्बिनीभिः कण्टकुसुममालाभिः सरिङ्गिरिव सागरा-
 धिष्ठाभिः (४२) अधिष्ठितां, खणालकोमलैरवयवैः कमलसम्भवत्वमन-
 क्षरम् आचक्षाणां स्त्रियमपश्यत्. असम्प्रान्तञ्च पप्रच्छ भद्रे कासि
 किमर्थं वा दर्शनपथमागतासीति । सा तु स्त्रीजनविरुद्धेनावष्टम्भेन
 अभिभवन्तीवाभाषत तम् वीर विद्वि मां नारायणोरःस्थली-
 लीलाविहारहरिणीं पृथुभरतभगीरथादिराजवंशपताकां सुभट-
 भजजयसम्भविलाससालभञ्जिका रणरुधिरतरङ्गिणीतरङ्गकीडा-
 दोहददुर्ललितराजहंसीं सितवृषच्छत्रपण्डशिखण्डिनीम् अति-
 निशितशस्त्रधारायनभ्रमणविभ्रमसिंहीम् असिधाराजलकमलिनीं
 त्रियम् । अपहृतास्मि तवामुना शौर्यरसेन । याचस्व ददामि ते
 वरमभिलषितमिति ।

वीराणां त्वपुनरुक्ताः परोपकाराः । यतो राजा तां प्रणम्य
 स्वार्थविमुखो भैरवाचार्यस्य सिद्धिं ययाचे । लक्ष्मीस्तु देवी
 प्रीततरङ्गदया विस्तार्यमाणेन (४३) चक्षुषा क्षीरोदेनेवोपरि
 पर्यस्तेनाभिषिञ्चन्ती भूपालम् एवमस्तु इत्यब्रवीत् अवादीञ्च
 पुनरनेन सत्त्वोत्कर्षेण भगवच्छिवभट्टारकभक्त्या चासाधारणया
 भवान् भुवि सूर्याचन्द्रमसोस्तृतीय इवाविच्छिन्नस्य प्रतिदिनमुप-
 चीयमानदृष्टेः शुचिसुभगसत्यत्यागधैर्यशौण्डपुरुषप्रकाण्डप्रायस्य
 महतो राजवंशस्य कर्त्ता भविष्यति । यस्मिन्नुत्पत्यते सर्व्वह्रीपाना
 भोक्ता हरिचन्द्र इव हर्षनामा चक्रवर्त्ती विभवनविजिगीषुः

द्वितीयो मान्धातेव यस्मात् करः स्वयमेव कमलमपचाद ग्रहीष्यति
चामरम् इति वचसोऽन्ते तिरोबभूव ।

भूमिपालस्तु तदाकर्ण्य हृदयेनातिमात्रमप्रीयत । भैरवा-
चार्षोऽपि तस्या देव्यास्तेन वचसा कर्माणां च सम्यगुपपादितेन
सद्य एव कुन्तली किरीटी कुण्डली शरी केयूरी मेखली मुन्नरी
खड्गी च भूत्वावाप विद्याधरत्वम् प्रोवाच च राजन् अदूर-
व्यापिनः फलशुचेतसामलसाना मनोरथाः सतान्नु भवि विस्तार-
वत्यः स्वभावेनैवोपकृतयः । स्वप्नेऽप्यसम्भाविता दातुमिमा दक्षिणां
क्षमः कोऽन्यो भवन्तमपचाद । सम्पत्कणिकामपि प्राप्य तुलेष लघु-
प्रकृतिवन्नतिमायाति । त्वदीयैर्गुणैरुपकरणीकृतस्य त्वत्त एव च
लब्धात्मलाभस्य निर्लज्जता दूयमस्य मृदुहृदयस्य । तदिच्छामि
येन केनचित् कार्यलवोपपादनोपयोगेन स्मरयितुमात्मानमिति ।
प्रत्युपकारदुष्प्रवेशास्तु भवन्ति धीराणां हृदयावटभ्याः यतस्तं राजा
भवन्तिहैव परिसमाप्तलब्धोऽस्मि साधयतु मान्यो यथासमी-
हितं स्थानमिति प्रत्याचक्षते ।

तथोक्तञ्च भूभजा जिगमिषुः सुहृदं समालिङ्ग्य टीटिभादीन्
कुवलयवनेनेवावस्थापयणीकरञ्चाविषा सास्त्रेण चक्षुषा वीक्षमाणः
क्षितिपतिं पुनरुवाच तात ब्रवीमि यामीति न स्मरसहस्रम् ।
त्वदीयाः प्राणा इति पुनरुक्तम् । गृह्यतामिदं शरीरकमिति व्यति-
रेकेणार्थकरणम् । तिलयः कीता वयमिति नोपकारानुत्पन्नम् ।
मान्धवोऽसीति दूरीकरणमिव । त्वयि स्थितं हृदयमित्थप्रत्यक्षम् ।
त्वद्विरहकारिणी कारणेयं नः सिद्धिरित्यश्रवेयम् । निष्कारणस्वयं
उपकार इत्यनुवादः । स्मर्यया ययमित्वाच्चा । सर्वथा कृतप्रा-
लापेष्वसज्जनकथास्तु च चेतसि कर्तव्योऽयं स्वार्थनिष्ठुरो जनः ।

इत्यभिधाय वेगच्छिन्नहारोच्छलितमुक्ताफलनिकरताडिततारागणं
गगनतलम् उत्पपात ययौ च सीमन्तितग्रहग्रामः सिद्धुचितं धाम ।
श्रीकण्ठोऽपि राजन् पराक्रमक्रीतः कर्त्तव्येषु नियोगेनानुयात्तो
ग्राहितविनयोऽयं जनः (४४) इत्यभिधाय राज्ञानुमोदितः
तदेव भूयो भूविवरं विवेश ।

नरपतिस्तु क्षीणभूयिष्ठायां क्षपायां प्रवातुमारब्धे प्रबुध्यमान-
कमलिनीनिश्वाससुरभौ वनदेवताकुचांशुकापहरणपरिहास-
स्वेदिनीव सावस्थायशीकरे परिमलाकृष्टमधुक्ताति कुसुदनिद्रा-
वाहनि, निशापरिणतिजडे तुषारलेशिनि वनानिले विरह-
विधुरचक्रवाकचक्रनिखसितसन्तापितायामिव अपरजलनिधिमव-
तरन्त्यां त्रियामाया साक्षादागतलक्ष्मीविलोकनकुतूहलिनीष्विव
समुन्मीलन्तीषु नलिनीषु उन्निद्रपक्षिणि क्षरति कुसुमविसरमिव
तुहिनकणनिकरं श्वदुपवनलासितलते कानने कमललक्ष्मीप्रबोध-
मङ्गलशङ्खेष्विव रसत्स्वन्तर्बद्धध्वनन्मधुकरेषु मुकुलायमानेषु कुसु-
देपु, उज्जिहानरविरथवाजिविस्तृष्टैः प्रोथपवनैः प्रोत्सार्यमाणास्विव
वारुण्यां ककुभि पुञ्जीभवन्तीषु श्यामालताकलिकासु तारकासु
मन्दरशिखराश्रयिणि मन्दानिललुलितकल्पलतावनकुसुमधूलि-
विष्कुरित इव धूसरीभवति सप्तर्षिमण्डले सुरवारणाङ्गश्च इव
च्युते गलति तारामये श्वगे वीनपि टीटिभादीन् गृहीत्वा नाग-
युद्धव्यतिकरमलीमसानि शुचिनि वनवापीपयसि प्रक्षाल्याङ्गानि
नगरे विवेश । अन्यस्त्रिन्वहनि तेषामात्मशरीरानन्तरं स्नान-
भोजनाच्छादनादिना प्रीतिमकरोत् ।

कतिपयदिवसापगमे च परिव्राट् भूभुजा वार्षमाषोऽपि वनं
 ययौ । पातालस्वामिकर्षतालौ तु शौर्वाशुरक्तौ तमेव सिषेवाते ।
 सम्पादितमनोरथातिरिक्तविभवौ च सुभटमण्डलमध्ये निष्कृष्ट-
 मण्डलाग्री समरमुखेषु प्रथममुपयुज्यमानौ कथान्तरेषु च
 अन्तरान्तरा समादिष्टौ विचित्राणि भैरवाचार्यचरितानि
 शैशवदत्तान्तांश्च कथयन्तौ तेनैव सार्धं जरामाजम्भतरिति ।

इति श्रीभाग्यमङ्गलत प्रपञ्चरित तृतीय उच्छ्वासः ।

चतुर्थ उच्छ्वासः ।

योगं स्वप्नेऽपि नेच्छन्ति कुर्वते न करग्रहम् ।

महान्तो नाममात्रेण भवन्ति पतयो भवः ॥

सकलमहीभृत्कम्पकृतुत्पद्यत एक एव नृपवंशे ।

विपुलेऽपि पृथुप्रतिमो दन्त इव गणाधिपस्य मुखे ॥

अथ तस्मात् पुष्पभूतेर्हिजवरस्वेच्छामृहीतकोषो नाभिपद्म
इव पुण्डरीकेक्षणात् लक्ष्मीपुरःसरो रत्नसञ्चय इव रत्नाकरात्
गुरुबुधकविकलाभृत्तेजस्विभूनन्दनप्रायो ग्रहगण इवोदयस्थानात्
महाभारवाहनयोग्यः सागर इव सगरप्रभावात् दुर्जयबलसनाथो
हरिवंश इव शूरात् निर्जगाम राजवंशः । यस्मात् अविनष्ट-
धर्मधवलाः प्रजासर्गा इव कृतमुखात् प्रतापाकान्तभुवनाः किरणा
इव तेजोनिधेः विग्रहव्याप्तदिङ्मखा गिरय इव भूभृत्प्रभवात्
धरणिधारणक्षमा दिग्गजा इव ब्रह्मकरात् उदधीन् पातुमुद्यता
जलधरा इव घनागमात् इच्छाफलदायिनः कल्पतरव इव
नन्दनात् सर्वभूताश्रया विश्वरूपप्रकारा इव श्रीधरात् अजायन्त
राजानः ।

तेषु चैवमुत्पद्यमानेषु क्रमेणोदपादि ह्मणहरिणकेसरी सिन्धु-
राजश्वरो गुर्जरप्रजागरः गान्धाराधिपगन्धर्विपकूटपाकलः लाट-
पाटवपाटञ्जरः मालवलक्ष्मीलतापरशुः प्रतापशील इति प्रथिता-
परनामा प्रभाकरवर्द्धनो नाम राजाधिराजः । यो राज्याङ्गसङ्घीनि
अभिधिच्यमान एव मलानीव मुमोच धनानि । यः परकीयेणापि

कातरवल्लभेन रणमुखे तृष्णेनेव धृतेनालज्जत जीवितेन । वः कर-
 धृतधौतासिप्रतिबिम्बितेनात्मनाप्यदूयत समितिषु सञ्जायेनारिपूण्या
 पुरः प्रधनेषु धनुषापि नमताः । यो मानी मानसेनाप्यिद्यत ।
 यश्चान्तर्गतपरिमितरिपुशतयशङ्ककीलितामिव निखलामुवाच
 राजलक्ष्मीम् । यच्च सर्वासु द्विजु समीकृततटावटविटपाटबी-
 तरुतृणगुल्मवल्मीकगिरिगहनैर्दण्डयात्रापथैः दृष्टुभिर्भृत्योपयोगाय
 व्यभजतेव वसुधा बद्धधा । यश्चालम्बुद्वन्द्वोद्दमाक्षीयोऽपि सकल-
 रिपुसमुत्सारकः परकीय इव तताप प्रतापः । यस्य च यङ्गिमयो
 हृदयेषु जलमयो लोचनपटेषु मादतमयो निश्वसितेषु क्षमामयो
 ऽङ्गेषु आकाशमयः सून्यताया पञ्चमहाभूतमयो कूर्म इवाहम्भत
 निहतप्रतिसामन्तान्तःपुरेषु प्रतापः । यस्य चासक्त्येषु भक्त्यरत्नेषु
 प्रतिबिम्बितेव तुल्यरूपा समलक्ष्यत लक्ष्मीः । तथाच यस्य प्रतापा-
 ग्निना भूतिः शौर्व्योष्मणा सिद्धिः असिधाराजलेन वंशहृद्भिः शस्त्र-
 वणमुखैः पुरुषकारोक्तिः धनुर्गुणकिशेन करगृहीतिः अभयत् (१) ।
 यस्य वैरमुपायनं विग्रहमनुग्रहं समरागमं महात्सवं शत्रुं निधि-
 दर्शनम् अरिबाहुल्यमभ्युदयम् आहवाज्जानं वरप्रदानम् अवस्कन्द
 पातं दिट्टद्विं शस्त्रप्रहारपतनं वसुधारारसम् (२) अमन्यत ।
 यस्मिंश्च राजनि निरन्तरैर्यूपनिकरैरङ्कुरितमिव क्षतयुगेन दिग्युष्ण-
 विसर्पिभिरध्वरधूमैः पलायितमिव कलिना समुधैः सुरालयैरव-
 तीर्णमिव स्वर्गेण सुरालयशिखरोद्भूयमानैर्धवलध्वजैः पल्लवितमिव
 धर्म्येण बहिरुपरचितविकटसभासत्प्रपाप्राग्व्यंशमण्डपैः प्रसूतमिव
 ग्रामैः काश्चनमयसर्वोपकरणैर्बिम्बैर्विशोर्णमिव मेरुणा द्विजदीय-
 मानैरर्थकलशैः फलितमिव भाग्यसम्पदा ।

तस्य च जन्मान्तरेऽपि सती पार्वतीव शङ्करस्य गृहीतहृदया
लक्ष्मीरिव लोकगुरोः स्फुरत्तरलतारका रोहिणीव कलावतः सर्व-
जनजननी बुद्धिरिव प्रजापतेः महाभूभृत्कुलोद्गता गङ्गेव याहिनी-
नायकस्य मानसानुवर्त्तनचतुरा हंसीव राजहंसस्य सकललोका-
ञ्चितचरणा त्रयीव धर्मस्य दिवानिशममुक्तपार्श्वस्थितिरन्वतीव
महामुनेः हंसमयीव गतिषु परपुष्टमयीवालापेषु चक्रवाकमयीव
पतिप्रेम्नि प्राटश्मयीव पयोधरोन्मतौ मदिरामयीव विलासेषु निधि-
मयीवार्थसङ्क्षयेषु वसुधारामयीव प्रसादेषु कमलमयीव कोषसंग्रहेषु
कुसुममयीव फलदानेषु सन्ध्यामयीव वन्द्यत्वे चन्द्रमयीव निरुप्यत्वे
दर्पणमयीव प्रतिप्राणियग्रहणेषु सामुद्रमयीव परचित्तज्ञानेषु पर-
मात्ममयीव व्याप्तिषु स्मृतिमयीव पुण्यवृत्तिषु मधुमयीव सम्प्रापणेषु
अक्षतमयीव तृप्यत्सु वृष्टिमयीव भृत्येषु निर्वृतिमयीव सखीषु वेतस-
मयीव गुरुषु गोत्ववृद्धिरिव विलासानां प्रायस्चित्तशुद्धिरिव
स्त्रीत्वस्य आश्वासिद्धिरिव मकरध्वजस्य व्युत्थानबुद्धिरिव रूपस्य
दिष्टवृद्धिरिव रतेः मनोरथसिद्धिरिव रामणीयकस्य दैवसम्पत्तिः
इव लावण्यस्य वंशोत्पत्तिरिवानुरागस्य वरप्राप्तिरिव कान्तेः
सर्गसमाप्तिरिव सौन्दर्यस्य आयतिरिव यौवनस्य अनध्ववृष्टिरिव
वैदग्ध्यस्य अयशःप्रवृष्टिरिव लक्ष्म्याः यशःपुष्टिरिव चारित्र्यस्य
हृदयतृष्टिरिव धर्मस्य सौभाग्यपरमाणुवृष्टिरिव प्रजापतेः शम-
स्यापि शान्तिरिव विनयस्यापि विनीतिरिव आभिजात्यस्यापि
अभिजातिरिव संयमस्यापि संवतिरिव धैर्यस्यापि धृतिरिव विश्वम-
स्यापि विश्वान्तिरिव वशोवती (३) नाम महादेवी प्राणानां

प्रणवस्य विश्वम्भस्य धर्मस्य सुखस्य च भूमिरभूत् । वा यस्य
वक्षसि नरकजितो लक्ष्मीरिव ललास ।

निसर्गत एव च स इतिरादित्यभक्तो बभूव । प्रतिदिनमुद्दे
दिनकृतः स्नातः सितकुङ्कुमधारी धवलकर्पटप्राहतशिखाः प्राङ्मुखः
क्षितौ जानुभ्यां स्थित्वा कुङ्कुमपङ्कजगुलिभिः मण्डलके पवित्रपद्मराग-
पात्रीनिहितेन स्वहृदयेनेव सूर्यागुरक्तेन रक्तकमलवर्णहेमार्त्वा
ददौ । अजपञ्च जप्यं सुचरितः प्रत्युषसि मध्यन्दिने दिनान्ते च
अपत्यहेतोः प्रार्थं प्रयतेन मनसा जम्बूपूको मन्त्रमादित्यहृदयम् ।

भक्तजनानुरोधविधेयानि तु भवन्ति देवताणां मनांसि यतः
स राजा कदाचित् ग्रीष्मसमये वहष्पद्या सितकरकरसितमुधा-
धवलस्य हर्म्यस्य पृष्ठे सुष्याप । पार्श्वे चास्य द्वितीयशयने देवी
यशोवती शिष्ये । परिणतप्रायायान्तु श्यामायाम् आसन्नप्रभात-
वेलाविलम्बमानलावण्ये लिलम्बिषमाणे सीदन्तेजसि तारकेश्वरे
कराग्रस्पृष्टकुमुदिनीप्रमोदजम्बानि शशधरस्वद इव गलत्यतिशीतने
ज्वश्यावपयसि मधुमदमत्तप्रसुप्तमीमन्तिनीनिद्रासङ्गतेषु संकान्त-
मदेष्विव घूर्णमानेष्वन्तःपुरप्रदीपेषु गजानि च विमलनव्यप्रति-
विम्बिताभिः संवाह्यमानचरणा इव तारकाभिः विश्वव्यप्रसारितैः
दिगङ्गनानामिवाप्यितैरङ्गैर्मधुसुगन्धिभिः स्वहस्तकमलतालहस्त-
वातैरिव श्वसितैर्मण्डपत्रिया बीज्यमाने विमलकपोलव्यलस्थितेन
सितकुमुमशेषरेणैव रतिकेलिकचग्रहलब्धितेन प्रतिमाशयिविष्येन
विगाजिते स्वपति देवी यशोवती सहभैव आर्यपुत्र परित्वायस्य
परित्वायस्य इति भाषमाणा भूयणरवेण व्याहरन्तीव परिजनम्
उत्कम्पमानाङ्गवटिबटतिष्ठत् ।

अथ तेन सर्वस्यामपि पृथिव्यामश्रुतपूर्वेषु किमुत देवीमन्त्रे

परित्रायस्वेति ध्वनिना दग्ध इव अवणयोः एकपद एव निद्रां
 तत्याज राजा । शिरोभागाच्च कोपकम्पमानदक्षिणकराकृष्टेन
 कर्णोत्पलेनेव निर्गच्छताच्छ्वारेण धौतासिना सीमन्तयन्त्रिव
 निशाम्, अन्तरालव्यवधायकमाकाशमिवोत्तरीयांशुकं वित्तिपन्
 वामकरपङ्कवेन, करविक्षेपवेगगलितेन हृदयेनेव भवनिमित्ता-
 न्वेषिणा भ्रमता दिक्षु कनकवलयेन विराजमानः, सत्पराव-
 तारितवामचरणाक्रान्तिकम्पितप्रासादः, पुरः पतितेनासिधारा-
 गोचरगतेन शशिमयखण्डेनेव खण्डितेन हारेण राजमानः
 लक्ष्मीचुम्बनलग्नताम्बूलरसरञ्जिताभ्यामिव निद्रया कोपेन चाति-
 लोहिताभ्यां लोचनाभ्या पाटलयन् पर्यन्तानाशानाम्, आवह्वान्ध-
 कारया त्रिपताकया भ्रुकुट्या पुनरिव त्रियामां परिवर्त्तयन् देवि
 न भेतव्यं न भेतव्यम् इत्यभिदधानो वेगेनोत्पपात । सर्वासु च
 दिक्षु वित्तिप्रचक्षुः यदा नाद्राक्षीत् किञ्चिदपि तदा पप्रच्छ तां
 भयकारणम् ।

अथ गृहदेवतास्त्रिव प्रधावितासु यामकिनीषु प्रबुद्धे च समीप-
 शायिनि परिजने, शान्ते च हृदयोत्कम्पकारिणि साध्वसे सा सम-
 भाषत आर्घ्यपुत्र जानामि स्वप्ने भगवतः सवितुर्मण्डलाच्चिर्गत्य
 द्वौ कुमारौ तेजोमयी बालातपेनेव पूरयन्तौ (४) दिग्भागान्
 वैद्युतम् इव जीवलोकं कुर्वाणौ मुकुटिनौ कुण्डलिनौ अङ्गुदिनौ
 कयचिनौ गृहीतशस्त्रौ इन्द्रगोपकरुचा रुधिराण (५) स्नातौ उन्मुखे-
 नोत्तमाङ्गघटमानाञ्जलिना जगता निखिलेन प्रणम्यमानौ कन्यया
 एकया च चन्द्रमूर्त्यैव सुपुष्परश्मिनिर्गतयानुगम्यमानौ क्षितितल-

भवतीर्षी तौ च (६) मे विलपन्त्याः शस्त्रेणोदरं विदार्य प्रवेष्टुम्
आरब्धौ । प्रतिबुद्धास्त्रि चाख्येपुत्रं विकोशयन्ती वेपमानहृदयेति ।

एतस्मिन्नेव च कालकमे राजलक्ष्म्याः प्रथमालापः प्रथयन्निव
स्वप्नफलम् उपतोरणं रराण प्रभातशङ्कः । भाविनी भूतिमिवाभि-
दधाना दध्नुरमन्दं दुन्दुभयः ।० चक्राण कोणाहतानन्दादिषु
प्रत्यपनान्दी । जयजयेति प्रबोधमङ्गलपाठकानाम् ७) उच्चैर्भाषो
ऽश्रून्त । पुरुषश्च वल्लभतुरङ्गमन्दरामन्दिरे मन्दमन्दं सुप्तोत्थितः
समीना कृतमधुरहेपारबाणां पुरयोतत्तपारसलिलशीकरं किरणं
मरकतहरितं यवसं वज्रापरवक्त्रे पपाठ

निधिसहविकारेण सन्मणिः स्फुरता धाम्ना ।

शुभागमो निमित्तेन स्पष्टमाख्यायते लोके ॥

अरुण इव पुरःसरो रविं पवन इवातिजवो जलागमम् ।

शुभमशुभमथापि वा वृणां कथयति पर्वनिदर्शनोदयः ॥

नरपतिस्तु तत् श्रुत्वा प्रीयमाणेनान्तःकरणेन तामवादीत्
देवि मुदोज्वसरे विषीदसि । सम्बद्धास्ते गुरुजनाग्रिषः । पुर्णा
ना मनोरथाः । परिगृहीतासि कुलदेवताभिः । प्रसन्नस्ते भग-
वान् अङ्गुमाली नचिरेणैवातिगुणवदपत्यत्वलाभेनानन्दयिष्यति
भवतीमिति । अवतीर्ष्य च यथाकियमाणाः क्रियाशकार ।
यशोवत्त्वपि ततोष तेन पत्युर्भाषितेन ।

ततः समतिकान्ते कस्मिंश्चित् कालाग्रे देव्याश्च यशोवत्या
द्वौ राज्यवर्धनः प्रथममेव सम्बभूव गर्भे । गर्भस्थितस्यैव च यस्य
यगसेव पाण्डुतासादत्त जननी । गुणगौरवक्लान्तैव गात्रमुद्घोढुं न
शक्ता । कान्तिविमरास्ततरसहस्रैव आहारं प्रति पराङ्मुखी

बभूव । शनैः शनैरुपचीयमानगर्भभरालसा च गुरुभिर्वीरितापि
 वन्दनाय कथमपि सखीभिर्हस्तावलम्बेनानीयत । विश्राम्यन्ती
 सालभञ्जिकेव समीपगतस्तम्भभित्तिष्वलक्ष्यत । कमललोभनिलीनैः
 अलिभिरिव वृतावुद्धर्त्तुं नागकञ्चरणौ । दृष्ट्वा ललोभेन च चरण-
 नखमयूखलग्नेर्भवनहंसैरिव सञ्चार्यमाणा मन्दमन्दं बभ्राम ।
 मणिभित्तिपातिनीपु प्रतिमास्वपि हस्तावलम्बनलोभेन प्रसारया-
 मास करकमलं किमुत सखीषु । माणिक्यस्तम्भदीधितौरप्याल-
 खितमाचकाङ्क्ष किं पुनर्भवनलताः । समादेष्टुमप्यसमर्थासीत्
 गृहकार्याणि कैव कथा कर्त्तुम् । आसां नूपुरभारखेदितं चरण-
 युगलं मनसापि नोदसहत सौधमारोढुम् । अङ्गान्यपि नाशक्रोत्
 धारयितुं दूरे भूषणानि । चिन्तयित्वापि क्रीडापर्वताधिरोहणम्
 उत्कम्पितस्तनी तस्तान । प्रत्युत्थानेषूभयजानुशिखरविनिहित-
 करकिशल्यापि गर्वादिव गर्भेणाधार्यत । दिवसश्चाधोमुखी
 स्तनपृष्ठसंक्रान्तेनापत्यदर्शनौत्सुक्यादन्तःप्रविष्टेनेव मुखकमलेनैवं
 प्रीयमाणा ददर्श गर्भम् । उदरे तनयेन हृदये च भर्त्ता तिष्ठता
 द्विगुणितामिव लक्ष्मीमुवाह । सख्युत्पङ्गुमुक्तशरीरा च शरीरपरि-
 चारिकाणामङ्गेषु सपत्नीनान्तु शिरसा पादौ चकार । अवतीर्णो
 च दशमे मासि सर्व्वीर्व्वीभृत्पक्षपाताय वज्रपरमाणुभिरिव
 निर्म्वितं त्रिभुवनभारधारणसमर्थं शेषफणामण्डलोपकरणैरिव
 कल्पितं सकलभूभृत्कम्पकारिणं दिग्मजावयवैरिव विहितमसूत
 देवं राज्यवर्द्धनम् । यस्मिन् जाते जातप्रमोदा नृत्यमय्य इव
 अजायन्त प्रजाः । पूरितासङ्कशङ्कशब्दमुखरं प्रहृतपटहशतपटुरवं
 गम्भीरभेरीनिनादनिर्भरभरितभुवनं प्रमोदोन्मत्तमर्त्यलोकमनो-
 हरं मासमेकं दिवसमिव महोत्सवमकरोत्स्वरपतिः ।

अथान्यस्त्रिभूतिकान्ते कस्मिंश्चित् काले कन्दलिनि कुञ्जलित-
कदम्बतरौ तोकल्लणलक्ष्ये स्तम्भिततामरसे विकसितचातकचेतसि
सुकमानसौकसि नभसि (८) देव्या देवक्या इव चक्रपाणिः बभौ-
वत्या हृदये गर्भे च सममेव सम्भूतवर्धः । शनैः शनैश्चास्त्राः
सर्वप्रजापुण्यैरिव परिगृहीता भूयोऽप्यापाबहुतामङ्गवर्जिताम् ।
गर्भारम्भेण श्यामायमानचारुचक्षुःशूलिकौ चक्रवर्त्तिनः पातं
मुद्रिताविव पयोधरकलशौ बभार । स्तन्यार्थमानननिहिता
दुग्धनदीव दीर्घस्निग्धधवला (९) माधुर्यमधक्त हृदि । सकल-
मङ्गलगणाधिष्ठितावगतिरन्त्रेव गतिरमन्दायत । मन्दमन्दं सञ्च-
रन्त्या निर्मलकुट्टिमनिमग्नप्रतिबिम्बनिभेन गृहीतपादपद्मवा पूजं
सेवामिबारेभे दृषिष्यस्याः । दिवसम् (१०) अधिशयानायाः
शयनीयमपाश्रयपत्रभङ्गपुत्तिकाप्रतिमा विमलकपोलोदरगता प्रसव-
समयं प्रतिपालयन्ती लक्ष्मीरिवालयत । जपासु सौधशिखराप्र-
गताया गर्भेन्मायमुक्तांशुके स्नानमण्डले संक्रान्तमुद्वपतिमण्डलम्
उपरि गर्भस्य श्लेतातपत्रमिव केनापि धार्यमाणमदृश्यत ।
सुप्ताया वासभवने चित्रमिन्निचामरयादृष्योऽपि चामराणि
चालयाञ्चकः । स्वप्नेषु कारविष्टकमलिनीपलाशपुटसलिलैश्चतुर्भिः
अपि दिक्कुरिभिरकियताभिषेकः । प्रतिबुध्यमानायाश्च चन्द्र-
शालिकासालभञ्जिकापरिजना जयगद्गमसलदजनयत । परि-
जनाङ्गानेषु आदिशेति अग्ररीरा वाचो निचेष्टः । कीडायाश्च
अपि नासंज्ञताश्चाभङ्गम् । अपिच चतुर्णामपि महार्णवानामेकी-
कृतेनाम्भसा स्नातुं बाष्पा बभूव । वेलालतागृहोदरपुलिनपरि-

(८) नभसि मासि । १ । २ ।

(९) दीर्घस्निग्धमधुरा १ ।

सरेषु पर्यटितुं हृदयमभिललाप । आत्ययिकेष्वपि कार्येषु
 सविभ्रमं भ्रूलता चचाल । सन्निहितेष्वपि मणिदर्पणेषु सुखम्
 उत्स्वातं खङ्गपट्टे वीक्षितुं व्यसनमासीत् । उत्सारितवीणाः
 स्त्रीजनविरुद्धा धनुर्धनयः श्रुतावसुखायन्त । पञ्चरकेसरिषु
 चक्षुररमत । गुरुप्रणामेष्वपि स्तम्भितमिव शिरः कथमपि
 ननाम । सख्यश्चास्याः प्रमोदविस्फारितैर्लोचनपुटैरासन्नप्रसवमहो-
 त्मवधियेव धवलयन्तो भवनं विकचकुमुदकमलकुवलयपलायगृष्टिमयं
 रक्षाबलिविधिमिवानवरतं विदधाना दिक्षु क्षणमपि न मुमुक्षुः
 पार्श्वम् । आलोचितस्थाननिषण्णाश्च महान्तो विविधौषधिधरा
 भिषजो भूधरा इव भुवो धृतिं चक्रुः । पयोनिधीना हृदयानीव
 लक्ष्म्या सहागतानि ग्रीवासूत्रग्रन्थिषु प्रशस्तरत्नान्यबधन्त । .

ततश्च प्राप्ते ज्येष्ठाम्बुलीये मासि बङ्गलासु (११) बङ्गलपक्ष-
 द्वादशां व्यतीते प्रदोषसमये समारुरुक्षति क्षपायौवने सहसैवान्तः-
 पुरे समुदपादि कोलाहलः स्त्रीजनस्य । निर्गत्य च सप्तस्रमं
 यशोवत्याः स्वयमेव हृदयनिर्विशेषा धात्वाः सुता सुयात्रेति
 नाम्ना राश्रः पादयोर्निपत्य देव दिद्या वर्द्धसे द्वितीयसुतजन्मनेति
 व्याहरन्ती पूर्णपात्रं जहार ।

अस्मिन्नेव च काले राश्रः परमसम्मतः शतशः संवादित-
 तीन्द्रियादेशो दर्शितप्रभावः सङ्कलितो ज्योतिषि सर्वासां ग्रह-
 संहितानां पारदृष्टा सकलगणकमध्ये महितो हितश्च त्रिकालज्ञान-
 भाक् भोजकस्तारको नाम गणकः सप्तपत्य विज्ञापितवान् देव
 श्रूयता (१२) मान्वाता किलैवंविधे व्यतीपातादिसर्वदोषाभिषङ्ग-
 रहितेऽहनि सर्वेषूच्चस्थानस्थितेष्वेवं ग्रहेषु ईदृशि लग्ने भेजे जन्म ।

अर्वाक् ततोऽस्मिन्नन्तराले पुनरेवंविधे योगे चक्रवर्त्तिजनने
नाजनि जगति कश्चिदपरः । सप्तानां चक्रवर्त्तिनामग्रणीः चक्र-
वर्त्तिचिह्नानां महारत्नानां भाजनं सप्तानां सागराणां पाल-
यिता सप्ततन्तूनां सर्वेषां प्रवर्त्तयिता सप्तसप्तिसप्तः सुतोऽयं देवस्य
जात इति ।

अत्रान्तरे स्वयमेव अनाधाता अपि तारमधुरं शङ्का विरेभुः ।
अताडितोऽपि क्षुभितजलनिधिजनध्वनिधोरं जुगुप्साभिषेक-
दुन्दुभिः । अनाहृतान्यपि मद्गलत्वर्थाणि रेणुः । सर्वभुवना-
भयघोषणापटु इव दिगन्तरेषु बभ्राम त्वर्यप्रतिगद्गद् । विधुत-
केसरमटाश्च साटोपगृहीतहरितदृष्ट्यापल्लवकवलप्रशस्तेर्गुणपुटैः
समहेषन्त हृटा वाजिनः । सलीलमुत्क्षिप्तेऽस्त्रपल्लवैरुत्थन्त इव
श्रवणमुभगं जगज्जगजाः । ववौ चाचिराच्चकायुधमुत्पृजन्त्या
लक्ष्म्या निश्वास इव (१३) सुरामोदसुरभिर्दिव्यानिजः । यज्जना
मन्दिरेषु प्रदक्षिणाशिखाकलापकथितकल्याणागमाः प्रजम्बलः
अनिन्धना वैतानवक्त्रयः । भुवस्तलात्तपनीयगङ्गलावन्धबन्धुरकलशी-
कोशाः समुदगुर्ध्वहानिधयः । प्रहृतमद्गलत्वर्थप्रतिगद्गन्निर्भन दिक्षु
दिक्पालैरपि प्रमोदादकियतेव दिष्टदृष्टिकलकलः । तत्क्षण एव
च शुक्रवाससो ब्रह्ममुखाः कृतयुगप्रजापतय इव प्रजावृद्धये समुप-
तस्थिरे द्विजातयः । साक्षाद्वर्मा इव शास्त्रदकफलहस्तस्यो
पुरः पुरोधाः । पुरातन्यः स्थितय इवाहस्यन्तागता बान्धववृद्धाः ।
प्रलम्बश्रृङ्खलाजटिलाननानि बहलमलपङ्ककलङ्ककालकायानि
नश्यतः कलिकालस्य बान्धवकुलानीवाकुलान्यधायन्त मुक्तानि
बन्धनदण्डानि । तत्कालापकान्तस्याधर्माय शिविरत्रेण्य इव

अलक्ष्यन्त लोकविलुप्तिता विपणिवीथ्यः । विलसदुन्मुखवामनक-
बधिरवृन्दवेष्टिताः साक्षाज्जातमाहृदेवता इव बद्धबालकव्याकुला
नवतुर्वृद्धधात्यः । प्रायर्त्तत च विगतराजकुलस्थितिरधःकृतप्रती-
हाराकृतिः (१४) अपनीतवेत्तिवेत्तो निर्होषान्तःपुरप्रवेशः सम-
स्वामिपरिजनो निर्विशेषबालवृद्धः समानशिष्टाशिष्टजनो दुर्ज्ञेय-
मत्तामत्तप्रविभागः तुल्यकुलयुवतिवेश्याविलासः प्रवृत्तसकलकटक-
लोकः पुत्तजन्मोत्सवो महान् ।

अपरेद्युरारभ्य सर्वाभ्यो दिग्भ्यः स्त्रीराज्यानीवावर्जितानि
असुरविवराणीवापाटतानि नारायणावरोधानीव प्रचलितानि
अप्सरसामिव महीमवतीर्णानि कुलानि परिजनेन पृथुकरण्ड-
परिमृहीताः स्नानीयचूर्णावकीर्णकुसुमाः सुमनःखजः स्फटिक-
शिलाशकलशुक्लकर्पूरखण्डपूरिताः पात्रीः कुङ्कुमाधिवासभाञ्जि
भाजनानि च मणिमयानि सहकारतेलतिम्यन्तनुखदिरकेसरजाल-
जटिलानि चन्दनधवलपूगफलफालीदन्तुरदन्तशफरकाणि गुञ्जन-
मधुकरकुलपीयमानपारिजातपरिमलानि पाटलानि पाटलकानि
च सिन्दूरपात्राणि च पिष्टातकपात्राणि च बाललतालम्बमान-
विटकवीटकांश्च ताम्बूलवृक्षान् बिभ्राणेनानुगम्यमानानि चरणानि
कुट्टनरणिमतमणिनूपुरमुखरितदिङ्मुखानि वृत्त्यन्ति राजकुलम्
आगच्छन्ति समन्तात् सामन्तान्तःपुरसहस्राण्यहस्यन्त ।

शनैः शनैर्व्यजृम्भत च क्वचित् वृत्तानुचितचिरन्तनशालीन-
कुलपुत्तकलोकलास्यप्रथितपार्थिवानुरागः क्वचिदन्तःस्मितक्षिति-
पालापेक्षितक्षीवल्गुद्रुदासीसमाश्रयमाणराजवल्लभः क्वचित् मत्त-
कटककुट्टनीकखललग्नवृद्धार्थसामन्तवृत्तनिर्भरहसितनरपतिः क्वचित्

क्षितिपाक्षिसंज्ञादिदृष्टदासेरकगीतसूच्यमानसचिवचौर्ध्वरतप्रपञ्चः
 क्वचित् मदोत्कटकुटहारिकापरिष्वज्यमानजरत्प्रव्रजितजनितजन-
 हासः क्वचिदन्योन्यनिर्भरस्यह्रींशुरचेटकपेटकारआवाप्यवचनबुद्धः
 क्वचिन्मृपाबलाबलात्कारनर्त्यमानवृत्त्यानभिज्ञान्तरपालभाषित-
 भुजिष्यः सपर्वत इव कुसुमराशिभिः सधारागृह इव सीधुप्रपाभिः
 समन्दनवन इव पारिजातकामोदैः सनीहार इव कर्पूररेणुभिः
 साट्टहास इव पटहरबैः साव्यतमघन इव कलकलैः सावर्त्त इव
 रासकमण्डलैः सरोमाश्रु इव भूषणमणिकिरणैः सपट्टबन्ध इव
 चन्दननलाटिकाभिः सप्रसव इव प्रतिशब्दैः सप्ररोच इव प्रसाद-
 दानैः उत्सवामोदः ।

स्फुट्यावलम्बमानकेसरमालाः काञ्चोजवाजिन इवास्फुटन्तः
 तरलतारका हरिणा इयोदुष्यमानाः सगरमुता इव खनित्रैः
 निर्द्वयेश्वरणाभिधातेर्हारयन्ता भवम् अनेकसहस्रसङ्ख्याशिकीर्तुः
 युवानः । कथमपि तालावचरचारणचरणजोभं चक्षमे क्षमा ।
 क्षितिपालकुमारकाणा खेलतामन्यान्यास्फालैराभरणेषु मुक्ता-
 फलानि फेलुः । सिन्दूररेणुना पुनरुत्पन्नहरिण्यगर्भगर्भशोणित-
 शोण्याशमिव ब्रह्माण्डकपालमभवत् । पटवासपाशुपटलेन प्रकटित-
 मन्दाकिनीसैकतसहस्रमिव शुशुभे नभसलम् । विप्रकीर्ण्यमाण-
 पिष्टतक्रपरागपिञ्जरितातपा भुवनसोभविशीर्णपितामहकमल-
 किञ्चन्करजोराजिरञ्जिता इव रेजुर्दिवसाः । सङ्घट्टिषट्तिहार-
 पतितमुक्ताफलपटलेषु चक्षुषाल लोकः ।

स्थानस्थानेषु च मन्दमन्दमास्फाल्यमानालिङ्गकेन शिञ्जान-
 मञ्जुवेणुना भूषणभूषायमानभङ्गुरीकेण तादृमानतन्वीपट्टिकेन
 वाद्यमानानुत्तालालावुर्दीर्घेन कलकास्यकोशीर्णतकाहलेन सम-

कालदीयमानानुत्तालतालकेन आतोद्यवाद्येनानुगम्यमानाः पदे
 पदे भणभणितभूषणरवैरपि सद्दयैरिवानुवर्त्तमानताललयाः
 कोकिला इव मदकलकाकलीकोमलालापिन्यो विटानां कर्णा-
 मृतानि अञ्जोलरासकपदानि गायन्त्यः समुण्डमालिकाः सकर्ण-
 पल्लवाः सचन्दनतिलकाः समुच्छिताभिर्विलयावलीवाचालाभिः
 बाज्जलतिकाभिः सवितारमिवालिङ्गयन्त्यः कुङ्कुमप्रच्छटिशचिर-
 कायाः काश्मीरकिशोर्य इव वलान्त्यः नितम्बविम्बलम्बविकटकुरु-
 णटकेश्वराः प्रदीप्ता इव रागाग्निना सिन्दूरच्छटाच्छुरितमुख-
 मुद्राः शासनपट्टपङ्कज इवाप्रतिहतशासनस्य कन्दर्पस्य मुष्टिप्रकीर्य-
 माणकर्पूरपटवासपाशुलाः मनोरथसञ्चरणरथा इव यौवनस्य
 उद्दामकुसुमदामताडिततरुणजनाः प्रतीहार्य इव तरुणमहोत्सवस्य
 प्रचलत्पत्रकुण्डला ललन्त्यो लता इव मदनचन्दनद्रुमस्य ललितपद-
 हंसकरवमुखराः समुल्लसन्त्यो वीचय इव शृङ्गाररसस्य वाच्या-
 वाच्यविवेकशून्या बालकीडा इव सौभाग्यस्य घनपटहरवोत्कण्ट-
 कितगात्रयष्टयः केतक्य इव कुसुमधूलिमुञ्जिरन्त्यः कमलिन्य इव
 दिवसमुत्फुल्लाननाः कुम्दिन्य इव रात्रावनुपजातनिद्राः आविष्टा
 इव नरेन्द्रवृन्दपरिवृताः प्रीतय इव हृदयमपहरन्त्यः गीतय इव
 रागमुद्गीपयन्त्यः पुष्टय इवानन्दमुत्पादयन्त्यः मदमपि मद्ययन्त्य
 इव रागमपि रञ्जयन्त्य इव आनन्दमपि आनन्दयन्त्य इव नृत्यमपि
 नर्त्तयमाना इव उत्सवमपि उत्सुकयन्त्य इव कटाक्षितेषु पिवन्त्य
 इवापाङ्गशुक्तिभिः तर्जनेषु संयमयन्त्य इव नखमयूखपाशैः
 कोपाभिनयेषु ताडयन्त्य इव भूलतातिभागैः प्रणयसम्भाषणेषु
 वर्णयन्त्य इव सर्व्वरसान् चतुरचंकमणेषु विकिरन्त्य इव विकारान्
 पण्यविलासिन्यः प्रावृत्त्यन् ।

अन्यत्र वेतिवेतिविभासितजनदत्तान्तरालाः प्रियमाणधवला-
तपत्रवना वनदेवता इव कल्पतरुतलविचारिण्यः (१५) काचित्
स्वन्धोभयपालीलध्वमानलस्रोत्तरीयलग्ना लीलादोलाधिकृता इव
प्रेङ्गन्धः काचित् कनककेयूरकोटिपाशमानपट्टांशकोत्तरङ्गाः
तरङ्गिण्य इव तरञ्जकवाकसीमन्थमानस्रोतसः काचिद्दृश्यमान-
धवलचामरसटालग्नविकण्टकवलितविकटकटाक्षाः सरस्य इव
हंसारुण्यमाणनीलोत्पलवनाः काचिच्चलच्चरणच्युतालककावणस्वेद-
शीकरसिन्धुमानभवनहंसाः सन्ध्यारागरज्यमानेन्दुविम्बा इव
कौमुदीरजन्यः काचित् कण्ठनिहितकाञ्चनकाञ्चीगुणाक्षितकञ्चुकि-
विकारकक्षितभ्रुवः कामवागुरा इव प्रसारितबाहुपाशा राज
मण्डप्यः प्रारम्भनृत्या विरेजुः (१६) ।

सर्वतश्च नृत्यतः स्त्रियस्य गलद्भिः पदालतकैरुत्थिता
रागमयीव शुशोण क्षौणी । समुल्लसद्भिः स्नानमण्डलेर्मङ्गलकलश-
मय इव बभूव महोत्सवः । भुजलताविक्षेपैर्ध्वजालवलयमय इव
रराज जीवलोकः । समुल्लसद्भिर्विलासस्मितैस्तद्विभ्रम इव
अकियत कालः । चञ्चलानां चञ्चुपामंशुभिः कृष्णशारमया इवासन्
वासराः । समुल्लसद्भिः शिरीषकुसुमस्तवककर्णपूरैः शृङ्गपिच्छमय
इव हरितच्छायोऽभृदातपः । विस्मंसमानैर्धम्निहृतमालपल्लवैः
कज्जलमयमिवालयतान्तरिक्षम् । उत्क्षिप्तैर्जसकिशलयैः कम-
जिनीमल्य इव बभासिरे दृष्टयः (१७) । माणिक्यन्द्रावुधानाम्
अर्जिषा चापपत्रमया इव चकाशिरे रविमरीचयः । रणताम्
आभरणगणानां प्रतिशब्दैः किङ्किणीमल्य इव शिशिस्त्रिरे

(१५) कल्पतरुतलविचारिण्यः । १ ।

(१६) विरेजुः । १ । १ ।

(१७) दृष्टयः । १ । १ । २ ।

दिशः । जरत्योऽपि उन्मादिन्य इव रमण्यो रेषुः । वर्षीयांसोऽपि
ग्रहगृहीता इव नापत्रेपिरे । विद्वांसोऽपि मत्ता इवात्मानं
विसम्भरः । निनर्त्तिषया मुनीनामपि मनांसि विपुस्फुरः ।
सर्वस्वञ्च ददौ नरपतिः । दिशि दिशि कुवेरकोषा इवालुप्यन्त
लोकेन द्रविणराशयः ।

एवञ्च वृत्ते तस्मिन् महोत्सवे शनैः शनैः पुनरप्यतिक्रामति
काले देवे चोत्तमाङ्गनिहितरक्षासर्षपे समुन्मिषत्प्रतापाम्निस्फुलिङ्ग
इव गोरोचनापिञ्जरितवपुषि समभिव्यज्यमानसहजज्ञात्ततेजसीव
हाटकबहुविकटव्याघ्रनखपङ्क्तिमण्डितग्रीवके हृदयोद्भिद्यमानदर्पा-
ङ्कुर इव प्रथमाव्यक्तजल्पितेन सत्यस्य शनैरोद्गारमिव कुर्वाणे
सुगन्धस्त्रितैः कुसुमैरिव मधुकरकुलानि बन्धुहृदयान्याकर्षति जननी-
पयोधरकलशपयःशीकरसेकादिव जायमानैर्विलासहसिताङ्कुरैः
दशनकैरलङ्घ्यमाणमुखकमलके चारित इवान्तःपुरस्त्रीकदम्बकेन
पाल्यमाने मन्त्र इव सचिवमण्डलेन रक्ष्यमाणे वृत्त इव
कुलपुत्रकलोकेनामुच्यमाने यशसीवात्मवंशेन संवर्द्धमाने ध्वजपति-
पोत इव रत्तिपुरुषशस्त्रपञ्जरमध्यगते धात्रीकराङ्गलिलग्ने पञ्च-
पाणि पदानि प्रयच्छति हर्षे षष्ठं वर्षभवतरति च राज्यवर्द्धने
देशी यशोवती गर्भेणाधत्त नारायणमूर्तिरिव वसुधां देवीं राज्य-
श्रियम् ।

पूर्णेषु च प्रसवदिवसेषु दीर्घरक्तनालनेत्रामुत्पलिनीमिव सरसी
हंसमधुरस्वरां शरदमिव ग्राहृत् कुसुमसुकुमारावयवां वनराजिम्
इव मधुश्रीः महाकनकावदातां वसुधारामिव द्यौः प्रभावर्धिणीं
रत्नजातिमिव वेला सकलजननयनानन्दकारिणीं चन्द्रलेखामिव
पतिपत् सहस्रनेत्रदर्शनयोग्या जयन्तीमिव शची सर्वभूतदभ्यर्चितां

गौरीमिव मेना प्रसूतवती बुद्धितरम् । यथा हवोः सुतयोश्चपरि
स्नानदोरिवैकावलीलतया नितरामराजत ।

अस्मिन्नेव तु काले देव्या यथोक्त्या भ्राता सुतमष्टवर्षदेशीयम्
उद्भूयमानकुटिलकाकपक्षकशिखण्डं खण्डपरशुङ्कङ्काराग्निधूम-
लेष्वागुबद्धमूर्ध्नां मकरध्वजमिव पुनर्जातम् एकेनेन्द्रनीलकुण्डलां-
शुष्कामलितेन शरीराङ्गेन दूतरेण च त्रिकण्टकमुक्ताफलालोकधव-
लितेन सम्पृक्तावतारमिव हरिहरयोर्द्ध्ययम् पीनप्रकोष्ठप्रतिष्ठित-
पुष्पलोज्ज्वलयं परशुराममिव क्षत्त्रजपणक्षीणपरशुपाशचिह्नितं
बालतां गतं कण्ठसूत्रप्रथितभङ्गरप्रबालाङ्कुरं हरिष्यकशिपुमिव
उरःकाठिन्यखण्डितनरसिंहनखरखण्डं गृहीतजन्मान्तरं शैशवेऽपि
सावष्टम्भं बीजमिव बीर्यद्रुमस्य भण्डनामानमनुचरं कुमारयोः
अर्पितवान् ।

अवनिपतेस्तु तस्योपरि पुत्रयोस्तृतीयस्य नेत्रयोरिवेश्वरस्य
तुल्यं दर्शनमासीत् । राजपुत्रावपि सकलजीवनोक्कृष्टदयानन्द-
दायिनौ तेन प्रहृतिदक्षिणं मधुमाधवाविव मलयजारातेनापेतौ
नितरा रेजतुः । क्रमेण च अपरेणैव भ्राता जानन्देन सप्त
वर्द्धमानौ यौवनमवतेरतुः । स्थिरारुन्धमौ च पृथुप्रकोष्ठौ दीर्घ-
भुजार्गलौ विकटारःकवाटौ प्राशुशालाभिरामौ महानगरमन्त्रि-
वेशाविव सर्वलोकाश्रयक्षमौ बभूवतुः ।

अथ चन्द्रसूर्याविव स्फुरज्ज्योत्स्नाययःप्रतापाकान्तमवनौ
अभिरामदुर्निरीक्ष्यौ अग्निमावताविव समभिव्यक्ततेजोबलौ एकी-
भृतौ शिलाकठिनकायबन्धौ हिमवद्विन्ध्याविवाचक्षौ महाट्टयाविव
कृतयुगयोर्म्यौ अक्षगणबडाविव हरिवाहनविभक्तशरीरौ इन्द्रेपेन्द्रौ
इव नागेन्द्रगतौ कर्णाङ्गनाविव कुण्डलकिरीटधरौ पूर्वापरदिग्-

भागाविव सर्वतेजस्विनामुदयास्तमयसम्पादनसमर्थौ अमान्तौ
 द्वातिमानेन आसन्नवेलार्गलनिरोधसङ्कटे कुकुटीरके तेजः-
 पराङ्मुखौ क्षायामपि जुगुप्समानौ स्वात्मप्रतिविम्बेनापि पादनख-
 लग्नेन लज्जमानौ शिरोरुहाणामपि भङ्गेन दुःखमवतिष्ठमानौ
 चूडामणिमंकान्तेनापि द्वितीयेनातपत्तेणापतपमाणौ भगवति
 घग्मस्त्रेऽपि स्वामिशब्देनासुखायमानश्रवणौ दर्पणदृष्टेनापि प्रति-
 पुरुषेण दूयमाननयनौ सन्ध्याञ्जलिघटनेष्वपि श्रूलायमानोत्तमाङ्गौ
 जलधरधृतेनापि धनुषा दोदूयमानहृदयौ आलेख्यक्षितिपतिभिरपि
 अप्रणमद्भिः सन्तप्यमानचरणौ परिमितमण्डलसन्तुष्टं तेजः
 सवितुरप्यबलमन्यमानौ भूभृदपहृतलक्ष्मीकं सागरमप्युपहसन्तौ
 बलवन्तमलतविग्रहं मारुतमपि निन्दन्तौ हिमवतोऽपि चमरीबाल-
 व्यजनवीजितेन दह्यमानौ जलधीनामपि शङ्कैः खिद्यमानौ चतुः-
 समुद्राधिपतिमपरं प्रचेतसमप्यसहमानौ अनपहृतच्छत्वानपि
 विच्छायानवनिपालान् कुर्वाणौ साधुष्वपि असेवितप्रसन्नौ मुखेन
 मधु क्षरन्तौ दुष्टराजवंशान् उष्मणा दूरस्थितानपि ज्ञानिमानयन्तौ
 अगुदिवसं शस्त्राभ्यासस्थामिकाकलङ्कितमशेषराजकप्रतापाग्नि-
 निर्व्वापणमलिनमिव करतलमुद्वहन्तौ योग्याकालेषु (१८) धीरैः
 धनुर्ध्वनिभिरभ्यर्णोपभोगात् दिग्बधूभिरिवालपन्तौ राज्यवर्द्धन इति
 हर्ष इति सर्वस्यामेव पृथिव्यामाविर्भूतशब्दप्रादुर्भावौ स्वल्पीयसैव
 कालेन द्वीपान्तरेष्वपि प्रकाशता जग्मतुः ।

एकदा च तावाह्वय भुक्तवानभ्यन्तरगतः पिता सस्नेहमवादीत्
 वत्सौ प्रथमं राज्याङ्गं दुर्लभाः सङ्कृत्याः । प्रायेण परमाणव इव
 समवायेष्वनुगुणीभूय द्रव्यं कुर्वन्ति पार्थिवं क्षुद्राः । क्रीडारसेन

नर्तयन्तो मयूरतां नयन्ति बालिशः । दर्पणमिवानुप्रविष्टास्त्रीयां
प्रकृतिं संकामयन्ति पक्षवकाः । स्वप्ना इव मिथ्यादर्शनैरसङ्गुलिं
जनयन्ति विप्रलम्बकाः । गीतश्रुत्यहसितैरन्यस्तताभावहन्ति उपे-
क्षिता विकारा इव वातिकाः । चातका इव तृणावन्तो न शक्यन्ते
ग्रहीतुमकुलीनाः । मानसे मीनमिव स्फुरन्तमेवाभिप्रायं दृष्ट्वान्ति
जालिकाः । यमपट्टिका इवाम्बरे चित्रमालिखन्त्यङ्गीतकाः । शल्यं
हृदये निक्षिपन्ति अतिमार्गणाः । यतः सर्वदोषाभिपन्नैरसङ्गतौ
बद्धधोपधाभिः परीक्षितौ शुची विनर्तौ विकान्तावभिरूपौ
मालवराजपुत्रौ भ्रातरौ भुजायिव मे शरीरादव्यतिरिक्तौ कुमार-
गुप्तमाधवगुप्तौ अस्याभिर्भवतोरनुचरत्वार्यमिमौ निर्दिष्टौ । अनयाः
उपरि भवद्भ्यामपि नान्यपरिजनसमवृत्तिभ्या भवितव्यम् ।
इत्युक्त्वा तयोराज्ञानाय प्रतीहारमादिदेश ।

नचिरात् द्वारदेशनिहितलोचनौ राज्यवर्धनहर्षौ प्रतीकारेण
सह प्रविशन्तम् अग्रतो ज्येष्ठमष्टादशवर्षवयसं नात्यञ्च नातिस्वर्धम्
अतिगुरुभिः पदन्याभैरनेकनरपतिसञ्चरणचला निन्दलीकुर्वाणम्
इवोर्ध्वम् अनवरताभ्यस्तलङ्घनघनापचयकटिनमासमेवुगात् ऊह-
द्वयान्विध्यततेवानुल्लणजानुग्रन्यप्रसूतन तनुतरजङ्गाकाण्डयुगलेन
भासमानम् उल्लिखितपार्श्वप्रकाशितकशिखा मन्दरमिव सुरा-
सुररभसभ्रमितवामुकिकयणक्षीणेन मध्येन लल्लमाणम् अति-
विल्लीर्णेनोरसा स्वामिसम्भावमानाम् अपरिमितानाम् अवकाशम्
इव प्रयच्छन्तम् प्रलम्बमानस्य भुजयुगलस्य निभृतलानितैर्विद्यैः
अतिदुस्तरं तरन्तमिव यौवनोदधिं वामकरकटकमाणिक्यमरीचि-
मञ्जरीजालिन्या समुद्भिद्यमानप्रतापानलशिख्यापङ्कवयेव चापकिण-
लेखयाङ्कितपीवरप्रकोष्ठम् आलोचनीमुच्चांसतटावलम्बिनीमस्त-

ग्रहणाव्रतविष्टता रौरवीमिव त्वचं कर्णाभरणमणोः प्रभां बिम्बाणाम्,
 उत्कोटिकेयूरपत्रभङ्गपुत्तिकाप्रतिबिम्बगर्भकपोलं मुखं चन्द्रमसम्
 इव हृदयस्थितरोहिणीकमुद्वहन्तम् अचपलस्मिततारकेणाधो-
 मुखेन चक्षुषा शिख्ययन्तामिव लक्ष्मीलाभोत्तानितमुखानि पङ्कज-
 वनानि विनयं स्वास्यनुरागमिवास्त्रातकम् (१९) उत्तंसीकृतं
 शिरसा धारयन्तं निर्दयया कङ्कणभङ्गभीतसकलकार्मुकार्पितामिव
 नम्रतां प्रकाशयन्तं शैशव एव निर्जितैरिन्द्रियैररिभिरिव संयतैः
 शोभमानं प्रणयिनीमिव विश्वासभूमिं कुलपुत्रतामनुवर्त्तमानं तेज-
 स्विनमपि शीलेनाह्लादकेन सवितारमिव शशिनान्तर्गतेन विराज-
 मानम् अचलानामपि कायकार्कश्येन गन्धनम् (२०) इव आचरन्तं
 दर्शनकीतमानन्दहस्ते विक्रीणानमिव जनं सौभाग्येन, कुमार-
 गुप्तम् पृष्ठतस्तस्य कनीयांसमतिप्रांशुतया गौरतया च मनःशिला-
 शैलमिव सञ्चरन्तम् अनुल्लङ्घ्यमालतीकुसुमशेखरनिभेन निर्जि-
 गमिषता गुरुणा शिरसि चुम्बितमिव यशसा, परस्परविरुद्धयोः
 विनययौवनयोश्चिरात् प्रथमसङ्गमचिह्नमिव भ्रूसङ्गतकेन कथयन्तम्
 अतिधीरतया हृदयनिहितां स्वामिभक्तिम् इव निश्चलां दृष्टिं
 धारयन्तम् अक्काक्चचन्दनरसानुलेपशीतलं सन्निहितहारोपधानं
 वक्षःस्थलम् अनन्तसामन्तसंक्रान्तिश्रान्तायाः श्रियो विशालं शशि-
 मणिशिलापट्टशयनमिव बिम्बाणं चक्षुः कुरङ्गकैः घोणावंशं वराहैः
 स्कन्धपीठं महिषैः प्रकोष्ठबन्धं व्याघ्रैः पराक्रमं केसरिभिः गमनं
 मतङ्गजैः षडयाक्षपितशेषैर्भीतैः उत्कोचमिव दत्तं दर्शयन्तं माधव-
 गुप्तं ददृशतुः ।

(१९) अस्त्राणाम् । १ । २ । अस्त्रातम् । १ ।

(२०) मर्दनम् । २ ।

प्रविश्य च दूरादेव चतुर्भिरङ्गैरुत्तमाङ्गेन च गां स्पृशन्तौ नम-
श्चक्रतुः । स्निग्धनरेन्द्रदृष्टिनिर्दिष्टामुचिता भूमिं भेज्जाते । सुहृत्सं
च स्थित्वा भूपतिरादिदेश तौ अद्य प्रभृति भवद्गां कुमारी
अनुवर्त्तनीयाविति । यथाज्ञापयति देव इति मेदिनीदोलाय-
मानमौलिभ्यामुत्थाय राज्यवर्द्धनहर्षो प्रणेमतुः । तौ च पितरम् ।
ततश्चारभ्य क्षणमपि निमेषोन्मेषाविव चक्षुर्गोचरादनपयान्तौ
उच्छ्वासनिश्वासाविव नक्तन्दिवमभिमुखस्थितौ भुजाविव सतत-
पार्श्ववर्त्तनौ (२१) कुमार्यान्तौ बभ्रवतुः ।

अथ राज्यश्रीरपि नृत्यगीतादिषु विदग्धाम् सन्धीषु सकलाम्
कलाम् च प्रतिदिनमुपचीयमानपरिचया शनैः शनैरवर्द्धत ।
परिमितैरेव दिवसैर्यौवनमारुरोह । निपतुरेकस्या तस्या शरा इव
लज्ज्यभुवि भुभुजा सर्वेषां दृश्यः । दूतप्रेषणादिभिश्च ता यथाचिरे
राजानः ।

कदाचिन्नु राजा अन्तःपुरप्रामादस्थितो वाक्ताकव्यावस्थितेन
पुष्पेण स्वप्रसावागतां गीयमानामार्यामश्नणोत्

उद्देगमहानर्त्ते पातयति पयोधरोन्ममनकाले ।

सरिदिव तटमनुवर्षं पिवर्द्धमाना मुता पितरम् ॥

ताश्च श्रुत्वा पार्श्वस्थिता महादेवीमुत्सारितपरिजनो जगाद देवि
तवणीभूता वत्सा राज्यश्रीः । एतदीया गुणवत्तव क्षणमपि
हृदयाव्यापयति मे चिन्ता । यौवनारम्भ एव च कन्यकानाम्
दम्बनीभवन्ति पितरः सन्तापानलस्य । हृदयमन्धकारयति मे
दिवसमिव पयोधरोन्मतिरस्याः । केनापि कृता धम्मरां नाभि-
मता मे स्थितिरियं यदङ्गसम्भूतानि अङ्गलालितानि अपरि-

त्याज्यान्यपत्यकानि अकाण्ड एवागत्य असंस्तुतैर्नीयन्ते । एतानि तानि खल्वङ्गनस्थानानि (२२) संसारस्य । सेयं सर्वाभिभाविनी शोकाग्नेर्दाहशक्तिः यदपत्यत्वे समाने जातायां दुहितरि दूयन्ते सन्तः । एतदर्थं जन्मकाल एव कन्यकाभ्यः प्रयच्छन्ति सलिलम् अश्रुभिः साधवः । एतद्भयादकृतदारपरिग्रहाः परिहृतगृहवसतयः शून्यान्यरण्यान्यधिशेरते मुनयः । को हि नाम सहते विरहम् अपत्यानाम् । यथा यथा समापतन्ति दूता वराणां वराकी लज्जमानेव चिन्ता तथा तथा नितरां प्रविशति मे हृदयम् । किं क्रियते तथापि गृहगतैरनुगन्तव्या एव लोकवृत्तयः । प्रायेण च सत्स्वप्यन्येषु वरगुणेषु अभिजनमेवानुरुध्यन्ते धीमन्तः । धरणी-धराणाञ्च सृङ्गि स्थितो माहेश्वरः पादन्यास इव सकलभुवन-नमस्कृतो मौखरो वंशः । तत्रापि तिलकभूतस्यावन्तिवर्मणः स्त्रुतः अग्रजो ग्रहवर्मा नाम ग्रहपतिरिव गां गतः पितुरन्यूनो गुणैः एनां प्रार्थयते । यदि भवत्या अपि मतिरनुमन्यते ततस्तस्मै दातुम् इच्छामि ।

इत्युक्तवति भर्तारि दुहितस्नेहकातरतरहृदया साश्रुलोचना महादेवी प्रत्युवाच आर्यपुत्र संवर्द्धनमात्रोपयोगिन्यो धात्रीनिर्विशेषा भवन्ति खलु मातरः कन्यकानाम् । दाने तु प्रमाणमासां पितरः । केवलं कृपाकृतविशेषः सुदूरेण तनयस्नेहादतिरिच्यते दुहितस्नेहः । यथा यावज्जीवमावयोर्नीधितां (२३) प्रतिपद्यते तथा आर्यपुत्र एव जानातीति ।

राजा तु जातनिश्चयो दुहितृदानं प्रति समाह्वय सुतावपि विदितार्थावकाशीत् । शोभने च दिवसे ग्रहवर्मणा कन्या प्रार्थ

वितुं प्रेषितस्य पूर्वागतस्यैव प्रधानदूतपुत्रस्य करे सखराजकुल-
समक्षं दृष्टिदानजलमपातयत् । जातमुदि हतार्थे गते च तस्मिन्
आसन्नेषु च विवाहदिवसेषु उद्दामदीयमानताम्बूलपटवासकुसुम-
प्रसाधितसर्वलोकं सकलदेशादिस्थमानशिल्पिसार्थीगमनम् अथनि
पालपुरुषमृहीतसमग्रामीणानीयमानोपकरणसम्भारं राज-
दौषारिकांपनीयमानानेकनृपोपायनम् उपनिमन्त्रितागतबन्धुवर्ग-
संबन्धेण्यग्रराजवत्सलं लब्धम् । सदप्रचण्डचर्मकारकरपटोप्राप्तित
कोणपटुविघटनरगन्धलपटुं पिष्टपक्षाह्नलमयदामानोलुब्धल-
सुसलशिलादुपकरणम् अशेषागामुष्वाविर्भूतचारणपरम्परापूर्व
माणप्रकोष्ठप्रतिष्ठाप्यमानेन्द्राणीदैवत सितकुसुमविलेपनवसन-
सत्कृतैः सूत्रधारैर्गादीयमानविवाहवेदीसूत्रपात्रम् उत्कृष्टककरैश्च
सुधाकर्पूरस्कन्धैर्गविरोहणी समाकृद्दैर्धवैर्भवली कियमाण प्रासाद-
प्रतोलीप्राकारशिखरं लुललात्यमानकुसुमसम्भाराम्भःप्रवपुररज्य-
मानजनपादपङ्क्तवं निरूप्यमाणयौतुक्याम्यमातङ्गतुरङ्गतरङ्गिताङ्गनं
गणनाभियुक्तगणकगणमृत्तमागलग्नगुणं गन्धोदकवाहिमकर-
मुखप्रणालीपूर्वमाणकीडावापीसमक्षं हेमकारचक्रप्रकान्तहाटक-
घटनटाङ्कारवाचालितालिन्दकम् उत्थापिताभिनवभिन्निपात्यमान-
वहलबालुकाकण्टकालेपाकुलालेपकलोकं चतुरचित्रकरचक्रबाल-
लिख्यमानमङ्गल्यालेख्यं लेप्यकारकदम्बककियमाणधृष्टयमीन-
कुर्ममकरनारिकेलकदलीपृगटवकं क्षितिपालैश्च स्ययमावहकक्ष्यैः
स्वास्थ्यर्पितकर्मशोभासम्पादनाकुलैः सिन्दूरकट्टिमभृमीय मष्टण-
यङ्गिः विनिश्चितसरसातर्पणहस्तान् विन्यसालककपाटलांश्च चूता-
शोकपद्मबलाञ्छितशिखरान् उद्गाहवितर्दिकासम्भानुत्तम्ययङ्गिः
प्रारब्धत्रिविधव्यापारम् आ सूर्योदयाच्च प्रविष्टाभिः सतीभि

सुभगाभिः सुरूपाभिः सुवेशाभिरविधवाभिः सिन्दूररजोराजि-
 राजितललाटाभिः बधूवरगोत्रग्रहणगर्भाणि श्रुतिसुभगानि
 मङ्गलानि गायन्तीभिः बद्धविधवर्णकादिग्धाङ्गुलीभिः ग्रीवा-
 सूत्राणि च चित्रयन्तीभिश्चितपत्रलतालेख्यकुशलाभिः कलशांश्च
 धवलितान् शीतलशालाजिरन्त्रेणीय (२४) मण्डयन्तीभिः (२५)
 अभिन्नपुटकर्पासत्तलपल्लवांश्च वैवाहिककङ्कणोर्णासूत्रसन्नाहंश्च
 रत्नयन्तीभिः बलाघृतघनीकृतकुङ्कुमकल्कमिश्रितांश्चाङ्गरागान्
 लावण्यविशेषकान्ति च मुष्णालेपनानि कल्पयन्तीभिः कङ्कोलमिश्राः
 सजातीफलाः स्युरत्स्नीतस्फटिककर्पूरश्चकलश्चचितान्तरालाः
 लवङ्गमाला रचयन्तीभिः समन्तात्सामन्तसीमन्तिनीभिर्व्याप्तम्
 बद्धविधभक्तिनिर्माणनिपुणपुराणपौरपुरन्निबध्यमानैश्च आचार-
 चतुरान्तःपुरजरतीजनितपूजाराजमानरजकरज्यमानैः रक्तैश्च
 उभयपटान्तलग्नपरिजनप्रेङ्खोलितैश्चायासु शोथमाणैः शुष्कैश्च
 कुटिलकमरूपक्रियमाणपल्लवपरभागैरपरैरारब्धकुङ्कुमपङ्कस्थासुक-
 च्चुरणैरपरैरङ्गुजभुजिष्यभज्यमानभङ्गुरोत्तरीयैः क्षौमैश्च वादरैश्च
 दुकूलैश्च लाङ्घ्यातन्तुजैश्चाङ्गुलैश्च नेत्रैश्च निम्नोक्तनिभैरकठोररम्भा-
 गर्भकोमलैर्निष्ठासहार्थैः स्पर्शानुमेयैर्वासोभिः सर्वतः स्फुरद्भिः
 इन्द्रायुधसहस्रैरिय संछादितम्, उज्ज्वलनिचोलकावगुण्ठमान-
 हंसकुलैश्च शयनीयैः तारामुक्ताफलोपचीयमानैश्च कङ्कुमैः अनेकोप-
 योगपाण्ड्यमानैश्चापरिमितैः पट्टपटीसहस्रैः अभिनवरागकोमल-
 दुकूलराजमानैश्च पटवितानैः स्वरकनिबद्धनिरन्तरच्छाद्यमान-
 समस्तपटलैश्च मण्डपैः उज्ज्वलनेत्रपटवेद्यमानैश्च सन्मैरुज्ज्वलं रम-
 णीयञ्चैकमुपदृश्य मङ्गल्यश्चासीद्वाजकुलम् ।

देवी तु यशोवती विवाहोत्सवपर्वाकुलहृदया हृदयेन भर्त्सरि
कुलहलेन आमातरि स्नेहेन वृद्धितरि उपचारेण निमन्त्रितक्षीषु
आदेशेन परिजने शरीरेण सञ्चरणे चक्षुषा कृतकृतप्रत्यवेक्षणेषु
आनन्देन महोत्सवे एकापि वञ्चधा विभक्तेवाभवत् । भूपतिरपि
उपर्युपरि विसर्जितोद्गामीजनितआमाहृतोपः सत्यप्याश्वासम्भा-
दनदक्षे मुखेक्षणपरे परिजने समं पुत्राभ्या दृष्टितस्नेहविक्षयः
सर्वं स्वयमकरोत् ।

एवञ्च तस्मिन् अविधवामय इव भवति राजकुले मङ्गलमय
इव जायमाने जीवलोकं चारणमयेष्विव लक्ष्यमाणेषु दिक्षुक्षेपु
पटहमय इव कृतेऽन्तरिक्षे भूषणमय इव भ्रमति परिजने बान्धव-
मय इव दृश्यमाने सगे निर्दृष्टिमय इवापलक्ष्यमाणे काले लक्ष्मी
मय इव विवृम्भमाणे महोत्सवे निधान इव मुण्डस्य फल इव
जन्मनः परिणाम इव पुण्यस्य यौवन इव पिभूते, यौवराज्य इव
प्रीतिः सिद्धिकाल इव मनोरथस्य वर्त्तमाने गम्यमान इव जना-
कूलीभिः आलोक्यमान इव मार्गश्वजैः प्रत्यङ्गम्यमान इव मङ्गल्य-
वाद्यप्रतिशब्दैः आह्वयमान इव मोहर्तिकैः आलप्यमाणा इव
मनोरथैः परिष्वज्यमान इव बधूसङ्गीकृत्ये, आजगाम विवाह-
दिवसः । प्रातरेव प्रतीहारैः समुत्थारितनिधिलानिवृत्तलोकं
विविक्तमक्रियत राजकुलम् ।

अथ प्रतीहारः प्रविश्य नृपसमीपं देव आमातरन्तिकात्
ताम्बूलदायकः पारिजातकनामा सम्प्राप्तः इत्यभिधाय स्वाकारं
युवानमदर्शयत् । राजा तु तं दृग्देव आमाह्वयमानाद्दृष्टि-
दरो बालक कश्चित् कुशली प्रह्वयन्तीति पप्रच्छ । असौ तु समा-
कर्णितनराधिपञ्चनिर्धोवमानः कतिचित् पदान्यपश्यत्य प्रसार्य च

बाह्व सेवाचतुरश्विरं वसुन्धरायां निषाय मूर्ध्नि नमः उवाच देव
कुशली यथाज्ञापयसि अर्चयति च देवं नमस्कारेणेति व्यञ्जा-
पयत् । आगतजामातृनिषेदनागतञ्च तं ज्ञात्वा कृतसत्कारं राजा
यामिन्याः प्रथमे यामे विवाहकालात्ययकृतो यथा न भवति दोष
इति सन्दिश्य प्रतीपं प्राहिणोत् ।

अथ सकलकमलवनलक्ष्मीं बधूमुख इव सञ्चार्य समवसिते
वासरे विवाहदिवसस्त्रियः पादपल्लव इव रज्यमाने सवितरि
बधूवरालुरागलघूतप्रेमलज्जितेष्विव विघटमानेषु चक्रवाक-
मिथुनेषु सौभाग्यध्वज इव रक्तांशुकमुकुमारवपुषि नभसि
स्फुरति सन्ध्यारागे कपोतकण्ठकर्जुरे वरयात्रागमनरजसीव कलु-
षयति दिङ्मुखाणि तिमिरे लग्नसम्पादनसज्ज इव उज्जिह्वाने
ज्योतिर्गणे विवाहमङ्गलकलश इव उदयशिखरिणा समुत्-
क्षिप्यमाणे वर्द्धमानधवलच्छाये ताराधिपमण्डले बधूवदनलावण्य-
ज्योत्स्नापरिपीततमसि प्रदोषे दृयोदितमुपहसत्स्त्रिव रजनिकरम्
उत्तानितमुखेषु कुमुदवनेषु आजगाम मुहुर्मुहुर्बल्लासितस्कार-
स्फुरिताङ्गणचामरैर्मनोरथैरिवोत्थितरागाग्रपल्लवैः पुरो धावमानैः
पादातैः उत्कर्णकटकहयप्रतिहेषितदीयमानस्वागतैरिव वाजिना
वन्द्यैश्चापूरितदिग्भागः चलकर्णचामराणां चामीकरमयसर्वोपकर-
णानां वर्णकल्लविना बलिना घण्टाटाङ्कारिणां करिणां घटाभिः
घटयन्निव पुनरिन्दूदयविलीनमन्धकारं नक्षत्रमालामण्डितमुखीं
करिणीं निशाकर इव पौरन्दरीं दिशमारुढः प्रकटितविविध-
विहगविरुतैस्तालावचरचारणैः पुरःसरैः बालो वसन्त इवोप-
वनैः क्रियमाणकोलाहलो गन्धतैलावसेकसुगन्धिना दीपिकाचक्र-
पालस्थालोकेन कुङ्कुमपटवासधूलिपटलेनैव पिञ्चरीकुर्वन् सकलं

लोकम् उत्फुल्लमल्लिकामुल्लमालामध्याध्यासितकुसुमशेखरेण
शिरसा हसन्निव सपरिवेशक्षपाकरं कौमुदीप्रदोपम् आत्मरूप-
निर्जितमकरकेतुकरापङ्कतेन कार्मुकेणैव कौसुमेन दाम्बा
विरचितवैकल्यकविलासः कुसुमसौरभगर्वभ्रान्तभ्रमरकुलकल-
प्रलापसुभगः पारिजात इव जातः श्रिया सह पुनरवतारितो
मेदिनीम् नवबन्धवदनावलोकनकूटहलेनेव लुप्यमाणश्चक्षुः पतन्निव
मुखेन प्रत्यासन्नलग्नो ग्रहवर्मा ।

राजा तु तमुपहारमागतं चरणाभ्यामेव राजचक्रातुगम्यमानः
समुतः प्रत्युज्जगाम । अवतीर्णश्च तं कृतनमस्कारं मन्मथमिव
माधवः प्रसारितभुजो गाढमालिलिङ्गः । यथाकमं परिष्वक्त-
राज्यवर्द्धनहर्षश्च हस्ते गृहीत्वाभ्यन्तरं नित्यं । स्वनिर्विशेषा-
सनदानादिना चैनम् उपचारेणोपचचार ।

नचिराञ्च गम्भीरनामा नृपतेः प्रणयी विद्वान् द्विजन्मा ग्रह-
वर्माणमुवाच तात त्वा प्राप्य चिरात् खलु राज्यश्रिया घटितौ
तेजोमयौ सकलजगद्गीयमानबुधकर्णानन्दकारिगुणगणौ सोम-
सूर्यवंशाविव पुण्यभूतिमुखरवंगौ । प्रथममेव कौस्तुभमणिगिव
गणैः स्थितोऽसि हृदये देवस्य । इदानीन्तु शशीव शिरसा
परमेश्वरेण असि वोढव्यो जात इति ।

एवं वदत्येव तस्मिन् नृपमुपसृत्य मौहूर्त्तिका देव समासीदति
लग्नवेला व्रजतु जामाता कौतुकगृहमित्यूचुः । अथ नरेन्द्रेण
उत्तिष्ठ गच्छेति गदितो ग्रहवर्मा प्रविश्यान्तःपुरं जामातृदर्शन-
कूटहलिनीना स्त्रीणा पतितानि लोचनसञ्छाणि विकचनील-
कुवलयवनानीव लङ्घयन्नाससाट कौतुकगृहद्वारम् । निवारित-
परिजनश्च प्रविवेश ।

अथ तत्र कतिपयाप्रप्रियसखीस्वजनप्रमदाप्रायपरिवाराम्
 अरुणाशुकावगुण्ठितमुखीं प्रभातसन्ध्यामिव स्वप्रभया निष्प्रभान्
 प्रदीपकान् कुर्वाणाम् अतिसौकुमार्यशङ्कितेनेव यौवनेन नाति-
 निर्भरमुपगूढां (२६) साध्वसनिरुध्यमानहृदयदेशदुःखमुक्तैर्निभता-
 यतैः श्रुतैः अपयान्तं कुमारभावमिवानुशोचन्तीम् अत्युत्कम्पिनीं
 पतनभियेव तपया निष्पन्दं धार्यमाणां हस्तं तामरसप्रतिपल्लम्
 आसन्नग्रहणं शशिनमिव रोहिणीं भयवेपमानमानसामय-
 लोकयन्तीं चन्दनधवलतनुलतां ज्योत्स्नादानसञ्चितलावण्यात्
 कुमुदिनीगर्भादिव प्रसूता कुसुमामोदनिर्हारिणीं वसन्तहृदयादिव
 निर्गतां निश्वासपरिमलाकृतमधुकरकुलां मलयमारुतादिव उत्पन्नां
 कृतकन्दर्पानुसरणां रतिमिव पुनर्जातां प्रभालावण्यमदसैरभ-
 माधुर्यैः कौस्तुभशशिमदिरापारिजातादृतप्रभवैः सर्वरत्नगुणैः
 अपरामिव सुरासुररुषा रत्नाकरेण कल्पितां श्रियं स्निग्धेन
 बालिकालोकेन सितसिन्धुवारकुसुममञ्जरीभिरिव मुक्तादीधि-
 तिभिः कल्पितकर्णावतंसां कर्णाभरणमरकतप्रभाहरितशाद्वलेन
 कपोलस्थलीतलेन विनोदयन्तीमिव हारिणीं लोचनच्छायाम्
 अधोमुखं वरकौतुकालोकनाकुलं मुञ्जगृहः कृतमुखोन्ममनप्रयत्नं
 सखीजनं हृदयञ्च निर्भर्त्सयन्तीं बधूमपश्यत् ।

प्रविशन्तमेव तं हृदयचौरं बध्वा समर्पितं जग्राह कन्दर्पः ।
 परिहासस्मेरमुखीभिश्च नारीभिः कौतुकगृहे यद् यत् कार्यते
 जामाता तत्तत्सर्वमतिपेशलं चकार । कृतपरिणयानुरूपवेषपरि-
 ग्रहां गृहीत्वा करे बधूं निर्जगाम । जगाम च नवसुधाधवला
 निमन्त्रितागतैस्तुषारशैलोपत्यकामिव त्वम्बकास्त्रिकाविवाहादृतैः

भ्रष्टाङ्गः परिहृता सेकसकुमारयवाङ्कुरदन्तुरैः पञ्चास्यैः कलशैः
कोमलवर्णिकाविविधैरमलमुषैश्च मङ्गल्यफलहस्ताभिरञ्जलि-
कारिकाभिरङ्गासितपर्यन्ताम् उपाध्यायोपधीयमानेभ्यनधूमाय-
मानाग्निसन्धुक्षणाक्षणिकोपद्रुदृष्टिजाम् उपलयागुनिर्गितानुपहत-
हरितकुशां सन्निहितदृपदजिनाञ्जस्वकुसुमित्पत्नीतिवहां नूतन-
सूर्पापितस्थामलशमीपलाशमिश्रलाजहासिनीं येदीम् । आहुरोह
च तां दिवमिव सज्योत्स्नः शशी । समुत्सर्प च वेक्षिताक्षणा
शिष्वापल्लवस्य शिष्विनः कुसुमायुध इव रतिहृतीयो रक्तागोकस्य
समीपम् । ऊते च ऊतभुजि दक्षिणावर्त्तप्रवृत्ताभिः बधूपदन-
विलोकनकुद्वहलिनीभिरिव ज्वालाभिरिव सक्त प्रदर्शनां यन्त्राम् ।
पात्यमाने च लाजाञ्जली नखमयूखधवनिततनुः अदृष्टपर्यवधुवर-
रूपविस्मयम्भरे इवाहृष्यत विभायसुः ।

अतान्तरे स्वच्छकपोलोदरसंकान्तमनलप्रतिविम्बमिव निर्व्या-
पयन्ती स्थूलमुक्ताफलविमलवाप्यविन्दुसन्दोहदर्शितदर्हिना नि-
र्व्यदनविकारं हरौद बधुः । उदयुर्विलोचनानास्र वात्यवधूनाम्
उदपादि महानाकन्दः । परिसमापिततैवाचिकक्रियाकलापस्तु
जामाता बध्वा समं प्रणनाम श्वशुरौ । प्रविवेश च द्वारपक्षलिङ्गित-
रतिप्रीतिदैवतं प्रणयिभिरिव प्रथमप्रविष्टैरलिकुले ऊतकोला
हलम् अलिकुलपक्षपवनप्रेङ्खोलितै कर्णोत्पलप्रहारभयप्रकम्पितैरिव
मङ्गलप्रदीपैः प्रकाशितम् एकदेशलिङ्गितस्तवकितरक्ताशोकतस्तल-
भाजा अधिज्यवापेन तिर्यक्कृणितनेत्रविभागेण शरच्चक्रकूर्चता
कामदेवेनाधिष्ठितम् एकपाद्यन्यस्तेन काक्षुनाचामरकेण इतरपार्श्व-
वर्त्तिन्या च दान्तशफरकधारिण्या कनकपुच्छिकया माताङ्गज्येष्ठ-
पद्मपुष्टरीकदन्तया मनाथेन मोपधानेन स्वाक्षीर्णेन शयनेन

शोभमानं शयनशिरोभागस्थितेन च कृतकुसुदशोभेन कुसुमायुध
साहायकायागतेन शशिनेव निद्राकलशेन राजतेन विराजमान
वासगृहम् ।

तत्र च क्लीताया नववधूकायाः पराङ्मुखप्रसुप्ताया मणिभित्ति
दर्पणेषु मुखप्रतिविम्बानि प्रथमांलापाकर्णनकौतुकागतगृहदेवता
ननानीव मणिगवाक्षकेषु वीक्षमाणः क्षणदां निन्दे । स्थित्वा च
श्वशुरकुले शीलेनामृतमिव श्वश्रूहृदये वर्षन् अभिनवाभिनवोप
चारैरपुनरुक्तानि आनन्दमयानि दश दिनानि स्थित्वा दत्त्वा राज
दौवारिकमिव राजकुले रणरणकं यौतुकनिवेदितानीव शम्बलानि
आदाय हृदयानि सर्वलोकस्य कथं कथमपि विसर्जितो नृपेण
बध्वा सह स्वदेशमगमदिति ।

इति श्रीवाणभट्टकृते हर्षचरिते चतुर्थ उच्छ्वासः ।

पञ्चम उच्छ्वासः ।

निवृत्तिर्विधाय पुंसां प्रथमं सुखमुपरि दाहणं दुःखम् ।

कृत्वालोकं तरला तडिदिव बज्रं निपातयति ॥

पातयति महापुरुषान् सममेव बह्वनमादरेणैव ।

परिवर्त्तमान एकः कालः शैलानिवानन्तः ॥

अथ कदाचित् राजा राज्यवर्द्धनं कवचहरमाह्वय ह्णान्
ठन्तुं हरिणानिव हरिर्हरिणंगकिशोरम् अपरिमितबलानुयातं
विरन्तनैरमात्यैरनुरक्तैश्च महासामन्तैः कृत्वा साभिसारम् उत्तरा-
पथं प्राचिणोत् ।

प्रयान्तश्च तं देवो र्षः कतिचित्प्रयाणकानि तरङ्गमैरनु-
वव्राज । प्रविष्टे च कैलासप्रभाभासिनी ककुभं भ्रातरि वर्त्तमानो
नवे वयसि विक्रमरसानुरोधिनि केसरिगरभगार्दूलवराहवज्जनेषु
तुषारशैलोपकण्ठेषु उत्कण्ठमानवनदेवताकटाक्षांशुगारितगरीर-
कान्तिः कीडन् स्रगया स्रगलाचन कतिपयान्यहानि यद्विदेव
व्यलस्रत । अकार च आकर्णान्तालुटकार्मुकनिर्गतभामुरभङ्गवर्षो
स्वल्पीयोभिरेव दिवसैर्निःश्लापदान्यरण्यानि ।

एकदा तु वासतेष्वास्तुरीये यामे प्रत्युपस्येव स्यं चटलज्वाला-
पुष्पपिञ्जरीलतसकलककुभा दुर्निवारिण्य दवज्जतभला दक्ष्यमानं
केसरिणमद्राक्षीत् । तस्मिन्नेव च दावदहने समुत्पृष्य यावकान्
उत्सृज्य चात्मानं पातयन्तीं सिंहीमपश्यत् । आसीद्वास्य चेतसि
लोके हि लोहेभ्यः कठिनतराः खलु स्नेहमया बन्धनपाशाः यदा
लुटाक्षिर्ब्रह्मोऽपि एवमाचरन्तीति । प्रवृत्स्य चास्य मुहुर्मुहुः

दक्षिणेतरमक्षि पस्यन्दे मात्रेषु चाकस्मादेव वेपथुर्विप्रप्रथे नि
 निर्मितम् एवान्तर्बन्धनस्थानाच्चचालेव हृदयम् अकारणादेवं च
 अजायत (१) गरीयसी दुःखासिका । किमिदमिति च समुत्पन्न-
 विविधविकल्पविमथितमतिरपगतधृतिश्चिन्तावनमितवदनः स्तिमित
 तारकेण चक्षुषा समुद्भिद्यमानस्यलकमलिनीवनामिव चकार
 चकोरेक्षणः क्षणं क्षौणीम् । अङ्गि च तस्मिन् शून्येनैव च चेतसा
 चिक्रीड(२)स्ययाम् । आरोहति च हरितहवे मध्यमङ्गो भवनम्
 आगत्य उभयतो मन्दमन्दं संवाञ्छमानतनुतालवृन्तः क्षितितल-
 वितताम् अतिशिथिरमलयजरसलवलुलितवपुषम् इन्दुधवलोप-
 धानधारिणीं वेत्तपट्टिकाम् (३) अधिशयानः साशङ्क एव तस्यौ ।

अथ दूरादेव लेखगर्भया नीलीरागमेचकरुचा चीर-(४)
 चीरिकया रचितमुण्डमालकं अमातपाभ्यामारोप्यमाणकाय-
 कालिमानम् अन्तर्गतेन शोकशिखिना अङ्गारतामिव नीयमानम्
 अतिवरागमनद्रुततरपदोद्भूयमानधूलिराजिब्याजेन राजवार्त्ता-
 श्रवणकुलहलिन्या मेदिन्येवानुगम्यमानम् अभिमुखपवनप्रेङ्खत्प्रवि-
 ततोत्तरीयपटप्रान्तबीज्यमानोभयपार्श्वम् अतिव्रया कृतपक्षम्
 इवाशु परापतन्तं प्रेर्यमाणमिव पृष्ठतः स्वाभ्यादेशेन कृष्यमाणम्
 इव पुरस्तादायतैः अमश्यासमोक्षैः स्विद्यल्ललाटतटघटमानप्रति-
 विम्बकेन कार्यकौतुकादपङ्क्तिमणालेखमिव भास्वता, सम्भ्रम-
 भ्रष्टैरिवेन्द्रिवैः शून्यीकृत(५)शरीरं लेखार्पितप्रयोजनगौरवादिव
 समेऽपि वर्त्मनि शून्यहृदयतया स्खलन्तं कालमेवशकलमिव पति-
 प्यतो दुर्वार्त्तावज्जस्य धूमपल्लवमिव ज्वलितः शोकज्वलनस्य बीजम्

(१) अजायत च । २ ।

(२) व्यक्रीडत् । २ ।

(३) वेत्तपट्टिकाम् । १ ।

(४) चीर । १ ।

(५) तुच्छीकृत । १ ।

इव फलिततो दुष्कृतशालेः अनिमित्तभूतदीर्घाभगं कुरङ्क-
नामानमायान्तमद्राणीत् ।

इहा च पूर्वानिमित्तपरम्पराविर्भावित(३)भीतिरभिद्युत हृद-
येन । कुरङ्कस्तु कृतप्रणयैः समुपहृत्य प्रथममाननलग्नं विचारम्
उपनिन्दे पञ्चालेषुम् । तच्च देवो हर्षः स्वमेवादायावाचयत् ।
लेखार्थेनैव च समं गृहीत्वा हृदयेन सन्तापम् अवयवकपोऽभ्यधात्
कुरङ्क किं मान्यं तातस्येति । स चक्षुषा बाष्पजलविन्दुभिः
मुखेन चावज्जालगैः क्षरद्भिर्युगपदावचले देव दाहन्वरो महान्
इति । तच्चाकर्ण्य सहसा सहस्रधेवास्य हृदयं पफाल । कृता-
चमनत्र जनयितुरायुष्कामो ऽपरिमितमणिकनकरजतजातमाक-
परिवर्हम् अग्रेषं ब्राह्मणसादकरोत् अभङ्ग एवोच्चाल टापय
वाजिनः पर्वणम् इति च पुरःस्थितं शिरःकृपाणं विश्वाणं वभाण
युवानम् । वेपमानहृदयत्र मसम्प्रमप्रधावितपरिवर्तकोपनीतम्
आरुह्य तुरङ्गमम् एकाक्येव प्रावर्त्तत ।

अकाशहप्रयाणसंज्ञाशङ्कलुभितं तु मसम्प्रमात् मञ्जीभूतमुद्धत-
मुखगर्भुररवभरितसकलभुवनविवरमागत्यागत्य सर्वाभ्यां दिग्भरो
धावमानमश्रीयमढौकत । प्रस्थितस्य चास्य प्रदक्षिणोत्तरं प्रयान्तो
विनाशमुपस्थितं राजसिंहस्य हरिणा, प्रकटयाम्भुवुः । अग्निगिर-
रग्निमण्डलाभिमुख्य हृदयमवटारयन्निव दावगुप्तं दाहयि
दाहणं रराण वायसः । कज्जलमय इव वज्रदिवसमुपस्थितवज्र-
मलपटलमंलिनिततनुरभिमुखमाजगाम शिथिलपिच्छलाश्रयो
नग्नाटकः । दुर्निमित्तैरनभिनन्द्यमानगमनश्च नितरामशङ्कत ।

हृदयेन पितस्त्रेहाहितम्बदिम्ना च तत्तदुपेक्षमाणः तुरङ्गमस्कन्ध-
बद्धलक्ष्यं चक्षुरविचलं दधानः समवसितहसितसङ्कथसूणीभ्रूतेन
भूपाललोकेनानुगम्यमानो बद्धयोजनसम्पिण्डितमध्वानम् एकेन
एवाङ्गा समलङ्घयत् ।

उपलब्धनरेन्द्रमान्द्यवार्त्ताविषम इव नष्टतेजस्यधोमुखीभवति
भगवति भानुमति भण्डप्रमुखेन प्रणयिना राजपुत्रलोकेन बद्धशो
विज्ञाप्यमानोऽपि नाहारमकरोत् । पुरःप्रवृत्तप्रतीहारगृह्यमाण-
ग्रामीणपरम्पराप्रकटितप्रगुणवर्त्ता च वहन्नेव निन्ये निशाम् ।

अन्यस्मिन्नहनि मध्यन्दिने विगतजयशब्दमस्तमितदूर्ध्वनादमुप-
संहृतगीतमुत्सारितोत्सवमप्रगीतचारणमप्रसारितापणपथं स्थान-
स्थानेषु पवनबलकुटिलाभिः कोटिहोमधूमलेखाभिरुल्लसन्तीभिः
यममहिषविषाणकोटिभिरिवोत्क्षिप्यमानं कृतान्तपाशवागुराभिः
इव वेशमानम् उपरि कालमहिषालङ्कारकालायसकिङ्किणीभिः
इव कटु कणन्तीभिर्दिवसं वायसमण्डलीभिर्धूमन्तीभिरावेद्य-
मानप्रत्यासन्नाशुभं क्वचित्प्रतिशायितस्निग्धबान्धवाराध्यमानाहि-
ब्रम्भं क्वचित् दीपिकादत्तमानकुलपुत्रकप्रसाद्यमानमाटमण्डलं
क्वचिन्मुण्डोपहाराहरणोद्यतद्रविडप्रार्थ्यमानामर्दकं क्वचिदग्धो-
न्मियमाणबाहुवप्रोपयाच्यमानचण्डिकम् अन्यत्र शिरोविधृतवि-
लीयमानगुग्गुलुत्रिकलनवसेवकानुनीयमानमहाकालम् अपरत्र
निशितशस्त्रीनिकृत्तात्मसांसहोमप्रसक्ताप्तवर्गम् अपरत्र प्रकाशनर-
पतिकुमारकक्रियमाणमहासांसविक्रयप्रकमम् उपहतमिवं श्लशान-
पाशुभिः अमङ्गलैरिव परिमृहीतं यातुधानैरिव विध्वंसं कलि-
कालेनेव कवलितं पापपटलैरिव संव्यादितम् अधर्मविद्येपैरिव
लण्डितम् अनित्यताधिहारैरिवाक्रान्तं निवतिविलासैरिवाक्री-

कृतं शून्यमिव सुप्तमिव स्रवितमिव विलक्षितमिव क्षलितमिव
मूर्च्छितमिव स्तम्भावारमाससाट ।

प्रविशन्नेव च विपणिवर्त्मनि कुक्षलाकुलवहलबालकपरिरुतम्
ऊर्जयटिविष्कम्भवितते वामहस्तवर्त्मनि भीषणमहिषाविकृ-
प्रेतनाथसनाथे चित्रवति पटे परलोकस्थतिकरम् इतरकरकलितेन
शरकाण्डेन कथयन्तं यमपट्टिकं ददर्श तेनेव च गीयमानं श्लोक-
मब्रूणोत्

मातापितृसहस्राणि पृथदारशतानि च ।

युगे युगे व्यतीतानि कस्य ते कस्य वा भवान् ॥ इति ।

तेन चाविकतरमवदीर्घ्यमाणच्छ्रुतयः कमेण राजद्वारं प्रतिविह
सकललोकप्रवेशं ययौ । तुरगादवतीर्णश्च अभ्यन्तराविष्कामन्तम्
अप्रसन्नमुखरागं मुक्तमिवेन्द्रियैः सुपेणनामानं वैद्यकुमारम्
अद्राक्षीत् । कृतनमस्कारश्चाप्राक्षीत् सुपेण अस्ति तातस्य बिशेषो
न वेति । सोऽब्रवीत् नास्तीदानीं यदि भवेत् कुमारं हृदेति ।
मन्दमन्दं द्वारपालैः प्रणय्यमानश्च दीयमानसर्वस्वं पृथ्यमानकुल
देवतं प्रारब्धाद्यतचरुपचनक्रियं कियमाणपडाङ्गतिहोमं क्रियमान
उपदाज्यलबलिप्रचलदूर्वापल्लवम् पद्यमानमशमायूरि प्रवर्त्य
मानगृहशान्तिं निर्वर्त्यमानभतरक्षावलिबिधानं प्रयतविप्रस्तुत-
संहिताजपं जप्यमानसद्वेकादशीशब्दायमानशिवगृहम् अतिशुचि-
शैवसम्पाद्यमानविकृपाक्षक्षीरकलगसहस्रस्नपनम् अजिरोपविष्टश्च
अनासार्दितस्वामिदर्शनदूयमानमानसैः अभ्यन्तरनिष्पतितानिकट-
वर्त्मपरिजननिवेद्यमानवार्त्तार्त्तभिृतस्नानभोजनशयनैर्बलिताम-
संस्कारमनिनवेशैर्लिखितैरिव निश्चलैर्नरपतिभिर्नियमाननक्त-
न्द्रियं दुःखदीनवदनेन च प्रघणेषु बहुमण्डलेनोपांशुव्याहृतैः

केनचिच्चिकित्सकदोषानुद्भावयता केनचिदसाध्यव्याविलक्षणपदानि
पठता केनचिद्दुःस्वप्नानावेदयता केनचित् पिशाचवार्त्ता विदुष्यता
केनचित् कार्तान्तिकादेशान् प्रकाशयता केनचिदुपलिङ्गानि
गायता अन्येनानित्यतां भावयता संसारश्चापवदता कलिकालविल-
सितानि च निन्दता दैवञ्चोपालभमानेन अपरेण धर्माय कुर्याता
राजकुलदेवताश्चाधिक्षिपता अपरेण क्लिष्टकुलपुत्रकभाग्यानि गर्ह-
यता वाह्यपरिजनेन कथ्यमानकष्टपार्थिवावस्थं राजकुलं विवेश ।

अविरलवाष्पपयःपरिप्लुतलोचनेन पितृपरिजनेन वीक्ष्यमाणो
विविधौषधिद्रव्यद्रवगन्धगर्भमुत्कथतां काथानां सर्पिषां तैलानाञ्च
पच्यमानानां गन्धमाजिघ्रन्नुवाप तृतीयं कल्याणन्तरम् ।

तत्र चातिनिःशब्दे गृहावग्रहणीग्राहिबद्धवेतिणि त्रिगुण-
तिरस्करणीतिरोहितसुवीथीपथे पिहितपक्षद्वारके परिहृतकवाट-
रटिते घटितगवाक्षरक्षितमरुति दूयमानपरिचारके चरणताडन-
स्वनस्योपानप्रकुपितप्रतीहारे निभृतसंज्ञानिर्दिश्यमानसकलकर्म्मणि
जातिनिकटोपविष्टकङ्कटिनि कोणस्थिताह्वानचकिताचमनकवाहिनि
चन्द्रशालिकालीनमूकमौललोके महाधिविधुरबान्धवाङ्गनावर्ग-
गृहीतप्रच्छन्नप्रग्रीवके सञ्जवनपुष्कितोद्दिग्गपरिजने प्रविष्टकतिपय-
प्रणयिनि गम्भीरज्वरारम्भभीतभिपजि दुर्मनायमानमन्त्रिणि
मन्दायमानपुरोधसि सौदत्सुहृदि निद्राण्यविपश्चिति सन्तप्ताप्त-
सामन्ते त्रिचित्तचामरग्राहिणि दुःखक्षामशिरोरक्षिणि क्षीयमाण-
प्रसादवित्तमनोरथसम्पदि स्वामिभक्तिपरित्यक्ताहारहीयमानबल-
विकलवल्गुभभूयति क्षितितलपतितसकलरजनीजागङ्गराजपुत्र-
कुमारके कुलकमागतकुलपुत्रनिवहोद्भूतमानशुचिशोकसङ्कुचित-
कक्षकिनि निरानन्दवन्दिनि निश्चसन्विराशासम्भसेवके निःसृत-

ताम्रलधूसराधरवारयोषिति विलसवैद्योपदिष्टमानपञ्चाहरणाव-
हितपौरोगवे अनुजीविपीयमानोच्चचपकधारावारिविनोद्यमानास्त्र-
योषद्भि राजाभिलाषभोज्यमानवज्रभुजि भेषजसामयीसम्पादन-
व्यग्रसमप्रव्यवहारिणि मुकुर्मुकुटाद्भयमानतोयकर्णान्तिकानुमित-
घोरातरुदधि तुषारपरिकरितकरकशिगिरीकियमाणोदश्रिति
खेतार्द्रकर्पटार्पितकर्पूरपरागशीतलीलतयलाके नाम्भानपङ्कलिप्य-
माननवभाण्डगतगच्छूयग्रहणमस्तुनि तिम्यन्कोमलकमलिनीपलाश-
प्रादृतशङ्खगालके सनालनीलोत्पलपुलीसनायसलिलपानभाजन-
भुवि धारानिपातनिर्वाप्यमानकयिताम्भसि पटपाटलशर्करामोद
मुचि मधुकान्त्रितसिकतिलकर्करीविश्रान्तान्तरचक्षुषि सरलशेवल-
वलयितगलग्नोलयन्त्रके गल्बकगालाजिरोद्भासितलाजसक्तुनिपीत-
मसुरपारीपरिगृहीतकर्कशर्करे शिशिरौषधसञ्चर्गावकीर्ण
स्फटिकशुक्तिशङ्खसञ्चये सञ्चितप्रचुरप्राचीनामलकमातुलङ्गुलाद्या-
टामिडादिफले प्रतिग्राहितविप्रविप्रकीर्णमाणशान्द्युदकविप्रुषि
प्रेष्यापेक्षमाणललाटलेपोपदिग्धदृष्टि धवलगृहे स्थितं परलोक-
विजयाय नीराज्यमानमिव ज्वरज्वलनेन अनवरतपरिवर्तनैकार-
ङ्गिणि शयनीये शेषमिव विषोष्णता क्षीरोदन्वति विचेष्टमानं मुक्ता-
फलबालकाधूलिधवलितं जलधिमिव क्षयकाले शृण्वन्तं कालेन
कैलासमिव दशानननोद्ध्रियमाणम् अविरतचन्दनचञ्चोपराणां
परिचारकास्त्रामत्युष्णावयवस्पर्शभस्मीभृतोदरैरिव धवलैः करैः
स्पृश्यमानं लोकान्तरप्रस्थितं स्याद्भुजा स्वयशसेव चन्दनानुलेपन-
च्छलेनाट्ट्यमानम् अविच्छिन्नदीयमानकमलकुमुदेन्दीवरदलं
कालकटालपतनश्वलमिव शरीरमुद्वहन्तं निविहदुकुलपट्टनिपी-
ठितकेशान्तकथ्यमानकटवेदनानुबन्धं मृद्धानं धारयन्तं दुर्गवेदनो

नमनीलशिराजालककरालेन च कालाङ्गुलिलिख्यमानलेखा-
 ख्यातमरणावधिदिवससंख्यानेनेव ललाटफलकेन भयमुपजनयन्तम्
 आसन्नयमदर्शनोद्देगादिव च किञ्चिदन्तःप्रविष्टतारकं शुष्यदृशन-
 पङ्क्तिप्रसृतधूसरदीधितितरङ्गिणीं खगदृष्टिकांमिवोष्णां निश्वास-
 परम्परामुद्वहन्तम् अत्युष्णनिश्वासदर्शयेव श्यामायमानया रस-
 नया निवेद्यमानदारुणसन्निपातारम्भम् उरःस्थलस्थापितमणि-
 मौक्तिकहारचन्दनचन्द्रकान्तं कृतान्तदूतदर्शनयोग्यमिवात्मानं
 कुर्वाणम् अङ्गभङ्गवलनोत्क्षिप्तभुजयुगलम् पर्यस्तहस्तनखमयूखैः
 धारागटहमिव तापशान्तये रचयन्तं नेदिष्ठसलिलमणिकुट्टिमा-
 दर्शोदरेषु निपतङ्गिः प्रतिविम्बैरपि सन्तापातिशयमिव कथयन्तं
 स्पृशन्तीं प्रणयिनीमिव विश्वासभूमिं मूर्च्छां बद्ध मन्यमानम्
 अन्तकाङ्क्षानाक्षरैरिव सभयभिषगदृष्टैररिष्टैराविष्टम् महाप्रस्थान-
 काले स्वसन्तापसन्तानमाप्तहृदयेषु सञ्चारयन्तम् अरतिपरिगृही-
 तम् ईर्ष्ययेव छायाया मुच्यमानम् उद्योगमिवोपद्रवाणां सर्वास्त्र-
 मोक्षमिव क्षामतायाः हस्तीकृतं विहस्ततया विषयीकृतं वैषय्येण
 क्षेत्रीकृतं क्षयेण गोचरीकृतं ग्लान्या दष्टं दुःखासिकया आत्मीकृतम्
 अस्वास्थ्येन विधेयीकृतं व्याधिना क्रोडीकृतं कालेन लक्ष्यीकृतं
 दक्षिणाश्रया पीतमिव पीडाभिः जृम्भमिव जागरेण निगीर्णमिव
 वैवर्ण्येन ग्रासीकृतं गात्रभङ्गेन क्रियमाणमिव विपङ्क्तिः वण्टप्रमानम्
 द्रुव वेदनाभिः लुण्ठप्रमानमिव दुःखैः आदिक्षितं दैवेन निरूपितं
 निवर्त्या प्रातमनित्यत्वेन अभिभूयमानमभावेन परिकलितं परास-
 तया दत्तावकाशं क्लेशस्य निवासं वैमनस्यस्य समीपे कालस्य
 अन्तिकेऽन्त्योच्छ्वासस्य मुखे महाप्रयासस्य द्वारि दीर्घनिद्राया
 जिह्वाग्रे जीवितेशस्य वर्तमानम् विरलं वाचि चलितं चेतसि

विज्ञानं वपुषि क्षीणमावुषि प्रचुरं प्रलापे सन्ततं श्लक्षिते जितं
चृश्चिकाभिः पराधीनमाधिभिः अनुबद्धमनुबन्धिकाभिः पार्श्वोप-
विष्टया अनवरतरोदगोच्छन्ननवनवा मृहीतचामरिकावापि नि-
श्चक्षितैरेव (७) बीजयन्त्या विविधौषधिधूलिधूसरितशरीरया
मुकुर्मुकुः आर्य्यपुत्र स्वपिपि द्रुति व्याहरन्त्या देव्या यशोवत्या
शिरसि वक्षसि च स्पृष्टमानं पितरमद्राक्षीत् ।

हृदा च प्रथमदुःखसम्प्रातमप्यमानमतिरागकृत इव भाग-
धेयेभ्यः समभवत् । अन्तकपुरवर्जितमेव च पितरममन्यत ।
निराकृत इव चान्तःकरणेन जगामासीत् । अयधृतश्च धैर्य्येण
क्षेत्रीकृतः क्षोभेण रिक्तीकृतता रत्या विषयीकृतो विषादन पावक-
मयमिव हृदयमुद्वहन् विषमविषट्पितानीव मृत्तान्तीन्द्रियाणि
विभ्राणः तमसा रसातलमपि विशेषयन् शून्यत्वेनाकाशमप्यति
शयानो नाबिन्दत कर्त्तव्यम् । पस्पर्श च हृदयेन भियम् उक्तमाङ्गेन
च नाम् ।

अवनिपतिस्तु दूरादेव हृदातिद्वितं तनयं तदवस्थोऽपि
निर्भरस्त्रोहावर्जितः प्रधावमानो मनसा प्रसार्य भोजी एष्टांति ।
इत्याह्वयन् शरीराङ्गेन यवनादुदगात् । ससम्पन्नमप्यसतं चैनं
विनयावनम्यमुखमन्य वलादुरसि निवेष्ट्य विशिखिव प्रेम्णा निशा-
करमकुलमभ्यं मज्जन्निवाद्यतमये महासरसि स्नानिव महति
हरिचन्द्रनरसप्रसङ्गवशो अभिषिष्यमान इव तुरग्योद्गुह्येण पीड-
यन्ध्रैरङ्गानि कपोलेन कपोलमवधृत्यन् निमीलयन् पञ्चाप-
प्रविताज्ज्वालाविद्याविधी विस्फोचने विस्फुल्लितसंस्पर्शः सुधिरम्
आखिलिङ्ग कयं कयमपि चिराद्भिमुक्तमुपसृत्य सतनमस्कारं प्रसृत-

जननीकुसुमागतमासीनश्च शयनान्तिके पिबन्निव विगतनिमेष-
निवलेन चक्षुषा व्यलोकयत् । पस्यर्षं च पुनःपुनर्वर्षेषुमता
पाणितलेन क्षयक्षामकण्ठश्च कृच्छ्रादिवावादीत् बन्धुः कृशोऽसीति ।
भण्डिस्त्वकथयत् देव तृतीयमहः कृताहारस्यास्याद्येति ।

तत् श्रुत्वा बाष्पवेगगृह्यमाणार्क्षरं कथं कथमप्यावतं निश्वस्य
उवाच बन्धु जानामि त्वां पितृप्रियमतिदुःखदयम् । ईदृशेषु
विधुरयति धीमतोऽपि धियम् । अतिदुर्धरो बान्धवस्त्रेहः सर्व-
प्रमाथी । अतो नार्हं स्वात्मानं शुचे दातुम् । उहामदाहन्वर-
दग्धोऽपि दक्षो खल्वहमधिकतरमनेनायुष्मदाधिना । निश्चितमिव
शस्त्रं तच्छोति मां त्वदीयस्त्रिभिः । सुखञ्च राज्यञ्च वंशञ्च
प्राणाञ्च त्वयि मे स्थिताः । यथा मम तथा सर्वासां प्रजानाम् ।
त्वद्विधानां पीडाः पीडयन्ति सकलमेव भुवनतलम् । नक्षत्र-
पुण्यभाजां वंशमलङ्कुर्वन्ति भवावृथाः । फलमस्यनेकजन्मान्तरो-
पार्जितस्याकलुषस्य कर्मणः । करतलगतमिव कथयन्ति चतुर्णाम्
अप्यर्षवानामाधिपत्यं ते लक्षणानि । त्वज्जगन्मैव कृतार्थोऽस्मि
निरभिलाषोऽस्मि जीवितव्ये । भिषगुरोधः पाययति माम्
औषधम् । अपिच सर्वप्रजापुण्यैः सकलभुवनतलपरिपालनार्थम्
उत्पत्त्यमानानां भवावृथां जन्मग्रहणोपायः पितरौ । प्रजाभिस्तु
बन्धुमन्तो राजानः न ज्ञातिभिः । तदुत्तिष्ठ कुब पुनरेव सर्वाः
क्रियाः । कृताहारे च त्वयि अहमपि स्वयमुपयोष्ये पश्यम् ।

इत्येवमभिहितस्य चास्य धन्यस्त्रिव हृदयमतितरां शोकानलः
सन्दुधुक्षे । क्षणमात्रञ्च स्थित्वा पिता पुनराहारार्थमादिष्टमानो
धवलगृहादवततार चकार च चेतसि अकाण्डे खल्वयं समुपस्थितो
महाप्रलयो व्यञ्ज इव वञ्जपातः । सामान्योऽपि तावत् शोकः

सोच्छ्वासं नरकम् अनुपदिष्टौवधो महाव्याधिः अभङ्गीकरणोऽग्नि-
प्रवेशः अनुपरतस्यैव नरकवासः निर्व्योतिरङ्गारवर्षम् अशङ्कली-
करणं ककचदारणम् अत्रयो वज्रसूचीपातः किमुत विशेषाक्षितः
क्षिप्तं करवाणीति ।

राजपुरुषेणाधिष्ठितश्च गत्वा स्वधाम धूममवानिव क्षतान्धु-
पातान् अग्निमवानिव जनिच्छृदयदाहान् विषमयानिव इक्ष-
मूर्च्छावेगान् महापातकमयानिव उत्थादितृणान् चारमयानिव
आनीतवेदनान् कतिचित् कबलानगटज्ज्ञात् । आचमंस चामर-
ग्राहिण्यमादिदेश विद्यायागच्छ कथमाप्ते तात इति । गत्वा च
प्रतिनिहत्य च देव तथैवेति विद्यापितस्तेन अगृहीतताम्रं एव
उत्ताम्यता मनसा अस्ताभिलाषिणि सवितरि सन्ध्यानाम्नयोपहरे
वैद्याः किमस्मिन्नेवंविधे विधेयमधुनेति विषमच्छृदयः पप्रच्छ ।
ते तु स्वप्नापवन् देव धैर्यमवनस्मस्य कतिपयैरेव वासरैः पुनः
स्वां प्रकृतिमापन्नं स्वस्यं श्रोष्यसि पितरमिति ।

तेषां भिषजां मध्ये पौनर्वसवो युवा अष्टादशवर्षद्वयीयः
तस्मिन्नेव राजकुले कुलकमागतो गतः पारमष्टाङ्गस्याशुर्वेदस्य
भूज्जा सुतनिर्बिशेषं ज्ञातितः प्रकृत्यैवातिपटीयया प्रज्ञया
वचावहिजाता व्याधिस्वरूपाणां रसायनो नाम वैद्यकुमारकः
साक्षरसूक्ष्मीमधोमुचोऽभूत् । शृत्वा राजसूनुना मध्ये रसायन
कथं तन्नं वदुसाधिव पश्यसीति । सोऽब्रवीत् देव श्रः प्रभाते
वचावस्थितमावेदयितामीति ।

अत्रैव चान्तरे भवनकमलिनीपातः कोकमाष्ठासवन् अपर-
वज्रसूचैरपठत् (८)

विहग कुरु दृढं मनः स्वयं त्यज शुचमासु विवेकवर्त्मनि ।

मह कमलसरोजिनीश्रिया अयति सुमेरुशिरो विरोचनः ॥

तच्चाकर्ण्य वाङ्निमित्तञ्चः पितरि सुतरां जीविताशां शिथिली-
चकार । गतेषु च भिषक्तु क्षतवृत्तिः क्षपामुखे क्षितिपालसमीपम्
एव पुनराकरोह । तत्र च दाहो महान् आहर चारान् हरिणि
मणिदर्पणान् मे देहे देहि वैदेहि हिमलवैर्लिम्प ललाटं
लीलावति घनसारक्षोदधूलीर्निधेहि धवलाक्षि निक्षिप चक्षुषि
चन्द्रकान्तं कान्तिमति कपोले कलय कुवलयं कलावति चन्दन-
चञ्चा रचय चारुमते पाटय पटमारुतं पाटलिके मन्द्य(६) दाहम्
द्वन्दुमत्यरविन्दैः जनय जलार्द्रया मुदं मदिरावति समुपनय
गृणालानि मालति तरलय तालवृन्तमावन्तिके सूर्जनं धावमनं
वधान बन्धुमति कन्धरां धारय धारणिके उरसि सशीकरं करं
कुरु कुरङ्गवति संवाहय बाह्व वलाहिके पीडय पादौ पद्मावति
गृहाण गाढमङ्गमनङ्गसेने का वेला विलासवति नैति निद्रा
कथाः कथय कुसुहति इत्येवंप्रायान् पितुरालापान् अनवरतम्
आकर्णयन्(१०) दूयमानहृदयो दुःखदीर्घां जाग्रदेव निशामनैषीत् ।

उषसि चावतीर्थ्य राजद्वारदेशोपसर्पिणा परिवर्धकेनोप-
स्थापितेऽपि तुरङ्गे चरणाभ्यामेवाजगाम स्वमन्दिरम् । तत्र च
त्वरमाणो भ्रातुरागमनार्थमुपस्थितपरि क्षिप्रपातिनो दीर्घाञ्जनान्
प्रजविनश्चोष्ट्रपालान् प्राहिणोत् । प्रक्षालितवदनञ्च परिजनोप-
नीतमपि प्रतिकर्म नाग्रहीत् । अग्रतः स्थितानां राजपुत्रयूनां
विमनसां रसायनो रसायन इति जल्पितमव्यक्तमत्रौषीत् ।
पर्यष्टच्छ तान् भद्राः किं रसायन इति । पृष्टाश्च ते सर्वे समम्

एव दृष्टीर्बभूवुः । भूयोभूवन्वानुबध्यमाना दुःखेन कथंकथमपि
 आचचक्षिरे देव पावकं प्रविष्ट इति । तच्च श्रुत्वा मुष्ट इवान्तस्तापेन
 सद्यो विवर्षतामगात् । उत्पान्द्यमानमिव च न शयाक शोकान्त्रं
 धारयितुं हृदयम् । आसीञ्चास्व चेतसि कामं स्वयं न भवति नतु
 आवयत्प्रियं वचनमरतिकरमितर इवाभिजातो जनः । कृच्छ्रे च
 यथानेनानुष्ठितम् उज्ज्वलीकृतमधिकतरं ज्वलनप्रवेशेन कल्याण-
 प्रकृति कार्त्तस्वरमिव कौलपुष्पमस्येति । पुनश्चाचिन्तयत् समुचितम्
 एवाथवा स्नेहस्येदम् । किमस्य तातो न तातः किंवाग्वा न जननी
 वयं न भ्रातरः । अन्यस्मिन्नपि तावत् स्वामिनि दुर्लभीभवति
 भवन्त्यसौ भियमाणा क्रीहेतवो लोके किमुताहतमवेमुजीविना
 निर्झाजवान्धवेऽबन्धप्रसादे मुष्टहीतनाम्नि ताते । सम्प्राति सान्म-
 तम् आचरितमनेनात्मानं दहता । किं वास्य आकल्पमवस्थितस्य
 स्थेयसो यशामयस्य दह्यते । पतितः स केवलं दहनं दग्धास्तु
 वयम् । धन्यः खल्वसावग्रणीः पुण्यभाजाम् । अपण्यभाक् त्विदमेव
 राजकुलं कुलपुत्रेण यन्मादृशा विवृणुम् । अपिच ममापि कः
 खल्वेतेषां प्राणाना कार्यातिभारः कृत्तव्यो वा का वा व्याहतता
 येन नाद्यापि निष्ठुराः प्राणाः प्रतिष्ठन्त । को बान्तराद्यो हृदयस्य
 येन सहस्रधा न दलतीति । दुःस्मार्त्तस्य न जगाम राजसद्य ।
 समुज्जसर्ज च सर्वकार्याणि । शयनीये निपत्य उत्तरीयवाससा
 सोत्तमाङ्गमात्मानमवगुण्ठयतिष्ठत् ।

इत्यंशूते च देवे हर्षे राजनि च तदवस्थे सर्वस्य लोकस्य
 कपोलेषु क्रीडिता इव कराः लोचनेषु लेप्यमथ इवान्शुश्रुतयः
 नासाग्रेषु प्रविता इव दृष्टयः कर्णेष्वन्कीर्णा इव हृदि तथानयः
 जिह्वासु सहजानीव हाकाटानि लपनेषु पल्लवितानीव प्रसृतानि

अधरेषु लिखितानीव परिदेवितपदानि हृदयेषु निधानीकृतानीव दुःखान्यभवन् । उष्णाश्रुदाहभीतेव नाभजत नेत्रोदराणि निद्रा । निश्वासवातविधुता इव व्यलीयन्त हासाः । निरवशेषदग्धेव च सन्तापेन न प्रावर्तत वाणी । कथास्वपि नाश्रूयन्त परिहासाः । कागमन्निति नाश्रूयन्त गीतगोष्ठः । जन्मान्तरातीतानीव नास्मर्थन्त लास्यानि । स्वप्नेऽपि नागच्छन्त प्रसाधनानि । वार्त्तापि नालभ्यतोपभोगानाम् । नामापि नाकीर्त्तय आहारस्य । खपुष्पप्रतिमान्यासन्नापानमण्डलानि । लोकान्तरम् इवानीयन्त वन्दिवाचः । युगान्तर इवावर्तन्त निर्हतयः । पुनरिवादक्षत शोकाग्निना मकरकेतुः । दिवापि नासुष्यन्त शयनानि । शनैः शनैश्च महापुरुषविनिपातपिण्डनाः समं समन्तात् समुदभवन् भुवने भूयांसो भूपतेरभावाय भयसुत्पादयन्तो भूतानां महोत्पाताः ।

तथाहि दोलायमानसकलकुलाचलचक्रवाला पत्या सार्द्धं गन्तुकामेव प्रथममचलत् धरित्री । धान्वन्तरेरिवान्तरे तस्मिन् स्मरन्तः परस्परस्फालनवाचालबीचयो विजुघूर्णितेऽर्णवाः । भूभृद्भावभीतानां विततशिष्ठाकलापविकटकुटिलाः केशपाशा इवोर्द्धी-वभूवर्धूमकेतवः ककुभाम् । धूमकेतुकरालितदिक्पुष्पं दिक्पाशा-रव्यासुष्कामहोमधूमधून्मिवाभवद्भुवनम् । अटभासि तप्तकाशा-यसकुम्भवज्जुणि भागुमण्डले भयङ्करकवचकायव्याजेन कोऽपि पार्थिवप्राणितार्थो पुरुषोपहारमिवोपजहार । ज्वलितपरिवेश-मण्डलाभोगभास्वरो जिघृक्षाजृम्भमाणस्वर्भागुभवादुषरचिताग्नि-प्राकार इव प्रत्यदृश्यत श्वेतभागुः । अवनिपतिप्रतापप्रसाधिताः प्रथमतरङ्गतपावकप्रवेशा इवादक्ष्यन्तागुरक्ता दिशः । स्तुतशोणित-

श्रीकरासारावस्थिततनुरनुमरणाव प्राहतपाटलांशुकपटेवाहस्त
 वसुधावधूः । नराधिपविनाशसम्पन्नमभीतैर्लोकपातैरिव काळावस-
 कवाटपुटैरकाशकालमेवपटलैरद्वयम् दिग्द्वाराणि । प्रेतपति-
 प्रवाणप्रहताः पटवः पटहा इवारटनो हृदयस्फोटनाः पस्का-
 विरे निर्घातानां घोरां निर्घोकाः । निकटीभवद्वयममश्चिप्युर-
 पुटोद्धूता इव क्षुम्बिधाम धूसरीचकः क्रमेणककचकपिलाः पांशु-
 दृष्टवः । विरसविराविणीनामुन्मुनीनां शिखिनां व्याकाः
 प्रतीच्छस्य इव पतन्तीरुक्ता नभसो बवाशिरे शिवानां राजवः ।
 राजधामनि धूमायमानकवरीविभागविभावितविकाराः प्रकीर्णा-
 केशपाशप्रकाशितशोका इव प्राकाशन्त प्रतिमाः कुक्षदेवता-
 नाम् । उपसिंहासनमाकुलं कालरात्रिविधूयमानदृजिनवेष्टी-
 बन्धविश्रमं विश्राणं बन्धाम भ्रामरं पटलम् । घटतामन्तः-
 पुरस्त्रोपरि क्षणमपि न शशाम व्याक्रोशी वावसानाम् । ज्ञेयता-
 पत्रमण्डलमध्यात् जीवितमिव राज्यस्य सरमपिशितपिण्डजोहितं
 चक्षुश्चक्षुरस्यैवक्षुब्धान् अण्डं माणिक्यस्य । कृजन् जरद्भ्रमोऽमो-
 त्यातद्वयमानश्च कथमपि निनाय निशाम् ।

अथवास्त्रिचहनि समीपमस्य राजकुमारात् द्रुतगतियशविशीर्ष-
मायालङ्कारभाङ्गारिणी विजयघोषणोप विधादस्य आकुलचरन्-
चलन्नाकोटिकण्ठितवाचालिताभिर्दूरीवाभिः किं किमिति
दृक्श्यामानेव दूरादेव भवनहंसीभिः स्वकलितविशालत्रोष्णिगिज्ञान
रश्मानुराविणीभित्त वाप्यात्वा समुपदिश्यमानमार्गेव गृहसारसी-
भिः अष्टकवाटपट्टसंधृक्कटितललाटपट्टबधिरपटलेन पटालेनेव
रक्षांशुकस्य मुखमाच्छाद्य प्रवदती सन्तापबलविकीनकनकवस्त्ररत्न
धाराभिव वेत्तततामुज्जन्ती मुखमन्तरङ्गितामुत्तरीवाशुकपटो

स्फुरन्तीं फणिनीव निम्नोक्तामञ्जरीमाकर्षन्ती नन्नांसस्वसिनानिल-
विलोलेन नीलतमेन तमालचीरचीवरेणैव शोकोचितेन धम्मिल्ल-
रचनारहितेन शिरोरुहसञ्चयेन चञ्चता प्राटतकुचा कुचताडन-
पीडया समुच्छ्रूनाताम्रश्यामतलं मुहुर्मुहुर्ज्वरत्युष्णाश्वप्रमार्जनप्रदग्धम्
इव करकिशलयं धुनाना चक्षुर्निर्भरं शीर्यति स्नपयन्तीव
शोकाग्निप्रवेशाय स्वकपोलतलप्रतिविम्बितमासन्नलोकं लोललोचन-
प्रवृत्तैस्तरलैस्तरकांग्गुभिः श्यामायमानमात्मदुःखेन दिवसमपि दह-
न्तीव क कुमारः क कुमार इति पुरुषं दृच्छन्ती वेलेति नान्ना
यशोवत्याः प्रतीहारी आजगाम । विषमलोकलोचनप्रत्युज्जता
चोपसृत्य कुट्टिमन्यस्तहस्तयुगला गलन्तीभिः सिञ्चन्तीव शुष्यन्तं
दशनदोषधितधाराभिराधूसरमधरमधोमुखी विज्ञापितवती देव
परित्वायस्व परित्वायस्व जीवत्येव भर्त्तरि किमप्यध्यवसितं द्रष्टेति ।

ततस्तदपरमाकर्ण्य च्युत इव सत्त्वेन द्रुत इव दुःखेन आचान्त
इव चिन्तया तुलित इव तापेन अङ्गीकृत इवातङ्केनाप्रतिपत्तिः
आसीत् । आसीच्चास्य चेतसि प्रतिपन्नसंज्ञस्य बद्धशोऽपि हृदये
दुःखाभिषङ्गो निपतन् अश्मनीव लोहप्रहारः कठिने ऊतभुजम्
उत्थापयति नतु भस्त्रसात्करोति मे निरनुकोशस्य कायमिति ।
उत्थाय च त्वरमाणोऽन्तःपुरमगात् । तत्र च भर्तुमुद्यतानां राज-
महिषीणाम् अष्टणोद्गूरादेव तात च त चिन्तयात्मानं प्रवसति ते
जननी वत्स जातीगुच्छ गच्छाभ्याष्टच्छस्व माम् भवा विना अद्य
अनाथा भवसि भगिनि भवनदाडिमलते, रक्ताशोक मर्षशीलाः
मादप्रहाराः, कर्णपूरपल्लवभङ्गापराधाश्च पुत्रक अन्तःपुरबाहवकुलक
वारुणीगच्छुषग्रहणदुर्ललित दृष्टोऽसि वत्से प्रियङ्गुलतिके गाढम्
आलिङ्ग मां दुर्लभा भवामि ते भद्र भवनद्वारसङ्कारक दातव्यो

निवापतोवाञ्जलिः अपत्यमसि श्वातः पञ्चरमुक यथा न विस्तरसि
माम् किं व्याहरसि दूरीभूतास्त्रि ते शारिके स्त्रि नः समागमः
पुनर्भूयात् मातर्मार्गलग्नं कस्य समर्पयामि गृहमयूरकम् अथ
सुतवह्नालनीयमिदं हंसमिथुनं मन्दपुण्यया मया न सम्भावितोऽस्य
चक्रवाकयुगलस्य विवाहोऽयम् स्मृतवत्सले निवर्त्तस्व गृहहरिणिके
समुपमय सौविद्धल्लभभल्लकीं परिष्वजे तावदेनाम् चन्द्रसेने
सुदृष्टः क्रियतामयं जनः विन्दुमति इयं ते अन्या वन्दना चेति
मुञ्च चरणी आर्ये कात्यायनिके किं रादिपि नीतास्त्रि देवेन
तात कस्यकिन् किं मामलक्षणां प्रदक्षिणीकरोषि भातेयि भारय
आत्मानं किं पादयोः पतसि भगिनि गृहाणा मामर्पयिष्यामि कष्टे
कष्टं न दृष्टा प्रियसखी मलयवती कुरङ्गवति अयमामन्तणाञ्जलिः
सानुमति अयमन्त्यः प्रणामः कुवलयपति एष ते अवसानपरिष्वङ्कः
सख्यः क्षन्तव्याः प्रणयकलहाः इत्येवंप्रायानालापान् ।

दृश्यमानश्रवणश्च तैः प्रविगन्धेय निर्यान्तीं दन्तसम्बन्धापनेयां
गृहीतमरणप्रसाधना जानकीमिव जातवेदसं पत्युः पुरः प्रवेक्ष्यन्तीं
प्रत्यग्रस्त्रानार्द्धदेहतया त्रियमिव भगवतो सद्यः समुद्रादुत्थिता
कुसुमवभ्रणी वाससी दिवमिव तेजसी सान्धे दधाना ताम्बूल-
दिग्धरागान्धकाराधरप्रभापटलपाटलं पट्टाशुकमिव विधवाभरण-
चिह्नमङ्गलग्नमुद्वहन्तीं रक्तकण्ठसूत्रेण कुचान्तरावलिम्बिता
स्फुटितहृदयविगलितहृदिरधाराशुक्ला कर्म्मतो तिर्यक्कुटिल-
कुण्डलकोटिकण्टकाकण्टतनुना शारेण वस्त्रितेन सितांशुकपागनेव
कण्ठमुत्पीडयन्तीं सरसकुङ्कुमाङ्गरागतया कबलितामिव दिधक्षता
चितार्चिष्मता चितानलार्चनाकुसुमैरिव भवसधवलैरनुविन्दुभिः
अंशुकोत्कृमापूरयन्तीं गृहदेवतामन्त्रवलिमिव वल्लवैर्निगलङ्गिः

पदे पदे विकिरन्तीमाप्रपद्मीनां कण्ठे गुणकुसुममालां यमदोलाम्
 इवाकृदाम्, अन्तर्गुञ्जन्धुकरमुखरेणामन्त्यमाणलोचनोत्पलामिव
 कर्णोत्पलेन, प्रदक्षिणीक्रियमाणामिव मणिनूपुरबन्धुभिर्बहुमण्डलं
 भ्रमद्भिर्भवनहंसैः सन्निहितप्राणसमं मरुणाय चित्तमिव चित्र-
 फलकमविकलं धारयन्तीम् अर्चविद्धोद्धयमानधवलपुष्पदामकां
 पतिव्रतापताकामिव पतिप्राप्तयष्टिमिष्टामुपगूहमानां, बन्धोरिव
 निजचारित्रधवलस्य वृषातपत्रस्य पुरो नेत्रोदकमुत्सृजन्तीं, पत्युः
 पादपतनसमुद्गमदभ्यधिकवाष्पान्मःप्रवाहप्रतिरुद्धदृशः कथमपि प्रति-
 पन्नादेष्टान् सचिवान् सन्दिशन्तीम्, अनुनयनिवर्तितविधुरवृद्ध-
 बन्धुवर्गवर्द्धमानध्वनिभिर्गृहाकन्दैराकृष्यमाणश्रवणां भर्तृभाषित-
 निभैः पञ्जरसिंहहन्तैर्क्रियमाणहृदया धात्वा भर्तृभक्त्या च
 निजया प्रसाधितां ज्वरत्या मूर्च्छया च संस्तुतया धार्यमाणां
 सख्या पीडया च व्यसनसङ्गतया समालिङ्गितां परिजनेन सन्तापेन
 च गृहीतसर्वावयवेन परीतां कुलपुत्रोच्छ्वसितैश्च महत्तरैरधि-
 ष्ठितां कञ्चुकिभिर्दुःखैश्चातिवृहैरनुगतां भूपालवल्लभान् कौलेयकान्
 अपि सास्त्रमालोकयन्तीं सपत्नीनामपि पादयोः पतन्तीं चित्र-
 पुत्तिका अयामन्त्यमाणां गृहपतत्रिणामथञ्जलिं पुरस्तादुप-
 रचयन्तीं पशूनप्याष्टक्यमानां भवनपादपानपि परिष्वजमानां
 मातरं ददर्श ।

दूरादेव च वाप्याद्यमाणदृष्टिरभ्यधात् अथ त्वमपि मां मन्द-
 पुष्यं त्यजसि प्रसीद निवर्त्तस्व इत्यभिदधान एव च सस्नेहमिव
 नूपुरमणिमरीचिभिर्बुद्ध्यमानचूडचरणवोर्न्यपतत् । देवी तु
 यशोवती तथा तिष्ठति पादनिहितशिरसि विमनसि कनीयसि
 प्रेयसि तनये गुह्या गिरिणेवोद्देगयेगेनावष्टभ्यमाना मूर्च्छान्ध-

तमसं रसातलमिव प्रविशन्ती वायुप्रवाहेनेव चिरनिरोधसम्प्लिष्ट-
तेन स्नेहसम्भारेण निर्भराविर्भूतेनाभिभूयमाना कृतप्रवलापि
निवारयितुं न शयाक वायोत्यतनम् (११) । उत्कटकुचोत्कम्पप्रक-
टितासह्यशोकाकृता च गद्गदिकाभ्युत्थमापणगलविकला निःसामान्य-
मन्युतरलीकियमायाधरोद्देशाः . पुनश्चक्षुरणनिविडितमासापुटा
निमील्य नयने नवनाम्नःसेकसवेन स्नायन्ती विमलौ कपोलौ
संछाद्य करनखमय्यमालापचिततनुना तन्मन्तरनिर्गच्छदृष्ट्या-
स्वस्रोतसेवांशुकपटान्तेन किञ्चिदुत्तानितं वदनन्द दूयमानमानसा
स्मरन्ती प्रस्रुतस्तनी प्रसवदिवसादारभ्य सकलमङ्गुल्यादिभिः शैशवम्
अस्य, ज्ञातिमृगगतच्छ्रया अस्म तात न पश्यतं पापा परलाक-
प्रस्थिता मामेवमतिदुःखितामिति मुञ्चन्मृच्छराकटन्ती पितरौ, वा
वत्स विश्रान्तभागधेयया न दृष्टाऽसीति प्रेष्टं ज्येष्ठं तनयमसन्नि-
हितं कोयन्ती अनाया जातेति शङ्करकुलवर्तिनौ दुहितरममु-
शाचन्ती निष्कण्ठ्य किमपराधं तवामुना जनेनेति देवभपालभ-
माना नास्ति मत्तमा सोमन्तिनी दुःखभागिनीति निन्दन्ती
बहुविधमात्मानं मुपितास्त्रि तृणसत्त्वयेत्यकार्ण्ड कृतानां गर्हमाणा
मुक्तकण्ठमतिचिरं प्रालतप्रमदव प्रारादीत् ।

प्रशान्ते च मन्यवेगे सज्जेहमुत्थापयामास सुतम् । शकंन
चास्य प्रवदितस्य पञ्चपालीपञ्चामाननस्यकिरणितका द्रुताम्
इवाधिकतरं ज्वरन्ती दृष्टिमुन्मत्ता । स्वयमपि कठोररागपरि-
पीयमानेन धवलिन्ना मुच्यमानादरे कथदस्यप्रयत्नयेन शुक्ल-
शीकरतारतरकितपञ्चषी सुस्मृतरान्धुविन्दुपरिपाटीपतनानु-
बन्धविधुरे लोचने पुनः पुनरापूर्वमात्रं प्रवृत्त्य वायार्द्रगण्ड-

गृहीतां च श्रवणशिखरमारोप्य शोकलम्बामलकलताम् अधः-
 स्सस्तविलोलबालिकाव्याकुलिताञ्च समुत्सार्य तिरश्चीं चिकुरसटाम्
 अश्रुप्रवाहपूरितमार्द्रञ्च किञ्चित् श्रुतमुत्क्षिप्य हस्तेन स्तनोत्तरीयं
 तरङ्गितमिव मग्नाशुकपटान्ततनुताम्लेखालाञ्छितलावण्य-
 कुञ्जिकावर्जितराजतराजहंसास्यसमुद्गीर्णैः पयसा प्रक्षाल्य मुख-
 कमलं कलमूकलोकविधृते वासःशकले शुचिनि समुन्मूज्य पाणी
 सुतवदनविनिहितनिभृतनयनयुगला चिरं स्थित्वा पुनः पुनरायतं
 निश्शस्यावादीत् ।

वत्स नास्ति नप्रियो निर्गुणो वा परित्यागार्हो वा । स्तन्येनैव
 सह त्वया पीतं मे हृदयम् । अस्मिंश्च समये प्रभूतप्रभुप्रसादान्त-
 रिता त्वा न पश्यति दृष्टिः । अपिच पुत्रक पुरुषान्तरविलोकन-
 व्यसनिनी राज्योपकरणम् अकरुणा वा नास्मि लक्ष्मीः क्षमा
 वा । कुलकलत्रमस्मि चारित्रधना धर्मधवले कुले जाता । किं
 विस्मृतोऽसि मा समरशतशौण्डस्य पुरुषप्रकाण्डस्य केशरिण इव
 केशरिणीं गृहिणीम् । वीरजा वीरजाया वीरजननी च मादृशी
 पराक्रमक्रीता कथमन्यथा कुर्व्यात् । एवंविधेन पित्रा ते भरत-
 भगीरथनाभागनिभेन नरेन्द्रवृन्दारकेण गृहीतः पाणिः । आसे-
 वितः सेवासम्प्रान्तानन्तसामन्तसीमन्तिनीसमावर्जितजाखूनद-
 घटाभिषेकः शिरसा । लब्धो मनोरथदुर्लभो महादेवीपट्टबन्ध-
 सत्कारलाभो ललाटेन । आपीतौ युष्मद्विधैः पुत्रैरमितकलत्रवन्द्यै-
 र्वृन्दविधूयमानचामरमरुच्चलचीनाशुकधरौ पयोधरौ । सपत्नीना
 शिरःसु निहितं नमस्त्रिखिलकटककुटुम्बिनीकिरीटमाणिक्य-
 मालाञ्जितं चरणयुगलकम् । एवं कृतार्थसर्वावयवा किमपरमपेक्षे
 क्षीणपुण्या । मर्त्यमविधवैव वाञ्छामि । न च शक्नोमि दग्धस्य

भर्तुरार्यपुत्रविरहिता रतिरिव निरर्थकान् प्रलापान् कर्तुम् ।
 पितुश्च ते पादधूलिरिव प्रथमं गगनगमनमावेदवन्ती बहुमता
 भविष्यामि शूरानुरागिणीना सुराङ्गनानाम् । प्रत्यग्रहृष्टाक्ष-
 दुःखदग्धानाश्च मे किं धत्स्यति धूमध्वजः । मरणाच्च मे जीवितम्
 एवास्मिन् समये साहसम् । अतिशीतलः पतिशोकानलादक्षय-
 स्नेहेभनादस्त्रादनलः । कैलासकल्पे प्रवसति जीवेऽहरे जलनृण-
 कणिकालघोषसि जीविते लोभ इति क्व घटते । अपिच जीवन्तीम्
 अपि मा नरपतिमरणावधीरगमहापातकिनीं न स्मर्यन्ति पुत्र
 पुत्रराज्यसुखानि । दुःखदग्धानाश्च भर्तिरमङ्गला चाप्रशङ्गा च
 निरूपयोगा च भवति । वत्स बिभ्रस्ताना यशसा स्यात्तुमिच्छामि
 लोके न वपुषा । तदहमेव त्वां तावन्तात प्रसादयामि न पुनः
 मनोरथप्रातिकृत्येन कदर्थनीयास्मि । इत्युक्त्वा पादयोरुपतत् ।

स तु ससम्पन्नममपनीय चरणयुगलम् अवनमिततनुभयकर-
 विष्टवपुषम् अवनिगतशिरसमुदनमयन्मातरम् । दुर्निवारताश्च
 शुचः समवधार्य क्लयापिदुचिताश्च तामेव त्रयसो मन्यमानः
 क्रिया कृतनिश्चयाश्च तां ज्ञात्वा तूष्णीमधोमुखोऽभवत् ।

अभिनन्दति हि स्नेहकातरापि कुलीनता देशकालानुरूपम् ।
 देव्यपि यशोवती परिविज्य समाप्राय च शिरसि निर्गत्य चरणा-
 भ्यामेव चान्तःपुरात् पौराकन्दनिर्भराभिरूपद्वयमानेव दिग्भिः
 सरस्वतीतीरं ययौ । तत्र च स्त्रीस्वभावकातरैर्दृष्टिपातैः प्रविकसित-
 रक्तपङ्कजपुष्पैरिवाञ्जयित्वा भगवन्तं भानुमन्तमिव सन्निगन्तवी
 चित्रभानुं प्राविशत् । इतरोऽपि मातृमरणाविह्वलो बन्धवर्गपरिहृतः
 पितुः पार्श्वं प्रायात् अपश्यञ्च स्वल्पावशेषप्राणदृष्टिं परिवर्त्तमान-
 तारकं तारकराजमिवाक्षमभिलपन्तं जनयितारम् । असत्प्रायोको-

द्रेकाभिद्रुतश्च त्याजितः स्नेहेन धैर्यम् आश्लिष्यास्व सकलदुर्गद-
महीपालमौलिमालालालितौ पादपद्मौ अन्तस्तापान्मृष्यचन्द्रमिव
द्रवीभयन्तं दशनज्योत्स्नाजालमिव जलतामापद्यमानं लोचन-
लावण्यमिव विलीयमानं सुखसुधारसमिव स्यन्दमानम् अञ्छा-
च्छम् अश्रुस्रोतसां सन्तानं महामेघमयविलोचन इव यर्षन्
दूतरवद्विमुक्तारावश्विरं करोद ।

राजा तु तमुपस्थमानदृष्टिरविरतरुदितशब्दाश्रितश्रवणः
प्रत्यभिज्ञाय शनैः शनैरवादीत् पुत्र नार्हस्येवं भवितुम् । भवद्विधा
नह्यमहासत्त्वाः । महासत्त्वता हि प्रथममवलम्बनं लोकस्य पश्चात्
राजवीजिता । सत्त्ववताश्चाग्रणीः सर्वातिशयाश्रितः क भवान्
क वैकृत्यम् । कुलप्रदीपोऽसीति दिवसकरसदृशतेजसस्ते लघू-
करणमिव । पुरुषसिंहोऽसीति शौर्यपटुप्रज्ञोपहंसितपराक्रमस्य
निन्देव । क्षितिरियं तवेति लक्षणाख्यातचक्रवर्त्तिपदस्य पुनरुक्तम्
इव । गृह्यतां श्रीरिति स्वयमेव श्रिया गृहीतस्य विपरीतमिव ।
अध्यास्यतामयं लोक इति उभयलोकविजिगीषोरपुष्कलमिव ।
स्त्रीक्रियतां कोष इति शशिकरनिकरनिर्गलशःसञ्चयैकाभिनि-
वेशिनो निरुपयोगमिव । आत्मीक्रियतां राजकमिति गुणगणात्मी-
कृतजगतो गतार्थमिव । उह्यतां राज्यभार इति भुवनत्रयभारो-
चितस्य अनुचितनियोग इव । प्रजाः परिरक्ष्यन्तामिति दीर्घ-
दोर्दण्डार्गलितदिङ्मुखस्यानुवाद इव । परिजनः परिपाल्यतामिति
लोकपालोपमस्यानुषङ्गिकमिव । शस्त्राभ्यासः कार्य इति धनु-
र्गुणकिणकलङ्ककालीकृतप्रकोष्ठस्य किमादिश्यते । निशाङ्कता
चापलमिति नूतनतरववसि निगृहीतेन्द्रियस्य निरवकाशेव मे
वाणी । निरवशेषतां शत्रवो नेया इति सङ्घस्य तेजस एवेवं

चिन्ता । इत्येवं वदन्नेव अपुनश्चलीलनाव निमिमील राजसिंहे
लोचने ।

अस्त्रिजेवान्तरे पूषापि आबुधेव तेजसा व्यबुध्यत । ततश्च
लज्जमान इव नरपतिजीवितापहरणजनितादाम्बापराधादधो-
मुखः समभवत् । भूषालाभाशोकशिखिनेवान्तसायमानसाव्यतां
प्रपेदे । मन्दं मन्दमप्रियप्रन्नार्थमिव स्थितिमनुवर्तमानो लौकि-
कीम् अवातरद्विषः । दिक्सुरिव जनेशाय जलाञ्जलिम् अपर-
जलनिधिसमीपमुपसमर्प । सद्योदत्तजलाञ्जलिर्दुःखदहनदग्धमिव
करसहस्रमालोचितमधन ।

एवञ्च महानराधिपनिधननिधीयमानविप्लवैराम्य इव गान्त-
वपुषि विशति गिरिगुहागह्वरं गभस्तिमालिनि समुपोक्ष्यमान-
महाजमाशुदुर्हिनाङ्गीकृत इव निर्वात्यातपे रोदनतान्त्रसकल-
लोकलोचनश्चेव लोचितायति जगति उणायमानानेकनर-
निश्वाससन्तापस्तुट इव च नीलायमाने दिवसे वृषानुगमनप्रचलि-
तयेव लक्ष्म्या मुख्यमानासु कमलिनीषु पतिशुचेव परिरुतच्छायायां
श्यामायमानायां भुवि कुलपुष्पेखिव परित्यक्तकलतेषु कृतकबन्ध-
प्रलापेषु वनान्तानाश्रयत् (१२) दुःस्मितेषु चक्रपाकेषु कृत्तभङ्ग-
भीतेखिव निगूढकोशेषु कुशेययेषु स्फुटितदिग्बभूवदयबधिरस्रव
इव गलिते रक्तातपे कमेण च लोकान्तरमुपगतवत्यनुरागशये
जाते तेजसामधीये गगनतलवितन्यमानयङ्गलरागपाटलायां प्रेत-
पताकावामिव प्रहृन्तायां सम्धाया यवशिधिकालङ्कारलक्षणाभर-
मालाखिव स्फुरन्तीषु दर्शनप्रतिबुलासु तिमिरलेखासु अस्मिता-
गुब्बकालकाष्ठायां केनापि चितावामिव रचितायां रजन्वा दन्ता-

मलपत्रप्रसाधितकर्णिकासु केसरमालाकल्पितमुखमालिकासु
 अनुमर्त्तुमिवोद्यतासु प्रहसितमुखीषु कुमुदलक्ष्मीषु अवतरत्-
 त्रिदशविमानकिङ्किणीकणित इव श्रूयमाणे शाखिशिखरकुलाय-
 लीयमानशकुनिकुलकूजिते नाकपथप्रस्थितपार्थिवप्रत्युद्गतपुरु-
 हतातपत्र इव पूर्वस्थां दिशि दृश्यमाने चन्द्रमसि नरेन्द्रः स्वयं
 समर्पितस्कन्धैः गृहीत्वा श्वशिविका शिविसमः सामन्तैः पौरैश्च
 पुरोहितपुरःसरेः सरितं सरस्वतीं नीत्वा नरपतिसमुचितायां
 चिताया ऊताशसत्क्रियया यशःशेषतामनीयत ।

देवोऽपि हर्षः पुञ्जीभूतेन सकलेनेव जीवलोकेन लोकेन
 राजकुलसम्बद्धेनाशेषेण शोकसूक्तेन परिहृतः अन्तर्बर्त्तिनापि
 शोकानलतप्तेन स्नेहद्रवेण वहिरिव सिच्यमानो निर्व्यवधानायां
 धरण्यामुपविष्ट एव तां निशीथिनीं भीमरथीभीमामखिलां
 सराजको जजागार । अजनि चास्य चेतसि ताते दूरीभते
 सम्प्रत्येतावान् खलु जीवलोको लोकस्य भग्नाः पन्यानो मनो-
 रथानां खिलीभूतानि भूतिस्थानानि स्थगितान्यानन्दस्य द्वाराणि
 सुप्ता सत्यवादिता लुप्ता लोकयात्रा विलीना बाह्यशालिता
 प्रलीना प्रियालापिता प्रोषिताः पुरुषकारविहारविकाराः
 समाप्ता समरशौण्डता ध्वस्ता परगुणप्रीतिः विश्रान्ता विश्वास-
 भूमयः अपदान्यपदानानि निरुपयोगानि शास्त्राणि निरव-
 लम्बना विक्रमैकरसता कथावशेषा विशेषज्ञता ददातु जनो
 जलाञ्जलिमौर्जित्याय प्रतिपद्यतां प्रव्रज्यां प्रजापालता बभ्रातु
 वैधव्यवेणीं वरमनुय्यता समाश्रयतु राजश्रीराश्रयसपदम्, परि-
 धत्तां धवलेवाससी वसुमती बहूत वल्कले विलासिता तपस्वतु
 तपोवनेषु तेजस्विता प्राट्णोतु चीवरे बीरता क गम्यता पुनस्तस्य

कृते कृतव्रतया क पुनः प्राप्स्यति तादृशान् महापुरुषनिर्माणा-
परमाणून् परमेष्ठी श्रूय्याः संवृत्ता दश दिशो गुणानां जगत्
जातमन्धकारं धर्मस्य निष्कलमधुना जग्न शक्नोपजीविनाम् ।
तातेन विना कृतमया दिवसमसमसमररससमारब्धकलकला-
कण्टकितसुभटकपोलभिन्नयो वीरगोष्ठः अपि नाम स्वप्नेऽपि दृश्येत
दीर्घरक्तनवनम् पुनस्तन्मुखसरोजं जन्मान्तरेऽपि पुनः परिष्वज्येत
तल्लोहस्तम्भाभ्यधिकगरिमगर्भ भृजवगलम् लोकान्तरेऽपि पुनस्तत्वा-
लपतः श्रूयेत सा सुधारसमुद्गिरन्ती मध्यमानक्षीरसागरोद्धार-
गम्भीरा भारतीति । एतानि चान्यानि च चिन्तयत एवास्व
कथमपि सा क्षयमियाय यामिनी ।

ततः शुचैव मुक्तकण्ठमारुह्य लकटाकुक्ष्येषु गृहगिरित-
शिखरेभ्यः पातयत्स्वात्मानं मन्दिरमयूरेषु परित्यक्तनिवासेषु च
वनाय प्रस्थितेषु पर्वरथेषु सद्यस्तन्भूते ताड्यति तमसि मन्दो-
भूतात्मस्तेष्टेभ्यभावमभिलष्यत् प्रदोषेषु स्फुरदृक्ष्यवल्कलप्राहतवपुषि
प्रवक्ष्यामि व प्रतिपन्ने नभसि प्रभातसमयेन समुत्तीर्णमायासु
पार्थिवस्थिशकलकलास्त्रिव कलविष्णुकन्धराधूसरासु तारकासु
भूक्ष्ण्वातुगर्भकुम्भधारिषु विविधसरःसरिणीर्वाभिमुखेषु प्रस्थितेषु
वनकरिकुक्ष्येषु यावदुच्चिसिक्थपटलपाण्डुरे पिरुह इवापरपक्षो-
निधिपुलिनपरिसरे पात्यमाने शशिमि क्रमेण नृपचितानसधूम-
विसरधूसरीकृततेजसीव नरपतिशोकपावकदाहकियकलकुक्काकी-
कृतचेतसीव प्रोषितसमस्तान्तःपुरपुरन्धिमुखचन्द्रहृदोद्देगवित्राब्ध-
वपुषीव प्रथमाक्षमितरोचिणीरश्मिरश्मकविमनसीव चाक्षमुपगते
रजनिकरे राजतीव देवे दिवमाकृते सवितरि परिरुक्ते राज्य इव
रजनीप्रवन्ने प्रसुप्तराजहंसमच्छलप्ररोधमानः पङ्कजाकर इव

चचाल देवो हर्षः । ततश्च नूपुररवविरामसूकमन्दमन्दिरहंसे
 शोकाकुलकतिपयकक्षुकिमात्रावशेषेषु शुद्धान्तेषु पतितयूथप इव
 वनगजयूथे कक्ष्यान्तरवर्त्तिनि पितृपरिजने विषादिन्युपरिरुद
 न्निषादिनि च सन्निषन्निषन्ने निष्यन्दमन्दे राजकुञ्जरे, मन्दुरा
 पालकाकन्दकथिते चाजिरभाजि राजवाजिनि विश्रान्तजयशब्द
 कलकले च शून्ये च महास्थानमण्डपे दह्यमानदृष्टिर्निर्जगाम राज
 कुलात् । अगाञ्च सरस्वतीतीरं तस्यां स्नात्वा पित्रे ददावुदकम्
 अपस्नातस्वानिष्पीडितमौलिरेव परिधायोज्जमनीयदुकूलवाससं
 निष्ठासपरो निरातपत्रो निरुत्सारणः समुपनीतेऽपि सप्तौ चरणा
 भ्यामेव नासाग्रासक्तेन रक्ततामरसतान्त्रेण चक्षुषा हृदयावशेषस्यापि
 पितृर्दाहशङ्कया शोकाग्निमिव उन्निरन् अताम्बूलस्यापि सुचिर
 प्रक्षालितस्य कल्पतरुकिशलयस्त्रेव स्वभावपाटलस्याधरस्याधर
 पल्लवस्य प्रभया मासरुधिरकवलानिव हृदयाभिघातादुद्वमन्
 उष्णनिष्ठासमोक्षैर्भवनमाजगाम ।

राजवल्लभास्तु भृत्याः सुहृदः सचिवाश्च तस्मिन्नेवाहनि
 निर्गत्य प्रियं पुत्रदारमुत्सृज्य उद्वाप्यैर्जन्तुभिर्व्यार्थमाणा अपि बद्ध
 वृषगुणगणाहृतहृदयाः केचिदात्मानं भृगुषु बबन्तुः केचित्तत्रै
 तीर्थेषु तस्युः केचिदनशनैरास्तीर्णतृणकुशा व्यथमानमानसा
 शुचमसमामश्रमयन् केचिच्छूलभा इव वैश्वानरं शोकावेगविवश
 विविशुः केचिद्दहणदुःखदहनदह्यमानहृदया गृहीतवाचस्तुषार
 शिखरिणं शरणं यवुः केचिद्विन्ध्योपत्यकासु वनकरिकुलकर
 शीकरासारसिन्धुमानतनवः पल्लवशयनशायिनः सन्तापमश्रमयन्
 केचित् सन्निहितानपि विषयानुत्सृज्य सेवाविमुखाः परिच्छिन्नै
 पिण्डकैरटवीभुवः शून्या जगृहुः केचित् पवनाशना धर्मधना

धमद्वमनयो मुनयो बभूवुः केचिद्बृहीतकाषायाः काषिलं मतम्
अधिजगिरे गिरिषु केचिदाचोटितसूडामण्डिषु शिरःसु घरणी-
कृतधूर्जटवो जटा जघटिरे अपरे परिपाटलप्रलम्बीवराब्जर-
संवीताः स्वाभ्यगुरागमुज्ज्वलं चक्रुः अन्ये तपोवनहरिणजिह्वा-
क्षलोत्क्षिप्तमानसस्तयो जरा यवुः अपरे पुनः पाण्डिपल्लवप्रचटैः
पाताम्बरानैर्नयनपुटैः कमण्डलुभिश्च वारि बहन्तो मृहीतव्रता
मुण्डा विचेदुः ।

देवमपि ह्यं तदवस्थं पितृशोकपिच्छलीकृतं त्रिवं श्राप इति
मर्ही महापातकमिति राज्यं राग इति भोगान् भुजङ्गा इति
निलयं निरय इति बन्धुं बन्धनमिति जीवितमवश इति देहं
द्रोह इति कल्पतां कलङ्क इति आयुरपुण्यफलमिति आहारं
विषमिति विषममृतमिति चन्दनं दहन इति कामं मकच इति
हृदयस्फोटनमभ्युदय इति च मन्यमानं सर्वासु क्रियासु विमुखं
पितृपितामहपरिग्रहागताश्विरन्तनाः कुलपुत्रा बंशकमाहित-
गौरवाश्च ग्राह्यागिरो गरवः श्रुतिश्रुतीतिहासविद्यारदाश्च
जरहिजातयः श्रुताभिजनशीलयालिनो मूर्धाभिपक्ताशामात्या
राजानो यथावदधिगतामृतत्वाश्च संस्तुता मस्कारिणः समदुःख-
सुखाश्च मुनयः संसारासारत्वकथनकुशला ब्रह्मवादिनः शाकाप-
नवर्नानुष्णाश्च पौराणिकाः पर्यवारयन् ।

अस्तन्नीकृतश्च तैर्धनसापि नालभत शोकमनुप्रचरितम् ।
अनुनीयमानश्च कथं कथमप्याहारादिकासु क्रियासु अभिमुख्यम्
अभजत । भ्रातृगतहृदयश्चाचिन्तयत् अपि नाम तातस्य मरणं
महाप्रलयसदृशमिदमुपश्रुत्य आर्षो नाप्यजलस्रातो न मृच्छीयात्
वल्कले । नात्रयेहा राजर्षिरात्रमपदम् । न विद्येहा पुरुषसिंहो

गिरिगुहम् । अस्त्रसलिलनिर्भरभरितनयननलिनसुगलो वा
 पश्येदनाथां पृथिवीम् । प्रथमव्यसनविषमविषविह्वलः करेदात्मानं
 वा पुरुषोत्तमः । अनित्यतया जनितवैराग्यो वा न निराकुर्ष्यात्
 उपसर्पन्तीं राज्यलक्ष्मीम् । दारुणदुःखदहनप्रव्वलितदेहो वा
 प्रतिपद्येताभिषेकम् । इहागतो वा राजभिरभिधीयमानो न
 पराचीनतामाचरेत् । अतिपितृपक्षपाती खल्वार्यः । सर्वदा
 तातस्त्राघया मामभिधत्ते तात हर्ष कस्यचिदभूत् भविष्यति वा
 पुनः काञ्चनतालतरुप्रांशु कायप्रमाणमिदम् ईदृक् च दिवसकर-
 प्रीत्या दिवसम् उन्मुखविकसितं मुखमहाकमलम् एतौ च वज्र-
 स्तम्भभास्वरौ भुजकाण्डौ एते च हसितमदालसहलधरविभ्रमा
 विलासाः कोऽन्यो मानी विक्रान्तो वदान्यो वेति । एतानि
 चान्यानि च चिन्तयन् दर्शनोत्सुकहृदयो भ्रातुरागमनमुदीक्षमाणः
 कथं कथमप्यतिष्ठदिति ।

इति श्रीवाणभट्टकृते हर्षचरिते पञ्चम उच्छ्वासः ।

पष्ठ उच्छ्वास ।

उच्चित्खोच्चित् भुवि प्रक्षितनिगूढाद्भूतनीतानाम् ।

विजिगीषुरिव कृतान्तः शूराणां संग्रहं कुरुते ॥

विश्वव्याघातदोषः स्ववधाय खलस्य वीरकोपकरः ।

नवतरुभङ्गध्वनिरिव हरिनिद्रातस्करः करिणः ॥

अथ प्रथमप्रतिपिण्डभञ्जि भुक्ते द्विजन्तानि गतेष्वर्जनीयेषु
अशौचदिवसेषु चक्षुर्हृष्टादिनि दीयमानं द्विजेभ्यः शयनासन-
चामरातपत्रामृतपत्रशस्त्रादिके नृपनिकटोपकरणकलापे नीतेषु
तीर्थस्थानानि सह जनहृदयैः कीकसेषु कल्पितशोकशब्दे सुधा-
निघयचित्ते चित्ताचैत्यचिह्ने वनाय विसर्जिते महाविजिति
राजगजेन्द्रे कमेण च मन्देष्वाकन्देषु विरलीभवत्सु च विलापेषु
विश्राम्यत्यश्रुणि शिथिलीभवत्सु श्लसितेषु अविस्पष्टेषु हाकटाक्षरेषु
उत्सार्यमाणासु च व्यसनशब्दासु उपदेशश्रवणक्षमेषु आत्मेषु अनु-
रोधावधानयोग्येषु हृदयेषु गणनीयेषु नृपगुणेषु प्रदेशवर्तितताम्
आश्रयति शोके कृतेषु कविरहितकेषु जाते च स्वप्रावश्येपदर्शनं
हृदयावशेषस्थाने चित्तावशेषाकृतौ काव्यावशेषनाम्नि नरनाथं
देवो हर्षः कदाचिदुत्कृष्टव्यापारः पुञ्जीभूतहृत्पद्मवर्णाग्रिसरेण
अवनतस्रक्मुखेन महाजनेन मौलेनाकाले आत्मानं वेषमानम्
अद्राक्षीत् । दृष्ट्वा चाकरोन्मनसि किमन्यत् आर्यमागतमावेदयत्ययं
शोकपराभूतो लोकाकर (१) इति वेषमानहृदयस्य पप्रच्छ

प्रविशन्तम् अधिकतरप्रचारमन्यतमं पुरुषम् अङ्ग कथय किमार्थः
प्राप्त इति । स मन्दमब्रवीत् देव यथादिशसि द्वारीति श्रुत्वा च
सोदर्यस्त्रेहनिहितनिरतिशयमन्युष्टदूकृतमनाः कथमपि न ववाम
वाप्यवारिप्रवाहोत्पीडेन सह जीवितम् ।

अनन्तरञ्च द्वारपालमुक्तेन प्रथमप्रविष्टेन परिजनेनेवाकन्देन
कथमानं दूरद्रुतागमनमुपितबाहुल्येन विच्छिन्नच्छत्तधारेण
लम्बिताम्बरवाहिना भ्रष्टभङ्गारग्राहिणा च्युताचमनधारिणा ताम्य-
न्ताम्बूलिकेन खञ्जत्खङ्गग्राहिणा कतिपयप्रकाशदासेरकप्रायेण
बहुवासरान्तरितस्नानभोजनशयनश्चामक्षामवपुषा परिजनेन
परिहृतम् अविरलमार्गधूलिधूसरितशरीरतया शरणीकृतमिव
अशरणया क्रमागतया वसुन्धरया ह्यणनिर्जयसमरशरत्रणबहुपट्टकैः
दीषधवलैः समासम्बराज्यलक्ष्मीकटाक्षपातैरिव शवलीकृतकायम्
अवनिपतिप्राणपरित्राणार्थमिव च शोककृतभुजि कृतमांसैरति-
कृशैरवयवैरावेद्यमानदुःखभारम् अपगतचूडामणिनि मलिना-
कुलकुन्तले शेखरमूले शिरसि शुचमारूढां मूर्तिमतीमिव दधानम्
आतपगलितस्फेदराजिना रुदतेव पितृपादपतनोत्कण्ठितेन ललाट-
पट्टेन लक्ष्यमाणं प्रधीयसा वाप्यपयःप्रवाहेनाभिमतपतिमरण-
मूर्च्छितामिव महीमनवरतं सिद्ध्यन्तम् अनन्तसन्तताश्रुप्रवाह-
निपतननिम्बीकृताविव दुःखक्षामौ कपोलाबुद्धहन्तम् अत्युष्णमुख-
मारुतमार्गगतेन द्रवतेव गलितताम्बूलरागेणाधरविस्त्रेनोपलक्षितं
पवित्रिकामात्रावशेषेन्द्रनीलिकांशुश्यामायमानम् अचिरश्रुतपितृ-
मरणमहाशोकाग्निदग्धमिव अवणप्रदेशमुद्धहन्तम् अस्तुटाभिव्यक्त-
व्यञ्जनेनाप्यधोमुख स्तिमित नयन नील तारक मयूख माला खचितेन
शोकप्ररूढश्लशुश्यामलेनेव मुखशशिना लक्ष्यमाणं केशरिणमिव

महाभूभृदिनिपातविह्वलनिरवलयनं दिवसमिव तेजःपतिपतन-
परिष्कानत्रियं श्यामीभूतं मन्दनमिव भग्नकल्पपादपं विच्छाद्यं
दिग्भागमिव प्रोषितदिक्षुस्तरन्मुन्यं, गिरिमिव गुरुवज्रपातदारितं
कम्पमानं कीतमिव कथिन्वा किङ्करीकृतमिव कावस्येन हासी-
कृतमिव दौर्गन्धस्येन शिष्यीकृतमिव शोचितस्येन श्यामीकृतमिव
आधिना स्रकीकृतमिव मौनेन पिष्टमिव पीडया स्विन्नमिव सन्ता-
पेन उच्चित्तमिव चिन्नया लप्प्रमिव विलापेन हतमिव वैराग्येण
प्रत्याख्यातमिव प्रतिसङ्क्रान्तेन अवज्ञातमिव प्रक्षया दुरीकृतमिव
दुरभिभवत्वेन अवोद्येन वृहद्वह्नीनाम् असाध्येन साधुभाषितानाम्
अगस्येन गुरुगिराम् अशक्येन शास्त्रशक्तीनाम् अपथेन प्रज्ञा-
प्रवक्तानाम् अगोचरेण सुहृदगुरोधानाम् अविषयेण विषयोप-
भोगानाम् अभूमिभूतेन कालकमोपचयानां शोकेन कवलीकृतं
ज्येष्ठं भ्रातरमपश्यत् आयेगोत्रतत्परस्त्रस्त्रे होत्कलिकाकलापोरिच्छप्य-
माणकाय इव च परवशः समुदगात् ।

अथ दूरादेव दृष्ट्वा देवो राज्यवर्जनचिरकालकलितं बाध्यवेगं
मुमुक्षुः सुदूरप्रसारितेन सङ्कल्पयन्निव सर्वदुःखानि दीर्घेण
दोर्दण्डद्वयेन गृहीत्वा कण्ठे मूक्तकण्ठं पुनः पतितक्षौमे क्षामे
वक्षसि पुनः कण्ठे पुनः स्तब्धभागे पुनः कपोलोटरे निधाय तथा
तथा बरोद यथा स्रवन्मनानीबोदपाण्यन्त हृदयानि । अत-
वृपतिना राजवस्त्रभेनापि प्रतिशब्दनिभेन निर्भरमिवावद्यत ।
सुविराजं कथं कथमपि निर्दृष्टनयनजलः पर्जन्य इव शरदि
स्वयमेवोपशयाम । उपविष्टश्च परिजनोपनीतेन तांयेन तत्कार-
नखमयूष्मपुष्पतया महाजलस्रवजावमानफेनलेखमिव पुनः पुनः
प्रसृष्टमपि पक्ष्माग्रसंगसहितं हृन्मन्दोन्मेषमुपितदर्शनं कथं कथम्

अपि चक्षुरक्षालयत् । ताम्बूलिकोपस्थापितेन च वाससा चन्द्रा-
तपशकलेनेवोष्णोष्णवाष्पदग्धं वदनमुन्ममार्ज । तूष्णीमेव च चिरं
स्थित्वा उत्थाय स्नानभूमिमगात् । तस्याञ्च स्थित्वा विभूषं
वितस्तथ्यस्तकुन्तलं मौलिमनादरान्विषीद्य सावशेषमन्यस्फुरितेन
जिजीविषतेव जलधौतसुभगमात्मानंमपि चुचुम्बिषतेवाधरेण
क्षालितस्य चक्षुषः श्वेतिम्ना च शारदशशिकरविकसितविषदकुमुद-
वनदलावलिबलिविन्नेपैरिव दिग्देवतार्जनकर्म कुर्वाणः चतुः-
शालवितर्हि कायां नीचापाश्रयविनिहितैकोपवर्हायां पर्यङ्किकायां
निपत्य जोषमस्थात् ।

देवोऽपि हर्षस्तथैव स्नात्वा धरणितलनिहितकुथाप्रसारित-
स्फूर्तिरदूर एवास्य तूष्णीमेव समवातिष्ठत । दृष्ट्वा दृष्ट्वा दूयमान-
मानसमग्रजन्मानं समस्फुटदिवास्य सहस्रधा हृदयम् । औरस-
दर्शनं हि यौवनं शोकस्य । लोकस्य तु नरपतिमरणदिवसादपि
दारुणः स बभूव दिवसः । सर्वस्मिन्नेव नगरे न केनचिदपाचि न
केनचित् अस्त्रायि नाभोजि सर्वत्र सर्वेणारोदि । केवलमनेन
क्रमेणातिचक्राम दिवसः । स च प्रत्यग्रत्वदृष्टकृतदृष्टतनुर्विव वह-
द्वहलरुधिररसमांसच्छविः अपरपारावारपयसि ममञ्ज मञ्जिष्ठा-
रुणोऽरुणसारथिः । मुकुलायमानकमलिनीकोषविकलं चकाण
चक्षुरीककुलं कमलसरसि । सविधविरहव्याधिविधुरबधूबाध्य-
मानं बबन्ध बन्धाविव विबुध्वन्धूकभासि भासति साक्षां दृश्यं
चक्रवाकचक्रवालम् । सञ्चरन्त्याः समधुकररवं कैरवाकरं कलहंस-
रमणीरमणीयं माणिक्यकाञ्चीकिङ्किणीजालमिवाचकाय श्रियः ।
प्रकटकलकुमुदयमानं विसङ्कटविषाणोत्कीर्णपङ्कसङ्करशङ्करशङ्कर-
शकरककुदकूटसङ्काशमकाशताकाशे शशाङ्कमण्डलम् ।

अस्याश्च वेलायामनतिक्रमस्तत्रैवपश्यत्य प्रधानसामन्तैः
विज्ञाप्यमानः कथं कथमप्यभक्त । प्रभातायाश्च शर्मणा सर्वेषु
प्रविष्टेषु राजसु समीपस्थितं वर्षदेवमुवाच तात भूमिरसि गुह-
नियोगानाम् । शैशव एवाद्याहि गुह्यवत्पताकेव भवता तातस्तु
चिन्तयन्तिः । यतो भवंन्तर्मेवविधं विधेयं विधिविधानोपमत-
नैर्घृण्यम् इदं किमपि विभविष्यति मे हृदयम् । नावलम्बनीया
बालभावसुलभा प्रेमविलोमा वामता । वैधेय इव मा कथाः
प्रत्यङ्मूर्तिरितेऽस्मिन् । न खलु न जानासि लोककृतम् । लोक-
तयत्नातरि मान्यातरि ह्यने किं कृतं एककुम्भेन भूतताडिटा-
टादशह्वीपे दिलीपे वा रघुणा महासुरसमरमध्याध्यासितविदश-
रथे दशरथे वा रामेण गोप्यदीकृतचतुर्दश्वदन्तं दुष्कन्ते वा
भरतेन । तिष्ठन्तु तावदेते तातेनैव यतसमधिकाध्वरधूमविसर-
धूसरितवासववयसि सुगृहीतनाम्नि तत्रभवति परासुता गते
पितरि किं नाकारि राज्यम् । यच्च किल शोकः समभिभवति तं
कापुत्रमाचक्षते शास्त्रविदः । क्षियो हि विषयः शुचान् ।
तथापि किं करोमि स्वभावस्य सेयं कापुत्र्यता वा स्नेहं वा वदेवम्
आस्यदं पितृशोककृतभ्रजो जातोऽस्मि । मम हि भूयति पर्ययो
निरवशेषतः प्रसूयणानीव क्षुताव्यन्तूणि अक्षमिते मर्जति तेजसि
अन्धकारीभूतदशाशस्य प्रनष्टः प्रज्ञालोकः प्रज्जलितं हृदयम्
आमदाङ्गीभूत इव स्वप्नेऽपि नापस्यति विवेकः बलीयसा सन्तापेन
जातुषमिव विलीनमखिलं धैर्यम् पदे पदे दिग्धरोपाङ्गतेव
हरिणी सुहृति मतिः पुत्रपदेविषीव दूरत एव भ्रमन्ती
परिहरति ह्यतिः अन्वेव तातेनैव सह गता हतिः वार्तुविक-

प्रयुक्तानीव वित्तानि (२) प्रतिदिवसं वर्द्धन्ते दुःखानि शोकानल-
धूमसम्भारसम्भूतान्मोधरभरितमिव वर्षति नयनवारिधाराविसरं
शरीरम् । सर्वः पञ्चजनः पञ्चत्वमुपरतः प्रयाति वितथमेतद्वदति
बालो लोकः । तातो ज्ञताशनतामेव केवलमापन्नो येनैवं
दहति माम् । इदमसाम्परायिकमिव हृदयमवष्टभ्य व्युत्थितः
शोको दुर्निवारः बाडव इव वारिराशिं पविरिव पर्वतं क्षय
इव क्षपाकरं राक्षसि रविं दहति दारयति तनूकरोति
कवलयति । न शक्नोति मे हृदयं तादृशस्य सुमेरुकल्पस्य महा-
पुरुषस्य विनिपातमश्रुभिरेव केवलैरतिवाहयितुम् । राज्ये विष
इव चकोरस्य मे विरक्तं चक्षुः । बज्रस्रतपटावगुण्ठनां रञ्जित-
रङ्गः जनङ्गमानामिव वंशवाद्यामनार्थां श्रियं त्यक्तुमभिलषति
मे मनः । क्षणमपि दग्धगृहे शकुलिरिव न पारयामि स्थातुम् ।
सोऽहमिच्छामि मनसि वाससीव सुलग्नं स्नेहमलमिदममलैः
शिखरिशिखरप्रखवणस्वच्छोतोऽम्बुभिः क्षालयितुमाश्रमपदे ।
अतस्त्वमन्तरितयौवनसुखामनभिमतामपि जरामिव पूरराश्या
गुरोर्महाण मे राज्यचिन्ताम् । त्यक्तसकलबालक्रीडेन हरिणेव
दीवतामुरो लक्ष्म्यै । परित्यक्तं मया यक्षम् । इत्येवमभिधाय
खड्गपाङ्क्तिं हस्तादादाय निजं निस्त्रिंशमुत्सर्ज्य धरण्याम् ।

अथ तच्छ्रुत्वा निशितशिखेन श्रुतेनेवाहतः प्रविदीर्णहृदयो
देवो हर्षः समचिन्तयत् किं नु खलु मामन्तरेण आर्यः केनचिद्-
सङ्घिष्णुना किञ्चिद्ग्राहितः कुपितः स्यात्, उतानया दिशा परी-
क्षितुकामो माम् उत शोकजन्ता चेतसः समाक्षेपोऽयमस्य ।
आहोस्त्रिदार्ढ्य एवायं न भवति किं वार्ष्णेयान्यदेवाभिहितम् अन्य-

देवाच्चावि सदा शोकमूढेन त्रवणेन्द्रियेण । आर्षस्य वा अन्यदेव
विषयितम् अन्यदेवायतितं सुखेन । अथवा सकलवंशविनाशाय
निपातनोपायोऽयं विधेः मम वा निश्चितपुण्यपरिचयोपक्षेपः
कर्माणाम् अननुकूलसमप्रवृत्तकालविलसितं वा । अथवा तात-
विनाशनिःशङ्ककलिकालकीडितम् येनायं यः कश्चिदिव यकिञ्चन
कारिणं माम् अपुण्यभूतिवंशसम्भूतमिव अताततनयमिव अमात्रा
मुजमिव अभक्तमिव दृष्टदोषमिव ओत्त्रियमिव सुगपाने सङ्गृह्य-
मिव स्वामिद्रोहे सज्जनमिव नीचोपसर्पणे मुक्तजलमिव
व्यभिचारे अतिदुष्करे कर्माणि समादितवान् । तदेतत्ताव-
दनुरूपं यत् शौर्वोन्मादमदिरोन्मत्तममस्तमामस्तमण्डलसमुद्ग-
मयनमन्दरे तादृशि पितरि ह्यते तपोवनं या गम्यते वन्कलानि
वा मृच्छन्ते तपासि वा सेव्यन्ते । या तु मयि राज्यान्ना सा
दग्धेऽपि दाहकारिणी मयि अवयवहृत्पिते धन्वनीवाङ्गारदृष्टिः ।
तदसदृशमिदमार्थस्य । यद्यपि च विभुरनभिमानः द्विजातिः
अनेषणः सुनिररोषणः कपिरचपलः कविरमात्सरः वस्त्रिगतस्कारः
प्रियजानिरकुहनः साधुरदरिद्रः कृषिगवान्मूलः कीमाशो
ऽनघ्रिगतः ऋगबुरहिंस्रः पाशाशरी ब्राह्मण्यः सेवकः सुखी
कितवः क्षतघ्नः परित्राडबुधुजः शृंगसः प्रियवाक् अमात्यः
सत्यवादी राजसूनुर्दुर्विनीतश्च जगति दुर्लभः तथापि ममार्थ
एवाचार्थः । को हि नाम तद्विधे निपातितं राजगन्धकुम्भरे
जनवितरि ईदृशे च विफलीकृतविशालागिजासन्धोवधुजे
भूमुजि आतरि त्यक्तराज्ये ज्यायसि नववयसि तपावनं गच्छति
सकललोकलोचनजनपातापवित्रं अज्ञानकं वसुधाभिधानं
धनमदसेलनिश्चिन्नखलसुखविकार लक्षणाव्यायमाननीचाधरणा

श्रीसंज्ञिकां सुभटकुटुम्बकर्माकुम्भदासीं चण्डालोऽपि कामयेत् ।
 कथमिव सम्भावितमत्यन्तमनुचितमिदमार्थ्येण । किमुपलक्षितम्
 अनवदातमिदं मयि । किं वास्य चेतसश्चुरतः सौमित्रिः
 विस्मृता वा वृकोदरप्रभृतयः । अनपेक्षितभक्तजना स्वार्थैक-
 निष्पादननिष्ठुरा नासीदियमार्थ्यस्येदंशी प्रभविष्णुता । अपिचार्ये
 तपोवनं गते जिजीविषुः को हि नाम महीं मनसापि ध्यायेत् ।
 कुलिशशिखरखरनखरप्रचयप्रचण्डचपेटापाटितमत्तमातङ्गोत्तमाङ्ग-
 मदच्छटाच्छूरितचारुकेसरभारभास्वरमुखे केशरिणि वनविहा-
 राय विनिर्गते निवासं गिरिगुहां कः पाति पृष्ठतः । प्रताप-
 सहाया हि सत्त्ववन्तः । कश्चपलां लक्ष्मीं प्रत्यनुरोधोऽयमार्थ्यस्य
 यदीयमपि न चीरान्तरितकुचा कुशकुसुमसमित्पलाशपूलिकां
 वहन्ती तत्रैव तपोवने वनमृगीव नीयते जराजालिनी । किंवा
 ममानेन दृष्ट्वा वज्रधा विकल्पितेन तूष्णीमेवार्थ्यमनुगमिष्यामि ।
 गुरुवचनातिकमकृतञ्च किल्बिषमेतत् तपोवने तप एवापास्यति ।
 दूत्यवधार्य मनसा प्रथमतः गतस्तपोवनम् अधोमुखस्तूष्णी-
 मवातिष्ठत ।

अत्रान्तरे पूर्वादिष्टेनैव रुदता वस्त्रकर्मान्तिकेन समुप-
 स्थापितेषु वल्कलेषु निर्दयकरतलताडनभियेव क्वापि गते हृदये
 रटति राजस्त्रैणे तारमब्राह्मण्यमूर्जदोषिण विरुदति विप्रजने
 पादप्रणतिपरे फूत्कुर्वति पौरवन्दे विद्राति विद्रुतचेतसि चिर-
 न्तने परिजने परिजनावलम्बिते वेपमानवपुषि पथ्याकुलवाससि
 शोकगद्गदवचसि गलितनयनपयसि निवारणोद्यतमनसि वर्षीयसि
 विशति बन्धुवर्गे निराशेषु नखलिखितमणिकुट्टिमेष्ववाङ्मुखेषु
 निश्चसत्सु सामन्तेषु सवालवृद्धासु तपोवनाय प्रस्थितासु सर्व्यासु

प्रजासु सहस्रैव प्रविश्य शोकविह्वलः प्रचारितमवनसल्लितो राज्य-
त्रिवः परिचारकः संवादको नाम प्रज्ञाततमो विमुक्ताकण्डः
सदस्त्रात्मानमपातयत् ।

अथ सम्प्रान्तो भ्राता सह स्वयं देवो राज्यवर्द्धनसं
पर्यष्टम्भत् भद्रं भणं भणं किमस्माद्यसनस्यवसायवर्द्धनवद्वृष्टिः
अवनिपतिमरणमुदितमतिः अष्टतिकरमपरमधिकतरमितिः समुप-
नयति विधिरिति । स कथं कथमप्यकथयत् देव पिशाचानामिव
नीचात्मनां चरितानि छिद्रप्रहारीणि प्राचयो भवन्ति । यतो
वह्निमहन्त्यवनिपतिरपरत इत्यभूद्वार्ता तस्मिन्नेव देशे पञ्चवर्णा
दुरात्मना मालवराजेन जीवलोकमात्मनः सुकृतेन सह त्वाजितः ।
भर्तृदारिकापि राज्यश्रीः कालायसनिगडबुगलपुष्पितचरणा
चौराङ्गनेव संयता काव्यकुलो कारायां निक्षिप्ता । किंवदन्ती
च यथा किलानायकं साधनं मत्वा जिहृक्षुः सुदुर्नतिरेतामपि
भुवमाजिगमिषति । इति यिज्ञापिते प्रभुः प्रभवतीति ।

ततश्च तादृशमनुपेक्षणीयमसम्भावितमाकस्मिकमपरं व्यतिकर-
माकस्म्याश्रुतपूर्वत्वात्परिभवस्य परपरिभवासिहृन्नातया च स्वभावस्य
दर्पबहुलतया च नवयौवनस्य वीरक्षेत्रसम्भवत्वाच्च जन्मनः कृपा-
भूमिभूतायाश्च स्वसुः स्नेहात् स तादृशोऽपि बहुमूलोऽप्यत्यन्तरुचः
एकपद एवास्व ननाश शोकावेगः । विवेश च सहसा केसरीव
गिरिरुद्राष्टहं गम्भीरं हृदयं भयङ्करः कोपावेगः । केशिनिवृद्धन-
शङ्काकुलकांसियकुलभङ्गुरभूभङ्गुतरङ्गिणी श्यामायमाना यमस्यसेव
प्रथीयसि त्वकाटपट्टे भीषणा भुङ्कटिबद्धमिस्रत । रपात् परावृणन्
नखकिरणसल्लिखनिर्भरैः समरभारसम्भावनाभिषेकमिव चकार
दिङ्नागकुम्भकूटविकटस्य बाहुशिरकोपस्य वामः पाणिपङ्क्तवः ।

सङ्कलत्स्नेहसलिलपूरितोदरो निर्मूलं मालवोन्मूलनाय गृहीतकेश
 इव दुर्मदश्रीकचग्रहोत्कण्ठयेव च कम्पमानः पुनरपि समुत्सर्प
 भीषणं कृपाणं पाणिरपरः । शस्त्रग्रहणमुदितराजलक्ष्मीक्रिय-
 माणाद्विद्वद्विविधुतसिन्दूरधूलिरिव कपिलः कपोलयोरदृश्यत
 रोषरागः । समासंनसकलमहीबालचूडामणिचक्राक्रमणजाताह-
 ङ्गार इव च समाकरोह वाममूर्दण्डमुत्तानितश्चरणो दक्षिणः ।
 निष्ठुराङ्गुष्ठकषणनिष्ठूतधूमलेखो निर्बीरोर्बीकरणाय विमुक्तशिख
 इव लिलेख मणिकुट्टिममितरः पादपद्मः । दर्पस्फुटितसरसव्रणो-
 ष्णलितरुधिरच्छटावसेकैः शोकविषप्रसुप्तं प्रबोधयन्निव पराक्रमम्
 अनुजमवादीत् आयुष्मान् इदं राजकुलम् अमी बान्धवाः परि-
 जनोऽयम् इयं भूमिः भूपतिभुजपरिषपालिताश्चैताः प्रजाः गतो
 ऽहमद्यैव मालवराजकुलप्रलयाय । इदमेव तावत् बल्कलग्रहणम्
 इदमेव तपः शोकापगमोपायश्चायमेव यदत्यन्ताविनीतारिनिग्रहः ।
 सोऽयं कुरङ्गकैः कचग्रहः केशरिणः भैकैः करपातः कालसर्पस्य
 वत्सकैर्बन्दिग्रहो व्याघ्रस्य अलगर्हैर्गलग्रहो गरुडस्य दारुभिः
 दाहादेशो दहनस्य तिमिरैस्तिरस्कारो रवेः यो मालवैः
 परिभवः पुष्पभूतिवंशस्य । अन्तरितस्त्रापो मे महीयसा मन्युना ।
 तिष्ठन्तु सर्व एव राजानः करिणश्च त्वयैव सार्द्धम् । अयमेको
 भण्डिरयुतमात्रेण तुरङ्गमाणाममुयातु माम् । इत्यभिधाय
 चामन्तरमेव प्रयाणपटहमादिदेश ।

तच्च तथा समादिशन्तमाकर्ण्य जामिजामाहृतान्तविज्ञान-
 प्रकोपाधानदूयमाने मर्नास निवर्त्तनादेशेन दूरप्ररुद्धप्रणयपीड इव
 प्रोवाच देवो हर्षः कमिव दोषं पश्यत्याख्यो ममामुगमनेन । वदि
 माल इति नितरां तर्हि न त्याज्योऽस्मि रक्षणीय इति भवद्-

भुजपञ्चरं रक्षास्थानम् अयत्न इति क परीक्षितोऽस्मि संवर्द्धनीय
इति विद्योगस्तनूकरोति अक्षेयसह इति क्षीपक्षे निक्षितोऽस्मि
सुखमनुभवत्विति त्वयैव सह तत्प्रयाति महानध्वनः क्षेय इति
विरहोऽविषम्यतरः कलत्वं रक्षत्विति श्रीक्षे निक्षिप्तोऽभिवसति
ष्टतस्तिष्ठत्विति तिष्ठत्येवं प्रंतापः राजकमनभिहितमिति तत्
सुबद्धमार्थगुणैः न वास्तुः सहायो महत इति व्यतिरिक्तमिव मां
गणयति प्रलघुपरिकरः प्रयामीति पादरजसि कोऽतिभारः द्वयोः
गमनमसाम्प्रतमिति मामनुगृह्णाण गमनाश्रया कातरो भ्रातृक्षेप
इति सह्यो दोषः । का चेयमाम्प्ररिता भुजस्य ते यदेकाकी
क्षीरोदकेनपटलपाखुरमञ्चतमिव ययः पिपासति । अवक्षितपूर्वो
ऽस्मि प्रसादेषु । तत्प्रसीदत्वार्थः नयतु मामपि इत्यभिधाय
क्षितितलविनिहितमौलिः पादयोरपतत् ।

तमुत्थाप्य पुनरयञ्जो जगाद तात किमेवमतिमङ्गारम्भपरि-
यङ्गणेन गरिमायमारोप्यते वल्गादतिलघीयानप्यहितः । हरिणा-
र्यमतिक्रेपणः सिंहसम्भारः । तृष्णानासुपरि कति कवचवन्ति
आशुशुल्लघवः । अपिच तवाटादशहीपाटमङ्गलकमालिनी मेदिनी
अस्यैव विक्रमस्य विषयः । नहि कुलशैलनिबद्धवाहिनां वायवः
सन्ध्याम्यतितरले दलराशौ । न सुमेखप्रप्रणयप्रगल्भा वा दिक्-
करिणः परिणमन्त्यक्षीयसि वल्लीके । ग्रहीयसि सकलपट्वीपति-
प्रलयोत्पातमहाधूमकेतुं मात्वातेव चाक्षामीकरपद्मलतासङ्कारा-
कुक्कायं कान्कुक्कं ककुभा विजये । मम तु दुर्निवारायामस्या
विपक्षक्षपणक्षुधि क्षुभितायां क्षम्यतामयमेकाकिनः कोपकवच
एकः । तिष्ठतु भवान् । इत्यभिधाय च तस्मिन्नेव वासरे
निर्जगामाभ्यभिन्नम् ।

अथ तथागते भ्रातरि उपरते च पितरि प्रीषितजीविते च
जामातरि सतायाश्च मातरि संयतायाश्च स्वसरि स्वयूषश्चट इव
बन्धः करी देवो हर्षः कथं कथमप्येकाकी कालं तमनैषीत् ।
अतिकान्तेषु वञ्छेषु वासरेषु कदाचित् तयैव भ्रातृगमनदुःखा-
सिकया दत्तप्रजागरः त्रिभागश्रेष्ठायां त्रियामायां यामिकेन
गीयमानामिमामार्थां शुश्राव

द्वीपोपगीतगुणमपि समुपार्जितरत्नराशिसारमपि ।

पोतं पवन इव विधिः पुरुषमकाण्डे निपातयति ॥

ताश्च श्रुत्वा सुतरामनित्यताभावनया दूयमानहृदयः प्रक्षीण-
भूयिष्ठायां क्षपाया क्षणमिव निद्रामलभत स्वप्ने चाभ्रंलिहं लोह-
सम्भ्रं भज्यमानमपश्यत् । उत्कम्पमानहृदयश्च पुनः प्रत्यबध्यत
अचिन्तयच्च किं तु खलु मामेवममी सततमनुवध्नन्ति दुःखभाः ।
स्फुरति च दिवानिशमकल्याणाख्यानविचक्षणमदक्षिणमक्षि ।
सुदारुणाश्चाक्षुर्द्रक्षितिपक्षयमाचक्षाणाः क्षणमपि न शास्यन्ति
पुनरुत्पाताः । प्रत्यहं राक्षरविकलकायबन्ध इव कबन्धवति वध्नविम्बे
घटमानो विभाज्यते । तपःकरणकालकवलितानिव धूसरित-
समग्रग्रहानुज्जिरन्ति धूमोज्ज्वरान् सप्तर्षयः । दिने दिने दाक्षणा
दिशां दाहा दृश्यन्ते । दिग्दाहभक्षकणनिकर इव निपतति
नभस्तलान्तारागणः । तारापातशुचैव निष्प्रभः शशी । निशि
निशि दूतस्ततः प्रज्वलिताभिदुल्काभिरुग्रं ग्रहबुधमिव वियति
विलोकयन्ति विलोलतारकाः ककुभः । राज्यसञ्चारसूचकः
सञ्चारयतीव क्ष्मां क्षापि बह्वहलरजःपटलकलिलशर्कराशकल-
सूत्कारी मासतः । न कुशलमिव पश्यामि लग्नस्य । अस्त्रिन्ध्रहंशे
करिण इव करीरं कोमलमपि कलयतः कृतान्तस्व कः परिपन्थी ।

सर्वथा स्वस्ति भवत्वार्थाय । इति चिन्तयित्वा च अन्तर्भिन्ना-
भ्याटस्नेहकातरं द्रवदिव हृदयं कथं कथमपि संसृज्य उक्त्वा
यथाक्रियमाणं क्रियाकलापमकरोत् ।

आस्थानगतश्च सहस्रैव प्रविशन्तम् अनुप्रविशता विप्लव-
वदनेन लोकेनामुगम्यमानंम् 'अमत्तादुःखोष्णनिश्वासधूमरक्ततप्तु-
नेव मलिनेन पटेन प्रावृतवपुषं जीवितधारणालम्बयेवावनत-
मुखं नासावंशस्याये ग्रथितहृष्टिं दःखदूरप्रकटरोम्वा कृकेनापि
मुखेन स्वामिष्यसनमविच्छिन्नैरश्रुविन्दुभिर्निष्ठापयन्तं कन्तलं
नाम दृढदण्डवारं राज्यवर्द्धनस्य प्रसादभूमिमभिजाततमं ददर्श ।
दृष्ट्वा च जाताशङ्कः चक्षुषि सलिलेन मुखशशिनि प्रसितेन
हृदये कुताशेन उल्लङ्घ्य भूवा दारुणाप्रियश्रवणसमये समभिव
सर्वेष्वङ्गेषु अमृतस्य लोकपालैः । तस्माच्च हेनानिर्जितमालवा
नीकमपि गौडाधिपेन मिथ्योपचारोपचितविश्वासं मुक्तमक्षम्
एकाकिनं विश्रब्धं स्वभवन एव भ्रातरं व्यापादितमश्रीपीत् ।

श्रुत्वा च महातेजस्वी प्रचण्डकांपपावकप्रसरपरिणीयमान
शोकावेगः सहस्रैव प्रज्ज्वाल । ततश्चामर्षविधुतशिरःशीर्ष्यमाण
शिखामणिकलाद्धारकितमिव राधाग्निमुदमन् अनवरतस्फुरि
तेन पिबन्निव सर्वतेजस्विनामायुषि रापनिर्भग्नेन दशन-
च्छदेन लोहितायमानलोचनालोक्विक्षिपैर्हिम्दाहानिव दर्शयन्
रोषानलेनाप्यसहस्रसहजशौर्ष्योद्घाटनदत्तमानेनैव वितन्यमान-
स्वेदसलिलशीकरासारदुर्हिनः स्वावयवैरप्यहृष्टपुष्पप्रक्षोपभीतैरिव
कम्पमानैरपेतः हर इव लतभैरवाकारः हरिरिव प्रकटितनर-
सिंहरूपः सूर्यकान्तशैल इव अपरतेजःप्रसरदर्शनप्रज्ज्वलितः
जयदिवस इवोदितद्वादशदिनकरदुर्निरीक्ष्यस्पर्शः महोत्थातमावृत

इव सकलभूभक्त्यकारी विन्ध्य इव विवर्द्धमानविग्रहोत्प्रेषः
महाशीविष इव दुर्नरेन्द्राभिभवरोषितः पारौक्षित इव सर्वभोगि-
दहनोद्यतः तृकोदर इव रिपुबधिरतृषितः सुरगज इव प्रति-
पक्षवारणप्रधावितः पूर्वागम इव पौरुषस्य उन्माद इव मदस्य
आवेग इवावलेपस्य तारुण्यवानार इव तेजसः सर्वोद्योग इव
दर्पस्य युगागम इव यौवनोष्णः राज्याभिषेक इव रणरसस्य
नीराजनदिवस इवासहिष्णुतायाः परां भीषणतामयासीत्

अवादीञ्च गौडाधिपमपहाय कलादृश्यं महापुरुषं तत्क्षणा एव
निर्व्याजभुजवीर्यनिर्व्वितसमस्ताराजकं मुक्तशस्त्रं कलसयोनिमिव
लक्ष्णवर्त्मप्रसूतिः ईदृशेन सर्वलोकविगर्हितेन व्यत्युना शमयेदार्थम् ।
अनार्थञ्च तं मुक्ता भागीरथीफेनपटलपाण्डुराः केषां मनःसु
सरःसु राजहंसा इव परशुरामपराक्रमस्फुटितो न कुर्युरार्थ-
शौर्यगुणाः पक्षपातम् । कथमिवात्युग्रस्यास्य आर्यजीवितहरणे
निदाघरवेरिव कमलाकरसखिलशोषणेऽनपेक्षितप्रीतयः प्रसृताः
कराः । कां नु गतिं गमिष्यति कां वा वीणिं प्रवेक्ष्यति कस्मिन्
वा नरके निपतिष्यति । श्लपाकोऽपि क इदम् आचरेत् । नामापि
गृह्णीतोऽस्य पापकारिणः पापमलेन लिप्यत इव मे लिप्ता । किं
वाङ्गीकृत्य कार्यम् आर्यस्तेन क्षुद्रेणानुप्रविश्य विगतदृष्टेन घुणेनेव
सकलभुवनाङ्गादनचतुरस्रन्दनसन्नाः क्षयमुपगतीतः । नूनं ज्ञानेन
सृढेन मधुरसास्वादलुब्धेन मध्विवार्यजीवितमार्कषता भावी दृष्टः
त्रिलीमुखसम्पातोपद्रवः । निजगृहद्रूषणं जालमार्गप्रदीपकेन
कञ्जलमिवातिमलिनं केवलमवशः सञ्चितं गौडाधमेन । मत्वाश्वेव
अक्षमुपगतवत्पि त्रिभुवनचूडामयौ सवितरि वेधसादिष्टः सत्यव-
यत्नोरन्धकारस्य निग्रहाय यद्वद्वद्विहारैकहरिणाधिपः शशी ।

विनवविधाविनि भग्नेऽपि चाकुशे विद्यत एव व्याकवारण्यस्य
विनवाय सकलमत्तमातङ्गकुण्डलस्थिरशिरोभागभिदुरः चरतरः
केसरिनखरः । तादृशाः कुवैकटिका इव तेजस्विराजविनायकाः
कस्य न बध्नाः । केदानीं वास्यति दुर्जहिः ।

इत्येतदभिदधत एवास्त्रं पितुरपि मितं सेनापतिः समप्र-
विष्यप्रायश्चरो हरितालशैलावदातदेशः परिणतप्रशुण्णसाल-
प्रकाण्डप्रकाशः प्रांशुरतिशीर्षोष्णोऽपि परिपाकमागतो नतभ्रूयिष्ठे
वयसि वर्त्तमानो वज्रशरशयनसुप्तोत्थितोऽपि वसन्निव शान्तनवम् ।
अतिदीर्घेषावुषा दुरभिभवशरीरतया जरयापि भीतभीतवेव
प्रकटितप्रकम्पया परावृष्टः कथमपि सारमयेषु शिरोबन्धेषु शशि-
करनिकरसितसरलशिरोवहसटालां सैन्धीमिव निष्कपटपराक्रम-
रसरचिता संक्रान्तो जीवन्नेव जातिम् अपरस्वामिमुच्यदर्शन-
महापातकपरिधिर्दीर्घयेव भ्रूसुगलेन वलितशिथिलप्रलम्बचर्मण्यस्य
स्थगितदृष्टिः धवलसूतशुष्कापिच्छप्रच्छादितकपोलभागभास्वरेश्व-
र्यमन्त्रिव विक्रमकालमकालेऽपि विकासिकाशकाननविशदं शरदा-
रम्भं भीमेन मुखेन प्लुतमपि हृदयस्थितं स्वामिनमिव सितचाम-
रेण बीजवन् नाभिलम्बेन कुञ्चकलापेन परिणामेऽपि भीतासि-
धारां जलपानदृष्टितैरिव विहृतवदनेर्दृष्टिर्द्विगणविदरैः विषमि-
विशालवक्षाः निशितशङ्कटकुकोटिकुट्टितवज्रदृष्टदृष्ट्याक्षरपङ्क्ति-
निरन्तरतया च सकलसमरविजयपर्वण्यनामिव कुर्वन् पूर्ण-
पर्वत इव पादचारी विविधवीररसदृशान्तरामखीवकेन महा-
भारतमपि लघयन्निव प्रतिपद्यक्षपक्षातिनिर्वन्धेन परशुराममपि
शिक्षयन्निव अर्धभ्रमणेनानादरश्रीलमाकर्षयन्निर्वन्धेन मन्दरमपि
मन्दयन्निव बाहिनीनायकमर्कादानुवर्त्तनं नान्मोघिमय्यभिभवन्निव

स्थैर्यकार्कश्योन्नतिभिरचलानपि क्लेपयन्निव सहजप्रचण्डतेजःप्रसर-
परिस्फुरणेन सवितारमपि तृणीकुर्वन्निव ईश्वरभारोद्धनष्ट-
ष्टतया हरदृषभमपि हसन्निव अरणिरमर्षाग्नेः ऐश्वर्यं शौर्यस्य
मदो मदस्य विसर्पो दर्पस्य हृदयं हठस्य जीवितं जिगीषुतायाः
उच्छ्वसितमुत्साहस्य अङ्गुशो दुर्मदानां नागदमनो दुष्टभोगिनां
विरामो वरमनुय्यतायाः कुलगुरुर्वीरगोष्ठीनां तुला शौर्यशालिनां
सीमान्तदृष्ट्वा शस्त्रग्रामस्य निर्व्वोढा प्रौढवादानां संस्तम्भयिता
भग्नानां पारगः प्रतिज्ञायाः मर्मज्ञो महाविग्रहाणाम् आषोषणा-
पटहः समरार्थिना सन्निधावेव समुपविष्टः सिंहनादनामा स्वरेणैव
दुन्दुभिषोषगम्भीरेण सुभटानां समररसमानयन् विज्ञापितवान्

देव न क्वचित् कृताश्रयया'मलिनया मलिनतराः कोकिलया
काका इव कापुरुषा हतलक्ष्म्या विप्रलभ्यमानमात्मानं न चेतयन्ते ।
श्रियो हि दोषान्धतादयः कामला विकाराः । कृत्वच्छायान्तरित-
रपयो विस्मरन्त्यन्यं तेजस्विनं जडधियः । किं वा करोतु वराकः
येनातिभीरुतया नित्यपराङ्मुखेन न तु दृष्टान्येव सर्वातिशायि-
शौर्यातिशयश्रयशुकपिलकपोलपुलकपल्लवितकोपानलानि कुपि-
तानां तेजस्विना मुखानि । नासौ तपस्वी जानात्येवं यथाभिचारा
इव विप्रकृताः सद्यः सकलकुलप्रलयमुपहरन्ति मनस्विनः । जलेऽपि
ज्वलन्ति ताडितास्तेजस्विनः । सकलवीरगोष्ठीवाह्यस्य तस्यैवेदम्
उचितमनुत्तारनिरयनिपातनिपुणं कर्म । मनस्विनां हि प्रधान-
प्रधानधने धनुषि प्रियमाणे सति च कमलाकलहंसीकेलिकुवलय-
कानने कृपाणे कृपणोपायाः पयोधिमथनप्रभृतयोऽपि श्रीसमुत्था-
नस्य किं पुनरीदृशाः । येषाञ्च धात्वा धरित्रीं तातुं नियुक्ताः स्वयम-
समर्था इव कुलिशकर्कशभुजपरिघप्रहरणहेतोर्द्विरन्ति गिरयोऽपि

लोहानि ते कथमिव बाहुशालिनो मनसापि विमलयशोबान्धवा
 ध्यायेयुरकार्षम् । सर्वग्रहाभिभवभास्वराणां हि सुभटकराणाम्
 अग्रतो दिग्ग्रहणे पद्मवः पतङ्गकराः । महामहिषश्चक्रतरङ्गभङ्ग-
 भङ्गरभीषणान्तराला लोकप्रवादमात्रेण दक्षिणाशा परमार्थतो
 भटभ्रुकुटिरधिवासो यमस्य । चित्तञ्च यदुन्मत्तसिंहनादानां
 सहसा साहसरसरोमासुकण्टकनिकरेण सह न निर्वाण्ति सटाः
 मूराणां रणेषु । इयमेव च चतुःसागरसम्पत्तस्य भृतिसम्भारस्य
 भाजनं प्रतिपत्तदाहि दारुणं बडवामुख वा महापुरुषहृदयं वा ।
 तेजस्विनः सकलाननवाप्य पयोराशिसहजस्य कृतो निवृत्तिः
 उष्णः । दृष्याविततविपुलफणाभारो भुजङ्गानां भर्ता विभर्त्ति
 यो भोगेन हृत्पिण्डमेव केवलम् । अप्रतिहतशासनाकाम्यपभाग
 सुखरसन्तु रसाया टिक्कुञ्जरकरभारभास्वरप्रकांष्टा वीरबाहव
 एव जानन्ति । रविरिवोन्मुखपद्माकरगृहीतपादपद्मवः सुखेना-
 खण्डिततेजा दिवसान्धयति मूरः । कातरस्य तु शशिन इव
 हरिणहृदयस्य पाण्डुरष्टस्य कृतो द्विगात्रमपि निचला लक्ष्मीः ।
 अपरिमितयशःप्रकरवर्षां विकासो वीररसः । पुरःप्रवृत्तप्रताप
 प्रहताः पन्थानः पौरुषस्य । शब्दविद्रुतद्विपन्ति भवन्ति द्वाराणि
 दर्पस्य । शस्त्रालोकप्रकाशिताः मूल्या दिगः शौर्यस्य । रिपुबधिर-
 शीकरासारेण भरिव श्रीरप्यनुरज्यते । बह्वनरपतिमुकटसर्गा-
 शिलाशयकोणकपणेन चरणनखराजिरिव राजताप्यज्ज्वली-
 भवति । अनवरतशस्त्राभ्यासेन करतलानीव रिपुमुष्णानि श्यामी-
 भवन्ति । विविधवर्णबहुपट्टकयतैः शरीरमिव यशोऽपि ध्वज-
 भवति । कवचिषु रिपूरःकवाटेषु पात्यमानाः पावकशिखाभिव
 श्रियमपि वमन्ति निष्ठुरा निस्त्रिंशप्रहाराः । यदाहितहतस्त्रजनां

मनस्विजनो द्विषद्योषिदुरस्ताडनेन कथयति हृदयदुःखम् परुषासि-
 क्षतानिपातपवनेनोच्छ्वसिति निरुच्छ्वसितशत्रुशरीराशुधारा-
 पातेन रादिति विपक्षवनिताचक्षुषा ददाति जलं स श्रेयान्
 नेतरः । न च स्वप्रदृष्टनष्टेष्विव क्षणिकेषु शरीरेषु निवभ्रन्ति
 बन्धुबद्धिं प्रवृद्धाः । स्थायिनि यशसि शरीरधीर्वीराणाम् ।
 अनवरतप्रज्वलिततेजःप्रसरभास्वरस्वभावश्च मणिप्रदीपमिव कलुषः
 कज्जलमलो न स्पृशत्येव तेजस्विनं शोकः । स त्वं सत्त्ववताम्
 अग्रणीः प्राग्रहरः प्राञ्चानां प्रथमः समर्थानां प्रष्टोऽभिजातानाम्
 अग्रेसरस्तेजस्विनाम् आदिरसश्चिष्णूनाम् । एताश्च सततसन्निहित-
 धूमायमानकोपाग्नयः सुलभासिधारातोयद्वयौ विकटबाह्वन-
 च्छायोपगूढा धीरताया निवासशिशिरभूमयः स्वायन्ताः सुभ-
 टानामुरःकवाटभित्तयः । यतः किं गौडाधिपेनैकेन तथा कुरु
 यथा नान्योऽपि कश्चिदाचरत्येवं भूयः । सर्वोर्ब्ध्वशृङ्गाकामुकानाम्
 अलीकविजिगीषूणां सञ्चारय चामराण्यन्तःपुरपुरन्ध्रनिश्वसितैः ।
 उच्छिन्धि रुधिरगन्धान्धगटध्रमण्डलच्छादनैश्चलच्छायाव्यसनानि ।
 अपाकुरु कटुष्णशोणितोदकस्वेदैः कुलक्ष्मीकुलटाकटाक्षचक्षुराग-
 रोगान् । उपशमय निश्चितशरशिरावेधैरकार्थशैर्वाश्ववधून् ।
 उन्मूलय लोहनिगडापीडमालामलमहौषधैः पादपीठदोहदु-
 र्ललितपादपटुमान्द्यानि । क्षपय तीक्ष्णाश्चाक्षरक्षारपातैर्जयशब्द-
 श्रवणकर्णकण्डूः । अपनय चरणनखमरौचिचन्दनचर्च्चाललाट-
 लेपैरनमितक्षमितमस्तकस्तम्भविकारान् । उद्धर करदानसन्देश-
 सन्दर्शैर्द्विषदप्योक्तावमाणदुःशीललीलाशल्यानि । भिन्धि मणि-
 पादपीठदीधितिप्रदीपिकाभिः शुष्कसुभटाटोपप्लुङ्गटिबन्धान्-
 कारान् । जय चरखलङ्घनलाघवगलितशिरोगौरवारोमैर्मिञ्जाभि-

मानमहासन्निपातान् । अहं सततमेवास्मिन्मुकुलितकरसम्पुटो-
 स्मभिरिच्छसन्गुणकिष्ककाकक्षानि । तेनैव ते गतः पिता पिता-
 महः प्रपितामहो वा तमेव मा हासीस्त्रिभुवनसृजणीयं पन्थानम् ।
 अपहाय कुपुष्वोचिता शुचं प्रतिपद्यस्व कुलकमागतां केसरीव
 कुरङ्गौ राजलक्ष्मीम् । 'देवं देवभूयं गते नरेन्द्रे दुष्टगौडभुजङ्ग-
 जग्धजीविते च राज्यवर्द्धने दृष्टोऽस्मिन् महाप्रसूये धरणी-
 धारणायाधुना त्वं शेषः । समाश्वासय अशरणाः प्रजाः ।
 स्थापतीना शिरसु शरत्त्ववितेव कलाटस्तपान् प्रवच्छ पाद-
 न्यासान् । अहितानामभिनवसेवादीक्षादुःखसन्तप्रश्नासधूम-
 मण्डलैर्मध्यम्यथैः प्रचलितचूडामणिचक्रवालवालातपैश्च आयाचि
 कक्षावपादताम् । अपिच हते पितर्येकाकी तपस्वी जगैः सह
 संवर्द्धितः सहजब्राह्मण्यमार्हवसुकुमारमनाः क्षतनिचयचण्ड-
 चापवनाटनिटाकारनादनिर्भादीक्षतदिग्गजं गुह्यज्याजास-
 ज्जनितजगज्ज्वरं समग्रमुद्यतमेकविंशतिकृत्यः क्षतवंशमुत्थातवान्
 राजन्वकं परशुरामः किं पुनर्मेसर्गिककावकार्कश्यकुलिशायमान-
 मानसो मानिना मूर्खन्यो देवः । तददौव क्षतप्रतिज्ञो गृहाण
 गौडाधमजीवितध्वस्ये जीवितसङ्कुलनाकुलकालाकाण्डदण्ड-
 यात्राचिह्नध्वजं धनुः । नञ्जायमरातिरक्तचन्दनचर्चाशिमिरोप-
 चारमन्तरेण शाय्यति परिभवानक्षपयमानदेहस्य देवस्य दुःख-
 दाहज्वरः सुदाहणः । निकारसन्तापशान्दपावपरिचये हि
 हिडिम्बापुष्पनाम्नादितमिव रिपुवधिराक्षतममन्दरोपायमपावि
 पवनामजेन । जामदग्नेन च शाय्यन्मन्युशिशिषिणासंवरकुशाव
 मानस्यशशीतलेषु क्षन्तिवक्षतजङ्गदेवस्त्रावि । इत्युक्त्वा व्यरंसीत् ।
 देवस्तु इष्यन्तं प्रज्जवादीतुः करणीयमेवेदमभिहितं मात्मेन ।

इतरथा हि मे गृहीतभुवि भोगिनायेऽपि दायाददृष्टिरीर्ष्यालोः
 भुजस्य । उपरि गच्छतीच्छति निग्रहाय ग्रहगणेऽपि भ्रूलंता
 चलितुम् । अनमत्सु शैलेष्वपि कचग्रहमभिलषति दातुं करः ।
 तेजोदुर्विदग्धानर्ककरानपि चामराणि ग्राहयितुमीहते हृदयम् ।
 राजशब्दरूपा मृगराजानामपि शिरांसि वाञ्छति पादः पादपीठी-
 कर्तुम् । स्वच्छन्दलोकपालस्वेच्छागृहीतानामाक्षेपादेशाय दिशाम्
 अपि स्फुरत्यधरः किं पुनरीदृशे दुर्जाते जाते जातामर्षनिर्भरे च
 मनसि नास्त्येवावकाशः शोकक्रियाकरणस्य । अपिच हृदयविषम-
 शल्ये मुसल्ये जीवति जाल्मे जगद्विगर्हिते गौडाधिपाधमचण्डाले
 जिह्रेमि शुष्काधरपुटः पोटेव प्रतिकारभूत्यं शुचा सूत्कर्तुम् ।
 अक्षतरिपुबलाबलाविलोललोचनोदकदुर्दिनस्य मे कुतः करयुगलस्य
 जलाञ्जलिदानम् । अदृष्टगौडाधमचिताधूममण्डलस्य वा चक्षुषः
 स्वल्पमप्यश्रुसलिलम् । अयता मे प्रतिज्ञा शपामि आर्यस्यैव
 पादपांशुस्यर्धेन यदि परिगणितैरेव वासरैः सकलचापचापल-
 दुर्ललितनरपतिचरणरणरणायमाननिगडा निगौंढां न करोमि
 मेदिनीं ततस्तनूनपाति पीतसर्पिषि पतङ्ग इव पातकी पातया-
 स्यात्मानम् । इत्युक्त्वा च महासन्धिविग्रहाधिकृतमवन्तिमन्तिक-
 स्थमादिदेश लिख्यताम् आ रविरथचक्रचीत्कारचकितचारण-
 मिथुनमुक्तसानोरुदयाचलात् आ त्रिकूटकटककुट्टाकटङ्कलिखित-
 काकुत्स्थलङ्कालुण्ठनव्यतिकरात् सुवेलात् आ वारुणीमद-
 स्खलितधरुणवरनारीनूपुररवमुखरकुहरकुक्षेरस्तगिरेः आ गुह्यक-
 नेहिनीपरिमलसुगन्धिगन्धपाषाणवासितगुह्यगृह्याञ्च गन्धमादनात्
 सव्येषां रात्र्यां सज्जीक्रियन्तां कराः करदानाय शस्त्रग्रहणाय वा
 गृह्यन्तां दिशश्चामराणि वा नमन्तु शिरांसि धनूंषि वा कर्ष्यपूरी-

निवन्तामात्रा मौर्ख्यो वा शेषरीभवन्तु पादरक्षांसि शिरस्त्राणि
वा घटन्तामन्त्रावः करिषटावन्त्रा वा मुच्यन्तां भूमय दूयवो वा
समावन्त्र्यन्तां वेत्तवटवः कुन्तवटवो वा सुहृदः निवन्तामात्रा
मञ्जरक्षनक्षेत्रेषु क्षपाक्षर्पक्षेत्रेषु वा । परागतोऽहम् । पङ्कोरिष मे कुतो
निवन्तिस्तावत् दावन्त स्तः । सर्वज्ञोपान्तरसञ्चारी सकलनरपति-
मुकुटमण्डिगिरालोकमयः पादलेपः । इति कृतनिश्चयस्य मुक्ता-
स्थानो विस्मृजितराजलोकः क्षान्दारम्भाक्षाङ्गी सभामत्यासीत् ।
उज्जाय च स्वस्ववन्निःशेषमाङ्गिकमकार्णीत् । अगस्त्य इर्षप्रसर-
द्वय श्रुतप्रतिज्ञस्य शास्त्रदुष्टा द्विसंक्षिप्तभवनस्य ।

ततश्च निजाधिकारापहारभीत इव भगवत्पि कापि गते
गततेजस्वस्त्रिमभासि तामरसवनेष्वपि निगूढशिक्षीमुष्णाकापेषु
तासादिषु सङ्कुच्यतु विङ्गनक्षेत्रेष्वपि समुपसङ्गतनिजपक्षविशेष-
निचलेषु भियेवाप्रकटीभवन्तु भुवनव्यापिनीं सञ्ज्ञा प्रतिज्ञामिव
मानयति नतशिरसि घटिताम्बुलिबने जने सक्ते स्वपदपुत्रि-
चकितदिक्पाकदीयमानार्थलिङ्गलोकप्राकारवज्रवास्त्रिव वज्र-
तिमिरमाकातिरोधीयमानासु द्विषु प्रदोषास्थाने नातिचिरं
तस्यौ । नमःपक्षोक्तलोकांशुकपवनकल्पितशिक्षेर्दीपिकाचक्रवाकैः
अपि प्रवक्ष्यमान इव प्राविशोद्भोक्तुं प्रतिविष्टपरिजनप्रवेश-
श्रवणगृहं प्राविशत् । उज्जानश्च सुमोचाङ्गानि श्रवणतले । दीप-
द्वितीयश्च तमधिसर इव सञ्जावसरसारसा आह्वयोक्तो जग्राह ।
जीवन्नामिव कुद्वे निमीलितलोचनो दहर्माप्रणम् । उपर्युपरि
आह्वयौचित्याग्नेविष्ट इव प्रसक्तुः आवाः । चवत्तांशुकपटान्तेनेव
चाशुजलस्येन मुच्यमाणासु निःशब्दमतिचिरं दरोह चकार च
चेतसि क्वं नाम आकृतेकाह्वया कुतः परिवामोऽवमीहयः । इव-

शिलासङ्घातकर्कशकायबन्धाप्तातादचलादिव लोहधातुः कठिनतर
 आसीदार्थः । कथञ्चास्य मे हतहृदयस्वार्थविरहे सलदपि मुक्तम्
 उच्छ्वसितम् । इयं सा प्रीतिर्भक्तिरमुदन्तिर्वा । बालिशोऽपि कः
 सम्भावयेदार्थमरणो मञ्जीवितम् । तत्तादृशमैक्यमेकपद एव कापि
 गतम् । अयत्नेनैव हतविधिना पृथक्कृतोऽस्मि । दग्धरोषान्तरित-
 शुचा सुचिरं रुदितमपि न मुक्तकण्ठं गतदृष्टेन मया । सर्वथा
 लूतातन्तुच्छटाच्छिदुरास्तुच्छाः प्रीतयः प्राणिनाम् । लोकयात्रा-
 मात्रनिबन्धना बान्धवता यतोऽहमपि नाम पर इवार्थे स्वर्गस्थे स्वस्थ
 इवासे । किञ्च दैवहतकेन फलमासादितमीदृशि परस्परप्रीति-
 बन्धनिर्हतहृदये सुखभाजि भ्रातृमित्रेण विघटिते । तथा
 चन्द्रमया द्रव जगदाह्लादिनो लोकान्तरीभूतस्य लग्नचिताग्नय
 इवार्थस्य त एव दहन्ति गुणाः । इत्येतानि चान्यानि च हृदयेन
 पश्यदेवत । प्रभातायाञ्च शर्व्व्यां प्रातरेव प्रतीहारमादिदेश
 अथेषगजसाधनाधिकृतं स्कन्दगुप्तं द्रष्टुमिच्छामीति ।

अथ वृणुमत् प्रभावितवज्रपुरुषपरम्पराह्वयमानः स्वमन्दिरात्
 अप्रतिपालितकरेणुचरणाभ्यामेव सन्जान्तः ससम्पन्नमैर्दण्डिभिः
 उत्सार्थमाणजनपदः पदे पदे प्रपद्यतः प्रतिदिशभिभविष्वरान्
 वरवारणानां विभावरौवाकर्त्तः पृच्छन् उच्छ्रितशिखिपिच्छलाब्धित-
 वंशकृतावनगहनगृहीतदिगायामैर्बिम्बवनैरिव वारणबन्धविमर्हो-
 द्योगागतैः पुरःप्रधावद्भिरनायकमण्डलैराघोरगणैश्च भरकत-
 हरितवासुमुष्टीश्च दर्शयद्भिर्नवप्रहमघपतींश्च प्रार्थयमानैश्च लब्धाभि-
 मन्तमन्तमातङ्गसुहितमानसैश्च सुदूरदुष्यस्त्य वमस्यद्भिराजीविमातङ्ग-
 मदानमांश्च निवेदयद्भिः, डिङ्गिमाघिरोहचाय च विद्यापयद्भिः
 मन्नादपतितापराधपङ्कतद्विरहैः, चतुर्दशैर्नृपैश्च विरमतो गच्छन्तिः

अभिनवोपहतैश्च कर्पटिभिर्वारिष्वाप्तिस्तुल्यप्रत्यायवा चावमानैः
 गणिकाधिकारिनसैविरसव्यान्तरैश्चिन्तकरैः कर्षास्वकरिणुका-
 संकथनाकुसैश्चासितपल्लवचिह्नाभिररस्यपालपङ्क्तिभिश्च निष्पा-
 दितनवग्रहनागनिबहनिवेदनोद्युताभिरुत्तन्निहततुङ्गतोत्तवनाभिर्महा-
 मात्रपेटकैश्च प्रकटितकर्करिर्कर्षकर्षपुटैरभिनवगजसाधनसङ्घरस्य-
 वाक्तीनिवेदनविसर्जितैश्च नागवनवीचीपाकदूतदृन्दैः प्रतिलुप्यप्रत्य-
 वेक्षितकरिकवलकूटैः कटभङ्गसंग्रहं ग्रामनगरनिगमेषु निवेदयमानैः
 कटककदम्बकैः क्रियमाणकोलाहलः स्वामिप्रसादसम्भूतेन महाधि-
 काराविष्कारेण स्वाभाविकेन चावटव्याभोगेनोडासीनोऽप्यादिद्य-
 न्निव असङ्कारिककर्णशङ्कसम्पत्सम्पादनाय समुद्रानाद्यापयन्निव
 शृङ्गारगैरिकपङ्काङ्गरागसंग्रहाय गिरीन् सुखान्निव दिग्गजा-
 धिकारं ककुभामैरावतमिवापहरन् इरेर्हरपदभरणमितकैलास-
 गिरिगुहभिः पादव्यासैर्गुहभारग्रहणगर्भशुद्ध्याः सङ्हरन्निव गतिवश-
 विलोलस्य क्वाजागुलज्वस्य बाह्वदम्बद्वयस्य विशेषैराकानगितला-
 खम्बमालामिबोभयतो निष्पन्नन् ईषदुक्तकलम्बमाधरतिष्पेनाकत-
 रसस्वादुना नवपल्लवकोमलेन कवलेनेव श्रीकरिणुकां पिबोभवन्
 निजगृपवंग्रहीर्षं नाशवंग्रं दधानः अतिस्निग्धमधुरनवकाविद्यास-
 तवा पीतजीरोदनेव पिवन्तीश्वरपुष्पायामेन दिशामायामम्
 मेवतटादपि विकटविपुलालिकः सततमर्वाञ्जलवञ्जलवञ्जला-
 प्रकटिवशादिव नितान्तावतनीलकोमलवञ्जलविस्तृभगेन स्वभावजङ्ग-
 रेण कुन्तलबाणवह्नरीवेक्षितविलासिना नृमन्निव नृभालोकानर्क-
 करान् वर्ज्यरकेण अरिपक्षपरिपक्षपरित्यक्तकार्मुककर्मापि सकल
 दिनन्तश्रवमाणगुहगुहध्वनिः आलस्यसमस्तमत्तमातङ्गवाधनोऽपि
 अस्सटो मद्देन भ्रुतिमानपि खेदमयः पार्थिवोऽपि रुच्यमयः

करिणामिव दानवतामुपरि स्थितः स्वामितामिव स्पृहणीयां
भृत्यतामप्यपरिभूतामुद्वहन्, एकभर्तृभक्तिनिचलां कुलाङ्गनामिवा-
नन्यगम्यां प्रभुप्रसादभूमिमाकूढो निष्कारणबान्धवो विदग्धानाम्
अभूतभृत्यो भजताम् अक्रीतदासो विदुषां स्कन्दगुप्तो विवेश
राजकुलम् । दूरादेव चोभयकरकमलावलम्बितं स्पृशन् मौलिना
महीतलं नमस्कारमकरोत् ।

उपविष्टं नातिनिकटे तं तदा जगाद देवो हर्षः श्रुतो
विस्तर एवास्त्वार्यव्यतिकरस्य अस्त्राच्चिकीर्षितस्य च । अतः शीघ्रं
प्रवेश्यन्तां प्रचारनिर्गतानि गजसाधनानि । न चाभ्यत्यतिस्वल्पम्
अप्यार्यपरिभवपीडापावकः प्रयाणविलम्बम् । इत्येवमभिहितञ्च
प्रणम्य व्यञ्जयितुं कृतमवधारयत् स्वामी समादिष्टं किन्तु स्वल्पं
विश्रम्यमस्ति भर्तृभक्तः । तदाकर्णयत् देवः । देवेन हि पुण्यभूतिवंश-
सम्भूतस्याजात्यस्य सहजस्य तेजसो दिङ्मरिकरप्रलम्बस्य बाहु-
युगलस्यासाधारणस्य च सौररस्त्रेहस्य सर्वं सहस्रमुपक्रान्तम् ।
काकोदराभिधानाः कृपणाः कृमयः अपि न क्षयन्ति विकारं किमुत
भवाद्दशासोजसां राशयः । केवलं देवपुण्यवर्द्धनोदन्तेन कियदपि
दृष्टमेव देवेन दुर्जनदौरात्म्यम् । ईदृशाः खलु लोकस्वभावाः
प्रतिग्रामं प्रतिनगरं प्रतिदेशं प्रतिद्वीपं प्रतिदिशं च भिक्षा वेशाश्च
आकाराश्च आहाराश्च व्यवहाराश्च जनपदानाम् । तदिवम्
आत्मदेशाचारोचिता स्वभावसरलहृदयजाः त्यज्यतां सर्वविज्ञा-
सिता । प्रमाददोषाभिषङ्गेषु श्रुतबहुवार्त्ता एव प्रतिदिनं देवः ।
यथा नागकुलजन्मनः सारिकाश्रानितमग्न्यस्वासीकाशो नाग-
सेनस्य पद्मावल्याम् । शुक्रश्रुतरहस्यस्य च श्रीरशीर्जित श्रुतवर्णनः
त्रावन्त्याम् । स्वप्रावमानस्य च मन्त्रभेदोऽभूत्कृत्यवे क्षणिकावल्यां

स्वर्चबूदस्य । चूडामखिलम्लेषप्रतिबिम्बवाचिताक्षरा च चाव-
 चामौकरचामरपाहिणी वमतां वधौ ववनेश्वरस्य । लोभवञ्जलस्य
 वञ्जलनिधि निधानमुत्पन्नस्तमुत्पन्नातच्छम्भप्रभाविनी ममन्व भावुरं
 दृष्टद्वयं विदूरथवक्रचिनी । नागवनविहारशीलस्य मायाभातझाङ्गात्
 निर्गता महासेनसैनिका बन्धपतिं न्यवसिधुः । अतिदक्षितलास्यस्य
 च शैलूषमध्यमध्यास्य सङ्घानमसिसतया चञ्चालमिवाकुनादग्नि-
 मित्राग्रजस्य सुमितस्य मितदेवः । प्रियतन्त्रीबाहुस्य अलापुणीषा
 अन्तरशुषिरनिहितनिशिततरवारयो गान्धर्वच्छात्रच्छात्रानः
 चिच्छिदुरध्मकेश्वरस्य शरभस्य शिरो रिपुपुत्राः । प्रज्ञातुर्जलस्य
 वलदर्शनव्यपदेशदर्शिताशेषसैन्यः सेनानीरनार्जो मौष्यं दृष्टद्वयं
 पिपेध पुष्पमितः स्वामिनम् । आचर्य्यकृद्वहली च चल्होषतिः
 दक्षदोपनतयवननिर्भ्रितेन नभसलयाविना यन्त्रयानेनानीयत
 कापि । काकवर्णः शैशुनारिच नगरोपकण्ठे कण्ठे निचलते
 निक्षिंशेन । अतिस्त्रीसङ्करतमनङ्गपरवशं शुक्लममात्रो वसुदेवो
 देवभूतिदासीदुहित्वा देवीव्यञ्जनवा भीतजीवितमकारयत् ।
 असुरविवरव्यसनिनं आपन्नकुरपरिमितरमणीमन्त्रिणपुरम्भ-
 ऋष्याङ्गादरस्यया मागधं गोधनगिरिसुहृत्तया स्वपियं मेकला-
 धिपमन्त्रिणः । महाकालमहे च महाभासविक्रयबादवाहसं वेतालः
 तालजङ्घो जवान जघन्यजं प्रद्योतस्य पौषकिं कुमारं कुमार-
 सेनम् । रसावनरसाभिनिवेशिनच वैद्यव्यञ्जनाः सुवक्त्रपुत्रवान्तर-
 प्रकाशितौषधगुणा गन्धपतेर्विदेहराजसुतस्य राजवज्रावमजम-
 यन् । स्त्रीविश्लासिनच महादेवीष्टहृदभित्तिभाक् ज्ञाता मङ्ग-
 सेनस्यामवभृत्पदे काशिकस्य वीरसेनः । मातृवदनीवदक्षिणा-
 तलनिषण्ण तनवोऽहं तनवमभिषेक्तुमामस्य दम्पत्य कक्षपाधिपतेः

अभवन्मृत्यवे । उत्सारकश्चिञ्च रश्मिः ससचिवमेव दूरीचकार
 चकोरनाथं शूद्रकदूतचन्द्रकेतुं जीवितात् । जगदासक्तस्य च
 मयूतो गण्डकान् उद्दण्डनङ्गलनलवननिलीनाश्च चम्पाधिपचक्र-
 चरभटाश्चामुण्डोपतेराचेसुः प्राणान् पुष्करस्य । बन्दिरागपरश्च
 परप्रयुक्ता जयशब्दमुखरमुखा मङ्गा मौखरिं मूर्खं क्षत्रवर्माणां सुद-
 खनन् । अरिपुरे च परकलत्रकामुकं कामिनीवेशगुप्तश्च चन्द्रगुप्तः
 शकपतिमशातयदिति । प्रमत्तानां प्रमदाकृताः प्रमादाः श्रुति-
 विषयमागता एव देवस्य । यथा मधुमोदितं मधुरकसंलिप्तैर्लाजैः
 सुप्रभा पुत्रराज्यार्थं महासेनं काशिराजं जघान । व्याजजमित-
 कन्दर्पदर्पा च दर्पणेन क्षुरधारापर्यन्तेनायोध्याधिपतिं परन्तपं
 रत्नवतीं जाह्नवम् विषसूयं बुद्धितमकरन्देन च कर्णेन्द्रीवरेण
 देवकी देवरानुरक्ता देवसेनं सौहृदम् योगपरागविरसवर्षिणा च
 मणिनूपुरेण वल्लभा सपत्नीरूपा वैरन्ध्रं रन्तिदेवम् वेशीनिगूढेन
 च शस्त्रेण बिन्दुमतीं वृष्णिं विदूरथम् रसदिग्धमध्येन च मेखला-
 मणिना हंसवतीं सौवीरं वीरसेनम् अहश्चागदक्षिप्रवदना च
 विषवारूणीगण्डूषपायनेन पौरवीं पौरवेश्वरं सोमकम् । इत्युक्त्वा
 विरराम स्वाभ्यादेशसम्पादनाय च निर्जगाम ।

देवोऽपि हर्षः सकलराज्यस्थितीचकार । ततश्च तथा कृत-
 प्रतिज्ञे प्रयाणं विजयाय दिशां समादिशति देवे हर्षे गतायुषां प्रति-
 सामन्तानामुद्वसितेषु बह्वरूपास्तुपलिङ्गानि वितेजिरे । तथाहि
 अविप्रकृष्टाः कालदूतदृष्टय इव दूतसतसेवचटुलाः कृष्णशरत्रेणयः ।
 प्रचलितलङ्घनीनूपुरप्रखादप्रतिभा मधुसरवासङ्घातकङ्कारा जङ्गा-
 दिरेऽजिरे । विवृतविकृतवदनविवरविकृतवक्त्रविसरा वासरेऽपि
 विरसं विरेकुञ्चिरमग्निबार्धमग्निवाः शिवाः । अथपिशितप्रकटप्रखला

इव कपिपोतकपोलकपिलपञ्चतवः काननकपोताः वेतुः । आमन्त्रव-
माया इव द्युधुरकालकुसुमानि समसुपवनतरवः । तरलकरतल-
प्रहारप्रक्षतपवोधरा हृद्दुः प्रसभं सभायालभञ्जिकाः । दहयुः
आसन्नकचप्रहभयोद्धान्तोत्तमाङ्गमिवाङ्गानं कवन्धमादयोर्दरेषु
योधाः । चूडामखिषु चञ्चलशङ्ककमललक्षणाः प्रादुरभवन् पाद-
न्यासा राजमहिषीयाम् । चेटीचामराश्वककादधावन्त पाणि-
पङ्कवात् । प्रणयकलहेऽपि दन्तदृष्टाश्चिरमभवन् भटाः पराङ्मुखा
मानिनीनाम् । करिकपोलेषु व्यष्टन्त मधुलिङ्गा मधुमदिरा-
पानगोष्ठः । समाव्रातयममहिषगन्धा इव ताव्यन्तः क्षालकरिम्
अपि हरयो हरितं नवयवसं न चेदः । चलवसयावनीवाचाल-
वाखिकातालिकातोद्युक्तालिता अपि न नवतुर्गन्धा मन्दिर-
मयूराः । निशि निशि रजनिकरहरिणनिहितनवन इवोन्मथः
तारमुपतोरणमकारणम् अकाशीत् कौलेयकण्ठः । गण्यवन्तीव
गताबुधसर्जनतरलया तर्ज्या दिवसमाट बाटकेषु कोटवी ।
कुट्टिमेषु कुट्टिलहरिणसुरवेष्णीतरङ्गिण्यः शम्भराजयाज्जावन्त ।
जनिवेषणीवन्धानि निरञ्जनरोचनारोचोऽपि चयकमधुनि मुख-
कमलप्रतिविम्बान्यदृश्यन्त भटीनाम् । समासकात्मापचारर्चकिता
इव चकम्पिरे भूमवः । बन्धासङ्काररक्तचन्दनरसच्छटा इवालव्यन्त
नूराणां पतिताः शरीरेषु विकसितवन्धूककुसुमशोषितशोषिवः
शोषितदृष्टवः । धर्मग्रीकुर्माणा इव विमलरौत्रिचयम् अचिरल-
क्षुरत्कुल्लिङ्गाङ्कारोद्धारदग्धतारागन्धा नव्यः पतन्तः प्रणयकानो
न अरंसिधुवस्त्रादृष्टाः । प्रथममेव प्रतीहारीवापहरन्ती प्रति-
भवनं चामरातपन्नव्यजमानि यदथा बन्धाम बाधेति ।

इति श्रीवाचस्पतिकृते हृदयचरिते षष्ठ उच्छ्वासः ।

सप्तम उच्छ्वासः ।

अङ्गनवेदी वसुधा कुल्याऽजर्लधिः स्थली च पातालम् ।

वल्लीकच सुमेरुः क्षतप्रतिज्ञस्य वीरस्य ॥

धृतधनुषि बाहुशालिनि शैला न नमन्ति यत्तदाश्चर्यम् ।

रिपुसंज्ञकेषु गणना कैव वराकेषु काकेषु ॥

अथ व्यतीतेषु च केषुचिद्विषेषु भौहर्त्तिकमण्डलेन यतयः
सुगणिते सुप्रशस्तेऽहनि दत्ते चतसृणामपि दिशां विजययोम्ये
दण्डयात्रालम्बे सलिलमोक्षविशारदैः शारदैरिवाम्बोधरैः काल-
धौतैः शातकुम्भैश्च कुम्भैः स्नात्वा विरचञ्च परमया भक्त्या
भगवतो नीललोहितस्याञ्जाम् चर्द्धिषं कृत्वा प्रदक्षिणावर्त्त-
शिखाकलापमाशुशुक्ष्णं दत्त्वा द्विजेभ्यो रत्नवन्ति राजतानि
जातरूपमयानि च सहस्रशस्तिलपात्राणि कनकपत्रलतालङ्कृतशफ-
रङ्गशिखरा गाञ्छार्जुदशः समुपविश्य विततव्याघ्रचर्मणि भद्रासने
विलिप्य प्रथमविलिप्तायुधो निजयशोधवलेनाचरणतश्चन्दनेन
शरीरं परिधाय राजहंसमिथुनलक्ष्मणी सदृशे दुकूले परमेश्वर-
चिह्नभूतां शशिकलामिव कल्पयित्वा सितकुसुमसुखमालिकां
शिरसि नीत्वा कर्णाभरणमरकतमयूखमिव कर्णगोचरतां गोरो-
चनाच्छुरितमभिनवं दूर्वापल्लवं विन्यस्य सह शासनवलयेन नमन-
मङ्गलप्रतिसरं प्रकोष्ठे परिपूजितप्रहृष्टपुरोहितकरमकीर्त्यमाद्य-
शान्तिसलिलसीकरनिकराभ्युक्षितशिराः संप्रेष्य महार्हाणि वाह-
नानि वहलरत्नालोकलिप्तकुम्भि च भूषणानि भूभुजां संविभज्य

छिटकार्पटिककुलपुञ्जलोकोचितैः प्रसाददानैश्च विमुञ्च्य बन्ध-
नानि निमुञ्च्य तत्कालस्वरसुरस्येन कवितात्मानमिव चाटादृष्ट-
द्वीपजेतव्याधिकारे दक्षिणं भुजसन्धम् अङ्गमङ्गमिकता सेवकैरिव
सुनिमित्तैरपि समग्रैरग्रतो भवद्भिः प्रसुदितप्रजाजन्ममानजयशब्द-
कोलाहलो हिरण्यगर्भ इव मञ्ज्वाण्डात् सततदुगकरणाव भवनात्
निर्जगाम ।

नातिदूरे च नगरादुपसरस्वति निर्भिन्ते मङ्गति त्वन्मये
समुत्तन्म्रिततुङ्गतोरण्ये वेदीषिनिहितपल्लवलतामहेमकलये वङ्गवन्-
मालादाग्नि धवलध्वजमालिनि भ्रमच्छङ्खवाससि पठद्विजन्मनि
मन्दिरे प्रस्थानमकरोत् । तत्रस्थस्य चास्य ग्रामाक्षपटकिङ्कः
सकलकरणिपरिकरः करोतु देवो दिवसग्रहणमद्यैवावन्धगासनः
यासनानाम् इत्यभिधाय दृष्टाङ्कामभिनवघटितां चाटकमयीं
मुद्रामुपनिन्ये जग्राह च तां राजा । समुपस्थापिते च प्रथमत एव
अतिप्रसङ्गे परिभ्रष्ट्य करकमलादधोमुखी मङ्गीतले पपात मुद्रा ।
मन्दाग्यानपङ्कपटले अदृष्टदि सरस्वतीतीरे स्फुटं व्यराजन्त राजवो
वर्णानाम् । अमङ्गलाशङ्किनि च विधीदति परिजने नरपतिः
अकरोन्मनस्येतत् अतस्त्वदर्शिन्यो हि भवन्त्यविदग्धानां धियः ।
तवाहि एकयासनमुद्राङ्का भूर्भवतो भविष्यतीति निवेदितमपि
निमित्तेन अन्यथा दृष्टवन्ति ग्राम्याः । इत्यभिन्त्य मनसा मङ्गा-
निमित्तं तत् सौरसङ्खसन्निगतसीमां ग्रामाणां शतमदात् द्विजेभ्यः
निनाय च तत्र तं दिवसम् । प्रतिपक्षावां शर्म्भ्यां सञ्जानितसर्म्भ-
राजलोकः सुखाय ।

अथ गच्छति तृतीये वामे सुप्तसमस्तसत्त्वनिःशब्दे दिक्कुञ्जर-
वृन्ममाक्षगङ्गीरक्षनिरताक्षत प्रवाक्षपटङ्कः । अग्रतः स्थित्वा च

सुहृत्तमिव पुनः प्रयाणकोशसङ्क्रामकाः स्पष्टमष्टावदीवन्त प्रहाराः
पटहे पटीयांसः ।

ततो रटपटहे नन्दनान्दीके गुञ्जत्कुञ्जे कूजत्काहले शब्दाय-
मानशङ्के क्रमोपचीयमानकटककलकले परिजनोत्थापनव्याधत-
व्यवहारिणि द्रुतद्रुधनघातघन्यमानकोशिकाकीलकोलाहलकलित-
ककुभि बलाधिकृतबध्यमानपाटीपतिपेटके जनज्वलितोत्कासहस्ता-
लोकलुप्यमानत्रियामातमसि यामचेटीचरणचलनोत्थाप्यमान-
कामिमिथुने कटुककटुकनिर्द्देशनश्चन्द्रिन्द्रोन्मिषन्निषादिनि प्रबुद्ध-
हास्तिकन्यूनीक्रियमाणशब्दागटहे सुप्तोत्थिताश्वीयविधूयमानसटे
रटत्कटकमुखरखनितखन्यमानचौणीपाशे समुत्कील्यमानकील-
शिञ्जानहिम्नोरे उपनीयमाननिगङ्गतालकलरबोत्तालतुरङ्गतुरङ्ग-
माणखुरपुटे लेशिकमुच्यमानमदस्यन्दिदन्तिसन्दानश्चङ्कलाखन-
खननिनादनिर्भरभरितदशदिशि घासपूलकप्रहारप्रच्छेपांसुलकरि-
ष्टप्रसार्यमाणप्रस्फोटितचर्मणि गृहचिन्तकचेटकसंवेद्यमानपट-
कुटीकाण्डपटमण्डपपरिवस्त्रावितानके कीलकलापापूर्व्यमाण-
चिपिटचर्मपुटे संभाण्डायमानभाण्डागारिणि भाण्डागारवहन-
वाह्यमानबहुवलीवाहिके निषादिनिश्चलानेकानेकपारोप्यमाण-
कोशकलसपीड़ापीडसङ्कटायमानसामन्तौकसि दूरगतदक्षदासेरक-
क्षिप्रप्रक्षिप्यमाणोपकरणसम्भारभ्रियमाणदुष्टदन्तिनि तिर्ब्यगान-
मज्जाघनिककरकृच्छ्राकृष्टलम्बमानपरतन्त्रतुन्दिलुन्दीजनजनित-
जनहासे पीड्यमानशारशारिवरतागुणशक्तिगात्रविहारहं हङ्क-
टहङ्कुम्भदकरिणि करिषटाघटमानघण्टाटाङ्कारक्रियमाणकर्णज्वरे
ष्टप्रतिष्ठाप्यमानकण्ठालककदर्थितकूजत्करभे अभिजातराजपुत्र-
प्रेक्षमाणकुप्रयुक्ताकुलकुलीनकुलपुत्रकलत्रवाहने गमनवेलाविप्रलम्ब-

वारणाधोरणान्विषमाद्यनवसेवके प्रसादवित्तपत्तिनीयमाननर-
पतिवह्मभवरवाजिनि चावचारभटसैन्यव्यसमाननासीरमहस्ता-
डम्बरसूतस्त्रासके स्थानपालपथ्याणलम्बमाद्यलवणकलापीकिङ्किणी
नासीसनावसङ्कलिततलसारके कुण्डलीकृतावर्त्तिणीजालजटिल
वह्मभपालाभघटानिवेश्यमानशाखाङ्गे परिवर्त्तकालव्यमाणाङ्ग-
जग्धप्राभातिकवोम्याशनप्रारोहके व्याकोशीजृम्भमाणवासिकघोषे
गमनसम्पन्नमभ्रमदुस्तपडतक्षण तुरङ्गम तन्यमानानेकमन्दराविमर्ह
सञ्जीकृत करेणुकारोहाज्ञान सत्वर सुन्दरीदीयमान मुखालेपने
चलितमातङ्ग तुरङ्ग प्रधावित प्राकृत प्रातिवेशक लोक लस्यमान-
निर्घासयस्यसञ्चये सञ्चरञ्जेलचकाकान्तचकीवति चकचीत्कारि-
गन्त्रीगणगटस्तमागप्रहतवर्त्मनि अकाण्डदीयमानभाण्डभरितान
लुहि निकटवासलाभलभ्यलम्बमानप्रथमप्रसार्यमाणसारसौरभेये
प्रमुखप्रवर्त्तमानमहासामन्तमहानसे पुरःप्रधावज्जलवाहिनि प्रिय
शतोपलभ्यमानासङ्कटकुटीरकान्तरालनिम्गरण करिचरणदलित
मठिकोजितलोकलोपटङ्गन्यमानभेद्यकियमाणासम्भसाक्षिणि संघट-
विघटमानध्याप्रपञ्चीपलायमानक्षुद्रकुटुम्बके कलकलोपद्रवद्रवदू-
द्रविष्यबलीवर्हविद्राणदण्डिज पुरस्सरदीपिकालोकविरलायमान-
लोकोत्पीडप्रस्थितान्तःपुरकरिणीकदम्बके ज्वारांहाज्यमान-
ललितशुनि सरभसचरणनिपतननिचलगमनमुप्रायमानव्यकट-
सूयमानतुङ्गतुङ्गशुषे स्वसवेसरविसंवादिमोदहासिष्यात्यसाहिनि
रजोजग्धजनति प्रयाणसमये प्रतिदिशमागच्छद्भिर्गजवधूसमाच्छदेः
आधोरणैर्द्विधियमाणाहेमपत्रभङ्गशारशाङ्कः अन्तरासनासीना-
न्तरङ्गमृहीतासिभिः ताड्यलिकविध्यमानचामरपद्मैः पश्चिमा
सनिकापितभस्माभरणभिन्दिपालप्रलिकैः पत्रसनाकुटिलकलधौत-

नलकपल्लवितपर्वाणैः पर्वाणपल्लकपरिक्षेपपट्टिकाबन्धनिश्चलपट्टोप-
 धानस्थिरावधानैः प्रचलपादफलिकास्तालनस्त्रायमानपदबन्ध-
 मणिशिलाशब्दैः उच्चित्रनेत्रसुकुमारस्वस्थगनस्थगितजङ्घाकाण्डैश्च
 कार्दमिकपटकल्लाघितपिशङ्गपिङ्गैः अलिनीलमण्डणसतुलासमुत्पा-
 दितसितसमायोगपरभाणैश्च अयदातर्देहविराजमानराजावर्त्त-
 मेचकैः कक्षुकैश्चोपचितचीनचोलकैश्च तारमुक्तासलवकितसवरकवार-
 वाणैश्च नानाकषायकर्जुरकूर्पासकैश्च शुक्रपिच्छच्छायाच्छादनकैश्च
 व्यायामोक्तुप्तपार्श्वप्रदेशप्रविष्टचारुशस्त्रैश्च गतिवशवेक्षितहारलता-
 गललोलकुण्डलोन्मोचनप्रधावितपरिजनैः चामीकरपत्राङ्कुरकर्ण-
 पूरकविषट्मानवाधालबालपायैश्च उष्णीषपट्टावष्टकण्योत्पलनालैश्च
 कुङ्कुमरागकोमलोत्तरीयान्तरितोत्तमाङ्गैश्च चूडामणिखण्डखचित-
 क्षौमचोलैश्च मायूरपत्रायमाणशेखरषट्पदपटलैश्च मार्गागत-
 शारिकशारिवाहवेगदण्डैः पुरश्चञ्चामरकिर्मीरकार्दूरङ्गचर्म-
 मण्डलमण्डनोद्गीयमानचटुलडामरचारभटभरितभुवनान्तरैः आ-
 स्कन्दत्काम्बोजवाजिशतशिञ्जानजातरूपायान रवमुखरितदिक्कुलैश्च
 निर्दयप्रहतलम्बापटहथपटुरवधिरौक्षतश्रवणविवरैः उद्घोष्य-
 माणनामभिः उन्मुखपादातप्रतिपाल्यमानाश्चापातै राजभिरापुपूरे
 राजद्वारम् ।

उदिते च भगवति दिनकृति रात्रिः समायोगग्रहणसमयशंसी
 सखान सञ्ज्ञाशङ्को मुहुर्मुहुः । अथ तच्चिरादिव प्रथमप्रयाण
 एव दिग्विजयाय दिग्गजसमागममिव गमनविलोककर्णताल-
 दोलाविलासैः कुर्वाणवा करेणुकया उच्चमानो वैदूर्यदण्डविकटेन
 उपरि प्रत्युप्तपद्मरागखण्डखचिततया सूर्वोदयदर्शनकोपादिव
 लोहितायतवा ध्रियमाणेन मङ्गलातपत्रेण कदलीगर्भाभधिक-

अदिष्वा नयनेननिर्मितेन द्वितीय इव भोगिनामधिपतिरङ्गसम्भवेन
 कक्षुकेन अक्षतमयनदिवस इव क्षीरोदकेनपटलधवलान्तरवाही
 वाक् एव पारिजातपादप इवाण्डलभूमिमाकृदो विधूयमान-
 चामरमवद्विधूतकर्णपूरकुसुमनक्षरीरजसा सकलभवनपशीकरण-
 चूर्णेनेव दिग्गुरयम् अभिमुखंभूषणमधिषटमानपाटलप्रतिबिम्बम्
 उदयमानं सवितारमपि पिबन्निव तेजसा वज्रलताम्बूलसिन्दूर-
 च्छुरितवा विलभमान इव द्वीपान्तराख्योत्तमुद्रवा अनुरागस्य
 स्फुरन्महाहारमरीचिकवालानि चामराणीव दिशोऽपि प्राचयन्
 राजकेयथोत्थिप्रतिभागया त्रीनपि लोकान् करुणानायासापयन्
 इव सविश्वमं भूलतया द्राघीयसा बाहुप्राकारेण परिलिपन्निव
 रिरक्षवा सप्तापि सागरमहासातान् अखिलमिव क्षीरोदमाधुर्यम्
 आदावोन्नतवा लक्ष्म्या समुपगूढो गाढम् अक्षतमय इव पीयमानः
 कुद्वलोलोत्तानकटकलोकलोचनसहस्रैः स्नेहाङ्गेषु राज्ञां उदयेषु
 गुण्यगौरवेण मज्जन्निव लिप्यन्निव सौभाग्यद्रवेण दृष्टृणाम् अमर-
 पतिरिवाग्रजवधकलङ्कप्रक्षालनाकुलः दृष्टुरिव दृष्टिबीपरिघांधना-
 वधानसङ्कलितसकलमहीभृत्यमुत्थारणः पुरःसरेराजोक्तकारकैः
 सहस्रसङ्घैरर्क इव किरणैः अधिकारघातुर्ज्वलन्तचरणैर्ज्वलन्त्या-
 स्थापननिष्ठुरैः भवपलायमानलोकोत्पीडान्तरिता दृष्टापि दिशो
 प्राचयद्विरिव अक्षितकदलिकासम्प्रातपीतप्रचारं पवनमपि विनये
 स्थापयद्विरिव द्रुतचरणोद्भूतधूलिपटलावधूतान् दिनकरकिरणान्
 अधुत्थारयद्विरिव कमलपत्रकतालोकाविज्ञाप्यमाणं दिनमपि दूरी-
 कुर्जद्विरिव दृष्टिभिरितस्ततः समुत्थार्ज्जमाख्यजनसमूहो निर्जनाम
 नरपतिः ।

अवनमति च विनयनमितवपुषि भवचकितमनसि चक्षन-

शिथिलमणिकनकमुकुटकिरणनिकररुचिरशिरसि विलुलित-
कुसुमशेखररजसि राजचक्रे प्रभामुचां चूड़ामणीनाम् अवाधः
तिर्यश्च उदश्च चक्षन्तो मरीचयः चाधराशय इव सुशकुनसम्पा-
दनाय चेलुः मेघायमानरेणुमेदुरं मन्दिरशिखण्डिन इव खमुड्डीय-
मानाः कोमलकल्पपादपपल्लवचन्दनमालाकलापा इवावध्यन्त दिग्-
द्वारेषु दिक्पालैः प्रणम्यमानश्च नेत्रविभागैश्च कटाक्षैश्च समग्रेक्षितैः
भ्रूवक्षितैश्चार्धक्षितैश्च परिहासैश्च क्रीकालापैश्च कुशलप्रश्नैश्च प्रति-
प्रणामैश्च उन्मत्तभ्रूवीक्षितैश्च आश्वादानैश्च आक्रीणन्निव मान-
मयान् प्राणान् प्रणयदानैः प्रवीराणां वीरो यथानुरूपं विवभाज
राजकम् (१) ।

अथ प्रस्थिते राजनि कलकलतस्तदिङ्गागमूत्काररव इव दूत-
स्ततस्तस्तार तारतरस्तूर्याणां प्रतिध्वनिराशातटेषु । दिग्गजेभ्यः
प्रकुपितानां त्रिप्रसूतानां करिणां मदप्रस्रवणवीथीभिरलिकुल-
कालीभिः कालिन्दीवेणिकासहस्राणीव सस्यन्दिरे । सिन्दूर-
रेणुराशिभिरवृणायमानविम्बे रवावस्तमयसमयं शशङ्किरे शकु-
नयः । करिणां षट्पदकोलाहलमांसलैः कर्णतालनिस्वनैस्तिरो-
दधिरे दुन्दुभिध्वनयः । दोघूयमानश्च सचराचरमाचचाम चामर-
सङ्घातो विश्वम् । अखीयश्वासनिक्षिप्तैः शिथिले सिन्धुवारदाम-
शुचिभिर्निरन्तरमन्तरिक्षं फेनपिण्डैः । पिण्डीभूततगरस्तवक्-
पाण्डुराणि पपुरिव परस्परसंघट्टनष्टाष्टदिशं दिवसमुञ्चचामीकर-
दण्डान्यातपत्रवनानि । रजोरजनीनिमीलितो मुकुटमणिशिला-
वलीबालातपेन विचकास वासरः । राजतैर्हिरण्यैश्च मण्डनक-
भाण्डमण्डलैर्ऋदमानैर्हरितौकताः परिक्रादा हरितो बधिरतां

दधुः । अरिप्रतापानलनिर्मूलनायेव महोष्मशीकरैः शिथेकिरे
 करिणः ककुभां चकम् । चक्षुषामुन्नेषं मुमुषुसडिञ्चसलानि
 घूडामणीनामर्क्षीषि । स्वयमपि विसिन्धिये बलाना भूपालः
 सर्वतो विसिन्धवक्षुश्चाङ्गाक्षीदाशसस्यानसकाशात् प्रतिष्ठमानं
 स्वन्धावारम् अधोक्षजकुन्देरिव युगादौ निघ्नतन्त्रं जीवभोकम्
 अन्धोनिधिमिव कुम्भभुवो वदनात् साशितभुवनमुद्भवन्तम् अर्जुन-
 बाहुदण्डसहस्रसम्पिण्डितोन्मुक्तमिव सहस्रधा प्रवर्त्तमानं प्रवाहम्
 नर्मदायाः । प्रसर तात भाव किं विलम्बसे त्वङ्गति तुरङ्गमः भद्र
 भग्नचरण इव सञ्चरसि यावदमी पुरश्चराः सरभसमुपरि पतन्ति
 बाहयसि किमुद्रं न पश्यसि निर्हय निःशूकशिगुं गयानं वक्ष
 रामिल रजसि यथा न नश्यसि नो पश्यसि गलति गङ्गाप्रसेवकः
 किमेवमित्तर त्वरसे सौरभेय सरणिमपहाय हयमध्यं धावसि
 धीवरि विशसि गन्तुकामा मातङ्गि मातङ्गमार्गम् अङ्ग गलति
 तिरस्त्रीना चणकगोष्ठी गणयसि न मामारटन्तम् अबटमतटेन
 अवतरसि सुखमाद्यु स्यैरिणि सौवीरक कुम्भो भग्नो मन्वरक
 खादिष्यसि गतः सन्निद्यम् उक्षाणं प्रमादय कियच्चिरं विनोपि
 चेट वदराणि दूरं गन्तव्यं किमद्यैव विद्रासि द्वाणक द्वाषीयसी
 दण्डयात्रा विनैकेन निष्ठुरकेण निष्क्रेयमस्त्राकम् अग्रतः पन्थाः
 स्वपुटक स्यावरक यथा न भनञ्चि फाणितस्यार्क्षो गरीयान्
 गण्डकतस्त्रुलभारको न निर्वहति दस्यो दासक मापीणादसुतः
 द्राग् दाम्नेष मुखवासपूलकं कुनोहि को जानाति यवसगतं
 गतानाम् ध्रुव वारय बलीवर्हान् बाहीकरक्षितं क्षेममिदं कञ्चिता
 शकटी शाकरं धुरन्धरं धुरि धवलं निमुञ्च्य यक्षपाणित
 प्रमदाः पिनञ्चि अक्षिणी किं ते स्फुटिते इत इक्षिपक रे

दीव्यसि करिकरदण्डे समद संमई कईमे स्वखसि भ्रातर्भाव
विधुरबन्धो उद्धर पङ्कादनङ्गाहम् इत एहि माणवक घनेभ-
षटासंघट्टसङ्कटे नास्ति निस्तरणम् इत्येवमादिप्रवर्त्तमानानेक-
संलापं क्वचित् स्वेच्छाद्यदितोद्दामसस्यवासविषससुखसम्पन्ना-
पुष्टैः केकिकलैः किलकिलायमानैः मेखवणवठरलम्बनलेशिक-
लुण्ठकषेटचाटचण्डालमण्डलैराण्डीरैः स्तूयमानं क्वचिदसहायैः
क्लेशार्जितकुग्रामकुटुम्बि सम्पादितसीदत्तैरभेयशम्बलसंवाहनाया-
सावेगागतसंयोगैः स्वयं गृहीतगृहोपस्कारणैः द्वयमेका कथञ्चित्
दण्डयात्रा यातु यातु पातालतलं तृष्णाभूनेरभवनिर्भवतु
शिवं सेवा करोतु स्वस्ति सर्वदुःखकूटाय कटकाय इति दुर्विध-
कुलपुत्रकैर्निन्द्यमानम् क्वचिदतितीक्ष्णसलिलस्रोतःपातिनौगतैः
द्वय ग्रथितैरिव पङ्क्तिभूतैर्जनैरतिद्रुतं द्रवङ्गिः कृष्णकठिनस्कन्ध-
गुरुलगुडैः गृहीतसौवर्णपादपीठीकरङ्गकलशपतदूग्राहावगाहैः
प्रत्यासन्नपार्थिवोपकरणग्रहणगर्वदुर्वारैः सर्वमेव वहिः कारयङ्गिः
भूपतिभृतकभारिकैर्महानसोपकरणवाहिभिश्च बद्धवराहवर्धवाग्नी-
णसैः लम्बमानहरिणचटुकचटकजूटजटिलैः शिशुशशकशकपत्न-
वेत्ताग्रसंग्रहसंग्राहिभिः शुक्लकर्पटप्रावृतमुखैकदेशदत्तार्द्रसुद्रागुप्त-
गोरसभाण्डैः तलकतापकतापिकाहस्तकतान्त्रचरकटाहसङ्कटपिटक-
भारिकैः समुत्थार्यमाणपुरोवर्त्तिजनं क्वचित् क्लेशोऽस्माकं फलकाले
अन्य एव विटाः समुपस्थास्यन्त इति मुखरैः पदे पदे पततां
दुर्जलबलीवर्हानां नियुक्तैः खेटने खेटचेटकैः खेद्यमानासंविभक्त-
कुलपुत्रलोकं क्वचिन्नरपतिर्दशनकुब्जलादुभयतः प्रजवितप्रधावित-
ग्रामेयकजनपदं मार्गग्रामनिर्गतैराग्रहारिकजातमैः पुरःसर-
जरन्महत्तरोत्तन्मिताम्भःकुम्भैः उपायनीकृतदधिगुडखण्डकुसुम-

करणैर्घटितपेटकैः सरभसं समुत्थर्यद्भिः प्रकुपितप्रचलदहस्त्रिविधा-
सन्निवृत्तैः दूरगतैरपि स्वबलद्विरपि पतद्विरपि नरेन्द्रनिहितदृष्टि-
भिः असतोऽपि पूर्वभोगपतिदोषानुद्धावद्विः अतिकामानुक्तक-
यतानि च शंसद्विचिरन्तनचाटापराधासाभिदधानैश्चतुर्विधमानधूलि-
पटलं कचिदेकान्तप्रवृत्तांश्चवाचन्यकचर्ष्यमाणागामिगौडविचल्य-
मायसस्त्रसंरक्ष्यम् अपरैरादिटपरिपालकपुत्रपरितुष्टैः धर्मैः
प्रत्यक्षो देव इति स्तुतीगतम्वद्भिः अपरैर्लूयमाननियतसस्त्र-
प्रकटितविषादैः सेतुशुचा सकुटुम्बैरेव निर्गतैः प्रकटप्राण्यच्छेदैः
परितापत्याजितभयैः क राजा कता राजा कोहगा वा राजेति
प्रारब्धनरनाथनिन्दं यथैकैव पदे पदे प्रजविप्रचलदहलपाति-
पेटकागुबद्धैर्गिरिगुडकैरिव उग्यमानैरितस्ततः सञ्चरद्भिः अपरैः
युगपत्परापतितमहाजनयसैक्षितयो विलप्यमानैरनेकजन्तुजङ्गा-
न्तरालनिःसरणकुशलभिः कटिलिकार्थसितसार्दिबहुज्जम्भिः
पतल्लोटलगुलकोणकुठारकीलकुहलखनित्रदात्रयटिभिरपि निः-
सरद्विरावुषो वन्तात् क्षतकलकलम् अन्त्यत सङ्गमो वासिकैः
वृक्षधूलिधूसरितवासजालजालकितजघनैश्च पुराणपर्याणैकदेश-
दोक्षावमानदात्रैश्च शीर्णोर्णायकलशियिलसमलिनमलकुथैश्च प्रभु-
प्रसादीक्षतपाटितपटञ्चरचलञ्चोलकधारिभिश्च धावमानैश्चतुर्विधमान-
धूलिपटलं कचिदेकान्तप्रवृत्तांश्चवारचकचर्ष्यमाणागामिगौड-
विग्रहं कचित् पङ्क्तिप्रदेशपूरणादेशाकुलसकललोकलूयमान-
दहपूलकं कचित् तलवर्तिवेत्तिवेत्तिवितास्यमानशाधिग्रिष्यरगत-
विक्रोशद्विषादिवाङ्मार्गं कचित् कुलएलकपायविवेद्यमानग्रामीय-
ग्रामाक्षटकौलेयकं कचिदन्वोन्वविधवस्यार्होद्गुराराजपुत्रवाङ्मयमान-
वाजिसङ्कटमस्त्रितमनेकहन्तान्ततदा कौतुकजननं प्रलयजलधिम्

इव जगद्ग्रासप्रवृत्ताय प्रवृत्तं पातालमिव महाभोगिनां सुप्तये
समुत्पादितं कैलासमिव परमेश्वरवसतये खटं हृद्यमानसकल-
प्राणिपर्यायं चतुर्युगसर्गकोशमिव प्रजापतीनां क्षेत्रबहुलमपि
तपःकरणमिव कमकारिणं कल्याणानाम एवञ्च वीक्ष्यमाणः कटकं
जगाम ।

आसन्नवर्तिनाञ्च तत्रभवतां मान्वाणां प्रवर्तिताः पन्थानो
द्विविजयाय । अप्रतिहततरङ्गरञ्जसा रघुणा लघुनैव कालेनाकारि
ककुभां प्रसादनम् । शरासनद्वितीयः करदीचकार चक्रं कमागत-
भुजबलाभिजनधनमदावलिप्तानां भूभुजां पाण्डुः । पाण्डवः सव्य-
साची चीनविषयमतिक्रम्य राजसूयसम्पदे क्रुध्यन्नन्धर्वधनुकोटि-
टाङ्कारकूजितकुक्षं हेमकूटपर्यन्तं पराजेष्ट । सकृत्पान्तरितो
विजयस्तरस्त्रिनाम् । सहिमहिमबह्ववहितोऽप्युवाह बाह्वलव्यति-
करकातरः करं कौरवेश्वरस्य किङ्कर इवाकृती द्रुमः । नाति-
जिगीषवः खलु पूर्वं येनात्म एव भूभागे भूयांसो भगदत्तदन्त-
वक्रकायकर्णकौरवशिष्टुपालसाखजरासन्धसिन्धुराजप्रभृतयोऽभवन्
भूपतवः । सन्तुष्टो राजा युधिष्ठिरो यो ह्यसह्यत समीप एव
धनञ्जयजयजनितजगत्कम्पः किम्पुत्रपाणां राज्यम् । अलसखण्ड-
कोषो यो न प्राविशत् क्ष्मां जिता क्षीराज्यम् । क्रसीव एवान्तरं
तुषारगिरिगन्धमादनवोः । उत्साहिनः किम्पुत्रव्यविषयाः ।
प्रादेशः पारसीकदेशः । यद्यपदं यकस्थानम् । अहृद्यमानप्रति-
प्रचारे पारिवाते यत्नैव शिथिला । शीर्ष्मशुल्कः सुलभो
दक्षिणापथः । दक्षिणार्धवक्रहोला निवर्तितचन्दनवतासौरभ-
सुन्दरीकृतहरीमन्दिराद्दुराद्रेर्गेर्दीवसि मलयो मलयलग्न एव च
महेन्द्रः । इत्येवंप्रावासुखोद्योतकानामावापान् पार्थिवकुमाराणां

वाङ्मयासिनां शस्त्रवेवावसादावासम् । मन्दिरद्वारि चोपवतः
सर्वज्जमानं शूलताभ्यां विसर्जितराजलोकः प्रविष्ट आवततार
वाङ्मास्याममहपस्यापितमासनमाचक्राम अपाससमाधोनच
क्षयमासिष्ट ।

अथ तत्र प्रतीहारः दृष्टीदृष्टप्रतिष्ठापितपाक्षिपल्लवो विज्ञापित-
वान् देव प्राग्ज्योतिषेश्वरेण कुमारेण प्रहितो हंसवेगनामा
दूतोऽन्तरङ्गक्षोरणमध्यास इति । राजा तु तमाशु प्रवेशयेति
सादरमादिदेश । अथ दक्षतया क्षितिपालाद्वराच्च प्रतीहारः
स्वयमेव निरगात् । अनन्तरञ्च हंसवेगः सविनयमाकृत्यैव
नयनानन्दसम्पादनमुभगाभोगभङ्ग्या समुल्लङ्घ्यमानगुणानरिमा
प्रभूतप्राभतभृता पुरुषाणां समूहेन महतानुगम्यमानः प्रविशेद्य
राजमन्दिरम् । आरादेव पद्माङ्गालिङ्गिताङ्गुलः प्रणाममकरोत् ।
एकोहीति सर्वज्जमानमाहृतञ्च प्रधावितोऽपहृतः पादपीठकुठित-
ललाटलेखो व्यसहसः दृष्टे पार्यवेन उपसृत्य भव्यो नमस्करो ।
स्निग्धनरेन्द्रदृष्ट्या निर्दिष्टमविप्रलटं स प्रदेशमध्यास । ततो
राजा तिरस्त्रो तनुमीषदिव दधानक्षामरपाहिणीमन्तराक्ष
वर्तिर्गो समुत्थार्य सन्मुखीनक्षं सप्रत्रवं पप्रच्छ हंसवेग श्रीमान्
कश्चित् कुशली कुमार इति । स तमन्ववादीत् अद्य कुशली
वेनैवं क्षेपक्षपितवा सौर्वाङ्मुखार्द्रवा सगौरवं निरा दृष्ट्वति
देव इति ।

स्त्रिंशत् च मुहूर्तमिव पुनः स चतुरसुवाच चतुरज्योधिभोग
भूतिभाजनभूतस्त्र देवस्य सद्भावगर्भमपहाव हृदयमेकम् अन्वत्
अनुदपं प्राभृतमेव दुर्धनं लोके तवाप्यकास्त्राभिना सन्देहम्
अन्वृतां नयता पूर्वजोषार्जितं वाक्चातपत्रमामोनास्त्रमनुदप-

स्थानन्यासेन कृतार्थीकृतमेतत् । अस्य च कुतश्चलकान्ति बह्वनि
 आश्चर्याणि दृश्यन्ते । प्रतिदिवसं प्रविशति शैत्यहेतोः श्वावायाः
 किरणसहस्रादेकैकः सोमस्य रश्मिरस्मिन् । अस्मिन् प्रविष्टे
 प्रथानानन्तरं स्वादवो दन्तवीणोपदेशाचार्याश्चोत्तन्ति चन्द्र-
 भासामन्त्रसां मणिशलाकाभ्यो यावदिच्छामच्छा धाराः । प्रचेता
 इव यश्चतुर्णामर्णवानामधिपतिर्भूतो भावी वा तमनुगृह्णाति
 च्छायया नेतरम् । इदञ्च न सप्तार्चिर्दहति न षष्ठदण्डो हरति
 नोदकमार्द्रयति न रजांसि मलिनयन्ति न जरा जर्जर-
 यति । एतत् तावदनुगृह्णातु दृशा देवः सन्देशमपि विस्मयं
 ओष्यति । इत्येवमभिधाय विवृत्यात्मीयं पुरुषमभ्यधात् उत्तिष्ठ
 दर्शय देवस्येति ।

स वचनानन्तरमुत्थाय पुमान् ऊर्ध्वीचकार तत् धौतकुल-
 कल्पिताञ्च निचोलकात् अकोपीत् । आकृष्यमाण एव च
 यस्मिन्प्रतिष्ठितमहसि सरभसम् अहासीव हरेण रसातलात्
 उदलासीव शेषफणिफणाफलकमण्डलेन अस्थायीव चक्रीभूय
 अन्तरिक्षे क्षीरोदेन अधटीव गगनाङ्गने गोष्ठीबन्धः शारदेन
 वलाहकव्यूहेन विश्रान्तमिव विततपक्षतिना वियति पितामह-
 विमानहंसयथेन अत्रिनेत्रनिर्गतस्य धवलधाममण्डलमनोहरो
 दृष्ट इव जनेन जन्मदिवसः कुमुदबन्धोः प्रत्यक्षीकृत इवोन्नमन-
 क्षणो नारायणनाभिपुण्डरीकस्य आहितेव कौमुदीप्रदोष-
 दर्शनानन्दतृप्तिरक्षणम् उदमाङ्गीदिव मन्दाकिनीपुलिनमण्डलं
 महदम्बरोदरे परिवर्तित इव दिवसः पौर्णमासीनिशया मन्द-
 मन्दमिन्दूदयसन्देहहवमानमानसैर्विषटितं षटमानचक्षुष्युत-
 क्षणालकोटिभिरासन्नकमलिनीचक्रवाकमिधुनैः शरज्जलधरपटला-

शङ्कासङ्कोचितकेकारवक्त्रकमुष्णपुटैः पराङ्मुखीभूतं भवमन्विष्टादृष्ट-
मण्डलैः प्रबुद्धमावह्यचन्द्रानन्दोद्दामोद्दलपुटादृष्टासविशदं
कुमुदपल्लवैः ।

चिन्तयिमाणाचेताय सराजको राजा दृष्टानुसाराभिरोद्धिस्त्रा-
दृष्टा सादरमैश्वर्यं तन्तिलकमिव त्रिभुवनस्य शेषवम् इव
श्वेतद्वीपस्य चंशावतारमिव शरदिन्दोः क्षुद्रयमिव धर्मस्य
निवेशमिव शशिलोकस्य दन्तमण्डलधवलं मुष्णमिव चक्रवर्णित्वस्य
मौक्तिकजालपरिकरसितं सीमन्तचक्रमिव दिवः वज्रलज्जोत्प्ला-
शुक्लोदरमैन्दवमिव परिवेशवलयं शौक्लादृशितशङ्खशीकं अवल-
मण्डलमिव निखलता गतमैरावतस्य श्वेतगङ्गावर्णपाण्डुरं पर्णमिव
त्रिभुवनवन्दनीयं त्रिविक्रमस्य प्रचेतसच्छूडामणिमरीचिशिखाभिः
इव श्लिष्टाभिर्मानसविसतन्तमयीभिश्चामरिकावलीभिर्विचित्र-
परिवेशम् उपरि चक्रवर्णिलक्ष्मीनूपुरस्वनश्रवणदोहदनिखलेनेव
लक्ष्मणा विततपत्रेण हंसेन मनाथीकृतशिखरं स्पर्शवता च
प्रभावस्तन्निभेन मन्दाकिनीचणालेन मुकुलितफणेन वासुकिनेव
नीतेन दण्डतां द्योतमानं धवलान्ना जालयदिव नक्षत्रपथं
प्रभाप्रवाहप्रधिन्वा प्रादृष्टदिव दिवसं समुच्छ्रायेणाधः कूर्मदिव
दिवम् उपरिस्थितमिव सर्वमङ्गलानां श्वेतमण्डपमिव त्रियः
स्ववक्त्रमिव ब्रह्मसन्मस्य नाभिमण्डलमिव ज्यात्स्नायाः विषदं
हासमिव कीर्त्तः फेनराशिमिव खङ्गधाराजलानां यशःपटलमिव
शौर्ष्याश्लितायाः नैलोष्णाद्भूतं मङ्गलं जलम् ।

दृष्टे च तस्मिन् राज्ञा प्रथमे शेषमपि प्राप्तं प्रकाशयाश्चक्रुः
क्रमेण कार्याः तद्यथा परार्द्धरत्नांशुशोकीकृतदिग्भागान् जन-
दन्तप्रभृतिस्नातपायिबपरानतानाहतकक्षस्थानलङ्कारान् प्रभा-

लेपिनाञ्च चूडामणीनां समुत्कर्षान् क्षीरोदधेर्धवलताहेतुनिव
 हारान् अनेकरागरुचिरवेतकरण्डकुण्डलीकृतानि शरच्चन्द्र-
 मरीचिरुचि शौचक्षमाणि क्षौमाणि कुशलशिल्पिलोकोल्लिखिता-
 नाञ्च शुक्तिशङ्खगल्फप्रमुखानां पानभाजनानां निचयान् निचो-
 लकरञ्चितरुचाञ्च रुचिरकाञ्चनपत्रभङ्गभङ्गराणामतिबन्धुरपरि-
 वेशानां कार्दुरङ्गचर्मणां सम्भारान् भूर्जत्वक्कोमलाः स्पर्शवतीः
 जातिपट्टिकाः चित्रपटानाञ्च नदीयसां समूहकोपधानादीन्
 विकारान् प्रियङ्गुप्रसवपिङ्गलत्वञ्च चासनानि वेतनयानि अगुरु-
 वल्कलकल्पितसञ्चयानि च सुभाषितभाञ्जि पुस्तकानि परिणत-
 पाटलपटोलत्विंषि च तरुणहारौतहरिन्ति क्षीरक्षारीणि च
 पूगानां पल्लवलम्बीनि सरसानि फलानि सहकारलतारसानाञ्च
 कृष्णागुरुतैलस्य च कुपितकपिकपोलकपिलकापोतिकापलाशकोशी-
 कवचिताङ्गीः स्थवीयसीर्वृण्वीर्णाङ्गीश्च पट्टसूत्रप्रसेवकार्पिताञ्च
 भिन्नाञ्जनकृष्णस्य (२) कृष्णागुरुणः गुरुपरितापमुपश्च गोशीर्ष-
 चन्दनस्य तुषारशिलाशकलशिशिरस्वच्छसितस्य च कर्पूरस्य
 कसूरिकाकोशकानाञ्च पक्कफलजूटजटिलानाञ्च ककूलपल्लवानां
 लवङ्गपुष्पमञ्जरीणां जातीफलसवकानाञ्च राशीन् अतिमधुरमधु-
 रसामोदनिर्हारिणीश्च सल्लककलशीः सितासितस्य च चामरजातस्य
 निचयान् अवलम्बमानदलिकालावुकाञ्च लिखितानालेखफलक-
 सम्पुटान् कुङ्कुमलहन्ति कनकश्ङ्खलानिवमितप्रीवाणां किन्नराणाञ्च
 वनमानुषाणाञ्च जीवञ्जीवकानाञ्च जलमानुषाणाञ्च मिथुनानि
 परिमलामोदितककुभञ्च कसूरिकाकुरङ्गान् गेहपरिसरण-
 परिचिताञ्च चमरीः चामीकररसचित्रवेतपञ्चरान्तर्गताञ्च सुवृक्ष-

सुभाषितजल्पाकजिह्वांश्च शुक्रधारिकाप्रभतीन् पश्चिन्धः प्रवाल-
पञ्चरगतांश्च चकोरान् जलहस्तिनामुदयकुम्भसुक्ताफलदामदन्तु-
राणि च दन्तकाण्डकुसुमलानि ।

राजा तु कृतदर्शनात् प्रहृष्टहृदयः प्रथमप्रयागे शोभन-
निमित्तमिति मनसा जपायै हंसवेगञ्च प्रीयमाणो बभाषे
भद्रं सकलरत्नधाव्यः परमेश्वरशिरोधारणार्हस्यास्य महातपत्वञ्च
महार्णवादिव कुमुदबान्धवस्य कुमाराह्वाभो न विस्मयाय । वाक्-
विद्याः खलु महातामुपलतय इति । अपनीते च तस्मात्प्रदेशात्
प्राभूतसम्भारे क्षणमिव स्थित्वा हंसवेगं विश्रम्यतामिति प्रतीचार-
भवनं विसर्जयाम्भूव । स्वयमप्युत्थाय स्नात्वा मङ्गलाकाङ्क्षी
प्राप्तुञ्च; प्राविशदाभोगस्य छायां ।

अथ विंशत एवास्य छायाजम्बना जडिन्ना चूडामणितामनीय-
तेव शशिचिह्नम् अम्बुविन्दुमुचचुचुम्भिरिव चन्द्रकान्तमणयो जलाट-
तटं कर्पूररेणव इव व्यलीयन्त लोचनद्वगले गलत्पुङ्गवकणनिकर-
लतनीहारा हारा इवावध्यन्त हरिचन्दनरसासारेण्येव अपाति
सन्ततसुरसि कुमुदमयमिव हृदयमभवदतिशिशिरम् अनर्जित-
हिमशिलेव विलीयमाना व्यलिम्पदङ्गानि । जातविस्मयसाकरोत्
मनसि एकमज्ज्यं सकृतमपचाय काक्ष्यत्या प्रतिकौशिकेति ।
आहारकाले च हंसवेगाव धवलकर्षटप्रादुतधीतनासिकेरपरि-
वृत्तीतं विलिप्तयेवं चन्दनमङ्गस्यूटे च वाससी शरत्तारकाकार-
तारसुक्तांसवकितपदं परिवेद्यं नाम कटिसूत्रम् अतिमहार्ण-
पस्यरागाखोकसोहितीक्ष्णतदिवसं च तरङ्गकं नाम कर्षाभरणं
प्रभृतञ्च भोज्यजातं प्राचिञ्चोत् । एवंप्रायेण च क्रमेण जगाम
दिवसः ।

ततः कटकस्थवलवहलधूलिधूसरितवपुरंशुमाली मलीमसम्
 अङ्गमिव क्षालयितुमपरजलनिधिमवातरत् । आभोगातपत्रप्रदान-
 वार्त्तामिव निवेदयितुं वरुणाय वारुणीं दिशमयासीत् । मुकुलाव-
 मानसकलकमलवना प्रमुख एव बद्धसेवाञ्जलिपुटेव सद्दीपा भूरभूत्
 भूपतेः । नृपानुरागमय इव निखिलजीयलोकलोकान्जलिबन्ध-
 वन्धुर्जगज्जग्राह सन्ध्यारागः । गौडापराधशङ्किनीव श्यामतां
 प्रपेदे दिक् प्राची । प्रचिततिमिरनिवहा निर्व्याणान्यनृपप्रतापा-
 नलकलापेव कालिमानमतानीत् मेदिनी । मेदिनीशप्रदोषा-
 स्थानपुष्पनिकरमिव विकचतगररुचिरम् अवचकरुडुनिकरम्
 अविरलं ककुभः । स्तम्भावारगन्धगजमदामोदधावितस्थेव मार्गे
 यियति विरराज रजःपाण्डुरैरावतस्य । कुपितनृपव्याघ्राघ्राताम्
 उपसृष्टामिव पौरुष्टतीं विहाय विहायस्तलमारोह रोहिणी-
 रमणः । प्रयाणवार्त्ता इव मानिनीनां हृदयभेदिन्यो ययुरिन्दु-
 दीधितयो दश दिशः । नवनृपदण्डयात्रात्तासातुरा इव तरलित-
 सत्त्वटन्तयशुक्षुभुः पतयो वाहिनीनाम् । चिन्तेव भूभृतां हृदयानि
 विवेश गुहाविवराणि विमुक्तसर्ज्वीर्ज्वीतिमिरसन्ततिः । प्रति-
 सामन्तचक्षुषामिव ननाश निद्रा कुमुदवनानाम् ।

अस्याश्च वेलाया विततवितानतलवर्त्ती नरेन्द्रो यात तावत्
 इति विसर्ज्यानुजीविनो हंसवेगमादिष्टवान् कथय सन्देशमिति ।
 प्रणम्य स कथयितुं प्रास्तावीत् देव पुरा वराहसम्पर्कसम्भूतगर्भया
 भगवत्या भुवा नरको नाम सूनुरसावि रसातले । वीरस्य वस्या-
 भवन् वात्य एव पादप्रणामप्रणयिनसूडामणयो लोकपालानाम् ।
 यस्य च त्रिभुवनभुजो भुजशौण्डस्य भवनकमलिनीचक्रवाकीकोप-
 कुटिलकटाक्षेक्षितोऽपि भयचकितावृणपरिवर्त्तितरथो नाञ्जवा

विना रविरसमवाजीत् । यच्च वरुणस्य वरिर्नृत्तिं कुरुवन् इदम्
 चातपत्रमहावीत् । महात्मनस्तस्मान्मवे भगदत्तपुण्यदत्तवज्रदत्त-
 प्रभृतिषु स्थतीतेषु वज्रेषु मेरुपमेषु महत्सु महीपालेषु प्रपौत्रो महा-
 राजभूतिवर्माणः पौत्रचन्द्रमुखवर्माणः पुत्रो देवस्य कैलासस्थिर-
 स्थितेः स्थितिवर्माणः सुस्थिरवर्मा नाम महाराजाधिराजो जज्ञे
 तेजसां राशिः अगाङ्ग इति वं जना जगुः । योऽयमजेनेवाजायत
 सङ्घैवाङ्गकूरेण । यच्च बाल एव प्रीत्या द्विजातीन् अप्रीत्या च
 अरातीन् समग्रान् प्रतिग्रहामग्राहयत् । यच्च चातिदुर्लभं जवन्ना-
 लयसम्भूतायाः परं माधुर्यमभूत्तच्छायाः । तथाच यो वाहिनी-
 नाथानां शङ्कान् जहार न रत्नानि दृष्टिभ्याः स्यैवं जग्राह न
 करम् अवनिभृता गौरवमादत्त न नैष्ठर्घ्यम् । तस्य च मुग्धहीत-
 नान्नो देवस्य देव्या श्यामादेव्या भास्करद्युतिर्भास्करवर्मापरनामा
 तनयः शन्तनोर्भागीरथ्या भीष्म इव कुमारः समभवत् । अयमस्य च
 शैशवादारभ्य सकृत्पुत्रः स्येयान् स्यात्पुपादारबिन्दुवाहते नाचम्
 अन्यं नमस्कृष्यमिति । ईदृशसायं मनोरथस्त्रिभुवनदुर्लभस्त्वयानाम्
 अन्यतमेन सम्पद्यते सकलभुवनविजयेन वा अत्युना वा यदि वा
 प्रचण्डप्रतापव्वलनदिन्द्राहेन जगत्केकीरेण देवोपमेन मित्रेण ।
 मेत्री च प्रायः कार्यव्यपेक्षिणी(१) क्षौणीभृताम् । कार्यं च कीदृशं
 नाम तद्वेत् सदुपन्यस्तमानमुपनयेन्निवृत्ता देवम् । देवस्य हि
 यथांसि सञ्चिचीयतो वरिदङ्गुलानि धनानि । वाचादेव च केवले
 निवस्यस्व जेवावववानामपि साहायकसम्पादनमनोरथो निरव-
 काशः किमुत वाङ्मनस्य । अतः सान्द्रयामयहृत्तत्परस्य दृष्टि-
 व्येकदेशदानोपवासेनापि का तुष्टिः । अभिरूपकस्याविनाशम-

(१) कर्तव्यतापेक्षिणी । १ ।

विलोभनमपि लक्ष्मीसुखारविन्ददर्शनदुर्लालितदृष्टेरकिञ्चित्करम् ।
 एवमघटमानसकलोपायसम्पादितपदार्थेऽस्मिन् प्रार्थनामात्रमेवै
 केवलमनुसृत्यमानः शृणोतु देवः । प्राग्ज्योतिषेश्वरो हि देवेनैक-
 पिङ्ग इवानङ्गद्विषा दशरथ इव गोतभिदा धनञ्जय इव पुष्कराक्षेण
 वैकर्त्तन इव दुर्योधनेन मलयानिल इव माधवेन अजय्यं सङ्गतम्
 इच्छति । यदि च देवस्यापि मैत्री यतिहृदयमवगच्छति च
 पर्यायान्तरितं दास्यमनुतिष्ठन्ति सुहृद इति ततः किमास्थते
 समान्नाप्यताम् अनुभवतु विष्णोर्म्मन्दरगिरिरिव विकटकेयूर-
 कोटिमणिविषट्मकणितकटकमणिशिलाशकलानि गाढोपगूढानि
 देवस्य कामरूपाधिपतिः । अस्मिन्नाटमेरनवरतविमललावण्य-
 सौभाग्यसुधानिर्भरिणि सुखशशिनि विराञ्चक्षुषी लालयतु
 प्राग्ज्योतिषेश्वरश्रीः । नाभिनन्दति चेद्देवः प्रणयम् आम्नापयतु
 किं कथनीयं मया स्वामिन इति ।

विरतवचसि तस्मिन् भूपालः पूर्वोपलब्धैरेव गुरुभिर्गुणैः
 आरोपितवज्रमानः कुमारे सुदूरमाभोगातपत्रव्यतिकरेण तु परां
 कोटिमारोपिते प्रेम्नि लज्जमान इव सादरं जगाद हंसवेग
 कथमिव तादृशि महात्मनि महाभिजने पुष्कराशौ गुणिनां
 प्राग्रहरे परोक्षसुहृदि स्निह्यति मद्विषस्यान्यथा स्वप्नेऽपि प्रवर्त्तते
 मनः । सकलजगदुत्तापनपटवोऽपि शिशिरावन्ते त्रिभुवननवन-
 नन्दकरे कमलाकरे करास्तिग्मतेजसः । सुवज्रगुणनयनीताश्च
 के वर्यं सख्यस्य । सज्जनमाधुर्याणामभ्युदयस्यो दृश दिशः ।
 एकान्तावदातोत्तानस्वभावसम्भृतसाहस्यस्य कुमुदस्य कृते केनाभि-
 हितः शिशिररश्मिः । त्रेधाञ्च संकल्पः कुमारस्य । स्वर्गं वाञ्छ-
 शाली मयि च समालम्बितशरासने सुहृदि हराहते कमण्यं नम-

स्थिति । संवर्द्धिता मे प्रीतिरसुना संकल्पेन । अवलेपिनि वशावपि
केसरिणि वल्लभानो हृदयस्य किं पुनः सुहृदि । तत्तथा वतेषाः
यथा न चिरमिवमस्यान् लेशवति कुमारदर्शनोत्कण्ठेति ।

हंसवेगस्तु विद्यापवासाभूव देव किमपरमिदानीं लेशवति
अभिजातमभिवर्तितं देवेन । शिवभोरधो हि सन्तः तत्रापि विशेषेण
अवमहङ्कारधनो वैष्णवो वंशः । आस्तां तावदस्मात्स्वामिवंशः
पश्यतु देवः पुत्रपत्न्यस्य हि सेवा प्रति दुर्जनन्येवातिदृष्ट्या दुर्गत्या
वाभिमुखीक्रियमाणस्य कुटुम्बिन्येवासन्तुष्टया तृष्णाया वा प्रेम्ण-
माणस्य दुरपत्यैरिव यौवनजनितैर्नानाभिलाषिभिरसम्बन्धैर्वा
आकुलीक्रियमाणस्य जरत्कुमारीमिव परमार्गणयोग्यामतिमहतीं
वा अवस्थां पश्यतः स्वगृहे दुर्म्भानुभिरिव दुःस्थितैः समग्रैर्घृणैर्वा
ग्राह्यमाणस्याभियोगम् पुरातनैरतिदुःस्थजैर्भृत्यैरिव मलिनैः
कर्माभिर्वा अनुवर्त्यमानस्य सकलशरीरसम्पापकरं करीपाग्निमिव
दुष्कृतिनः कृतचित्तस्य संप्रवेष्टुं राजकुलम् उपहतसकलेन्द्रिय-
शक्तेरिव मित्यैव हृदयगतविषयग्रामग्रहणाभिलाषस्तु प्रथममेव
तोरणतले वन्दनमालाकियलयस्येव शुष्यता द्वाररक्षिभिर्निबद्धस्य
पीडितस्य प्रविशतो द्वारे हरिणस्येवापरैर्जन्यमानस्य करिकर्माचर्म-
पुटस्यैव सुकर्मजः प्रतिहारमण्डलकरप्रहारैर्निरस्यमानस्य निषि-
पाद्यप्ररोहस्यैव दूषिणाभिलाषादधोमुखीभवतो दूरममार्गणस्या-
प्यतिविप्रकटविट्त्वविसर्जितस्योद्देगं व्रजतः अकण्टकस्यापि चरन्-
तलकम्नस्त्रालय्य जेपीयः क्षिप्यमाणस्य अमकरकेतोरप्यकाशोप-
सर्पस्यप्रकुपितेष्टरदृष्टिदग्धस्य प्रलयमुपगच्छतः कोपेरिव कोपनिर्ज-
न्वितस्यापि अभिन्नमुखरागस्य वज्रान्न इव प्रतिदिवसवन्दनोदृष्ट-
श्चिरःकपासस्य सूर्यरश्मितस्याशुभकर्माणि निर्मलतः विशुद्धोरिव

उभयलोकभ्रष्टस्य नक्तन्दिनमर्वाक्शिरसस्तिष्ठतः वाजिन इव
 कबलवशेन सुखवाच्यामात्मानं विदधानस्य अनशनशायिन इव हृदय-
 स्थापितजीवनाशस्य शरीरं क्षपयतः शून इव निजदारपराङ्मुखस्य
 जघन्यकर्म्मलग्नमात्मानं ताडयतः प्रेतस्येवानुचितभूमिदीयमानान्न-
 पिण्डस्य बलिभुज इव जिह्वालौल्योपयुक्तपुरुषवर्चसो दृष्ट्वा विहिता-
 शुषो जीवतः श्लथानपादपानिव पिशाचस्य दग्धभृत्या परुषीकृतान्
 राजबल्लभानुपसर्पतः विपरीतजिह्वाजनितमाधुर्यैरोष्ठमात्रप्रकटित-
 रागै राजशुकालापैः शिशोरिव सुग्धविलोभ्यमानस्य वेतालस्येव
 नरेन्द्रप्रभावाविष्टस्य न किञ्चिन्नाचरतः चित्रधनुष इवालीकगुणा-
 ध्यारोपणैकक्रियानित्यनन्वस्य निर्वाणतेजसः सम्मार्जनीसमुपा-
 र्जितरजसोऽवकरकूटस्येव निर्माल्यवाहिनः कफविकारिण इव दिने
 दिने कटुकैरुद्देज्यमानस्य सौगतस्येवार्थमन्यविश्वमिजनितवैराग्यस्य
 काषायाण्यभिलषतः निशास्वपि मातृबलिपिण्डस्येव दिक्षु विक्षिप्य-
 माणस्य अशौचगतस्येव कुशयनजनितसमधिकतरदुःखदृष्टेः तुला-
 यन्त्रस्येव पश्चात् क्षतगौरवस्य तोयार्थमपि नमतः अतिलपणस्य
 शिरसा केवलेनासन्तुष्टस्य वचसापि पादौ स्पृशतः निर्दयवेत्तिवेत्-
 ताङ्गनत्रस्तयेव तपया त्यक्तस्य दैन्यसङ्कोचितहृदयहृतावकाशयेव
 आहोपुरुषिकया परिवर्जितस्य कुत्सितकर्म्माङ्गीकरणकुपितयेव
 उक्त्या वियुक्तस्य धनश्रद्धया क्लेशानुपार्जयतः स्वदृष्टिवुद्ध्यावमानं
 वर्द्धयतो मूढस्य सत्यपि विविधकुसुमाधिवाससुरभिणि वने तृष्णा-
 म्बलिसुपरचयतः कुलपुत्रस्यापि कृतागस इव भीतभीतस्य समीपम्
 उपसर्पतः दर्शनीयस्याप्यालेख्यकुसुमस्येव निष्कलजन्मनः विदुषोऽपि
 वैधेयस्येषापशब्दसुखस्य शक्तिमतोऽपि शिद्विष इव सङ्कोचितकर-
 शुगलस्य समसमुत्कर्षेषु निरग्निपच्यमानस्य नीचसमीकरणेषु

निदृष्ट्वासं निवमानस्य परिभवैस्तृणीतस्य दुःखानिलेनानिर्हतेः
 प्लवतो भक्तस्याप्यभक्तस्य निदृष्ट्वाणः समापयतो बन्धुं विमानस्य
 अप्यनतिकस्य श्रुतगौरवस्याप्यधस्तात्तच्छतः निःसत्त्वस्यापि महा-
 मांसविकर्यं कुर्वतः निर्मदस्यास्यतन्महत्तेः असोनिमो ध्यानवशी-
 लतामनः शब्दोत्थायं प्रथमतो दग्धमुखस्य गोत्रविद्रूपकस्य नक्त-
 न्दिनं दृष्ट्यतो मनस्विजनं हासयतः कुलाङ्गारस्य वंशं दहतः
 दृष्योः तृणोऽपि लब्धे कम्बरामवनमयतः अठरपरिपूरणमात्र-
 प्रबोजनजन्मनो मासपिण्डस्य गर्भरोगस्य मातुरपुण्यानां कर्माणाम्
 आचरणात् भूतकस्य किं प्रायश्चित्तं का प्रतिपत्तिक्रिया क गतस्य
 शान्तिः कीदृशं जीवितं कः पुरुषाभिमानः किन्नामानो विद्यासाः
 कीदृशी भोगश्रद्धा प्रबलपङ्क पूव सर्वमधस्ताद्वयति दाहणो हास-
 शब्दः । धिक् तदुच्छ्वसितम् उपयातु तद्वनं निधनम् अभयनिर्भृतेः
 अस्तु तस्याः नमो भगवद्भूतसोभ्यः सुखेभ्यः तस्यायमञ्जलिरैश्वर्यस्य
 तिष्ठतु दूर एव सा श्रीः शिवं स परिच्छेदः करात् यदर्थमुक्त-
 माङ्गं गा गमिष्यति मुखप्रियरतः क्रीवः अप्रतिमासमयः क्षमिः
 अगण्यमानो मरकः पादरजोधूसरोत्तमाङ्गा जङ्गमः पादपीठः
 पुंस्कोकिलः काकुत्स्थितेषु शिखी मुखकरकेकासु स्थूलकर्माः कोक-
 कवणेषु श्वा नीचचाटुकरणेषु वेगुर्गर्जनासु वेष्माकायः करण-
 बन्धनेषु पलालं सत्त्वशालिषु लकलासः शिरोवितम्बनासु जाडक
 आत्मसङ्कोचनेषु प्रतिपादकः पादसंवाहनासु कटुकः करतलताड-
 नेषु बीणादण्डः कोणाभिवातेषु वराकः खेवकाऽपि नर्त्यमध्ये
 राजिलोऽपि वा भोगी पुलाकाऽपि वा कलमः वरं लक्ष्मणमपि
 लता मानवता मानवता न मतो नमतस्त्वैलोकाधिराज्योपभोगो
 ऽपि मनस्विनः । तदेवमभिनन्दिताद्यदीवप्रचदो देवोऽपि द्विचैः

कतिपयैरेव परागतः प्राग्ज्योतिषेश्वर इति करोतु चेतसीत्युक्त्वा
दृष्यामभूत् अचिराच्च नमस्कृत्य निर्जंगाम ।

राजापि रजनीं तां कुमारदर्शनौत्सुक्यस्वीकृतहृदयः समनै-
वीत् । आत्मार्पणं हि महताममूलमन्त्रमयं वशीकरणम् । प्रभाते
च प्रभूतं प्रतिप्राभूतं प्रधानप्रतिदूताधिष्ठितं दत्त्वा हंसवेगं प्राहि-
णोत् । आत्मनापि ततः प्रभृति प्रयाणकैरनवरतैरभ्यमितं प्राव-
र्त्तत । कदाचित्तु राज्यवर्द्धनभुजबलोपार्जितमशेषं मालवराज-
साधनमादायागतं समीप एवावासितं लेखहारकात् भण्डम्
अश्लेषोत् । श्रुत्वा चाभिनवीभूतभ्वाटशोककृताशनः कातर-
हृदयो बभूव मूर्च्छान्धकारमिव विवेश अतिष्ठच्च समुत्सृष्टसकल-
व्यापारः प्रतीहारनिवारणनिभृतनिःशब्दपरिजने निजमन्दिरे
सराजकपरिवारस्तदागमनमुदीक्षमाणो मुहूर्त्तम् ।

अथ भण्डिरेकेनैव वाजिना कतिपयकुलपुत्रपरिवृतो मलिन-
वासा रिपुशरशत्यपूरितेन निखातवज्रलोहकौलकपरिकररक्षित-
स्कृतनेनेय हृदयेन हृदयलग्नैः स्वामिसत्कृतैरिव श्मश्रुभिः शुचं
समुपदर्शयन् दूरीकृतव्यायामशिथिलभुजदण्डदोलायमानमङ्गल-
वल्लयैकशेषालङ्कृतिः अनादरोपयुक्तताम्बूलविरलरागेण शोकदहन-
दह्यमानस्य हृदयस्याङ्गारेणैव दीर्घनिश्वासवेगनिर्गतेनाधरेण
शुष्यता स्वामिविरहविधृतजीवितापराधवैलक्ष्यादिव वाष्पवारि-
पटलेन पटेनेव प्राटतवदनः विशन्निव दुर्म्बलीभूतैः स्वाङ्गमपत्यपया
अङ्गैः वमन्निव च व्यर्थीभूतभुजोष्णाण्णमायतैर्निश्वासितैः पातकीव
अपराधीव द्रोहीव मुषित इव कलित इव यूथपतिपतनविषस्य इव
वेमदण्डवारणः सूर्वाक्षमवनिःश्रीक इव कमलाकरः दुर्बोधन-
निघनदुर्बाना इव द्रौणिः अपहृतरत्न इव सागरो राजद्वारम्

आजगाम । अवतीर्ण च तुरङ्गमाद्वनतमुखो विवेक राज-
मन्दिरम् । दूरादेव च विमुक्ताकन्दः पपात वाह्योः ।

अवनिपतिरपि दृष्ट्वा तमुत्थाय विरलैः पदैः प्रत्यङ्गम्योत्थाप्य च
गाढमुपगूह्य कण्ठे कण्ठमतिचिरं बरोह । शिञ्जिलीभूतमम्युवेनच
पुरेव पुनरागत्य निवासनि निषसाह । प्रथमप्रज्ञाकितमुक्ते च
भण्डौ मुखमच्छाद्यत् । समतिक्रान्ते च किवत्पि काले व्याह-
मरणवृत्तान्तमप्राचीत् । अथाकथयञ्च यथावृत्तमखिलं भण्डिः ।
अथ नरपतिसमुवाच राज्यश्रीव्यतिकरः क इति । स पुन-
रवादीत् देव देवभूयं गते देवे राज्यवर्द्धने गुप्ताभावा च दृष्टीते
कुप्यस्थले देवी राज्यश्रीः परिभ्रष्ट बन्धनात् विम्व्याटवीं सपरि-
वारा प्रविष्टेति लोकतो वार्त्तामश्रवणम् । अन्वेष्टारस्तु ता प्रति
प्रभूताः प्रहिता जना नाद्यापि निवर्त्तन्त इति । तत्राकर्ण्य
भूपतिरब्रवीत् किमन्यैरनुपदिभिः यत्र सा तत्र परित्यक्ताम्यस्तत्रः
स्वयमहं यास्यामि । भवानपि कटकमादाय प्रवर्त्तता गौडाभि-
मुखम् । इत्युक्त्वा चोत्थाय स्नानभवनमगात् । कारितशोकप्रभु-
वपनकर्णश्या च प्रतीहारभवनस्नातेन शारीरकवसनकुसुमाङ्ग-
रागालङ्कारप्रेषणप्रकटितप्रसादेन भण्डिना सार्द्धमभुक्त निनाव
च तेनैव सह वासरम् ।

अथापरेद्युष्यस्येव भण्डिर्भूपालमुपसङ्गत्य अच्चापयत् पञ्चत
देवः श्रीराज्यवर्द्धनभुजवसार्जितं साधनं सपरिवर्तं मातृवरान-
स्येति । नरपतिना स एवं क्रियतामित्यभ्यनुज्ञातो दृश्याम्यभूव
तद्वदवा . अनवरतगलितमदमदिरामोदमुखरमधुकरजूटजटिक-
करटपट्टपङ्क्तिनण्डान् गच्छन्त्यैकानिव जङ्गमान् गन्धौरगर्जित-
रवान् जलवरानिव महीमवतीर्णान् उत्पुङ्गसप्तपद्मनामोदमुखः

शरद्वियसानिव पुञ्जीभूतान् अनेकसहस्रसङ्क्रान् करिणः चाह-
चामीकरचित्त्वामरमण्डलमनोहरांश्च हरिणरंहसो हरान्
बालातपविसरवर्षिणाश्च किरणैरनेकेन्द्रावुधीकृतदशदिशामलङ्का-
राणां विशेषान् विस्मयकृतः स्मरोन्मादितमालवीकुचपरिमल-
दुर्ललितांश्च निजज्योत्स्नापूरस्नावितदिर्गन्तानपि तारान् हारान्
उडुप्रतिपादसञ्चयशुचीनि निजयशांसीव बालव्यजनानि जात-
रूपमयनालश्च निवासपुण्डरीकमिव श्रियः श्वेतातपत्रम् अप्सरस-
द्वयं वज्रसमररससाहसानुरागावतीर्णा वारविलासिनीः सिंहा-
सनशयनासन्दीप्रभृतीनि राज्योपकरणानि कालासयनिगड-
निश्चलीकृतचरणयुगलश्च सकलं मालवराजलोकम् अशेषांश्च
ससङ्ख्यालेख्यपत्वान् सालङ्कारापीडपीडान् कोपकलशान् । अथा-
लोच्य तत्त्वर्जमवनिपालः स्वीकर्तुं यथाधिकारमादिक्षदध्यक्षान् ।
अन्यस्त्रिंश्चाहनि ह्यैः स्वसारमन्येष्टमुच्चचाल विन्ध्याटवीमवाप च
परिमितैरेव प्रयाणकैस्ताम् ।

अथ प्रविश्यन् दूरादेव दक्ष्यमानषष्टिकुसुविसरविसारि-
विभावसूनां वन्यधान्यबीजधानीनां धूमेन धूसरिमाणमादधानैः
शुष्कशाखासञ्चयरचितगोवाटवेष्टितविकटवटैः व्यापादितवत्सरूपक-
रोषरचितव्याघ्रयन्त्रैः यन्त्रितवनपालहठङ्क्रियमाणपरग्रामीण-
काष्ठिककुठारैः गहनतरुषण्डनिर्मितचामुण्डामण्डपैर्वनप्रदेशैः
प्रकाशमानम् अटवीप्रायप्रान्ततया कुटुम्बभरणाकुलैः कुहालप्राय-
कृषिभिः कृषीवलैरवलवद्विहञ्चभागभाषितेन भज्यमानभूरि-
शालिष्वलक्षेत्तखण्डलकम् अल्पावकाशैश्च कापिलैः कालायसैरिव
लण्णवृत्तिकाकठिनैः स्थानस्थानस्यापितस्याणूत्थितसूक्ष्मपद्मैः
दुर्बपगमस्थामाकप्ररुद्धिभिरलम्बुसबलैः अविरहितकोकिलाश्च-

सुपैर्विरलविरलैः केदारैः लङ्घलङ्घमाद्यैर्नातिप्रभूतप्रवृत्तगता-
 गताप्रवृत्तभुवम् उपलोत्तमुपरचितैश्चैर्नैश्चैश्च लङ्घमानश्चापरोप-
 द्रवं दिशि दिशि च प्रतिमार्गदुमस्तानां प्रविकपादप्रस्थोटन-
 धूलिधूसरैर्नवपल्लवैर्लाञ्छितच्छायानाम् घटवीमुलभसात्कसुम-
 स्तवकाञ्चितनवप्लातकूपिकीपकैस्तदप्रतिष्ठितनागकुटानामञ्चिककट-
 कल्पितकुटीरकाणां कुटिलकीटवेषीवेषमानशङ्खशारशरावखेपी-
 श्रितानामभ्वजनजग्धजम्बूफलास्थिशवलसमीपभ्रामुकूलितधूली-
 कदम्बस्तयकप्रकरपुलकिनीनां कण्टकितकर्करीचकाकान्तकाष्ठ-
 मञ्चिकामुषिततटपातिम्यत्तलगीतलशिकतिलकलगीशमितश्रमाद्या-
 माभ्यानशैवलश्यामलितालिम्बरजायमानजलजडिन्नामुदकुम्भाकट-
 पाटलशर्कराशकलशिशिरोलतदिशां घटमुखघटितकटहारपाटल-
 पुष्पपुटानां शीकरपुलकितपल्लवपूलीपाल्यमानशोषसरसशिग्रुसह-
 कारफलजूटीजटिलस्याणूनां वित्रास्यत्कार्पटिकपेटकपरिपाटी-
 पीयमानपयसामटवीप्रवेशप्रपाणां शैत्येन त्याजयन्तामिव प्रैक्षाम्
 उद्घाणं क्वचिदन्यत्र ग्राहयन्तमिवाङ्गारीयदाहसंप्रहृष्टाहिभिः
 व्योकारैः सर्वतश्च प्रातिवेश्यविषयवासिनां समासन्धयामग्रह-
 स्थापितस्यविरपरिपाल्यमानपायेयस्यगिनेन कृतदाहणदाहश्वायाम-
 बोय्याङ्गाभ्यङ्गेन स्कन्धाध्यासितकठोरकुठारकण्टकस्वमानप्रात-
 राशपुटेन पाटञ्चरप्रत्यवायप्रतिपन्नपटञ्चरेण कालवेत्तकविशुष्य
 व्रततिवलयपाशग्रथितग्रीवाग्रथितैः पल्लवीटारतमुखैः पीतकटैरुद-
 वारिणां पुरःसरवलङ्गलीवर्हयुगसरेण नैकटिककुटुम्बिकलोकेन
 काष्ठसंग्रहार्थमटवीं प्रविशता ग्रापदस्यधनस्यवधानवहलीसमा-
 रोपितकुटीलतकूटपाशैश्च गृहीतचगतन्तुतन्त्रीजालवलयवागुरैः
 वहिर्वाधैर्विचरद्विरंसावसक्तवीतंसम्पल्लवमानवाहपायिकैश्च सं-

गृहीतग्राहकककरकपिञ्जलादिपञ्जरकैः शाकुनिकैः सश्वरद्विषुप्रत-
 लासकलेशलिप्तलताबधूलट्टालम्पटानां चपेटकैः पाशकशिम्बूनाम्
 अटङ्गिः तृणस्तम्बान्तरिततिष्ठिरितरलायमानकौलेयककुलघाटु-
 कारैश्च विहगस्यगयां भगयुयुवभिः क्रीडङ्गिः परिणतचक्रवाककण्ठ-
 कषायश्चां शीधव्यानां वल्कलानां कलापान् नातिचिरोद्धृतानाञ्च
 धातुत्विषां धातकीकुसुमानां गोप्तीरगणिताः पिचव्यानां चातसी-
 गणपट्टमूलकानां पुष्कलान् सम्भारान् भारांश्च मधुनो मात्निकस्य
 मयूराङ्गजस्याक्लिष्टमधूच्छिष्टचक्रमालानां लम्बमानलामज्जकजूट-
 जटानामपत्न्या खदिरकाष्ठानां कुष्ठस्य कठोरकेशरिसटाभार-
 बभ्रुणश्च रोध्रस्य भूयसो भारकान् लोकेनादाय व्रजता प्रवि-
 चितविविधवनफल पूरितपिटकमस्तकाभिश्चाभ्यर्णग्रामगतवरीभिस्त्व-
 माणाभिर्विक्रयचिन्ताव्यग्राभिर्ग्रामेयिकाभिर्यत्तिदिगन्तरमितस्ततश्च
 युक्तभूरशकुरशाकराणां पुराणपांस्तुत्किरकरोषकूटवाहिनीनां
 धूर्गतधूलिधूसरसैरिभसरोषस्वरसार्यमाणानां संक्रीडञ्जलचक्र-
 चीत्कारिणीनां शकटश्रेणीनां सम्पातैः सम्पाद्यमानदुर्बलोर्ब्धि-
 विरुद्धक्षेतसंस्कारम् आरक्षक्षिप्तदान्तवाहकदण्डोड्डीयमानहरिण-
 हेलालङ्घिततुङ्गवैणवटतिभिश्च निखातगौरकरङ्कशङ्कशङ्कितशशक-
 शकलिततुङ्गशुङ्गैः प्रयत्नप्रभतविशङ्कटविटपैर्वाटैरैक्षवैर्बज्रभिः
 श्छामायमानोपकण्ठम् अतिविप्रलष्टान्तरैर्मरकतैस्त्रिधस्रुहावाट-
 वेष्टितैः कार्मुककर्म्मण्यवंशविटपसङ्कटैः कण्टकितकरञ्चराजि-
 दुष्यवेष्टैः उरूकवचावङ्ककसुरससूरणशिशुग्रन्थिपर्णगवेधुकागर्मुदू-
 गुल्मगहनगृहवाटिकैः निखातोच्चकाष्ठारोपितकाष्ठालुकलता-
 प्रतानविहितच्छायैः परिमण्डलवदरीमण्डपकतलनिखातखादिर-
 कोलवङ्गवत्स्वपैः कवमपि कुकुटरटितालुमीयमानसन्निवेशैरङ्गना-

यस्मिन्मृतलविरचित क्षिप्रपूषिकावापिकैर्बिकीर्णबहर पाटल पटलैः
 वेणुपोटदलनलशरमयवृत्तिविहितभित्तिभिः किंशुकरोचनारचित-
 मण्डलमण्डपवत्तजबद्धाङ्गारराशिभिः शास्त्रलिफलदलसमूहवङ्गलैः
 सन्निहितनलशालिशालूकखण्डकुमुदबीजवेणुतण्डुलैः संवृत्त-
 मालबीजैः भस्ममलनलानकाश्मर्यकटप्याश्रतकटैराश्वानगाजा-
 दनमदनफलस्तीतैर्मधूकासवमद्यप्रायैः कुम्भकम्भगण्डकुसुमैरवि-
 रहितराजमाषत्रपुष्पकर्कटिकाकुष्माण्डालावुबीजैः पोषमाष-
 वनविडालमालुधाननकुलशालिजातजातकादिभिर्वटबीकुटुम्बिनां
 गृहैरपेतं वनग्रामकं ददर्श तत्रैव चावसदिति ।

इति श्रीवाणभट्टकृते कृषिवर्णने सप्तम उच्छ्वासः ।

अष्टम उच्छ्वासः ।

सहसा सम्पादयता मनोरथप्रार्थितानि वस्तूनि ।

दैवेनापि क्रियते भव्याना पूर्वंसेवेव ॥

विद्वज्जनसम्पर्को नष्टेष्टातिदर्शनाभ्युदयः ।

कस्य न सुखाय भवने भवति महारत्नलाभश्च ॥

अथापरेदृश्याय पार्थिवस्तस्मात् ग्रामकात् निर्गत्य विवेश
विन्ध्याटवीम् । आट च तस्यामितश्चेतश्च सुबहून् दिवसान् ।
एकदा तु भूपतेर्भवत एवाटविकसामन्तशरभकेतोः सूनुर्व्याघ्रकेतुः
नाम कुतोऽपि कज्जलश्यामलश्यामलतावलयेनाधिललाटमुच्चैःकृत-
मौलिबन्धम् अन्धकारिणीमकारणभवा भ्रुकुटिभङ्गेन त्रिशाखेन
त्रियामामिव साहससहचारिणीं ललाटस्थलीं सदा समुद्वहन्तम्
अवतंसितैकशुकपक्षकप्रभाहरितायमानेन पिनङ्गुकाचरकाचमणि-
कर्णिकेन अवशेन शोभमानं किञ्चिच्चुल्लस्य प्रविरलपक्ष्मणश्चक्षुषः
सहजेन रागरोचिषा रसायनरसोपयुक्तं तारक्षवं क्षतजमिव
क्षरन्तम् अवनाटनासिकं चिपिटाधरं चिकिनचिवुकम् अहीन-
हनूत्कटकपोलकूटास्थिपर्यन्तम् ईषदवाग्रग्रीवाबन्धं स्कन्धस्कन्धार्द्ध-
भागम् अनवरतकोदण्डकुण्डलीकरणकर्कशव्यायामविस्तारितेन
अंसलेनोरसा हसन्तमिव तटशिलाप्रथिमानं विन्ध्यगिरेः अजगर-
गरीयसा च भुजयुगलेन लघयन्तं तुहिनशैलशालद्रुमाणां द्राघि-
माणं वराहबालवलितबन्धनाभिर्नागदमनजूटिकाभिर्जटिलीकृतपृष्ठे
प्रकोष्ठे प्रतिष्ठां गतं गोदन्तमणिचित्तं त्रापुषं बलयं विश्राणम्

अतुन्दिलमपि तुन्दिलम् अहीरणिचर्मनिर्मितपट्टिकबोचिम-
चितकत्वक्तारकितपरिवारया संकुञ्जाजिनजाकितया शङ्ख-
मयमङ्गलमुष्टिभागभास्वरया पारदरसलेशलिप्तसमसामकवा
रुपाण्या कराहितविसङ्कटकटिप्रदेशं प्रथमयौवनोत्प्लवमानमभ-
भागभ्रष्टमांसभरिताविव स्यवीयसावृद्धण्डौ दधतम् अष्टभक्तचर्म-
मयेन भङ्गीप्रायप्रभृतशरभता श्वलशार्दूलचर्मपटपोडितेनालि-
कुलकालकम्बललोम्भा दृष्टभागभाजा भङ्गाभरणेन पङ्कवितमिव
कार्श्यमुपदर्शयन्तम् उत्तरत्रिभागोत्तंसितचापिपञ्चचारशिखरे
खदिरजटानिर्भाषे खरप्राणे प्रचुरमयूरपित्तपत्रलताचित्रितत्वचि
त्वचि सारगुह्यि वामस्कन्धाध्यासितधनुषि द्रोणि लम्बमानेनावाक्
शिरसा शितशरकृत्तैकनलकविवरप्रवेशितेतरजङ्गाजिनितस्वस्तिक
बन्धेन बन्धूकलोडितरुधिरराजिरञ्चितप्राणवर्मणा वपुर्विततिव्यक्त-
विभाव्यमानकोमलकोडरोमशुक्लिन्ना शयेन शिताटनीशिखाप-
ग्रथितग्रीवेण चापादृतचक्षून्नामताम्बतालुना तित्तिरिण्या वर्षक-
मुष्टिमिव छगयाया दर्शयन्तं विषमविषदूषितवदनेन च विवर्णेन
कृष्णाङ्गिनेव मृल्लटहीतेन व्यग्रदर्शणकरायं जङ्गममिव गिरितट-
तमालपादपं यन्त्रोत्प्लिषितमश्रुससारसम्भ्रमिव भ्रमन्तम् अञ्जन-
शिलाच्छेदमिव चलन्तम् अयःसारमिव निरेर्विन्ध्यस्य गलन्तं पाककं
करिकुलानां कालपायं कुरङ्गयूथानां धूमकेतुं छगराजचक्राणां
महानवमीमहं महिषमण्डलानां हृदयमिव हिंसायाः प्रक्षामिव
पापस्यं कारणमिव कलिकालस्य कामुकमिव कालरात्रेः श्वर-
बुवानमादयाजगाम । दूरे च स्थापयित्वा विद्यापवाग्वभूष देव
सर्वस्यास्य विन्ध्यस्य स्वामी सर्वपक्षीपतीनां प्रायद्वरः श्वरदेवा-
पतिर्भूकप्यो नाम । तस्यायं निर्वातनामा स्वस्वीवः सकलस्यास्य

विन्यकान्तारारण्यस्य पर्णानामप्यभिन्नः किमुत प्रदेशानाम् । एनं
 दृच्छतु देवः योग्योऽयमाज्ञां कर्तुम् । इति कथिते च निर्घातस्तु
 क्षितितलनिहितमौलिः प्रणाममकरोत् उपनिन्ये च तित्तिरिणा
 सह यथोपायनम् । अवनिपतिस्तु सम्मानयन् स्वयमेव तमप्राक्षीत्
 अङ्ग अभिज्ञा यूयमस्य सर्वस्योद्देशस्य । विहारशीलाश्च दिवसेष्वेतेषु
 भवन्तः । सेनापतेर्बान्यस्य वा तदनुजीविनः कस्यचित् उदाररूपा
 नारी आगता भवेद्दर्शनगोचरमिति ।

निर्घातस्तु भूपालालापनप्रसादेनात्मानं बद्धमन्यमानः प्रणनाम
 दर्शितादरञ्च व्यञ्जापयत् देव प्रायेणात्र हरिण्योऽपि नापरिगताः
 सञ्चरन्ति सेनापतेः कुत एव नाय्यो नायेवंरूपा काचिदबला ।
 तथापि देवादेशादिदानीमन्वेषणं प्रति प्रतिदिनमनन्यह्यैः
 क्रियते यत्नः । इतश्चार्जुनगव्यूतिमात्र एव सुनिमज्जिते महति
 महीधरमालामूलरुद्धि महीरुहां षण्ढे पिण्डपाती प्रभृतान्तेवासि-
 परिवृतः पराशरी दिवाकरमित्वनामा गिरिनदीमाश्रित्य प्रति-
 वसति स यदि विन्देद्वात्तामिति । तत् श्रुत्वा नरपतिरचिन्तयत्
 श्रूयते हि तत्रभवतः सुगृहीतनाम्नः स्वर्गतस्य ग्रहवर्माणो बाल-
 मित्वं मैत्रायणीयस्त्रयीं विहाय ब्राह्मणायनो विद्वानुत्पन्नसमाधिः
 सौगते मते युवैव काषायाणि गृहीतवानिति । प्रायशश्च जनस्य
 जनयति सुहृदपि दृष्टो भयमाशासम् । अभिगमनीयाश्च गुणाः
 सर्वस्य । कस्य न प्रतीक्ष्यो सुनिभावः । भगवती वीधेयेऽपि
 धर्मागृहिणी गरिमाणमापादयति प्रव्रज्या किं पुनः सकलजन-
 मनोमुषि विदुषि जने । यतो नः कुतश्चलि हृदयमभूत्-सततमस्य
 दर्शनं प्रति प्रासङ्गिकमेवेदमापतितमतिकल्याणं पञ्चामः प्रयत्न-
 प्रार्थितदर्शनं जनमिति । प्रकाशश्चावधौत् अङ्ग समुपदिश्य तमुद्देशं

यत्रास्ते स पिण्डपातीति । एवमुक्त्वा च तेनैवोपदिष्टमानवर्णा
प्रावर्त्तत गन्तुम् ।

अथ क्रमेण गच्छत एव तस्य अनवकेशिनः कुञ्जलित-
कर्णिकाराः प्रचुरचम्पकाः स्त्रीतफलेग्रहयः फलभरभरितनमेरवः
नीलदलनलदनारिकेलमिकरीः करिकेसरसरलपरिकराः कोरक-
निकुरम्बरोमाक्षितकुरवकराजयः रक्ताशोकपल्लवनावयवलिप्यमान-
दशदिशः प्रविकसितकेसररजोविमरवध्यमानचाक्षुस्रिमाणः
स्वरजःसिकतिलतिलकतलाः प्रविचलितहिङ्गवः प्रचुरपूगफलाः
प्रसवपूगपिङ्गप्रियङ्गवः परागपिञ्जरितमञ्जरीपुञ्जमानमधुपमञ्ज-
शिञ्जाजनितजनमुदः मदमलमेघकितमुचुकुन्दम्बकाण्डकण्ड-
माननिःशङ्ककरिकटकण्डूतयः उड्डीयमाननिःशङ्कचटुललयाशार-
शावसकलशादलसुभगभूमयः तमःकालतमतमालमालामीलिता-
तपाः शवकदन्तुरितदेवदारवः तरलताम्बूलीसम्बजालकितजम्बू-
जम्बीरवीथयः कुसुमरजोधवलधूलीकदम्बचक्रपुष्पितव्योमानः वज्र-
मधुमोक्षोक्षितक्षितयः परिमलघटितप्राणघटप्रयः कतिपयदिवसस्त-
कुक्षुटीकुटीलतकुटजकोटराः चटकासुखार्थमाणवाचाटचाटकेर-
क्रियमाणचाटवः सहचरीचारणचक्षुरचकोरचक्षवः निर्भयभूरि-
भृङ्गलभज्यमानपाककपिलपीलवः सदाफलकटफलफलाविशसन-
निःशूकशुकशकुन्तशतितशलाटवः शैलेयमुकुमारशिखातलसुख-
शयितशशशिशवः शेफालिकाशिफाविवरविश्वम्भविबर्त्तमानगंधेर-
राशवः निरातङ्करङ्गवः निराकुलनकुलकेलयः कलकोकिलकुल-
कवलितकलिकोशमाः सहकारारामरोमन्यायमानचम्बद्यूषाः
यथासुखनिपत्यनीलाखण्डजमण्डलाः निर्विकारहृदयिकोष्णमान-
पोतपीतगवबधेनवः अवयवहारिसनीलनिरिनितम्बनिर्भरनिनाद-

निद्रानन्दमन्दायमानकरिकुलकण्ठतालदुन्दुभयः समासम्बकिन्नरी-
गीतरवरसमानरुचः प्रमुदिततरतरक्षवः क्षतहरितहरिद्राद्रवरज्य-
माननववराहपोतपोलवल्लयः गुञ्जाकुञ्जगुञ्जजाहकाः जातीफलक-
सुप्रशालिजातकवल्लयः दशनकुपितकपिपोतपेटकपाटितपाटलकीट-
पुटकाः लकुचलम्पटगोलाङ्गुललङ्गुमानलवल्लयः बद्धबालुकालवाल-
वल्लयाः कुटिलकुटावलिवलितवेगगिरिनदिकास्त्रोतसः निविड-
शाखाकाण्डलम्बमानकमण्डलवः सूत्रशिक्षासक्तरिक्तभिच्चाकपाल-
पल्लवितलतामण्डपाः निकटकुटीकृतपाटलमुद्राचैत्यकमूर्त्तयः
चीवराम्बररागकषायोदकद्रुषितोद्देशाः मेघमया द्रुव क्षतशिखण्डि-
कुलकोलाहलाः वेदमया द्रुवापरिमितशाखाभेदगहनाः माणिक्य-
मया द्रुव महानीलतनवः तिमिरमया द्रुव सकलजननयनमुषः
यामुना द्रुवोर्द्धीकृतमहाङ्गदाः मरकतमणिश्चामलाः क्रीडापर्व-
तका द्रुव वसन्तस्य अञ्जनाचला द्रुव पल्लविताः तनया द्रुवाटवी-
जाता विन्ध्यस्य पातालान्धकारराशय द्रुव भित्त्वा भुवमुखिताः
प्रतिवेशिका द्रुव वर्षावासराणाम् अंशावतारा द्रुव कृष्णरात्री-
णाम् इन्द्रनीलमयाः प्रासादा द्रुव वनदेवतानाम् पुरस्ताद्दर्शन-
पथमवतेकस्तरवः ।

ततो नरपतेरभवन्मनसि अदूरवर्त्तिना खलु भवितव्यं
भदन्तेनेति । अवतीर्य च गिरिसरिति समुपस्थस्य युगपद्विश्राम-
समयसमुन्मत्तहेषाघोषवधिरौकताटवीगहनामस्त्रिन्नेव प्रदेशे स्थाप-
यित्वा वाजिसेनाम् अवलम्ब्य च तपस्विजनदर्शनोचितं विनयं
हृदयेन दक्षिणेन च हस्तेन माधवगुप्तमंशे विरलैरेव राजभिरनु-
गम्यमानस्वरणाभ्यामेव प्रावर्त्तत गन्तुम् ।

अथ तेषां तरूणां मध्ये नानादेशीयैः स्थानस्थानेषु स्थाणून्

आचितैः शिखातलेषूपविष्टैः कताभवनाम्भावसङ्घिः परस्मान्नी-
निकुम्भेषु निक्षीनैः विटपच्छायासु निषसैः तद्वृक्षानि निषेवमाचैः
वीतरागैः आर्हतैः मस्करिभिः श्वेतपटैः पाण्डुरिभिश्चुभिर्भानवतैः
वर्ण्यभिः केशलुक्षकैः कापिलैः जैनैः लोकावतिकैः कात्यादैः
सौपनिषदैः ऐश्वरकारणिकैः • कारन्धमिभिः धर्मशास्त्रिभिः
पौराणिकैः साम्रतन्त्रवैः शाब्दैः पाण्डुरात्रिकैः अन्येषु स्थान् स्थान्
सिद्धान्तान् दृष्ट्वाङ्घ्रिः अभिवृत्तैः चिन्तयद्भिश्च प्रत्युश्चरद्भिश्च
संशयानैश्च निश्चिन्त्यद्भिश्च व्युत्पादयद्भिश्च विषदमानैश्च अभ्यस्यद्भिश्च
व्याचक्षाणैश्च शिष्यता प्रतिपन्नेर्दूराद्वावेद्यमानम् अतिविनीतैः
कपिभिरपि चैत्यकर्म्म कुर्वणैः तिसरखपरेः परमोपासकैः शुद्धैरपि
शास्त्रशासनकुशलैः काशं समुपदिशद्भिः शिष्यापदोपदेशोपशम-
यालिनीभिः शारिकाभिरपि धर्मदेशना दर्शयन्तीभिः अगवरत-
त्रयण्टहीतासकैः कौशिकैरपि बोधिसम्भजातकानि जपद्भिः जात-
सौगतशीलशीतलस्वभावैः शार्दूलैरप्यमांसाद्यिभिरपास्त्रमानम्
आसनोपान्तोपविष्टविस्त्रम्भानेककेसरियावकतया सुनिपरमेष्ठरम्
अल्लमिम इव सिंहासने निषण्णम् उपशममिव पिबद्भिर्वनपरिषैः
जिह्वालताभिरुपलिङ्ग्यमानपादपङ्क्तवं वामकरतलनिविष्टेन नीवारम्
अन्नता पारावतपोतेन कर्णोत्पलेनेव प्रिया मैत्री प्रसादयन्तम्
इतरकरकिंसलवनचमयूषलेषाभिर्जनितजनन्यामोचम् उद्गुप्तीवं
मयूर मरकतमणिकरकमिव वारिधाराभिः पूरयन्तम् इतकतः
पिपीलिकत्रिखीनां श्यामाकतस्तुलकचान् स्वमेव किरन्तम् अथयेन
चीवरपटलेषु न्यदीवसा संवीतं वक्षसावातपानुक्तिप्रमिव पौरन्दरं
दिग्भागम् उद्धिखितपञ्चुराजप्रभाप्रतिमया रक्तावकातया देहप्रकटा
पाटलीकृतानां काषावग्रहणमिव दिशामप्युपदिशन्तम् अनौद्धत्यात्

अधोमुखेन मन्दमुकुलितकुसुदाकरेण स्निग्धधवलप्रसन्नेन चक्षुषा
 जनक्षुब्धदुःखजन्तुजीवनार्थममृतमिव वर्षन्तम् सर्वशास्त्राक्षरपर-
 माणुभिरिव निर्मितं परमसौगतमप्यवलोकितेश्वरम् अखलितम्
 अपि तपसि लग्नम् आलोकमिव यथावस्थितसकलपदार्थप्रकाशकं
 दर्शनार्थिनां सुगतस्थाप्यभिगमनीयमिव धर्मस्थाप्याराधनीयमिव
 प्रसादस्यापि प्रसादनीयमिव मानस्यापि माननीयमिव बन्धत्वस्यापि
 बन्धनीयमिव जन्म यमस्य नेमिं निवमस्य तत्त्वं तपसः शरीरं
 शौचस्य कोशं कुशलस्य वेश्म विश्वासस्य सहजं सहजतायाः सर्वस्य
 सर्वज्ञतायाः दाढ्यं दाक्षिण्यस्य पारं परानुकम्पाया निर्दृष्टिं
 सुखस्य मध्यमे वयसि वर्त्तमानं दिवाकरमित्तमद्राक्षीत् । अति-
 प्रशान्तगन्ध्रीराकारारोपितवज्रमानस सादरं दूरादेव शिरसा
 सनसा वचसा च ववन्दे ।

दिवाकरमित्तस्तु मैत्रीमयः प्रकृत्या विशेषतस्तेनापरेणादृष्ट-
 पूर्वेषामानुषलोकोचितेन सर्वाभिभाविना महानुभावाभोगभाजा
 आजिष्णुना भूपतेरप्राकृतेनाकारविशेषेण तेन चाभिजात्यप्रका-
 शकेन गरीयसा प्रत्ययेण चाह्लादितः चक्षुषि च चेतसि च युगपत्
 अग्रहीत् । वीरस्वभावोऽपि च सम्पादितसम्पन्नमाभ्युत्थानः सकलव्य-
 किञ्चिदुन्नमनकेन विलोमं विलम्बमानं वामांसाञ्चीवरपटान्तसुत-
 क्षिप्यानेकाभयदानदीक्षादक्षिणो दक्षिणं महापुरुषलक्षणलेखा-
 प्रशस्तं स्निग्धमधुरया वाचा सगौरवमारोप्यदानेन राजानमन्व-
 यहीत् अभ्यनन्दञ्च स्वागतगिरा गुहमिव अभ्यागतं वज्र मन्व-
 मानः स्नेहासनेन आङ्गमवेति निमन्त्रयाञ्चकार पार्श्वे स्थितश्च
 शिष्यमग्रहीत् आसुप्तान् उपानव कमण्डलुना पादोदकमिति ।
 राजा त्वचिन्तयत् अलोडः खलु संवमनपायः सौजन्यम् अभि-

जातानाम् । स्थाने चक्षुः तत्रभवान् गुह्यागुराणी मण्यवर्णा वस्त्राद्यो
वर्णितवानस्य गुह्यानिति । प्रकाशश्चावभासे भववन् दर्शन-
पुण्यागुह्यहीतस्य मम पुनरुक्त इवावमार्थप्रयुक्तः प्रतिभात्युपपन्नः ।
चक्षुष्यमात्रप्रसादस्वीकृतस्य च परकरणाभिवासनादिदानोपचार-
चेष्टितम् । अतिभूमित्वेव भवाद्दृष्ट्यां पुरः सम्प्राप्यप्राप्तताभि-
धेकप्रक्षालितसकलवपुषश्च मे प्रदेशयति । पादमण्यपार्श्वकम् ।
आसतां भवन्तो यथासुखम् । आसीनोऽहम् इत्यभिधाय क्षिप्तौ
एवोपाविशत् ।

अलङ्कारो हि परमार्थतः प्रभवतां प्रत्ययातिशयो रत्नादिकल्प
शिलाभार इत्याकलस्य पुनः पुनरभ्यर्थ्यमानोऽपि यदा न प्रत्यपस्तुत
पार्थिवो वचनं तदा स्वमेवासनं पुनरपि भेजे भदन्तः भूपतिमुष-
नलिननिहितनिभतनयनवुगलनिगडनिसलीकृतहृदयश्च स्थित्वा
काश्चित् कालकलां कलिकालकल्पाप्रकलणमिव क्षान्तयन्ममसाभिः
दन्तमयूखमासाभिः अलफलाभ्यवहारसम्प्रवसुहृदमन्त्रिणश्च परि-
मलसुभगं विकचकुसुमपटलपाण्डुरं कृतावममवाहीत् अक्षप्रभति न
केवलमयमनिन्द्यो बन्धोऽपि प्रकाशितसत्त्वारः संसारः । किं नाम
नालोप्यते जीवद्विरद्भुतं येन रूपमचिन्तितोपनतमिदं हृत्पञ्च-
सुपंगतम् । एवंविधैरनुमीयन्ते जगन्ान्तरावस्थितमुल्लतानि सुदृशो-
त्थयैः । इहापि जगन्नि दन्तमेवास्माकममुना तपःश्रेष्ठेन कृतम्
असुखमदर्शनं दर्शयता देवानां प्रियम् । आ तप्तेः पीतमन्त्रतम्
देवस्याभ्यम् । जातं निवृत्कण्ठं मानसं निर्हतिमुपसृज्य । मङ्गिः
मुखैर्विना न विद्याम्यन्ति सज्जनं त्वाहं हि दृष्टः । सुदिग्धः न
वस्त्रिन् जातोऽसि । सा सुजाता जननी वा सकलजीवलोका-
जीवितजनकमजनवदावुपसृज्यम् । पुष्पवन्ति पुष्पावपि तानि

येषामसि परिणामः । सुकृततपसस्ते परमाणवः ये तव परि-
 गृहीतसर्वावयवाः । तत्सुभगं सौभाग्यम् आश्रितोऽसि येन ।
 भव्यः स पुरुषभावो भवत्यवस्थितो यः । यत्कृत्यं मुमुक्षोरपि मे
 पुण्यभाजम् आलोक्य पुनः अद्वा जाता मनुजजन्तानि । नेच्छद्भिः
 अथक्षामिर्दृष्टः कुसुमायुधः । कृतार्थमद्य चक्षुर्वनदेवतानाम्
 अद्य सफलं जन्म पादपानाम् येषामसि गतो गोचरम् । अक्षत-
 मयस्य भवतो वचसां माधुर्यं कार्यमेव । अस्य त्वीदृशे शैशवे
 विनयस्योपाध्यायं ध्यायन्नापि न सम्भावयामि भुवि । सर्वथा शून्य
 आसीदजाते दीर्घायुषि गुणग्रामः । धन्यः स भूभृत् यस्य वंशे
 मणिरिव सुक्तामयः सम्भूतोऽसि । एवंविधस्य च पुण्यवतः कथञ्चित्
 प्राप्तस्य केन प्रियं समाचराम इति पारिलष्वं चेतो नः । सकल-
 वनचरसार्थसाधारणस्य कन्दमूलफलस्य गिरिसरिदन्मसो वा के
 वयम् । अपरोपकरणीकृतस्तु कायकलिरयमस्माकम् । सर्वस्वम्
 अवशिष्टमिष्टातिथ्याय । स्वायत्ताच्च विद्यन्ते विद्याविन्दवः कति-
 चित् । उपयोगन्तु न प्रीतिर्विचारयति । यदि च नोपगृह्यद्भि
 कञ्चित् कार्यलवम् अरक्षणीयाक्षरं वा कथनीयं तत् कथयतु
 भवान् ओतुमभिलषति हृदयं सर्वमिदं नः । केन कृत्याति-
 भारेण भव्यो भूषितवान् भूमिमेतामभ्यमणवोग्याम् । कियदवधिर्
 वा शून्याटवीपर्यटनक्लेशः कल्याणराशेः । कस्याच्च सन्तप्तपेव
 ते तनुरियमसन्तापार्हा विभाव्यत इति ।

राजा तु सादरतरमब्रवीत् आर्य्यं दर्शितसम्पन्नमेणानेन मधु-
 रसविभरमक्षतमिव हृदयवृत्तिकरमनवरतं वर्षता वचसैव ते सर्वम्
 अनुष्ठितम् । धन्योऽस्मि वदेवमभ्यर्हितमनुपचरणीयमपि माम्बो
 मन्यते माम् । अस्य च महावनभ्रमणपरिक्षेपस्य कारणमव-

धारयतु मतिमान् । मम हि विनष्टनिश्चितेष्टवन्धोर्जीवितासु-
बन्धस्य निबन्धनम् एकैव ववीवसी स्ससावशेषा । सापि भर्तुः
विवोगाद्वैरिपरिभवभवात् भ्रमन्ती कथमपि विन्धवबन्धिनम्
अशुभशरवलयकुलम् अगणितगजकुलकलिसम् अपरिमित-
जगत्पतिशरभयम् उद्दमहिमस्तुषितपक्षिकगमनम् अतिनिश्चित-
शरकुशपक्षम् अवटयतविषममाविशत् । अतस्तामन्वेष्टुं वयमनिशं
निशि निशि च सततमिमांशटवीमटामः । नचैनामासाह्वामः ।
कथयतु च गुह्यः अपि यदि कदाचित् कुतस्त्रिहज्रधरतः श्रुतिपथम्
उपगता तद्वाक्तेति ।

अथ तत् श्रुत्वा जातोद्देग इव भदन्तः पुनरभ्यधात् धीमन्
न खलु कश्चिदेवंरूपो दृष्टान्तोऽस्मानभ्युपगतवान् । अभाजनं हि
वयमीदृशानां प्रियाख्यानोपायनानां भवताम् । इत्येवं भाषमाण
एव तस्मिन् अकस्मादागत्यापरः शमिनि वयसि वर्त्तमानः सञ्ज्ञान-
रूप इव पुरसादुपरचितास्त्रजिर्जातकवणः प्रक्षरितचक्षुर्भिक्षुरभा-
षत भगवन् भदन्त मञ्जु कवणं वर्त्तते । बालैव वलवक्ष्यसमाभि-
भूता भूतपूर्वापि कल्याणरूपा स्त्री शोकावेशविषया वैश्वानरं
विशति । सम्भावयतु तामप्रोक्षितप्राणां भगवान् । अभ्युपपद्यतां
संमुचितैः समाश्लासनैः । अनुपगतपूर्वं कृमिकोटमपि दुःखितं
द्वाराशेरार्कस्य गोचरगतमिति ।

राजा तु जातानुजाशङ्कः सोऽर्घ्यस्नेहाञ्चान्तर्दुत इव दुःखेन
दोदूषमानचक्षुः कथमपि गद्गदिकाग्नीतकवणो विकलवान्
वाक्यावमाणहृष्टः पप्रच्छ पाराशरिन् किंवदूरे सा वोषिदेवं-
जातीवा जीवेद्वा काशमेतावन्मिति । दृष्टा वा त्वया कासि
कस्यासि कुतोऽसि किमर्थं वनमिदमभ्युपगतासि विशसि च किं

निमित्तमनलमिति आदितः प्रभृति कात्स्न्येन कथ्यमानमिच्छामि
श्रोतुम् कथमार्यस्य गता गोचरम् आकारतो वा कीदृशीति ।

तथाभिहितस्तु भूभुजा भिक्षुराचचक्षे महाभाग श्रूयताम् अहं
हि प्रत्यूषस्येवाद्य वन्दित्वा भगवन्तम् अनेनैव नदीरोधसा सैकत-
सुकुमारेण यदृच्छया विहृतवानतिदूरम् । एकस्मिंश्च वनलता-
गह्वने गिरिनदीसमीपभाजि भ्रमरीणामिव हिमहतकमलाकर-
कातराणां रसितं सार्यमाणानामतितारतानवर्त्तिनीनां वीणा-
तन्त्रीणामिव भाङ्गारमेकतानं नारीणां रुदितमधृतिकरमति-
कण्ठमाकर्णितवानस्मि । समुपजातरूपश्च गतोऽस्मि तं प्रदेशम् ।
दृष्टवानस्मि च दृष्टृखण्डखण्डिताङ्गुलिगलक्षोहितेन च पार्श्विप्र-
विष्टशरशलाकाशत्यभूलसङ्कोचितचक्षुषा च अध्वनीनश्रमश्रवयुनि-
चलचरणेन च स्थाणवव्रणव्यथितगुल्फबद्धभूर्जत्वचा च वातखुड-
खेदखञ्जजङ्घाजातज्वरेण च पांसुपाण्डुरपिण्डिकेन च खर्जूरजूट-
जटाजर्जरितजानुना च शतावरीविदारितोरुणा च विदारी-
दारिततनुदुकूलपल्लवेन च उत्कटवंशविटपकण्टककोटिपाटित-
कक्षुककर्पटेन च फललोभालम्बितानम्वदरीलताजालकैरुत्कण्टकैः
उल्लिखितसुकुमारकरोदरेण च कुरङ्गशृङ्गोत्खातैः कन्दमूलफलैः
कदर्थितवाङ्मना च ताम्बूलविरहविरसमुखखण्डितकोमलामलकी-
फलेन च कुशकुसुमाहतिलोहितानां श्रव्यतामङ्गणां लेपीकृतमनः-
शिलेन च कण्टकिलतालूनालकलेशेन च केनचित् किसलयोप-
पादितातपत्रकस्थेन केनचित् कदलीदलव्यजनवाहिना केनचित्
कमलिनीपलाशपुटमृहीताम्भसा केनचित् पाथेयीकृतमङ्गाल-
मूलिकेन केनचित् चीनांशुकदशाशिक्यनिहितनालिकेरकोश-
कलयीकलितरसालतैलेन कतिपयाशेषशोकविकलमृककुञ्जवामन-

वधिरवर्जराविरलेन चबलानां चकवालेन परिहृताम् आपत्काले
 ऽपि कुलोन्नतेनेवासुच्यमानां प्रभालेपिना लावण्येन प्रतिविम्बितैः
 आसन्नवज्रलताकिसलयैः सरसैर्दुःखक्षतैरिवान्तःपटलीमिवमाश-
 कायां कठोरदर्भाङ्कुरक्षतधारिणा क्षतघेनामुसरणालक्षकेनेव
 रक्तचरणाम् उज्जालेनाग्न्यंतरगारीधृतेनारविन्दिनीदलेन क्षत-
 च्छादमपि विच्छाद्यं मुखमुद्वहन्तीम् आकाशमपि शून्यतयाति-
 शयानां चक्ष्मयोमिव निक्षेतनतया मदनयोमिव निष्ठाससम्पदा
 पावकमयीमिव सन्तापसन्तानेन सलिलमयीमिवाक्षप्रक्षयणेन
 वियम्बयोमिव निरवलम्बनतया तडिग्ययीमिव पारिप्लवतया शब्द-
 मयीमिव परिदेवितवाणीवाञ्छत्येन मुक्तमुक्तांशुकरत्नकुसुमकनक-
 पत्राभरणां कल्पलतामिव महावने पतितां परमेश्वरोत्तमाङ्ग-
 पातदुर्ललिताङ्गां गङ्गामिव गाङ्गता वनकुसुमधूलिधूसरितपाद-
 पङ्क्त्यां प्रभातचन्द्रसूर्तिमिव लोकान्तरमभिलषन्तीं निजजलमोक्ष-
 कदर्शितदर्शितधवलावतनेत्रशोभां मन्दाकिनीचणालिनीमिव परि-
 न्यायमानां दुःसहरविकिरणसंस्पर्शखेदनिमीलितां कुसुदिनीमिव
 दुःखेन दिवसं नयन्तीं दग्धदशाविसंवादितां प्रह्वयप्रदीपार्थिण्याम्
 द्रुव क्षामक्षामां पाण्डुवपुषं पार्श्ववर्त्तिवारणाभिवोगरक्ष्यमाणां
 वनकरिणीमिव महाङ्गदे निमग्नां प्रविष्टां वनगहनं ध्यानञ्च स्थितां
 तप्तले मरणे च पतितां धातुरावृष्टे महानर्थे च दूरीकृतां भर्त्रा
 सुखेन च विरेकितां अमण्येनाहुषा च आकुलां केशवक्षापेन
 मरणोपायेन च विवर्णितामध्वूलिभिरङ्गवेदनाभिश्च दग्धां
 चण्डातयेन वैद्यकेन च हतमुखीं पाणिना मौनेन च गृहीतां
 प्रियसखीजनेन मन्थुना च तथाच अटैर्बन्धुभिर्विहासैश्च मुक्तेन
 नृपक्षवुनलेनाग्रया च परित्यक्तैर्भूषणैः सुगौरवैश्च मन्त्रैर्वलयैः

मनोरथैश्च चरणलग्नाभिः परिचारिकाभिः दर्भाङ्कुरसूचीभिश्च
 हृदयविनिहितेन चक्षुषा प्रियेण च दीर्घैः शोकश्रसितैः केशैश्च
 क्षीणेन वपुषा पुण्येन च पादयोः पतन्तीभिर्दृष्ट्वाभिरश्रुधाराभिश्च
 स्वल्पावशेषेण परिजनेन जीवितेन च अलसामुग्धे दक्षामश्रु-
 मोक्षे सन्ततां चिन्तासु विच्छिन्नामांशासु कथां काये स्थूलां
 श्रसिते पूरितां दुःखेन रिक्तां सत्त्वेन अध्यासितामायासेन शून्यां
 हृदयेन निश्चलां निश्चयेन चलितां धैर्यात् अपिच वसतिं
 व्यसनानाम् आधानमाधीनाम् अवस्थानमनवस्थानाम् आधारम्
 अष्टतीनाम् आवासमवसादानाम् आस्पदमापदाम् अभियोगम्
 अभ्यायानाम् उद्देगमुद्देगानां कारणं करुणायाः पारं परायत्त-
 ताया योषितम् । चिन्तितवानस्मि च चित्तमीदृशीमप्याकृतिसुप-
 तापाः स्पृशन्तीति ।

सा तु समीपगते मयि तदवस्थापि सवज्जमानमानतमौलिः
 प्रणतवती । अहन्तु प्रबलकरुणाप्रेर्यमाणस्तामालपितुकामः पुनः
 कृतवान् मनसि कथमिव मञ्जुभावामेनामामन्त्रये वत्से इत्यति-
 प्रणयः मातरिति चाटु भगिनीत्यात्मसम्भावना देवीति परिजना-
 लापः राजपुत्रीत्यस्फुटम् उपासिके इति मनोरथः स्वामिनीति
 भृत्यभावाभ्युपगमः भद्रे इति इतरस्त्रीसमुचितम् आयुष्मतीत्यव-
 स्थायामप्रियं कल्याणिनीति दशायां विरुद्धं चन्द्रमुखीत्यनुनिमतम्
 बाले इत्यगौरवोपेतम् आर्ये इति जरारोपणम् पुण्यवतीति फल-
 विपरीतम् भवतीति सर्वसाधारणम् अपिच कासीत्यनभिज्ञातम्
 किमर्थं रोद्धीति दुःखकारणस्मरणकारि मा रोद्धीरिति शोक-
 हेतुमनपनीव न शोभते समाश्रसिहीति किमाश्रित्य स्वानतमिति
 यातव्यमं मुण्यमास्रते इति मिथ्या ।

इत्थेवं चिन्तयत्येव मधि तस्मात् स्नेषादुत्थाय अन्यतरा बोधित्
 आर्षरूपेव शोकविक्षवा समुपसृज्य कतिपयपलितशारं शिरो
 नीत्वा महीतलम् अतुलहृदयसन्तापसूचकैरश्रुविन्दुभिश्चरणयुगलं
 दहन्ती ममातिष्ठपणोरक्षरैश्च हृदयम् अभिहितवती भगवन् सर्व-
 सत्त्वानुकम्पिनी प्रायः प्रवृज्या । प्रतिपन्नदुःखक्षपणदीक्षादक्षाश्च
 भवन्ति सौगताः । करुणाकुलगृहस्थ भगवतः शाक्यमुनेः शासनम् ।
 सकलजनोपकारसज्जा सज्जनता जैनीः परलोकसाधनश्च धर्मो
 मुनीनाम् । प्राणरक्षणाञ्च न परं पुण्यजातं जगति गीयते
 जनेन । अनुकम्पाभूमयः प्रकृत्यैव युवतयः किं पुनर्विपदभिभूताः ।
 साधुजनश्च सिद्धलोत्सार्त्तववसाम् । यत इयं नः स्वामिनी मरणेन
 पितुः अभावेन भर्तुः प्रवासेन च भ्रातुः भ्रंशेन च शेषस्य बान्धव-
 वर्गस्य अतिदुःहृदयतया अनपत्यतया च निरवलम्बना परिभवेन
 च नीचारातिष्ठतेन प्रकृतिमनस्विनी अमुना च महाटवीपथटन-
 लोभेन कदर्थितसौकुमार्या दग्धदैवदत्तैरेवंविधैर्वक्त्रभिरुपसृपि
 व्यसनैः विह्वलीकृतहृदया दारुणां दुःखमपारयन्ती सोढुं नि-
 वारयन्तम् अनतिक्रान्तपूर्वं स्वप्रेम्यवगणस्य गुरुजनम् अनुनयन्तीः
 अखण्डितप्रणया नर्मास्वपि समवधीर्य प्रियसखीः विज्ञापयन्तम्
 अश्रुणामश्रुव्याकुलनयनमपरिभूतपूर्वं मनसापि परिभूय भृत्यवर्गम्
 अग्निं प्रविशति परित्वायताम् । आर्षोऽपि तावदसक्तशोका-
 पनयनोपावोपदेशनिपुणां व्यापारयतु वाणीमस्यामिति च अति-
 क्षुण्णं व्याहरन्तीम् अश्रुमुत्थाप्योद्विग्नतरः शनैरभिहितवान् आर्षो
 यथा कथयसि तथा । अस्मात्त्रिरामगोचरोऽयमस्याः पुण्याशवायाः
 शोकः । शक्यते चेन्मुहूर्त्तमात्रमपि तातम् उपरिष्टान्न व्यर्थेयम्
 अभ्यर्थना भविष्यति । मम हि गुरुरपर इव भगवान् सुगतः

समीपगत एव । कथिते मयास्त्रिन्दुदन्ते नियतमागमिष्यति परम-
दयालुः । दुःखान्धकारपटलभिदुरैश्च सौगतैः सुभाषितैः स्वकैश्च
दर्शितनिदर्शनैर्नानागमगुरुभिर्गिरां कौशलैः कुशलशीलामेनां
प्रबोधपदवीमारोपयिष्यतीति । तच्च श्रुत्वा त्वरतामार्थं इत्यभि-
दधाना सा पुनरपि पादयोः पतितवती । सोऽहमुपगत्य त्वर-
माणो व्यतिकरमिममष्टतिकरम् अशरणरूपणवज्जयुवतिमरणम्
अतिकरणमत्रभवते गुरवे निवेदितवानिति ।

अथ भूभृत् भैक्षवं समवधार्य तद्भाषितमश्रुमिश्रितम् अश्रुते
ऽपि स्मृनुर्नानि निम्नीकृतमना मन्युना सर्वाकारसंवादिन्या
दृश्यैव दूरीकृतसन्देहो दग्ध इव सोदर्यावस्थाश्रवणेन श्रवणयोः
अमणाचार्यमुवाच आर्यं नियतं सैवेयमनार्यस्यास्य जनस्याति-
कठिनहृदयस्यातिवृशंसस्य मन्दभाग्यस्य भगिनी भागधेयैरेताम्
अवस्थां नीता निष्कारणवैरिभिर्वराकी विदीर्यमाणं मे हृदयमेवं
निवेदयति इत्युक्त्वा तमपि अमणमभ्यधात् आर्यं उत्तिष्ठ दर्शय
कासौ यतः सुप्रभृतप्राणपरित्राणपुण्योपार्जनाय यामः यदि
कथञ्चित् जीवन्तीं सम्भावयामः । इति भाषमाण एवोत्तस्थौ ।

अथ समग्रशिष्यवर्गानुगतेनाचार्येण तुरगेभ्यश्चावतीर्य समस्तेन
सामन्तलोकेन पश्चादाकृष्यमाणाश्वीयेन अनुगम्यमानः पुरस्ताच्च
तेन शाक्यपुत्रीयेण प्रदिश्वमानवर्मा पङ्गामेव तं प्रदेशं प्रविरलैः
पदैः पिवन्निव प्रावर्त्तत । क्रमेण च समुपगतः शुश्राव लता-
वनान्तरितस्य सुस्रूर्ध्वोर्म्हहतः स्वैणस्य तत्कालोचिताननेकप्रकारान्
आलापान्—

भगवन् धर्मं धाव शीघ्रम् । कासि कुलदेवते । देवि धरणि
धीरवसि न दःखितां ददितरम । क नु खल प्रोषिता पुष्यभूति-

कुटुम्बिनी लक्ष्मीः । अनाथां नाथ सुखरवंशं विविधाधिविधुरा
 बधूं विधवां विबोधयसि किमिति नेमाम् । भगवन् भक्तजने
 संवरिणि सुगत सुप्तोऽसि । राजधर्मं पुण्यभूतिभवनपक्षपातिन्
 उदासीनीभूतोऽसि कथम् । त्वय्यपि विपद्बान्धव विन्ध्य बन्धोऽय-
 मस्त्रलिबन्धः । मातर्महाटवि नटन्तीं न शृणोषीमामापत्यति-
 ताम् । पतङ्ग प्रसीद पाहि पतिव्रतामशरणाम् । प्रयत्नरक्षित
 कृतघ्न चारित्र्यचण्डाल न रक्षसि राजपुत्रीम् । किमवधृतं
 लक्ष्मणैः । हा देवि दुहितृस्नेहमयि यशोवति सुपितासि दग्ध-
 दैवदस्युना । देव दुहितरि दह्यमानायां नापतसि प्रतापशील
 शिथिलीभूतमपत्यप्रेम । महाराज राज्यवर्धन न धावसि मन्दी-
 भूता भगिनीप्रीतिः । अहो निष्ठुरः प्रेतभावः । व्यपेहि पाप
 पावक स्त्रीघातनिर्घृण ज्वलन् लज्जसे । आतर्वात दासी तवास्त्रि
 संवादय द्रुतं देवीदाहं देवाय दुःस्मितजनार्त्तिहराय हर्षाय ।
 नितान्तनिःश्रूक शोकखपाक सकामोऽसि । दुःखदायिन् वियोग-
 राक्षस तुष्टोऽसि । विजने वने कमाकन्दासि कश्चै कथयामि
 कमुपयामि शरणं कां दिशं प्रतिपद्ये करोमि किमभागधेया ।
 गान्धारि गृहीतोऽयं लतापाशः । पिशाचि मांचनिके मुख
 शाखाग्रहणकलहम् । कलहंसि हंसि किमतः परमुत्तमाङ्गम् ।
 मङ्गलिके मुक्तगलं किमद्यापि कथ्यते । सुन्दरि दूरीभवति सखी-
 सार्थः । स्थास्यसि कथमिव अशिवे शवशिविरे शवरिके ।
 सुतनु तनूनपाति पतिष्यसि त्वमपि । शृणालकोमले मालावति
 न्नानासि । मातर्मातङ्गिके अङ्गीकृतस्त्वयापि सत्यः । वत्से
 वत्सिके वत्स्यसि कथमनभिप्रेते प्रेतनगरे । नागरिके गरिमाणम्
 आगतासि अनया स्वामिभक्त्या । विराजिके विराजितासि

राजपुत्रीविपदि जीवितव्ययव्यवसायेन । भृगुपतनाभ्युद्यममागा-
 भिक्षे भङ्गारधारिणि धन्यासि । केतकि कुतः पुनरीदृशी
 स्वप्नेऽपि सुस्वामिनी । मेनके जन्मानि जन्मानि देवीदास्यमेव
 ददातु देवो देहं दहन् दहनः । विजये बीजय कृशानुम् ।
 सानुमति नमतीन्दीवरिका दिवं गन्तुकामा । कामदासि देहि
 दहनप्रदक्षिणावकाशम् । विचरिके विरचय वङ्गिम् । विकिर
 किरातिके कुसुमप्रकरम् । कुररिके कुरु कुरुवककोरकाचितां
 चिताम् । चामरं चामरग्राहिणि गृह्णाण । पुनरपि कण्ठे
 मर्षयितव्यानि नर्मदे नर्मनिर्मितानि निर्मर्यादहसितानि ।
 भद्रे सुभद्रे भद्रमस्तु ते परलोकगमनम् । अग्रामीणगुणानु-
 रागिणि ग्रामेयिके गच्छ सुगतिम् । वसन्तिकेऽन्तरं प्रयच्छ ।
 आष्टच्छते कृत्तधारी देवि देहि दृष्टिम् । दृष्टा तव जहाति
 जीवितं विजयसेना । सेयं मुक्तिका मुक्तकण्ठमारटति निकटे
 नाटकसूत्रधारी । पादयोः पतति ते ताम्बूलवाहिनी बद्धमता
 राजपुत्ति पवलता । कलिङ्गसेने अयं पश्चिमः परिष्वङ्गः पीडय
 निर्भरसुरसा माम् । असवः प्रवसन्ति वसन्तसेने । मञ्जुलिके
 मार्जयसि कतिकृत्वः सुदुःसहदुःखसहस्रास्त्रदिग्धं चक्षुरिदं रोदिषि
 कियदास्त्रिष्व च माम् । निर्माणीमीदृशं प्रायशो यशोधने ।
 धीरयस्यद्यापि किं मा माधविके । केयमवस्था संस्थापनानाम् ।
 गतः कालः कालिन्दि सखीजनानुनयाञ्जलीनाम् । उन्मत्तिके
 मत्तपालिके कृताः पृष्ठतः प्रणयिनीप्रणिपातानुरोधाः । शिथिलय
 चकोरवति चरणग्रहणं ग्राहिणि । कमलिनि किमनेन पुनः पुनः
 दैवोपालम्भेन । न प्राप्तं चिरं सखीजनसङ्गमसुखम् । आर्य
 महत्तरिके तरङ्गसेने नमस्कारः । सखि सौदामिनि दृष्टासि ।

समुपनय हृद्यवाहनाञ्जनकुसुमानि कुमुदिके । देहि चिता-
रोहणाय रोहिणि हस्तावलम्बनम् । अस्व धात्रि धीरा भय ।
भवन्त्येवविधा एव कर्माणा विपाकाः पापकारिणीनाम् । आर्य-
चरणानामयमञ्जलिः । परः परलोकप्रयाणप्रणामोऽयम् मातः ।
मरणसमये कक्षाह्वलिके हलहलको बलीयानानन्दमयो हृदयस्य
मे । हृद्यन्त्युच्चरोमाञ्चमुक्षि किमङ्गीकृत्याङ्गानि । वामनिके
वामेन मे स्फुरितमच्छा । वृथा विरमसि वयस्य वायस वृक्षे
क्षीरिणि क्षणे क्षणे क्षीणपुण्यायाः पुरः । हरिणि हेषितमिव
हयानामुत्तरतः । कस्येदमातपत्वमुच्चमत्र पादपान्तरेण प्रभावति
विभाव्यते । कुरङ्गिके केन सुगृहीतनाम्नो नाम गृहीतमश्नतमयम्
आर्यस्य । देवि दिथा वर्द्धसे देवस्य हर्षस्य आगमनमहोत्सवेन ।

इत्येतच्च श्रुत्वा सत्वरमुपससर्प ददर्श च मुह्यन्तीमग्निप्रवेशाय
उद्यतां राजा राज्यश्रियम् आललम्बे च मूर्च्छामीलितलाच-
नाया ललाटं हस्तेन तस्याः ससम्भ्रमम् ।

अथ तेन भ्रातुः प्रेयसः प्रकोष्ठबद्धानामोपधीना रसविसरमिव
प्रत्युज्जीवनक्षमं क्षरता वमतेव पारिहार्यमणीनामचिन्त्यं प्रभावम्
अश्नतमिव नखचन्द्ररश्मिभिश्चक्षिरता वध्नतेव चन्द्रादयस्युतशिशिर-
शौकरं चन्द्रकान्तचूडामणिं सूर्ध्वनि शृणालमयाङ्गलिनेव अति-
शीतलेन निर्व्यापयता दह्यमानं हृदयं प्रत्यानयतेव कुतोऽपि
जीवितमाह्लादकेन हस्तसंस्पर्शेन सहसैव समुन्ममील राज्यश्रीः ।
तथाचासम्भावितागमनस्याचिन्तितदर्शनस्य सहसा प्राप्तस्य भ्रातुः
स्वप्नदृष्टदर्शनस्येव कण्ठे समाश्लिष्य तत्कालाविर्भावनिर्भरेण अभि-
भूतसर्वात्मना दुःखसम्भारेण निर्दयं नदीमुखप्रणालाभ्यामिव
मुक्ताभ्यां स्थूलप्रवाहमुत्सृजन्ती वाप्यवारि विलोचनाभ्यां हा तात

हा अस्व हा सख्य इति व्याहरन्ती मुहुर्मुहुर्हसन्त्यैस्तराश्च समुद्-
भूतभगिनीस्तेहसद्भावभारभावितमन्युना मुक्तकण्ठमतिचिरं विकुञ्च
वत्से स्थिरा भव त्वमिति भ्रात्रा करस्यगितमुखी समाश्वास्यमानापि
कल्याणिनि कुरु वचनमग्रजस्य गुरोरित्याचार्य्येण याच्यमानापि
देवि न पश्यसि देवस्यावस्थाम् अलमतिरुदितेनेति राजलोकेन
अभ्यर्थ्यमानापि स्वामिनि भ्रातरमवेक्षस्वेति परिजनेन विज्ञाप्य-
मानापि दुहितर्विश्वस्य पुनरारटितव्यमिति निवार्य्यमाणापि
बान्धवदृष्ट्वाभिः प्रियसखि कियद्रोदिषि दृष्णीमास्मू दृढं दूयते देव
इति सखीभिरनुनीयमानापि चिरसम्भावितानेकदुःसहदुःख-
निवहनिर्व्वहणवाघोत्पीडपीड्यमानकण्ठभागा प्रभूतमन्युभार-
भरितान्तःकरणा करुणकाहलेन स्वरेण कतिचित्कालमतिचिरं
रुरोद । विगते च मन्युवेगे वक्त्रेः समीपादाक्षिप्य भ्रात्रा नीता
निकटवर्त्तिनि तरुतले निषसाद ।

शनैराचार्य्यस्तु तथा हर्ष इति विज्ञाय विवर्द्धितादरः सुतरां
मुहूर्त्तमिवातिवाह्य निभृतसंज्ञाज्ञापितेन शिष्येणोपनीतं नलिनी-
दलैः स्वयमादाय नम्रो मुखप्रक्षालनायोदकमुपनिन्ये । नरेन्द्रोऽपि
सादरं गृहीत्वा प्रथमम् अनवरतरोदनातान्नं चिरप्रवृत्ताश्रुजल-
जालं रक्तपङ्कजमिव स्वसुशुद्धुरक्षालयत् पश्चादात्मनः । प्र-
क्षालितमुखशशिनि च महीपाले सर्व्वतो निःशब्दः सम्भ्रूव सकलौ
लिखित इव लोकः । ततो नरेन्द्रो मन्दमन्दमब्रवीत् स्वसारं वत्से
वन्दस्वात्प्रभवन्तं भदन्तम् एष ते भर्त्तृहृदयं द्वितीयम् अस्माकञ्च
गुरुरिति । राजवचनात्तु राजदुहितरि पतिपरिचयश्रवणोद्घातेन
पुनरानीतनेत्रान्मसि नमन्त्याम् आचार्य्यः प्रयत्नरक्षितागत-
वाप्यान्मःसम्भारभज्यमानधैर्य्यार्द्रलोचनः किञ्चित् परावृत्तनयनो

दीर्घं निशश्वास । स्थित्वा च क्षणमेकं प्रदर्शितप्रश्नयो हृदुवादी
मधुरया वाचा व्याजहार कल्याणराशे अलं हृदित्वातिचिरम्
राजलोको नाद्यापि रोदनान्निवर्त्तते । क्रियतामवश्यकरणीयः
स्नानविधिः स्नात्वा च गम्यता तामेव भूयो भुयम् ।

अथ भूपतिरनुवर्त्तमानो लौकिकमाचारमाचार्यवचनञ्च
उत्थाय स्नात्वा गिरिसरिति सह स्वस्वा तामेव भूमिमयासीत् ।
तस्याञ्च सपरिजनां प्रथममाहितावधानः पार्श्ववर्त्ती परवर्ती शुचा
पतिपिण्डप्रदर्शितप्रयत्नप्रतिपन्नाभ्यवहारकरणां भगिनीमभोजयत्
अनन्तरञ्च स्वयमाहारस्थितिमकरोत् । भुक्तवांश्च बन्धनात्प्रभृति
विस्तरतः स्वसुः कान्यकुजात् गौडसम्भ्रमं गुप्तितो गुप्तनाम्ना
कुलपुत्त्रेण निष्कासनं निर्गतायाश्च राज्यवर्द्धनमरणश्रवणं श्रुत्वा
चाहारनिराकरणम् अनाहारपराहतायाश्च विन्ध्याटवीपर्यटन-
खेदं जातनिर्वेदायाः पावकप्रवेशोपकमणं यावत् सर्वमश्रद्दणोत्
व्यतिकरं परिजनतः । ततः सुखासीनमेकत्र तहतले विविक्तभुवि
भगिनीद्वितीयं दूरस्थितानुजीविजनं राजानमाचार्यः समुपसृत्य
शनैरासाञ्चके स्थित्वा च कश्चित्कालाद्यं लेशतो वक्तुमुपचकमे ।
श्रीमन् आकर्ष्यताम् आख्येयमस्ति नः किञ्चित्—

अयं हि यौवनोन्मादात् परिभूय भूयसीर्भार्या यौवनावतारतरल-
तरास्ताराराजो रजनीकर्णपूरः पुरुहूतपुरोधसो धिषणस्य पुरन्ध्रीं
धर्मपत्नीं पत्नीयन्वतितरलस्तारां नामापजहार नाकतच पलाया-
ञ्चके । चकितचकोरलोचनया तया सहातिकामया सर्वाकाराभि-
रामया रममाणो रमणीयेषु देशेषु चचार । चिराञ्च कथञ्चित्
सर्वगीर्वाणवाणीगौरवाङ्गिरां प्रत्युः पुनरपि प्रत्यर्पयामास ताम् ।
हृदये त्वनिन्धनमदह्यत विरहाद्वरारोहायाः तस्याः सततम् ।

एकदा तु शैलादुदयादुदयमानो विमले वारिणि वरुणालयस्य
 संक्रान्तमात्मनः प्रतिविम्बं विलोकितवान् । दृष्ट्वा च तदा सस्मार
 सस्मारः स्मेरगण्डस्थलस्य ताराया मुखस्य । सुमोच च मन्मथो-
 न्माथमथ्यमानमानसः स्वस्थोऽप्यस्वस्थः स्थवीयसः पीतसकलकुमुद-
 वनप्रभाप्रवाहधवलताराभ्यामिव लाचंनाभ्यां वाष्पवारिविन्दून् ।
 अथ पततस्तानुदन्वति समस्तानेव आचेर्मुर्मुक्ताशुक्लयः । तासाञ्च
 कुक्षिकोषेषु मुक्ताफलीभूतानवाप तान् कथमपि रसातलनिवासी
 वासुकिर्नाम विषमुचामीशः । स च तैर्मुक्ताफलैः पातालतलेऽपि
 तारागणमिव दर्शयद्भिरेकावलीमकल्पयत् चकार च मन्दा-
 किनीति नाम तस्याः । सा च भगवतः सोमस्य सर्वासामोष-
 धीनामधिपतेः प्रभावादत्यन्तविषघ्नी हिमास्यतसम्भवत्वाच्च स्पर्शेन
 सर्वसत्त्वसन्तापहारिणी बभूव । यतः स तां सर्वदा विषोष्ण-
 शान्तये वासुकिः पर्यधत्त ।

समतिक्रामति च कियत्यपि काले कदाचित्तामेकावलीं
 तस्मान्नागराजात् नागार्जुनो नाम नागैरेवानीतः पातालतलं
 भिक्षुरभिज्ञत लेभे च । निर्गत्य रसातलात् त्रिसमुद्राधिपतये
 सातवाहननाम्ने नरेन्द्राय सुहृदे स ददौ ताम् । सा चास्माकं
 कालेन शिष्यपरम्परया कथमपि हस्तमुपगता । यद्यपि च परिभूव
 द्रुव भवति भवादृशां दक्षिण उपचारः तथाप्योषधिवुद्ध्या बुद्धिमता
 सर्वसत्त्वराशिरक्षाप्रवृत्तेन रक्षणीयशरीरेणायुष्मता विषरक्षा-
 पेक्षया गृह्यताम् । इत्यभिधाय भिक्षोरभ्यासवर्त्तिनश्चीवरपटान्त-
 संयता सुमोच तामेकावलीं मन्दाकिनीम् ।

उन्मथ्यमानाया एव यस्याः प्रभालेपिनि लब्धावकाशे विषद-
 महसि महीयसि विसर्पति रश्मिमण्डले शुगपद्मवलावमानेषु

दिक्षुखेषु मुकुलितलतावधूत्कण्ठितैराम्बुलादिकाशितमिव तक्ष्मिः
अभिनववस्त्रालुलुभैर्धावितमिव धुतपञ्चपुटपटलधवलितगगनं वन-
सरसीहंसयूथैः स्फुटितमिव भरवशविशीर्ष्यमाणधूलिधवलैर्गर्भ-
भेदस्त्रुचितसूचीसञ्चयशुचिभिः केतकीवाटैः उन्नतितदलदन्तुराभिः
प्रबुद्धमिव कुमुदिनीभिः विधुतंसितसटाभारभरितदिक्चक्रैश्चलित-
मिव केसरिकुलैः प्रहसितमिव दशनांशुमालालोकलियमानवनं
वनदेवताभिः विकसितमिव शिथिलितकुसुमकोशकेसराट्टहास-
निरङ्कुशं काशकाननैः भ्रान्तमिव सम्भ्रमभ्रमितबालपल्लवपरि-
वेशश्लेतायमानैश्चमरीकदम्बकैः प्रसृतमिव स्फायमानफेनिलतरल-
तरतरङ्गोद्गारिणा गिरिनदीपूरेण अपरतारागणालाभमुद्दिनेन
उद्भितमिव विकचमरीचिचक्राकान्तककुभा पूर्णचन्द्रेण प्रक्षालित
इव दावानलधूलिधूसरितदिगन्तो दिवसः पुनरिव धौतान्यशुजल-
क्लिष्टानि नारीणां मुखानि ।

राजा तु मांसलैस्तस्याः सम्मुखैर्मयूषैराकुलीक्रियमाणं मुञ्ज-
मुञ्जरुक्मीलयन्निमीलयञ्च चक्षुः कथमपि प्रयत्नेन ददर्श सर्वांगा-
पूरणीं पङ्कीकृतामिव दिङ्मागकरशीकरसंहतिं वनमुक्तां शारदीम्
इव लेखीकृतां ज्योत्स्नां प्रकटपदकचिह्नां सञ्चारणवीथीमिव
बालेन्दोः निचलीभूतां सप्तर्षिमात्रामिव हस्तमुक्तामभिभूतसकल-
भुवनभूषणभूतिप्रभावमैशानीमिव शशिकलां घवलतागुण्टहीतां
कान्तिमिव निर्गतां क्षीरराशेः अनेकमहामहीभृत्परम्परागतां
गङ्गामिव दुर्गतिहराम् अनवरतस्फुरिततरलांशुकां पुरःसर-
पताकामिव . महेश्वरभावागमस्य वनसारशुक्लां दन्तपङ्क्तिम्
इवाभिमुखस्य ईश्वरस्य वरमनोरथपूरणसमर्थं स्वयम्बरस्त्रजमिव
भुवनत्रिवः निजकरपल्लवावरणदुर्लभ्यां चञ्चूरागविहसतिकांमिव

वसुधायाः मन्त्रकोषसाधनप्रवृत्तस्याक्षमालामिव राजधर्मस्य
समुद्रालङ्कारभूतां सङ्कालेख्यपट्टिकामिव कुवेरकोशस्य । पञ्चान्
चैतां विस्मयम् आजगाम मनसा सुचिरम् । आचार्यस्तु
तामुद्धृत्य बबन्ध बन्धुरे स्तम्भभागे भूपतेः । अथ नरपतिरपि
प्रीतिमुपदर्शयन् प्रत्यवादीत् आर्य्य रत्नानामीदृशानाम् अनर्हाः
प्रायेण पुरुषाः । तपःसिद्धिरियमार्य्यस्य देवताप्रसादो वा । के च
वयमिदानीमात्मनोऽपि किमुत ग्रहणस्य प्रत्याख्यानस्य वा ।
दर्शनात् प्रभृति प्रभृतगुरुगुणगणकृतेन हृदयेन परवन्तो वयम् ।
सङ्कल्पितमिदमामरणादार्य्योपयोगाय शरीरम् । अत्र कामचारो
वः कर्त्तव्यानामिति ।

समतिक्रान्ते च कियत्यपि काले गते चैकावलीवर्णनाद्यापे
लोकस्य अनन्तरं लब्धविश्रम्भा राज्यश्रीसाम्बूलवाहिनीं पत्रलताम्
आह्वयोपांशु किमपि कर्णमूले शनैरादिदेश । दर्शितविनया च
पत्रलता पार्थिवं व्यञ्जापयत् देव देवी विञ्जापयति न स्मरामि
आर्य्यस्य पुरः कदाचिदुच्चैर्व्यचनमपि कुतो विञ्जापनम् । इयं हि
शुचाम् असह्यता व्यापारयन्ती हतदैवदत्तादेशा शिथिलयति
विनयम् । अवलानां हि पतिरपत्यं वावलम्बनम् । उभयविकला-
नान्तु दुःखानलेन्वनायमानं प्राणितमशालीनत्वमेव केवलम् ।
आर्य्यागमनेन च हृतोऽपि प्रतिहतो मरणप्रयत्नः । अतः काषाय-
ग्रहणाभ्यनुज्ञया अनुगृह्यतामयमपुण्यभाजनं जन इति । जना-
धिपस्तु तदाकर्ण्य दृष्टीमेवावतिष्ठत ।

अथाचार्य्यः सुधीरमभ्यधात् आमुष्मति शोको हि नाम प्रव्यायः
पिशाचस्य रूपान्तरमाक्षेपस्य तादृशं तमसः विशेषणं विषस्य
अनन्तकः प्रेतनगरनायकः । अयमनिर्हृतिवर्णा दहन् । अयमक्षयो

राजयक्षा । अयमलक्ष्मीनिवासो जनार्दनः । अयमपुण्यप्रवृत्तः
क्षपणकः । अयमप्रतिबोधो निद्राप्रकारः । अयमनलसधर्मा
सन्निपातः । अयमशिवसहचरो विनायकः । अयमबुधसेवितो
ग्रहवर्गः । अयमयोगसमुद्यो ज्योतिष्प्रकारः । अयं स्नेहादायु-
प्रकोपः मानसादग्निसन्निवः* अर्द्धभावात् रजःक्षोभः रसादभि-
शोषः रागात्कालपरिणामः । तदस्याजन्तुस्त्राविणो हृदयमहा-
व्रणस्य बज्रलदोषान्धकारलब्धप्रवेशप्रसरस्य प्राणतस्करस्य शून्यता-
हेतोर्महाभूतग्रामघातकस्य सकलविग्रहक्षपणदक्षस्य दोषचक-
वर्त्तिनः कार्श्यश्वासप्रलापोपद्रवबहलस्य दीर्घरोगस्य असदृशस्य
सकललोकक्षयधूमकेतोः जीवितापहारदक्षस्याक्षणरुचेरनभ्रवज्ज-
पातस्य स्फुरदनवद्यविद्याविद्युदुद्योतमानानि गहनग्रन्थग्रन्थिगूढगर्भ-
ग्रहणगम्भीराणि भूरिकाव्यकथाकठोराणि बज्रयास्त्रोदहनवृहन्ति
विदुषामपि हृदयानि नालं सोढुमापातं किमुत नवनवमालिका-
कुसुमकोमलानां सरसविसतन्तुतुर्ज्वलकमवलानां हृदयम् ।

एवं सति सत्यव्रते वद किमत्र क्रियते कतम उपालभ्यते कस्य
पुर उच्चैराकन्द्यते हृदयदाहि दुःखं वा ख्यायते । सर्वमक्षिणी
निमील्य सोढव्यममृदेन मर्त्यधर्म्मणा । पुण्यवति पुरातन्यः स्थितय
एताः केन शक्यन्तेऽन्यथाकर्तुम् । संसरन्त्यो नक्तन्दिवं द्राघीयस्यो
जन्मजरामरणघटनघटीयन्तराजिरज्जवः पञ्चजनानाम् । पञ्च-
महाभूतपञ्चकुलाधिष्ठितान्तःकरणव्यवहारदर्शननिपुणाः सर्वङ्कपा
विषमा धर्म्मराजस्थितयः । क्षममपि क्षममाणा गलन्त्यायुष्काला-
कलनकुशला निलये निलये काष्ठनालिकाः । जगति सर्वजन्तु
जीवितोपहारपातिनी सञ्चरति भटिति चण्डिका यमाञ्चा ।
रटन्त्यनवरतमखिलप्राणिप्रयाणप्रकटनपटवः प्रेतपतिपटङ्गाः ।

प्रतिदिशं पर्व्वटन्ति पेटकैः प्रतिपुरं प्रतप्तलोहलोहिताक्षाः काल-
कूटकान्तिकावकायाः कालपाशपाणयः कालपुरुषाः । प्रतिभवं
भ्रमन्ति भीषणकिङ्करकरघट्टितयमघण्टापुटपट्टाङ्गारभयङ्कराः
सर्व्वसत्त्वसङ्घसंहरणाय घोराघातघोषणाः । दिशि दिशि वहन्ति
वज्रचिताधूमधूसरितप्रेतपतिपताङ्गपटुपतितट्टदृष्टयः शोककृत-
कोलाहलाकुलकुटम्बिनीविकीर्णकेशकलापशवलशर्वाशविकासहस्र-
सङ्कुलाः किलकिलायमानश्मशानशिविरशिवाशवकाः परलोका-
यस्यपथिकसार्धप्रस्थानविशिखावीथयः । सकललोककवलावलेह-
लम्पटा वहला वहंलिहा लैढि लोहिताचिता चिताङ्गारकाली
कालरात्रिजिह्वा जीवितानि जीविनाम् । तप्तिमशिचिता च भग-
वतः सर्व्वभूतभुजो बुभुक्षा मृत्योः । अतिद्रुतवाहिनी चानित्यतु-
नदी । क्षणिकाश्च महाभूतग्रामगोद्यः । रात्रिषु भङ्गराणि पात्र-
यन्त्रपञ्जरदारूणि देहिनाम् । अशुभशुभावेशविवशा विशरारयः
शरीरनिर्म्माणपरमाणवः । छिदुरा जीवबन्धनपाशतन्त्रीतन्त्रवः ।
सर्व्वमात्मनोऽनीश्वरं विश्वं नश्वरम् । एवमवष्ट्य नात्यर्थम्
एवार्हसि मेधाविनि ऋदुनि मनसि तमसः प्रसरं दातुम् । एको
हि प्रतिसङ्ख्यानक्ष्ण आधारीभवति धृतेः । अपिच दूरगतेऽपि हि
शोके नन्विदानीमपेक्षणीय एवायं ज्येष्ठः पितृकल्पो भ्राता भवत्या
गुरुः । इतरथा को न वज्र मन्येत कल्याणरूपमीदृशं सङ्कल्पमत्र-
भवत्याः काषायग्रहणकृतम् । अखिलमनोज्वरप्रथमनकारणं हि
भगवती प्रवञ्चा । ज्यायः खल्विदं पदमात्मवताम् । महाभागस्तु
भिनन्ति मनोरथमधुना । यदयमादिशति तदेवानुष्ठेयम् । यदि
भ्रातेति यदि ज्येष्ठ इति यदि वत्सल इति यदि गुणवानिति यदि
राजेति सर्व्वथा स्थातव्यमस्य नियोगे । इत्युक्त्वा व्यरंसीत् ।

उपरतवचसि च तस्मिन् निजगाद नरपतिः आर्यमपहाय
 कोऽन्य एवमभिदध्यात् । अनभ्यर्थितदैवनिर्मिता हि विषमविष-
 दवलम्बनस्तम्भा भवन्तो लोकस्य । स्नेहाद्र्मूर्त्तयो मोक्षाम्भकार-
 ध्वंसिनश्च धर्मप्रदीपाः । किन्तु प्रणयप्रदानदुर्ललिता दुर्लभमपि
 मनोरथमतिप्रीतिरभिलषति । धीरस्यापि धार्ष्ट्यमारोपयति हृदय-
 लघिमलङ्कितमतिवल्लभत्वम् । युक्तायुक्तविचारभून्यत्वाच्च शालीनम्
 अपि शिञ्चयन्ति स्वार्थल्लणाः प्रागल्भ्यम् । अभ्यर्थनाया रक्षन्ति
 च जलनिधय इव मर्यादामार्याः । दत्तमेव च शरीरमिदम्
 अनभ्यर्थितेन प्रथममेवातिथ्याय माननीयेन भवता मत्तम् । अतः
 किञ्चिदर्थये भदन्तम् इयं नः स्वसा बाला च बह्वदुःखलोदिता
 च सर्वकार्यावधीरणोपरोधेनापि यावद्बाललनीया नित्यम् ।
 अस्माभिश्च भ्रातृबधापकारिरिपुकुलप्रलयकरणोद्यतस्य बाहोर्विधेयैः
 भूत्वा सकललोकप्रत्यक्षं प्रतिज्ञा कृता । पूर्वावमाननाभिभवम्
 असहमानैरर्पित आत्मा कोपस्य । अतो नियुक्ता कियन्तमपि
 कालमात्मानमार्योऽपि कार्ये मदीये । दीयतामतिथये शरीरम्
 इदम् । अद्य प्रभृति यावदयं जनो लघयति प्रतिज्ञाभारम्
 आश्वासयति च तातविनाशदुःखविकल्पाः प्रजाः तावदिमामत्र-
 भवतः कथाभिश्च धर्मार्थाभिः कुशलप्रतिबोधविधायिभिरुपदेशैश्च
 अरजोभिः शीलोपशमदायिनीभिश्च देशनाभिः क्लेशप्रहाणहेतु-
 भूतैश्च तथागतैर्दर्शनैः अस्मत्पार्श्वोपयायिनीमेव प्रतिबोध्यमानाम्
 इच्छामि । इयन्तु ग्रहीष्यति मयैव समं समाप्तकृत्येन कापा-
 याणि । अर्थिजने च किमिव नातिवृजन्ति महान्तः । मुर-
 नाथमात्मास्थिभिरपि यावत् कृतार्थमकरोत् धैर्योदधिर्दधीचः ।
 मुनिनाथोऽप्यनपेक्षितात्मस्थितिरनुकम्पेति कृत्वा कृपावानात्मानं

वठरसत्त्वेभ्यः कतिष्ठत्वो न दत्तवान् । अतः परं भवन्त एव
बद्धतरं जानन्ति । वृत्युक्ता तूष्णीम्भव भूपतिः ।

भूयस्तु बभाषे भदन्तः भव्या न द्विरुच्चारयन्ति वाचम् ।
चेतसा प्रथममेव प्रतिग्राहिता गुणाः कायबलिमिमाम् ।
अमुना जनेनोपयोगस्तु निरूपयोगस्यास्य लघुनि गुरुणि वा कृत्ये
गुणवदायत्त इति । अथ तथा तस्मिन्नभिनिन्दितप्रणये प्रीयमाणः
पार्थिवः तत्र तामुषित्वा विभावरीम् उपसि वसनालङ्कारादि-
प्रदानपरितोषितं विसर्ज्य निर्धातम् आचार्य्येण सह स्वसारमादाय
प्रयाणकैः कतिपयैरेव कटकमनुजाङ्गवि निविष्टं प्रत्याजगाम ।

तत्र च राज्यश्रीप्राप्तिव्यतिकरकथां कथयत एव प्रणयिभ्यो
रविरपि ततार गगनतलम् । वहलमधुपङ्कपिङ्गलः पङ्कजाकर
द्वव सञ्जुकोच चक्रवाकवल्लभो वासरः । प्रकीर्णानि नववधिर-
रसारुणवर्णानि लोकालोकजूंषि यजूंषि द्वव कुपितयान्नवल्कावक्त्र-
वान्तानि निजवपुषि पूषा पापमुषि पुनरपि संजहार जालकानि
रोचिषाम् । क्रमेण च समुपोह्यमानमांसलरागरोचिष्णुरुष्णांशुः
उष्णीषबन्धसहजचूडामणिरिव वृकोदरकरपुटोत्पाटितः प्रत्यग्र-
शोणितशोणाङ्गरागरौद्रो द्रौण्यायनस्य रुद्रभिक्षादानशौण्डपुर-
मथनमुक्तमुण्डशिरानाडिरुधिरपूरणकपिलः कपालकर्पर इव च
पैतामहः पितृवधरुषितरामरागरचितः पृथुविकटकार्त्तवीर्य्यास-
कूटकुट्टाक कुठार तुण्डतटदुष्ट क्षत्रिय कण्ठकुहर रुधिरकुल्याप्रणाल-
सहस्रपूरितो क्रुद्ध इव दूररोधी रौधिरो भयनिगूढकरचरणमुण्ड-
मण्डलाकृतिर्गुरुगुरुडनखपञ्जराक्षेपक्षपणक्षिप्तक्षतजोक्षितो व्यसुः
विभावसुः कमठ इव च लोद्यमानो नभस्यरुणगर्भमांसपिण्डाण्ड
इव च खण्डिमानमानीतो नियतकालातिपातदूयमानदाद्यायणी-

क्षिप्तो धातुतट इव च सुमेरोः असुरवधाभिचारचरुपचनपिशुनः
 शोणितकाथकषायितकुक्षिरतिविसङ्कटः कटाह इव च बार्हस्पत्यः
 सद्योगलितगजदानवदेहलोहितोपलेपभीषणो मुखमण्डलाभोग
 इव महाभैरवस्य मुहूर्त्तमदृश्यत जलनिधिजलप्रतिबिम्बितरवि-
 विम्बराजिभास्वराभ्रावलम्बिनी गृहीतार्द्रमांसभारेव चावभासे
 वासरावसानवेला वेतालनिभा ज्वलत्सन्ध्यारागरज्यमानजलप्रवाहः
 पुनरिव पुराणपुरुषपीवरोरुसम्पटपिष्टमधुकैटभरुधिरपटलपाटल-
 वपुरभवदधिपतिरणसाम् । अवसिते सन्ध्यासमये समनन्तरम्
 अपरिमितयशःपानढषिताय मुक्ताशैलशिलाचषक इव निजकुल
 कीर्त्या कृतयुगकरणोद्यतायादिराजराजतयासनमुद्रानिवेश इव
 राज्यश्रिया सकलह्रीपजिगीषाचलिताय श्वेतह्रीपदूत इव चायत्या
 श्वेतभानुरूपानीयत निशया नरेन्द्रायेति ।

इति श्रीवाणभट्टकृते हर्षचरिते अष्टम उच्छ्वासः ।

सम्पूर्णम् ।